

३० तत्सत् ।

व्यावहारिक-संस्कृतप्रबोधः ।

(प्रथम द्वितीय भागौ)

संस्कृतविद्यागहनारण्यप्रविद्विषुणां संस्कृतसलापाभिलाषिणाञ्चोप-
कारार्थम् श्रीमत्परमविद्वत्वर्यं श्रीदुर्गाप्रसादसुनुना, अलीगढ़राज
कीयाङ्गलपाठशालाप्रधानसंस्कृतार्थापकन गौडयशियेन
सुपोनन्देन त्रिपाठिना विशारदपरीक्षोत्तीर्णेन व्यरचित

सौज्यम् ।

काशीयन्त्रालये त्रिपुष्ट्यत्तरैकोनविंशतिशततमेऽब्देमुद्रापित ।

अस्य सर्वेऽधिकारान् ग्रन्थनिर्मात्र स्वयन्तीकृता-

(मूल्य सार्द्धरूपकमेकम्)

A GUIDE

TO

COLLOQUIAL SANSKRIT IN TWO PARTS

OR

A HELP IN GENERAL SANSKRIT COMPOSITION AND
CONVERSATION WITH IMPORTANT GRAMMATICAL
NOTES, PROVERBS, SPECIMENS OF LETTERS AND
APPLICATIONS ETC, ETC, FOR THE USE OF
THE STUDENTS GOING UP FOR THE
INTERMEDIATE AND MATRICU-
LATION EXAMINATIONS

BY

PANDIT SUKHANAND TRIPATHI,

DIPLOMATED VISHARAD,

Head Pandit, Govt High School, Aligarh.

PRINTED AT THE KASHI PRESS,

BENARES CITY.

Registered for copy-right under

Act XXV of 1867.

भूमिका ।

आज कल कर्मभूमि भारतवर्ष में भी बहुत से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य प्रायः संस्कारों से भ्रष्ट हुए अपने र्धर्म कर्मों को छोड़ने से दिन पर दिन अधोगति को प्राप्त होते चले जाते हैं । कारण इसका केवल कर्त्तव्य कर्म न जान अकर्मण्य होना है जो शास्त्रावलोकन से जाने जाते थे । शास्त्रज्ञान के लिये संस्कृत विद्या जानने की परमावश्यकता है । पर वालकों की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध न होने, यथावत् ब्रह्मचर्य की रक्षा न रहने, घुरी सङ्कति में पढ़ने और मन्द भाग्यता के कारण बाल-वस्था से ही गृहस्थ के सन्देहों में पढ़ने से वह तीक्ष्ण बुद्धि, जो व्याकरण-आदि पद शास्त्रों के अवगाहन में समर्थ होती थी प्रायः नष्ट होती जा रही है । यदि किसी प्रकार से किसी की कुछ हृत्ति संस्कृत की ओर चली भी तो जहाँ ग्रन्थों में कठिनता पढ़ी और श्रम करने का समय आया आलस्यवश छोड़ बैठे । और बहुतों ने तो संस्कृत पढ़ना भीख मांगने का द्वारही समझ केवल ब्राह्मणों के लिये छोड़ दिया है । परिणाम यह हुआ कि अपने शास्त्र चक्षु न होने से जैसे जिसने वहकाया वहक गये और कुमांगों व स्वधर्म-विरुद्ध मतों में पड़ गये जिससे कि अपनी जाति, धर्म और जीवन नुक को नष्ट कर बैठे । अतएव अल्प काल में थोड़े परिश्रम से संस्कृत विद्या सिखाने के लिये और व्यवहार का अच्छा पण्डित बनाने के लिये व संस्कृत में सम्भाषण व चिट्ठी पत्री लिखने पढ़ने और शास्त्रज्ञान की गति प्राप्त कराने के लिये “व्यावहारिकसंस्कृत-प्रबंध” नाम की यह पुस्तक बनाई गई है जिसके दो भाग हैं । प्रथम भाग में प्रत्येक प्रकार की व्यावहारिक संस्कृत बोलने व लिखने की रीति है दूसरे भाग में आद्योपान्त संस्कृत व्याकरण हिन्दी अनुवाद से समझाया गया है कि जिससे विद्यार्थी को कौमुदी से कहीं अधिक बोध स्वयं हो सकता है । यह पुस्तक सर्वसाधारण के हित के लिये और विशेष कर अंग्रेजी के साथ संस्कृत पढ़ने वाले उच्च श्रेणियों के विद्यार्थियों के लिये जिनको कि परीक्षार्थ संस्कृतानुवाद मुन्दर रूप से आना परम आवश्यक है, बनाई गई है । मैं आशा करता हूँ कि विद्यार्थी गण व सर्वसाधारण जन इस पुस्तक द्वारा अपने को व अपनी सन्तति को संस्कृतज्ञ बना मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ।

अन्त में मैं अपने परोपकृति परायण मित्र पं० ज्योतिःस्वरूपशर्मा सम्पादक निगमागम चन्द्रिका (हिन्दी) व महामण्डल समाचार (उर्दू) व धर्मोपदेष्टा श्रीभारतधर्म महामण्डल को कोटिंग : धन्यवाद देना हूँ कि जिन्होंने इस पुस्तक के छपाने में बहुत कुछ सत्परायण दिया है और

प्रकादि शोषन करने कराने में अनयकाश होने पर भी बड़ी सहायता दी है। तथापि, भूल रह जाना मनुष्य की स्वभावही है अस्तु पुस्तक के अन्त में शुद्धाशुद्धपत्र भी लगवा दिया है। पादकों को उचित है कि पढ़ने से पहले उसके अनुसार शुद्ध करलें। इति शिवम् !

सुखानन्द विपाठी ।

व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध की विषयानुक्रमणिका ।

अथ प्रथमभागः ।		अ. विषय.	पृष्ठ.
अ. विषय.	पृष्ठ.	२३ अनेक प्रकार के अतोन्ने घाक्य	
१ देहावयवविशेष	१	घ मशहर कहारतें इत्यादि १५५	
२ वस्त्रविशेष	१४	२४ अभिनन्दनपत्र, अर्जी, चिट्ठी	
३ आभूषणविशेष	१८	पहेलियां, छन्द इत्यादि १८७	
४ गृहस्थयस्तु	२१	२५ दिनचर्या व रात्रिचर्या	२०४
५ पात्रविशेष	२४		
६ चतुष्पाद वयानविशेष	२८		
७ पक्षिविशेष	३३		
८ दुखदायीजीवविशेष	३५		
९ वनतन्तुविशेष	४०		
१० जलजन्तुविशेष	४२		
११ छात्रोपयोगीपाठशालासम्बन्धी यस्तुर्पै	४७		
१२ भोजनपदार्थविशेष	६५		
१३ सम्बन्धघातकशब्द	७२		
१४ जातिविशेष	७५		
१५ वृक्ष, पुष्प व सख्याविशेष	९०		
१६ आकाशपदार्थ, अहीरात्रादिभाग	९९		
१७ स्वर्गीयपृष्ठान्त, धर्मसम्बन्धी-अनेक विषय	१०४		
१८ रोगविशेष	१२२		
१९ औषधि, घ उनकी तोल	१२५		
२० विशेषण शब्द	१३१		
२१ व्याकरण की परिभाषा	१३२		
२२ अवशिष्ट क्रिया विशेष	१५०		
		१ सन्धि विषय वर्णन	२
		२ पदलिङ्गरूप	६
		३ अन्ययार्थ	२१
		४ स्त्रीप्रत्यय	२३
		५ कारक	२५
		६ समास	२९
		७ तद्धित	३०
		८ धातुरूप	३२
		९ निजन्त प्रक्रिया वर्णन	५९
		१० सन्नन्त प्रक्रिया वर्णन	६०
		११ यङन्त प्रक्रिया वर्णन	६०
		१२ यङ लुगन्त वर्णन	६१
		१३ नाम धातु वर्णन	६२
		१४ आत्मनेपद वर्णन	६३
		१५ परस्मैपद वर्णन	६४
		१६ घाल्य वर्णन	६४
		१७ लकारार्थ वर्णन	६५
		१८ धृदन्त वर्णन	६६

PREFACE.

The practice of speaking Sanskrit in India gradually declined during the Mohamadan rule until it became a dead language. Our humble thanks for its revival are specially due to our late lamented Queen-Empress as well as to the present King-Emperor, whose reigns have been marked with the resuscitation of this Aryan language. Now it would be well if every Indian who has any knowledge of Hindi acquired a practical knowledge of Sanskrit himself and teach it to his children before they join an English school. The profoundness of the Sanskrit language is generally admitted. Practical proficiency in Sanskrit is rather difficult to acquire. To supply this long-felt want is the object of the present work. It consists of two parts, I and II of 25 and 18 chapters respectively a brief sketch of which is given below.

The plan adopted is as follows:—

First, the Heading denotes the subject matter. Secondly, important words of daily use are given. Lastly come the illustrations of Hindi and Sanskrit sentences in common use. The headings will, it is hoped, give the reader an adequate idea of the work. Great pains have been taken to collect and classify, as far as possible, all the important words in daily use with their Sanskrit equivalents. The substantives are put in the singular nominative to show their genders, as it is very difficult to determine gender in Sanskrit. In the same way the roots are given in the present tense (लट्) third person singular (अन्य पुरुष एक वचन) to show their conjugation etc. (गणपद् इत्यादि).

There are already several Sanskrit translation books in the market. In my humble opinion, however, they are not



of much help to a student who wishes to acquire a practical knowledge of Sanskrit within a short period. It is hoped that the student, who reads this work with a 'Guru' or studies it himself carefully, will acquire some knowledge of colloquial Sanskrit Sanskrit proverbs letter writing religious principles and duties as well as the mode of Sanskrit translation together with the peculiarities of Sanskrit Grammar.

No other Sanskrit translation book will be required upto the Matriculation and P. A. standards by a student who has thoroughly gone through this book after a preliminary study of my 'A GUIDE TO ANGLO SANSKRIT CONVERSATION FOR BEGINNERS'. At first I intended writing this work in Anglo Sanskrit as I have done with my book for beginners referred to above, but considering that it would then be useful to English knowing students only, I have written it in the present form so that it may be useful to all.

I offer a few hints for the benefit of teachers. The chapters in the second part dealing with grammatical constructions should be gone through before taking up the book regularly from the beginning and in the first part the words with their synonyms in each chapter should be carefully mastered before using them in sentences.

I conclude these remarks with a list of the chapters in both the parts.

The names of the chapters in the first part are as follows — (1) Limbs parts etc of the human body (2) Clothes of every kind (3) Ornaments (4) Household things (5) Vessels and the chief parts of a house (6) Cattle and conveyances (7) Birds (8) Poisonous animals and insects (9) Animals of the forest (10) Animals living in water (11) Things required for students in a school (12) Eatables (13) Words showing family relationships (14)

Caste and occupation of Indians. (15) Certain trees and flowers and Sanskrit numeration. (16) Heavenly bodies and divisions of day and night. (17) Heavenly beings and things and some mysteries of our religion. (18) Kinds of disease. (19) Medicines and weights. (20) Adjectives. (21) Remaining verbs. (22) Definitions of Sanskrit Grammar with English equivalents. (23) Miscellaneous sentences, idiomatic sentences, famous Sanskrit proverbs, shlokas for entertainment on occasions of marriage gatherings. (24) Addresses, letters, applications etc. and the important Sanskrit Metres. (25) The duties to be performed by a man during day and night.

The names of the chapters of the Second part are as follows :—

(1) The rules and examples of the Conjunction of Sanskrit letters (सन्धि). (2) Declension of great many words in common use in all the cases with their derivations (व्युत्पत्ति). (3) Indeclinables with their meanings (अव्ययार्थ). (4) Feminine affixes [स्त्रीप्रत्यय]. (5) Cases of nouns and pronouns with their uses [कारक]. (6) Rules, uses and examples of compounds [समास]. (7) Rules for nominal affixes [तद्धित]. (8) Conjugation [धातुरूप] of many important verbs with all constructions [प्रक्रियारूप] required. (9) Causative verbs [णिजन्त]. (10) Desiderative verbs [सन्नन्त]. (11) Frequentative verbs [यङन्त]. (12) Frequentative verbs rejecting यङ् [यङ्मुक्तान्त]. (13) Nominal verbs [नामधातु]. (14) Rules for the use of Parasmaipada [परस्मैपद प्रक्रिया]. (15) Rules for the use of [आत्मनेपद प्रक्रिया]. (16) Rules of intransitive passive [भाषकर्म] and Passive and Active voices [कर्मकर्तृप्रक्रिया]. (17) Rules for the use of Tense and Mood [लकारार्थ प्रक्रिया]. (18) Verbal affixes [दृष्टप्रत्यय].

विद्यार्थियों को परमोपयोगी पुस्तकें*।

सदाचार सोपान—इसमें लड़कों को माता, पिता और गुरु की भक्ति करने के लाभ और प्रातःकाल से लेकर सोने तक के धर्म कर्म बड़ी उत्तमता से बताया गया है। मूल्य -)

धर्मसोपान—इसमें धर्म के समस्त तत्व वेदादि धर्म ग्रन्थों के अनुकूल ऐसी सुगमता से लिखे गये हैं कि थोड़ेही काल में धर्म का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। मूल्य 1)

ग्रहचर्याश्रम—ग्रहचर्य की विद्यार्थियों का बड़ीही आवश्यकता है। इसी पर संसार के धर्मादि और परलोक की उपति निर्भर है। इसके पढ़ने से विद्यार्थियों का बहुत उपकार होगा। मूल्य 1) मात्र

चाणक्यनीतिदर्पण—यह नीति का सर्वोत्तम ग्रन्थ है। आजकल भारत-वासी मात्र को इसका पढ़ना आवश्यक है इसीसे इसको एक विद्वान् एण्डिडत के द्वारा सुन्दर हिन्दी टीका बनवा कर प्रकाशित कराई है। मूल श्लोक भेदे अक्षरों में और उन पर अन्वयाङ्क लिख कर नीचे पहले केवल अन्वयाङ्क के अनुसार संस्कृत हिन्दी में शब्दार्थ और फिर भावार्थ लिखा गया है। इससे संस्कृतज्ञ और नागरी जाननेवाले दोनों का विशेष उपकार सम्भव है। एक भाषा जान कर दूसरी भाषा भी सरलता से आसकी है। लगभग डेढ़ सौ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल 11-/- मात्र रखा है।

धर्मसङ्गीत—भारतवर्ष भर के सुप्रसिद्ध विद्वान् कविराजों के धर्मरस चुहचुहाते सङ्गीतों का संग्रह बड़ीही उत्तमता से किया गया है। इसके सङ्गीत श्रवण करतेही चित्त आनन्द मग्न हो जाता है। और धर्म की जागृति हो आती है। मूल्य 2) मात्र

आङ्गल सस्कृत प्रदीपिका—इसके द्वारा थोड़ी सी हिन्दी जाननेवाला भी थोड़ेही समय में निम्न प्रति व्यवहार में आनेवाली अंग्रेजी और संस्कृत घोलना, लिखना और पढ़ना सीख सकता है। क्योंकि इसमें क्रम बहुत सुन्दर रक्या गया है। पहले बहुत से छोटे २ शब्द और फिर उनका व्यवहार वाक्यों द्वारा दिखाया गया है। इसमें १० अध्याय हैं उनके नाम यहां लिखे देते हैं कि जिनसे इसका उपयोगी होना स्वयं ज्ञान हो जायगा। १ अध्याय में बहुत से व्यवहारिक शब्द, २ में समय व तथ्या शब्द, ३-स्कूल सम्बन्धी ४ देह के अङ्गों के नाम, ५ रिदनेदारी के शब्द, ६ सब प्रकार के कपड़ों के नाम, ७ भोजन के पदार्थ, ८ घर सम्बन्धी शब्द, ९ घर की वस्तुओं के नामादि, १० पशुपक्षी और धर्म सम्बन्धी बातें। इस्पर भी दाम केवल 1) मात्र।

न्यायादर्श—न्याय के अति कठिन तर्कसंग्रह ग्रन्थ को कि जिस्वी प्रत्येक बात कण्ठस्थ करना होती है विद्यार्थियों के हितार्थ बड़े परिश्रम से चित्रपर [नकशे] के रूप में प्रकाशित कराया है। जिसके द्वारा न्यायशास्त्र इस्तामल-कवत् प्रतीत होने लगता है। दाम -) मात्र।

मिलने का पता:— श्री सरस्वतीभण्डार काशी ।

श्रीगणेशायनमः ।

व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधः ।

गोत्राधिराजतनयातनयः सहितः श्रियां ।
 पायात्प्रत्यूहसन्दोहवारणो वारणाननः ॥ १ ॥
 अनङ्गशरखिन्नाङ्गीमालिङ्गोपभाषिणीम् ।
 जायतां श्रेयसे वोऽद्य कृष्णः कलितकौस्तुभः ॥ २ ॥
 अधीतविद्यानधुनातनोस्तान् विलोक्य तान्तान् व्यवहारिकोक्तौ
 शिष्यान् विनेतुं व्यवहारवाण्यामभाणि वाणी किलदेवतानाम् ॥ ३ ॥
 यद्यत्र स्वलितं भवेन्मम कृतौ शोध्यं बुधैरेव तत् ।
 प्रायासः प्रथमः प्रकल्पित इति ज्ञात्वा दयासागरैः ॥
 इत्येवं विनतो निवेदयति वो डिम्भः सुखानन्दको ।
 वालानां किल चेष्टितं गुरुजनानन्दाय सञ्जायते ॥ ४ ॥

प्रथमोऽध्यायः ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन— देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
मनुष्य	पुरुषः, पूरुषः, नर, नरः, मर्त्यः ।	बाल	केशः, कुन्तलः, कचः, चिकुरः ।
बालक	बालः, शिशुः, अर्भकः ।	रोम	रोमन्, लोमन् (न०) तनूरुहः ।
स्त्री	नारी, अङ्गना, अवला, वामा, योपित्, (स्त्री) ।	मूँछ ✓	गण्डलोमन्, (न०) गुम्फः ।
घाँस ✓	घशा, चन्ध्या ।	डाढी ✓	दमधु, (न०) कुचम्, मुख- रोमन् (न०) ।
चोटी ✓	शिखा, वेणिः (णी), धम्मिल्लः चूडा, कवरी ।	सिर	शिरः (न०), शीर्षम्, मूर्धा (पुं०), मौलिः, मस्तकः-कम्

१ । शोभया ।

२ । ह्यन्तान् ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
खोपड़ी	कपालः (लम्), कर्पूरः, शिरोस्थि (न०).	धूतइ	नितम्बः
माथा	ललाटम्, मस्तिष्कम्, मालपट्टम्, पटलम्	बाँह	दोः, [पु०] बाहुः, भुजः
मों	मूः, झूलता.	नाड़ी	स्नायुः (स्त्री०) शिरा, धमनिः मांसपेशी.
बाँस	सधुः, (न०) नेत्रम्, नयनम्, अक्षि (न०).	हाथ	हस्तः, पाणिः, करः, पञ्चशाखः
नाक	नासिका, घोंगा, गन्धहा नासा	कोहनी	कूर्परः, कफ [फां] णिः
मुँह	वक्त्रम्, आमनम्, मुखम्, मुण्डम्.	उँगली	अङ्गुलिः-ली ।
दाँत	दन्तः, रदः, दशनः, दंष्ट्राजम्भः.	अंगूठा	अङ्गुष्ठः ।
मसूँ	दन्तमांसम्.	चारउँगलि	तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका,
जीभ	जिह्वा, रसना, रसहा.	यों के नाम	
तालुआ	तालु, (न०) काकुदम्.	हथेली—	करतलः लम्.
फेफडा	फुफुसम्.	नाँह —	तलः-खम्, कररुहः, नखरः-रम्.
डाढ़	दंष्ट्रा.	शरार	कायः, देहः, शरीरम्, वपुः (न०) गात्रम्.
हलक	कण्ठः, गलः, फुकाः, निगरणः.	खाल	चर्म (न०) त्वक् (स्त्री०)
जयान	शुवा (पु०) तरुणः.	हड्डा	कीकसम्, कुल्यम्, अस्थि (न०)
बूझ	शृङ्गः, स्थविरः.	मांस	पिशितम्, मांसम्, पल्लम्, कण्यम्.
कान	कर्णः, धोत्रम्.	खरबा	मैदः (न०) घसा, घपा.
कानका मैल	कर्णकिट्टम्, कर्णमलम्.	हड्डाके माँत	मज्जा, सारः
ठोड़ी	चित्तुकम्, हलुः (पु० स्त्री०)	रकी खरयी	रधिरम्, अस्क् (न०) अस्त्रम्, रक्तम्.
गर्दन	घोषा, गलः, कन्धरः, शिरोधिः.	खून.	
कन्धा	स्कन्धः, अंसः ।	कलेजा.	युक्तम् (का), अग्रमांसम्.
पीठ	पृष्ठम्, पृष्ठदेशः	लार	सृणिका, स्थन्दिनी, लाला.
कमर	कटिः, धोणिः (णी), (स्त्री)	पैर की सुदही.	शुटिके, गुल्फी.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
जङ्घाकाऊ- परीहिस्सा	ऊरुः, सक्थि (न०)	छिनार	कुलटा, पुँखली, घन्धकी. ✓
मूत.	मूत्रम्, प्रस्रावः.	विधवा	विश्वस्ता, विधवा, रण्डा. ✓
मल.	पुरीषम्, गूधम्, विष्टा, शकृत्, (स्त्री).	सपी	आलिः, घयस्या. ✓
पुरुष का धीर्य	शुक्रः, [पुं.] धीर्यम्, रेतः, धीजम्.	सुहागिन	पतिवती, समर्तका. ✓
स्त्री का "	रजः, पुष्पम्, आर्तवम्.	दूती	दूतिः, सञ्चारिका.
अंडकोश	मुद्गकः, वृषणः. ✓	वेद्या	धारस्त्री, चारांगना, गणिका. ✓
कुचा	कुचः, स्तनः	खाविन्द	धवः, पतिः, भर्ता.
दिल.	मनः, (न०) मानसम्, चित्तम्, हृदयम्, हृत्, चेतः (न०)	जार लवार	जारः, उपपतिः.
मूत्राशय.	वस्तिः. ✓	जेर	उत्थम्, जरायुः, गर्भाशयः.
गुदा.	गुदम्, अपानम्, पायुः, (पुं०) मलद्वारम्.	सोबर	सूतिगृहम्.
बुद्धि.	बुद्धिः, मनीषा, श्रियणा, प्रज्ञा, शैमुषी, धीः ।	गर्भ	गर्भः, घृणः (कुक्षिस्थस्य प्रा- णिनः नाम).
पेट.	उदरम्, जठरम्, तुन्द्रम्, कुक्षि	मानना	मन्यते.
डूँडी.	नाभिः (भी), उदरावर्तः	लाना	आनयति, आहरति, आवहति प्रापयति ।
बाँते.	अन्त्राणि ।	काजल	कज्जळं, निदधाति, नियोजय- ति, अनक्ति.
लिंग.	लिंगम्, उपस्थः, शिश्नः, मेढ	लगाना	जिघ्रति, ✓
योनी.	योनिः, भगः- (गम्).	सूँचना	घ्राव्यति, नि-घ्रायति । ✓
पैर	पादः, पदम्, चरणः-णम्, अंग्रि	थूफना	प्रसते, निगरति.
पसँ	प्रसृतिः.	निगलना	उद्विरति ।
चुटकी	छोटिका	डकारना	छौति, क्षयधुं करोति । ✓
मुका, मुठी	मुष्टिका.	ऊँकना	वसति, उद्रमति ।
		कै करना	नसः मलं त्यजति ।
		नाक साफ	कासते, क्षौति ।
		करना	
		खकारना	
		खाँसना	

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
छूना	स्पृशति ।	सीटो बजा	शीराशब्द करोति ।
हँसना	स्मयते, हँसति, मन्दस्मितम् करोति ।	ना	
चिपटना	आश्लिष्यति, आश्लिङ्गनं करोति, सञ्जति ।	मारना	हन्ति, प्रहरति, ताडयति, अभिहन्ति ।
पेशाय क०	मेहति, मूत्रयति-ते ।	लतमुक्ता-	लक्ष्या-पादेन, मुष्टिना-हन्ति,
विशा जाना	पुरीषमुत्सृजति, हृदते ।	मारना	ताडयति, युष्यते, प्रहरति ।
खी प्रसङ्ग करना	अभिगच्छति, संगच्छते, मैथुनं करोति,	खोदना	खनति, [भूमि] अयदारयति, भिगति
भोजन करना	आस, प्रसत, खाति, अश्नाति	मरना	म्रियते, प्राणांस्त्यजति
नहाना	मक्षयति, भुङ्क्ते, अभ्यवहरति	पहरना	परिधत्ते
कुत्ता क०	स्नाति, मज्जति, गाहते	उतारना	अवतारयति, अपनयति ।
चखना	गण्ढ्यं करोति	करना	करोति, विद्धाति
पकड़ना	आस्वादते, लेटि ।	गालीवेना	शपति-ते, अभिशंसति, शा-
लेना	गृह्णाति, गृह्णीते, धरति, धारयति, घभाति ।	घ घुराफ-	पं ददाति, आक्रोशति, ग-
उबटन क०	उद्धर्त्तनम्, उत्सादनम् करोति-ते, अभ्यनक्ति ।	हना	हयति ।
कखरतक०	ध्यायच्छति ।	आशीर्वाद	आशास्ते, आशिपं ददाति-
कुस्ती, क०	मह्युज्ज करोति बाह्याह-पि युष्यति ।	वेना	ते, अभिनन्दति ।
चलना	चल-र-ति, प्रगति, प्र क्रमात्-ते	हूयना	निमज्जति, मज्जयति [प्र०]
आना	यागच्छति, आयाति	अभिमान	वि-रथते, दृप्यति ।
स.ना	स्वपति, शेत, निद्राति ।	करना	
जागना	जागति, प्र वि-बुध्यते, निद्रां त्यजति ।	नपेशकरना	तपयति ।
		दहनकरना	जुहोति ।
		रोकना	अवरुणाद्भि ।
		जप करना	जपति,
		काना फूसी	कर्षे जपति ।
		करना	
		शुरू करना	प्रारभते, उपक्रमते, प्रव्रमते ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
रोना	रोदिति, विलपति, आक्रन्दति, अश्रुणि घातयति.	काँपना नाचना	कम्पते, वेपते. नृत्यति, नटति.
हँसना करना	उपहासं करोति, उपहंसति.	डरना	विभेति, सं-वि-शस्यति
आश्चायना करना	आश्चायति आदिशाति.		उद्विजते.
आश्चायना देना	अनुमन्यते, अनुजानाति, अनुमोदने, अनुजानीते.	धयदाना	मुह्यति.
धूमना	परिभ्रमति, पर्यटति.	स्नाफ करना	शोधयति, मार्ष्टि, मार्जयति प्रे०
धुमाना	भ्रामयति.	तलाकदेना	त्यजति, निराकरोति.
बहसकरना	वियदते.	डाहकरना	असूयते, ईर्ष्यति, [चतुर्थ्या- सह] परोत्कर्षं न सहते, मृष्यति.
भागना	पलायते, धायति-ते, अपभ्र- मति-ते, प्राम्यति, विद्रवति, परैति, अपधायति, सरति.		

पहिला पाठ—प्रथमः पाठः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
पुरुष अपनी बुद्धि से अत्यन्त बलवान् सिंहादि जीवों को भी बश कर लेता है. स्त्री को चाहिये कि पति की सेवा करनेवाली होये और उसको ही ईश्वर तुल्य माने.	पुरुषः स्वबुद्ध्याऽतीव बलवतोऽपि सिंहादीन् जीवान् बशमानयति.
माधव के बड़ी भारी चोटी है तू भी ऐसी ही रख.	योपित्पतिभक्ता भवेत् तमेव चेश्वरतु- ल्यं मन्येत.
कृष्णदत्त के बाल मुलायम हैं.	अस्त्यतीव दीर्घो धम्मिहो माधवस्य त्वमन्येतादृशं स्थापय.
भोजदेव के बाल बड़े कड़े हैं.	कृष्णदत्तस्य केशाः सुकोमलास्सन्ति. भोजदेवस्य चिकुरास्त्वतीव प्रखराः.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

तुम्हारे देह के थाल और डाढ़ी लौहरी हैं.

स्त्रियों के मुह पर मूँछें नहीं होतीं.

बहुत से गोरे डाढ़ी मूँछ नहीं रखते. गोविन्ददेव का शिर बुढ़ापे से कांपता है. कृष्णदत्त ने रामदास के सिर में येसी लाठी मारी जिससे उसकी खोपड़ी फूट गई.

नारायण का माथा बड़ा चौड़ा है इस लिये यह धनयान है.

केरावदत्त का भौं चलाना तो देखो. आँसों के बिना जीने से क्या ?

माधव की नाक तोते की सी दिखाई देती है.

उसके मुँह में बहुत से छाले हैं.

गोविन्द रोकमरो दाँवें करता है इसी लिये उसकी दाँतों की कृत्तार बड़ी उजली है.

जीवों को जीम से ही रस का ज्ञान होता है.

देवदत्त ! आँसों में कज्जल लगाओ.

कृष्ण अपनी नाक से फूल सूँघता है.

देवो साँप आपके सामने मूँसे को निगलता है.

बुढ़ ! नाक क्यों नहीं साफ़ करता.

सन्ति लोहितवर्णानि तव देहलोमानि इमभ्रणि च.

स्त्रीणां गण्डस्थले गण्डलोमानि न भवन्ति.

बहुवां गुरण्डाः श्मश्रुगुम्फौ न दधते.

गोविन्ददेवस्य शिरः वार्धक्यात्कम्पते.

कृष्णदत्तेन रामदासमूर्ध्नि ईदृग्यष्टिमिह्वारः कृतः येन तत्कपालो भग्नः ।

नारायणस्य मस्तिष्कमतीव विपुलमत एव स धनाढ्यः.

केरावदत्तस्य भ्रूचालनन्तु पश्य ।

विनाशिभ्यां (णी) किं जीवितेन ?

माधवस्य नासिका (घोणा) शुक्रनासा-वद्दृश्यते ।

तस्य मुसे बहवो विस्फोटका विघ्नन्ते.

गोविन्दः प्रत्यहं दन्तधायनं करोति

अत एव तस्य दन्तपंक्तिरतीव शुभ्रा.

जिह्वयैव रसज्ञानं भवति जीयानाम् ।

देवदत्त ! अश्रुणोः कज्जलं निधेदि ।

कृष्णः स्वयन्सा पुष्पाणि जिघ्रति.

सर्पो भयताम् समक्षं मूपकं प्रसत इति पश्यत

बुढ़ ! नसः मूलं कथं न त्यजसि क्षालयसि

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तालुप से बोलने जानेवाले अक्षर तालव्य होते हैं.	तालुना प्रोच्यमाना घर्णास्तालव्या भवन्ति.
हिंस्रक जीवों की डाढ़ बड़ी मजबूत और पैनी होती है.	श्वापदानां दंष्ट्रा अतीव दृढा निशिताश्च भवन्ति.
नाका बेहलक होता है यह सुना जाता है क्योंकि यह जीवों को पकड़ के पक साथ निगल जाता है.	नक्रः निर्गलो भ्रष्टतीति श्रूयते यतः स जीवानाक्रम्य (धृत्वा) युगपदेव निगलति.
आज तु बहुतही खांसता है इसमें क्या सबब है.	अथ त्वमतीव काससे (क्षौसि) इत्यत्र किंकारणम् ?
कल मैंने दही खाया था यही सबब होगा.	ह्यो मया दधि भक्षितमेतद्वि कारणं भवेत् .
देवदत्त कानों से ठीकर नहीं सुनता, तो क्या वह बहिरा है? और क्या.	देवदत्तः कर्णाभ्यां यथावन्न शृणोति, तर्हि स किं बहिरा? आम्, (अथ किं) [षादम्].
हनुमान की ठोड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी थी. गोबर्धन की गर्दन बहुत बड़ी और शह्र कीसी है.	हनुमतश्चिबुकमत्यायतमासीत् . गोवर्धनस्य कन्धरातीव वीर्यां शङ्काळतिश्च विचते.
शूर वीरों के कन्धे बड़े ऊंचे होते हैं. भीमसेन कुन्ती सहित चारों भाइयों को अपनी पीठ पर चढ़ा कर सुरङ्ग द्वारा लाखा भवन से बाहर निकल गया.	शूराणां स्कन्धावत्युन्नतो भवतः, भीमसेनः कुन्त्या सह चतुरोऽपि भ्रातृन् स्वपृष्ठमारोप्य सुरङ्गया लाक्षाभवनाद्बहिर्निस्सृतः.
नखकैया अपनी कमर में (चूतरो के ऊपर) कौंधनी बांध कर नाचता है. स्त्री का रज और पुरुष का वीर्य मिल कर सन्तति उत्पन्न होती है.	नर्तकः स्वकट्यां (नितम्बस्योपरि) क्षुद्रघण्टिकां बद्ध्वा नृत्यति. स्त्रिया रजः पुरुषस्य शुक्रो मिलित्वा सन्ततिरुद्भवति.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

श्रीराम के भुज दण्ड के प्रताप से दुष्ट डरते हैं.

श्रीरामस्य दोर्दण्डप्रतापेन दुष्टास्त्र-
स्यन्ति.

वह हाथ से मुझे धूता है ।

स हस्तेन मां स्पृशति

हकीमजी मेरे देह में कुछ हड़चल है
रूपा कर नाज़ी तो देखिये.

भिषग्वर ! मम देहस्यास्वास्थ्यं वर्तते-
रूपया नाडिन्तु परीक्षस्व.

जय उसने मुझ बेकसूर को भो कोहनी
से मारा तब मैंने उसके लात मारी.

यदा स मां निर्दोषमपि कूपरेणाताड-
यत् तदाहं त लसया प्राहरम्.

क्या तुम अंगुलियों के नाम भो जान-
ते हो.

किं त्वमङ्गुलीनां नामान्यपि चेत्सि ?

जानता हूं तुम भी सुनो । पहिला तो
अंगूठा, दूसरी तर्जनी, तीसरी मध्य-
मा (बीच की) चौथी अनामिका
और पांचवी कनिष्ठिका (कनी).

वेद्व्यहं त्वमपि शृणु । प्रथमस्त्वङ्गुष्ठः
द्वितीया तर्जनी तृतीया मध्यमा चतु-
र्थीअनामिका पञ्चमी कनिष्ठिकेति.

भाग्य उलटा होने पर हाथ में आँह
हुई चीड़ भी भए हो जाती है.

दैवप्रातिकूल्ये करतलगतमपि घस्तु
नश्यति.

मनुष्य अपने देहों की रक्षा करे क्यों
कि यही धर्म कर्म के हेतु हैं.

मनुष्याः स्ववपूंषि रक्षेयुः यत पतान्ये-
षु धर्मकर्महेतूनि सन्ति.

उसकी खाल घड़ी कड़ी है हिंसक
जीवों से भी फाँसी नहीं जा सकी.

तस्य त्वगतीव कठिना भ्यापदैरपि
भेतुं न शक्यते.

रस, लोह, माँस, चरबी, हाड, मज्जा
और धीरे से सात देह की धातु हैं.

रसाच्छर्मांसभेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि,
इति सात देहस्था धातयः.

कार्य को कुल्ल कर इस बालक को जोह
कतरवाभो.

नापितमाङ्गयास्य बालस्य कररुहान्कर्तव्य

इसका हिम्मत बहादुर दिल दु.ख की
बशा में भी नहीं घबराता है.

अस्य साहसिकं मनः विषभावस्थाया-
मपि न मुञ्चति.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>दामोदरदास की बुद्धि सराहनीय है जो सोलहवें वर्ष में एम. ए. परीक्षा में पास हुए।</p>	<p>सुखाप्या प्रह्ला दामोदरदासस्य यः षोडशतमेऽब्दे मास्टर आफ आर्ट्सेति परीक्षायामुत्तीर्णोऽभवत्।</p>
<p>शङ्करदत्त का पेट तो बड़ा है परञ्च ज्यादा नहीं खाता।</p>	<p>शङ्करदत्तस्योदरन्तु पृथु परञ्चाधिकं न भुङ्क्ते।</p>
<p>गोपीवल्लभ की टूंडी बड़ी गहरी है वह हर रोज प्रातःकाल ही न्हाता है। मनुष्य भोजन के पीछे १६ कुल्ले करे। कृपा करो और यहाँ से जल्दी जाओ। यह दाहव हथेली पर रख कर उंगली से चाटता है।</p>	<p>गोपीवल्लभस्य नाभिरतीव गम्भीरा घर्त्तते, स प्रत्यहं प्रत्यूष एव स्नाति। जनः भोजनान्ते षोडशगण्डूपात्कुर्यात्। कृपां कुरु अतःशीघ्रं गच्छ च।</p>
<p>मनुष्य पाखाना फिरने के बाद डेले धौरः से गुदा साफ करे और फिर जल से।</p>	<p>जनो मलस्यागानन्तरं लोष्टादिना गुवं परिमार्जयेत् ततो जलेन च।</p>
<p>बड़े जोर से न पादे और न रोके। उसके मुँह पर बहुत सी फुन्सी हैं। श्रीराम का शरीर सर्व लक्षण सम्पन्न है। उसकी जाँघें केले के खंभों की नाई हैं। मेरी परिया में बैल ने लात मारी। श्रीमान् गुरुजी के चरण कमलों को नमस्कार हो।</p>	<p>नोभैरपानघायुं मुञ्चेत् नचावरुन्ध्यात्। तस्य मुखे वहवः पिटिका विद्यन्ते। श्रीरामस्य शरीरं सर्वलक्षणसम्पन्नमस्ति। तस्याः उरु कदलीस्तम्भवस्तः। मम गुल्फे वृषभेणपादग्रहारः कृतः।</p>
<p>श्रीमान् गुरुजी के चरण कमलों को नमस्कार हो।</p>	<p>नमोनमः श्रीमद्गुरुचरणकमलेभ्यः।</p>
<p>मित्र ! बहुत दिनों में देखा है आओ मुझसे मिलो।</p>	<p>मित्र ! विराद्दृष्टोऽसि पहि मामात्रिऽप्यं।</p>
<p>इस धड़े को पकड़ो नहीं तो ज़मीन में गिर पड़ेगा।</p>	<p>इमं धटं गृहाण मोचेदयं पृथिव्यां पति- स्यति।</p>
<p>इस बालक के मुख से बड़ी लार बहती है।</p>	<p>अस्य बालस्य मुखाद् महती लाला बहति।</p>

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन — देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इस सौंके को लाकर मेरे कान का मेल निकालो।
 हृकाम रोग को जांच के लिये नाड़ी मल और मूत्र को जांच करते हैं, मनुष्य को चाहिये कि घायों को थड़े जतन से रक्षा करे,
 विना अण्डकोशों के थोड़े अरुता कहलाते हैं,
 मोहनो नाम की स्त्री अपने जोड़ों को बुद्धियों से दूध पिलाती है,
 उसके वास्ति (टूंडों से नाँचे का हिस्सा) प्रदेश में बड़ी तकलीफ है। डाक्टर को दिखाओ,
 माता व्याह के वरू बेटेका उबटन करती है,
 गोविन्द व्याकरण पढ़कर अथ काव्यादि पढ़ता है,
 उसने अजीर्ण में था लिया इसीलिये के कर दी,
 जो रोज मरह फसरत करता है वह हमेशा बेंगा रहता है,
 आज मेले में बहुत से मलह कुश्ती लड़ेंगे स्त्री जरूर ही देखना चाहिये,
 घोड़ा अच्छा चलता है,
 जो भरेसाथ बले वह आभो,

इमां शलाकामादाय मम कर्णाकट्ट निष्काशय,
 वैद्याः रुग्णपरिक्षार्थं नाडीं मलमूत्रञ्च परीक्षन्ते,
 जनः शुकं यत्नेन परिरक्षेत्,
 अब्रूयणा बभूवा अख्तेति कथ्यन्ते,
 मोहिनी नाम्ना स्त्री स्वयमजौ कुचाभ्यां स्तन्य पाययति,
 तस्य वास्तिप्रदेशे महतां वेदना वर्तते । वैद्य प्रदर्शय,
 माता विवाहसमये पुत्रस्योद्धतं करोति,
 गोविन्दो व्याकरणमधोत्पाधुना काव्यादीन्पठति,
 सोऽजीर्णोऽमुश्क अत एवोदयमत्,
 यो नित्यं व्यायच्छति (व्यायामं करोति) स स्वदैव स्वस्थो वर्तते (आस्ते) (भयति),
 अथ महोत्सवे बहयो मह्नाः मह्युजं करिष्यन्ति तदवश्यमेव द्रष्टव्यम्,
 साधु विक्रमते चाजी,
 यो मया सह चलतु स जागच्छतु,

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

आज कलके घमृत से लोग अपनी तुच्छ बुद्धि की युक्तियों से मूर्खों के साथ यहस करते हैं.

जहाँ इनकी असलियत को जानने वाले पण्डित हैं तहाँ से तो भाग जाते हैं.

क्या यह मदन मोहन सोता है ?

नहीं अभीतो जागता है.

वहाँ सीटी कौन धजाता है. उसे यहाँ लाओ मैं माऊंगा.

भाई ! देवदत्त ने मुझको मुँहसे मारा और मैंने उसको लानसे मारा.

रास्ते में गढ़वा कभी न गोदो । जो गोदता है वही गिरता है यह मशहूर है.

अक्सर जीवों के फलेजे और हृदय में ज्वादह चरघी होती है.

प्यार ! आज नये कपड़े पहिनो.

जाफके गायें में कल कौन मरा ?

एक बूढ़ा कुम्हार मरगया यह सुना है. सोचर में मत आओ.

यह कौन धीकृता है ? यह नारायण है और कोई दूसरा नहीं है.

यह घोड़ा बहुत से घोड़ने लड़ाहुआ दिग्गई देता है इसफा घोड़ा उतारो.

पोटी खियां अपने पुरखों को छोड़कर जागों से स्नेह रखती हैं.

आधुनिका बहयो जनाः स्वक्षुद्रबुद्धि-युक्तीः पुरस्कृत्यापण्डितः सह विचरन्ते.

यत्र तन्मर्मज्ञाः पण्डिता विद्यन्ते ततस्तु परिद्रवन्ति.

किमयं मदनमोहनः स्वपिति (शैते) ?

न, आद्यापितु जागति.

कस्तत्र शीशं शब्दकरोति । तमप्रानय ताडयिष्याम्यहम्.

भ्रातः ! देवदत्तो मां मुष्टिनाताडयन्, अहश्च तं लक्ष्यां प्राहरम्.

मागं कदापि गर्तं न खन । यः खनति स एव पततीति प्रसिद्धम्.

प्रापो जीवानां युजायां हृदये चाधिका वसा भवति.

प्रिय ! अद्य नूतनानि वस्त्राणि परिधत्स्य.

भवतां शान्ते ह्यः शोऽङ्घ्रिवत् ?

एको बृद्धकुलालः प्राणामत्यजद्वितीश्रुतं सूतिगृहे मागच्छ.

कोऽयं शैति ? नारायणोऽयं न कोऽप्यपरः.

यद्भाराङ्गान्तोयमश्वो हृदयते, अम्य भारमवतारय.

पुंश्चत्यः स्वपतीन् हित्वा जागान् भजन्ते.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।

देखी बन्दर तालाब में कैसे तैरते हैं। जो मनुष्य जल में तैरना नहीं जानता वह गहरे पानी में डूबर ही डूब जाता है।

जेर में लिपटा हुआ गर्भ पेट में ही माता के स्नाये हुए अणु के रस से पुष्ट होता है।

देवदत्त देवताओं के लिये रोज हवन करता है।

आज कल के महाशय इस हवन को पवन शोधन के लिये ही कहते हैं परन्तु पहिले लोग नहीं उनका आपस का भेद तो देखो।

जो हवा शुद्ध करने ही के लिये हवन होय तो अपने कपोल कल्पित ग्रन्थों में हवन मन्त्रों से क्या ?

यह खयाल करने की बात है।

यह कौन है ? यह मेरी बँहदोली है ।

क्या यह सुहागिन है वा विधवा।

आस्तिक लोग देवता और पितृ लोगों को तर्पण करते हैं।

गणेशदत्त को बुलाओ।

वहतो सन्ध्या करता है।

सिर्फ अपने शास्त्रों के न जाननेवाले अंग्रेजी फारसी जवान के जाननेवाले फिजूल बकबाव करते हैं।

संस्कृत ।

बानरास्तङ्गागे कथं प्लवन्त इति पश्य.

योजनो जलप्लवनं न जानाति स गम्भीरजलेऽवश्यमेव निमज्जति.

उल्बेनावृतो गर्भः जठर एव मातृस्वादितेनाश्रसेन पुष्यति.

देवदत्तो देवानुद्दिश्य नित्यं जुहोति.

आधुनिका महाशया पतञ्जलं पवनशोधनार्थमेव वदन्ति न तु पूर्वं पश्यत तेषां परस्परभेदम्.

यदि पवनशुद्ध्यर्थमेव हवनं स्यात् तर्हि स्वकपोलकल्पितग्रन्थेषु हवनमन्त्रैः किम् ?

पतञ्जिन्यम् ।

केयं ? इयममाळिः । किमियं पतिवन्ती विधवा वा.

आस्तिका देवान् पितॄन्व तर्पयन्ति.

गणेशदत्तमाकारय.

स तु सन्ध्यामुपास्ते.

केवलमविदितस्वशास्त्रा हल्लिशापारसिकभाषावेत्तार एव वृथा विकल्पन्ते.

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—देहानववविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इसको आदत बहुत खराब है यह हमें-
शा दूसरों को बुराईयों को दूसरों के
कानों में कहा करता है।

क्या वेदया भो गर्भधारण करता है?
वह मृत्युञ्जय का जाप अरिष्ट निवारण
करने के लिये शुरू करता है ।

दूतियों का क्या लक्षण है? न मालूम,
यह आपका सेवक मौजूद है मुझे
हुकम दोजिये में क्या करूं।

यह फोन रोती है? कोई भूखी भि-
कारिन है।

बालक उसकी हँसी करते हैं।

बहुत से भिखारी एकही दिन में बहुत
से गायों में भीख के लिये घूमते हैं।
मैलनिकाला कानका मैल निकालता
है।

अब्दुल्लाखां मुसल्मान ने कल अपनी
छाँ को तलाक देदी।

पाँच महायज्ञ नीचे के श्लोक में दि-
खाये हैं।

अध्यापन (पढ़ाना) ग्रहयज्ञ, तर्पण
पितृयज्ञ, होम दैवयज्ञ, बलि भौतयज्ञ,
अभ्यागत पूजन नृयज्ञे।

हे तो परन्तु यह साफ नहीं है महर-
बानी कर इसको आप खुलासा करो
यह किसी शिष्य की किन्हीं शुरुओं

अस्य प्रकृतिस्वतोव दुष्टाऽयं सर्वदा
परदोषान् परेषां कर्णे जपति।

किं वारस्त्रियोऽपि गर्भधारयन्ति,
स मृत्युञ्जयस्य जापमरिष्टनिवृत्तय-
आरभते।

दूतीनां किं लक्षणं? न जाने,
एषोऽहं तव सेवकः आज्ञापय मां किं
महं करोमीति।

केयं रोदिति? अस्ति काचिरक्षुधार्ता
भिक्षुर्का।

बालकास्तामुग्रहसन्ति।

वहवो भिक्षुका एकस्मिन्नेव दिने बहुषु
ग्रामेषु भिक्षार्थम्पर्यटन्ति।

कर्णमलनिस्सारयिता कर्णकिट्टं नि-
ष्काशयति।

अब्दुल्लाखाँभिधो यवनः हाः स्वस्त्रियं
निराकरोत्।

पञ्च महायज्ञा निम्नश्लोके प्रदर्शिताः।

अध्यापनं ग्रहयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्
होमो दैवः बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि
पूजनं।

अस्ति तु परश्रैपान स्पष्टा रूपया स्प-
ष्टीकुर्वन्तु भवन्त इति कस्यचिच्छि-
ष्यस्य पाँचिद्गुरुभृत्युकिरियम् ।

देह के कुल अङ्ग इत्यादि का वर्णन—उद्देहावयवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

के लिये कहन है । गुरु—सुनो,
चला—चुनता हूँ ।

अध्यापन अर्थात् वेदादि का पढ़ाना
पहिला यज्ञ है; अन्नजल इत्यादि से
पितृनर्पण करना दूसरा यज्ञ है;
हवन और चलिष्वैश्वदेव यह तीसरा
यज्ञ है; बलि (भेंट) देना यह चौथा
यज्ञ है; घर आये हुए अतिथियों को
अन्नजल से पूजा करना पाँचवाँ
यज्ञ है ।

गुरुः—श्रुयतां, शिष्यः—शृणोमि ।

अध्यापन कोऽर्थः वेदादेः पाठनम् प्र-
थमोयज्ञः; अन्नोदकादनापितृणां नर्प-
णद्वितीयः; होमः वैश्वदेवहोमश्चतु-
तीयः; बलिहरणं चतुर्थः; अतिथी-
नां गृहाणानामन्नादिना सपर्य्या
पञ्चमइति ।

दूसरा अध्याय — द्वितीयोऽध्यायः ।

वस्त्र इत्यादि का वर्णन — वस्त्रविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कपास	पिञ्जु; (पुं) तुल; कर्पासः वसनम्, अंशुकम्, वासः	अगरस्ता	अङ्गरक्षणी. —
कपड़ा	(न०) चैलम्.	घोतो	अधोबल्लम्.
पगड़ी	उष्णीषम्.	पाजामा	जङ्घाघ्राणम्, जङ्घाचस्त्रम्.
टोपी	शिरस्त्राणम्, शिरस्कम्, शिरोवेष्टनम्.	पतलून	कटिसूत्रम्—रक्षणा. —
उपट्टा	उत्तरीयः.	फमरबन्द	पादघ्राणम्. —
चादरा		मोड़े	नीशारः.
गलेबन्द	गलवन्धनान्शुकम्.	रङ्गई वा दुलारै	उत्तरच्छदः, शय्याच्छादः
मिजई	फान्शुकः, निचोलः.	चादरजान	नम्, प्रच्छदः.
कुर्ता, कोट		पोश दड़ी फैटा	परिकरः.

वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
तकिया	उपवर्हणम्, उपवर्हः, उप- धानम्.	नारंगी	पिच्छिलः, कौसुम्भी-भः.
रूमाल	करधस्त्रम्. —	प्याजू	पलाण्डुवर्णः.
जाँघिया	जङ्घावस्त्रम्. —	हरा	हरित्, हरिद्वर्णः.
लोई, कंबल	रङ्गकः, कम्बलः.	केशारिया	केशारवर्णः, कुंकुमवर्णः.
लहंगा	चण्डातकम्—कः —	कपूरिया	कर्पूरवर्णः.
आँगो	बोलः	घुसना	प्रविशति.
ओढ़ना	शाटिका.	साँना	वि नि सौव्यति (सिब्).
साड़ी		उठना,	उत्तिष्ठति, अधतिष्ठति.
रेडामोथर	कौशिकम्, शौमम्, दुक्- लम्, कौशाम्बरम्.	रङ्गा होना	सं+आ+परिस्वृणाति.
पड़दा	जवनिका, तिरस्कारिणी.	विछाना	क्रोणाति, क्रोणीते.
रंग	वर्णः, रागः, रङ्गः.	खरीदना	विक्रीणाति, विक्रीणीते.
नीला	नीलः, श्यामः.	बेचना	कतेति, कतेयति, (प्र०)
काला	कृष्णः, कालः, असितः.	कातना	वयति, तन्तून् करोति
पीला	पीतः, पीतलः, हरिद्राभः.		सृजति.
लाल	रक्तः, लोहितः, शोणः.	घुनना	वयतिते, वयतिने, शुम्फति,
भूरा सपेद	श्वेतः, शुक्लः, धवलः, सितः.	वैठना	विरचयति.
धँजनी	धूम्रः, धूमलः, नीललोहितः.	रेंधना	तिष्ठति, आस्ते, निपोदति,
शुलाघो	पाटलः, जपासवर्णः.		उपविशति.
			रञ्जयति.

हिन्दी ।

संस्कृत ।

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्रों को पहनता है तैसेही यह प्राणी पुराने देह को छोड़ कर नये को लेता है ।

यथा नरो जीर्णानि वासांसि विहाय नवान्यं शुक्नि परिधत्ते, तथैवायं देही पुराणं देहं परित्यज्य नूतनं गृह्णाति.

वस्त्र इत्यादि का वर्णन—वस्त्रविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

कचहरी में बिना पगड़ी का कोई भी आदमी नहीं घुसता है.

मेरी टोपी कहां गई उसे ढूँढ कर यहां लाओ.

मेरा दुपट्टा तो खूँटी से उतार दो.

जाड़े के मौसम में गुलूबन्द बहुत सुखदायक होता है.

कल में दो कुर्ते सिलवाऊंगा.

क्या आपके पास मेरी धोती है? नहीं तो कैसे न्हाऊं.

तुम्हारे पाजामे में तो कमरबन्द भी नहीं है.

यह लो, मैं देता हूँ। मोज़े भी पहन लो.

शर धीर लोग फेंटा धांधकर लड़ाई के लिये बड़े होते हैं.

रात में ओढ़ने के लिये चादरा लाओ. साट पर धिछौना बिछाओ.

अब रज़ाई की जरूरत नहीं है.

जो कोई तकिया हो तो देओ.

कल मेंने पांच रुमाल खरीदो.

कम्बल सब मौसमों में सुखदायक है.

पीकानेर की लोई बहुत अच्छी होती है.

बह ली साड़ी उतार लहंगा पहनती है.

अक्सर स्त्रियां जाड़े के मौसम में उलाहियां ओढ़ती हैं.

अधिकरणे ऽनुष्णोपः कश्चिदपि जनो न प्राविशति.

मम शिरस्त्राणां कुत्र गतं तदन्विभ्या-
प्राण यं.

ममोत्तरोयन्तु नागदन्तादवतारय.

शीतर्तौ शिरोधरांशुकमतीव सुखप्रदं भवति.

श्वोऽहं द्रौकञ्चुकौ सेवयितास्मि.

किं तव सञ्चिधौ ममाधोवस्त्रमस्ति ?
न तर्हि कथं स्नानायाम्.

तव जङ्घात्राणे तु कटिसूत्रमपि नास्ति.

अहं दवामीदं गृह्णाण । पादत्राणेऽपि परिधत्स्य.

शूराः परिकरं बध्वा युद्धार्थमुत्तिष्ठन्ति.

रात्रौ परिधानार्थमुत्तरीयमानय.

शय्योपरि शय्याच्छादनं प्रस्तारय.

नास्त्यावश्यकताधुना नीशारस्य.

यद्यस्ति किञ्चिदुपवर्हणं तर्हि देहि.

होऽहं पञ्चकरवस्त्राण्यमीणाम्.

सर्वतुंपु कम्बलः सुखप्रदः .

पीकानेरस्य राङ्गवस्त्रं प्रशैत्यतरं भवति.

सा स्त्री शाटिकामवतार्यं खण्डातकं परिधत्ते.

प्रायः स्त्रियः शीतर्तौ नीशारात्परिधत्ते.

धंस इत्यादि का वर्णन — वस्त्रविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>उसकी आँगिया कहाँ है ? वह तो धोती ही में लिपट रही है. रेशमी और ऊनी कपड़ा भजन पूजा में अच्छा होता है. यह पड़दा यहाँ क्यों लगाया है ? कपास से रुई निकलवा कर और उसे कतवा कर बहुत तरह के कपड़े बनाये जाते हैं. कोई रँगरेज़ बुला कर ग्यारह ओढ़ने अलग २ रंग के रंगने के लिये दो. आप कौन २ से रंग चाहते हैं सिर्फ उनके नामही ले दीजिये वे उसी रंग के हो जायेंगे। बहुत अच्छा. एक नीली, दूसरी काली, तीसरी पीली, चौथी लाल, पाँचवीं बैजनी, छठी गुलाबी, सातवीं नारंगी, आठवीं प्याज़ू, नौवीं हरी, दसवीं केसरिया, ग्यारहवीं कपूरिया बगैरह. सैमल की रुई और आक की रुई से भरा हुआ तकिया या बिछौना गरम और मुलायम होता है.</p>	<p>तस्याधोलः कुत्र वर्तते ? स तु शाटिकायामेवालम्नः. क्षीमं और्णञ्च वसनं भजनपूजादिपु प्र- दास्तं भवति. किमर्थमारोपितैषा जवनिकाऽत्र ? कार्यासात्तुलं शोधयित्वा तत्कर्तयित्वा च बहुविधानि वस्त्राणि विरचयन्ते, (निर्मायन्ते). कश्चिद्रजकमाह्वयैकादशशाटिकाःपृथ- क्पृथक् वर्णारञ्जनार्थं प्रयच्छ. भवान् कांस्कान्वर्णानभिलपति तेषां नामान्येव केवलं प्रचीतु तास्तु त- द्वर्णा एव भविष्यन्ति । धरम्. एका नीला, द्वितीया कृष्णा, तृतीया पीता, चतुर्थी रक्ता, पञ्चमी नील- लोहिता, षष्ठी पाटला, सप्तमी कौ- सुम्भी, अष्टमी पलाण्डुवर्णा, नवमी हरिद्वर्णा, दशमी केशरवर्णा, एका- दशी कर्पूरवर्णा चेति. . शाल्मलितूलेनार्कतूलेन भृतमुपवर्ण- मास्तरणम्बोष्णं कोमलञ्च भवति.</p>



तीसरां अध्याय—तृतीयोऽध्यायः ।

गहने इत्यादि का वर्णन — आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
गहने	अलङ्कारः, आभरणम्, परि- ष्कारः.	विठिया	नूपुरः-रुम्, मञ्जीरम्.
तोड़ा, कठ- ला, कण्ठा	कण्ठिका, कण्ठाभरणम्.	जञ्जीर	शृङ्खला, शृङ्खलः.
अंगूठी, छेले	अङ्गुलीयकम्, ऊर्मिका.	नध	नासाभरणम्.
फाँधनी	मेखला, काञ्चिः-ञ्ची.	अल्मारी	काष्ठफलकम्.
दान्तकुरे- दनी सुई	दन्तशोधनी सूचिः.	कंधी	प्रसाधनी, कङ्कतः-तिका, केशमार्जनी.
बोहा	बन्तशोधनी सूचिः.	दुश	आकर्षणी, लोममयी मा- र्जनी वा शोधनी.
बन्दी, बैना	बालपाश्या, पारित्य्या.	दुर्षण	मुकुरः, दुर्षणः, आदर्शः.
चम्पाकली	रत्नमस्तकाभरणम्.	सुर्मा, का- जल	अञ्जनं, कज्जलं
गुलीचन्द	प्रियेयकम्, कण्ठभूषा.	साधन	फेनिलः, मार्जनलेपः, पल्यू- लम्.
हार, माला	लम्बनम्, ललान्तिका, हारः.	तेल, फुलेल	गन्धतेलम्, पुष्पवासितम्.
कमफूल	ताटङ्कः, कर्णिका, कर्णभू- षणम्, कुण्डलम्, कर्ण धेष्टनम्.	बिन्दी	विन्दुः (पु)
बाजूचन्द, जोशान	केयूरम्, अद्भुदम्.	शोभित होना	शोभते, राजति-ते.
मठिया	कङ्कणम्, कर्णभूषणम्.	यनवाना यनाना	निर्मापयति, निर्मांति, नि- मिंमिंते, करोति, विधत्ते, चिरचयति.
पहुंची	आयापकाः, कटकः, चलयः.	धारणकर्ता	धारयति.
मोती	मुक्ता, मुक्ताफलम्, शुक्ति- जम्.	(वाल) काइना	(केशान्) प्रसाधयति.
आरसी	अर्युष्टाभरणम्.	धोना	प्रक्षालयति.
चूड़ी	काचधलयम्.		
पापजेव लच्छे	पादभूषणम्.		

गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
लगाना चुराना	संयोजयति, निवेशयति. चोरयति, मुष्णाति, अप- हरति.	सौगन्ध खाना	शपति, शपथं करोति.
हिन्दी ।		संस्कृत ।	
<p>देखो गांविन्द को गर्दन में तोड़ा कैसा सोहता है.</p> <p>स्त्रियों का चूड़ी पहननाही अक्सर सुहाग का चिन्ह माना जाता है.</p> <p>उस औरत को उंगलियाँ अगूठी छल्लों से और अगूठा आरसी से अच्छा लगता है.</p> <p>यह आदमी सोने को काँधनी और सोने को जञ्जीर पहनता है.</p> <p>फल में सुनार से चाँदी को दान्तकुरेदनी सुई धनवाजंगा.</p> <p>स्त्रीलोग सिर में बोह्ला, बन्दी वैना माथे पर, कर्णफूल कानों में, चम्पा-फलो व हार गर्दन में, बाजू बाहों में, मटिया और पहुँची पहुँचे में, नथ नाक में, पायजेव लच्छे पाओं में, विछिया पैरों को उँगलियों में, काँधनी कमर में पहनती हैं.</p> <p>धनवानलोग अक्सर सोने की जञ्जीर गले में पहना करते हैं.</p> <p>गोपीनाथ आँवों में अञ्जन लगाता है.</p>		<p>पदय गांविन्दस्य कण्ठे स्वर्णकण्ठिका कथं शोभते.</p> <p>स्त्रीणां काचवलयधारणं हि प्रायः सौभाग्यलक्षणं मन्यते.</p> <p>तस्याः स्त्रिया अङ्गुल्यः अङ्गुलीयकैः राजन्ते, अङ्गुष्ठोऽङ्गुष्ठभूषणेन च.</p> <p>अयं जनो हेमीं मेखलां हेमं गलभूषणञ्च परिधत्ते.</p> <p>श्वोऽहं स्वर्णकारात् राजतीं दन्त-शोधनीं सुचीं निर्मापयिताऽसि.</p> <p>स्त्रीयो बालपादयां शीर्षे, स्त्रीमस्तकाभरणञ्च मस्तके, ताटकौ कर्णयोः, त्रैवेयकं लम्बनञ्च त्रीवार्यां, केयूरे बाहोः, कङ्कणे वलयौ च प्रकोष्ठे, नासाभूषणं घोणार्यां, पादभूषणानि पादयोः, नूपुपान् पादाङ्गुलीषु, मेखलाञ्च कट्यां धारयन्ति.</p> <p>स्वर्णशृङ्खलां प्रायो धनिनः कण्ठे (गले) धारयन्ति.</p> <p>गोपीनाथो नेत्रयोरञ्जनमनाक्ति.</p>	

गहने इत्यादि का वर्णन—आभूषणविशेषाः उपाभरणाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>वह खी माघे में सिन्दूर का बँदा और दान्तों में मञ्जन लगाती है.</p> <p>आभारों से फँधी लेकर बाल फाड़लो.</p> <p>क्या अभी तक मुँह नहीं धोया अपना मुँह तो शीशे में देस.</p> <p>अज्ञ में दुकान से बुरा और साबन मोल खूंगा.</p> <p>चन्दन ओर हुआ मेरे लिये भी लाना.</p> <p>यह गन्धी अतर बेचता है.</p> <p>यह अमोर मोतियों को माला पहनता है.</p> <p>यह ओरत मेरी ओरत का गुलीचन्द चुरा लेगई.</p> <p>उसको अबकेले में बुलाकर पूछो.</p> <p>जब उससे पूछा तब सोगन्ध सा गई कि मैंने कुछ नहीं चुराया.</p> <p>मोहनी नाम की खी गुलीचन्दही पहनती हुई देखी है नकि कद्रफूल और चन्दी घेना.</p>	<p>सा खी मल्ल के सिन्दूरस्य विन्दुं दन्तेषु मञ्जनञ्च सयोजयति (निवेशयति). काष्ठफलकात् कद्रुतिकामादाय फेदान् प्रसाधय.</p> <p>किमद्यावधि मुप्यं न प्रक्षालितं स्ववस्त्रन्तु मुकुटे पश्य.</p> <p>अद्याहं विपणितः लोममयीं धारिणीं फेनिलञ्च केप्यामि.</p> <p>चन्दनं चन्दनघर्षणवण्डञ्च मदर्थमप्यानय.</p> <p>गन्धतैलविश्रिताऽयं पुष्पपातितं तैलं विक्रीणीते.</p> <p>धनाढ्योऽयं मुक्ताफलवज्रं धारयति.</p> <p>सा खी मम स्त्रियाः प्रियेयकमपहरत्.</p> <p>नामेकान्न आह्वय पृच्छ.</p> <p>यदा सा पृष्टा तदा मया न किमपि चोरितमिति शपथमकरोत्.</p> <p>मोहनी नामो खी प्रियेयकमेव दधाना दृष्टा न कर्णिकं ललाटिकाश्च.</p>



चौथा अध्याय — चतुर्थोऽध्यायः ।

ग्रहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—ग्रहस्थवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
खड़ाऊं	पादुका.	घड़ा	घटाः, कलशाः.
जूता	उपानत(स्त्री)चरणपादुका.	ईढरी	घटाभारयन्त्रम्.
	पादुः	चलनी	चालनी, तितउः (पुं)
चौकी,	काष्ठपीठः.	रई	मन्थः, मन्थदण्डकः.
स्टूल		बुहारी	संमार्जनी, शोधनी.
मेज़	फलकः-कम्, मञ्जः, आधारः.	कुदारी	कुदारी, कुटारी, कुटारः.
आराम-	सुम्बासनम्.	फावड़ा	कुहालम्, अवदारणम्.
चौकी		दीया-	
	विष्टरः, आसनम्, पीठम्,	सलाई	दीपशलाका. —
मूड़ा, कुर्सी	आसन्दी.	चम्मक	वन्धिसज्जननग्रावा (पुं)
तिपाईवैच	त्रिपादिका.	पत्थर	
	छत्रम्, आतपत्रम्, घर्म-	फूकनी	नलिका.
छाता	चारणम्.	चक्कूछुरी	छुरिका.
लठिया	लष्टिका, यष्टिका, यष्टिः (स्त्री)	छींका	शिन्धुम्.
चबो-	पेपणी, पेपणयन्त्रम्, अरधट्टः	जूना	यूनम्.
चकला		रस्ती	रज्जुः, (स्त्री)
पनचली	जलचालयचक्रम्, जलयन्त्रम्		भूतलसंस्तरणम्, - भूतलसं-
चूल्हा	चुह्निः, चुह्नी, अधिधयणी.	फर्श	स्तरः.
अंगोठी	अङ्गाराधानिका, अङ्गारश-	सन्दूक-	पेटिका, समुद्रकः, सम्पुटः
	फटी, हसन्तिका.	पिटारी	पिटकाः, मञ्जूया.
मूसल	मुशलः-लम्.	चर्पा	तान्तघयन्त्रम्.
राट	राट्वा.	तलुआ	तर्कुः (स्त्री).
पलंग	कशिपुः, पल्यङ्गः, मञ्जः.		लाङ्गलम्, हलम्, फालः
ओपली	उल्गलम्, उदूगलम्.	हल	गोदारणम्, सारः.
छाज	मूर्धम्.	कूँचा	कूर्चिका.

गृहस्थी के-वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तुनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
हरास शिल, लोढ़ी जोते टोकरा ताला, ताली	इंपा लाहलवण्डः. शिला, शिलासुतः आवन्धः, योक्त्रम्, थोत्रम्, मञ्जूपा, पिटकः, करण्डः, कण्डोलः. तालकम्, कुञ्जिका, ताली	पंपा (रस का पंखा) पोसना दलना बुहारना	घोजनम्, व्यजनम्. उशारयोजनम्. पिनाष्टि, धुणात्ति, चूर्णयति. दलयति. माष्टि, संमाजयति. अप- नयति.

हिन्दी ।

संस्कृत ।

मेरा छाता और लाठी लेकर यहां आओ.
खड़ाऊ पहन हुए एक साधु यहाँ आया.
मैं फुराकत जाता हूँ मेरे जूते लाओ.
इस चौका ही पर जल का घड़ा रख दो.
मैं यहाँ ही नहा लूँगा.
ये आराम चौकी है इस पर बैठिये और
मेरी बात सुनिये.
इस मूढ़ और इस तिपारी को उठाकर
उस मंज के पास रख दो.
मेरी दफ़्त मैं तो एक स्टूल है जो
आप हुक्म दें तो लाऊँ.
मेरे घर दा चक्की है.
न्याह के लिये अपने गँहूँ तो मैं पन-
चक्की में पिसवाऊँगा.
चकला यहां ले आओ मैं पांच सेर
चने दलूँगा.
इस घर में दो चूल्हे हैं.

मदीयं छत्रं लाष्टिकाञ्चादायाथागच्छ.
काष्ठपादुके धारयन्नेकस्ताधुरत्रागच्छत्
शीचार्थमह गच्छामि मधुपानहावानय.
अस्य काष्ठपोठस्योपर्य्येव धारिष्ये तस्थापय
अहमश्रैव स्नास्यामि.
सुखासनमिदं स्थायतामस्योपरि महा-
तां धूयताम्.
इमं विष्टमिमां त्रिपादिकाञ्चात उत्था-
प्य तत्फलकसमापे स्थापय.
मम कशायान्तेकः काष्ठपोठो वनेत
आनयामि चेदाज्ञापयेयुर्भवन्तः.
मम गृहे द्वे पेपणयन्त्रे स्तः.
विवाहार्थं स्वगोधूमोस्त्वहं उत्तरयन्त्रे
पेपायिष्यामि.
पेपणयन्त्रमज्ञानयाहं पञ्च सेटकान् व-
णकान्दलयिष्यामि.
अस्मिन्गृहे द्वे चुल्लयौ स्तः.

गृहस्थी के वस्तु इत्यादि का वर्णन—गृहस्थवस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

एक मृशाल को यही ज़रूरत है इस-
लिये अपने गाँव के बड़ई से वनवा
कर भेजो।

और भी गृहस्थ की बहुतसी सामग्री
है उनको भी सुनो।

खाट, पलङ्ग, मेज़, ओखली, छींका,
छाज, चलनी, बुहारी, चर्पी, तकुआ,
अंगीठी, कुदारी, टोकरा, फूँचा।

आँच निकालने का पत्थर, दीयासलाई,
सिल, लोढ़ी, फूफनी, चाफू, ताला,
कुज़ी, घड़ा, रस्सी, सन्दूक, खस
का पहा, फर्श बगैरह।

वह स्त्री अपने घरको बुहारी से बु-
हारती है।

वह लकड़हारा जूने में ईंधन बाँधकर
वाज़ार में बेचने को लाता है।

यह कौन बुढ़िया है जो तकुआ से सूत
कातती है।

अस्त्यतीवावश्यकर्तैकस्य मुशालस्यातः
स्वग्रामतक्षकान्निर्माणयित्वाऽत्र प्रेषय।

सस्त्यन्या अपि बह्वथः सामग्रथो गृ-
हस्थस्य ता अपि शृणुं।

खट्वा, पल्यङ्गः, काष्ठफलकः, उत्त-
खलम्, शिफ्यम्, सूर्पम्, चालनी,
संमार्जनो, तान्तवयन्त्रं, तर्कुः, अङ्गा-
राधानिका, कुदारी, करण्डः, कू-
चिका।

बहिसंजननप्राया, दीपशालाका, शिला,
शिलास्रुतः, नलिका, छुरिका, ताल-
कम्, कुञ्चिका, घटो, रज्जुः, पेटिका,
(मञ्जूषा) उशीरवीजनम्, भूतला-
स्तरणमित्यादयः।

सा स्त्री स्वगृहं शोधन्या संमार्जयति।

स काष्ठकेता यूने इन्धनं बद्ध्वाऽऽपणे
विक्रेतुमानयति।

केयं वृद्धा या तर्कुणा सूत्रं कर्तयति।

पांचवां अध्याय — पञ्चमोऽध्यायः ।

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
राजमहल	प्रासाद	सुरङ्ग	सुरङ्गा, गृहमार्ग .
धनिकों क	हर्म्यम्.	खुण्टां	नागदन्त , भारयष्टि
घर		खूटा	शिवक कौलक
झोंपडी,	उदज -जम्, कुटीर , पर्ण	भीत	कुञ्जम्, भित्ति
बुटी	शाला	अट्टा	अट्ट , अट्टालकम्
रसोईघर	पाकशाला, महानसम्	छण्णर	तृणपदलम्, तृणच्छदि
न्हाने की	स्नानागारम्.	कूभा	कूप , उद पानम्, अन्धु [पु]
जगह	सोपानम् आरोहणम्.	वाघड़ी	वापिका, दार्धिका.
जोना	निश्रणि , आश्रवाहिणो	नालाव	तटाक , सर [न०] हद
नसैनी	शौचागारम्	ईट [पका	इष्टना, पघेष्टका, आमेष्टका
पावना	अधिवेशनस्नानम्, सत्वा	कच्चा]	
बैटर	रालय	देहलो	गृहायग्रहणी, देहलो
आँगन	अङ्गणम्	बलई	सुधा
चौतरा	चतुरम्	छत्त	छदि [स्त्री] पदलम्
झराये	वातायनम्, गवाक्ष .	पतनाला	प्रणाल
बमरा या	कप श,कोष्ठ ,शालागृहम्	मोरो	जलनिर्गम , जलोच्छ्वास
कोठरो		पलेंदी	जलस्नानम्.
सोठ	शुला, स्थुणा	छजे	मञ्च [व०प०] मञ्चसनाथ
सग्गे	स्तम्भ	दर्याज	गृह
किचाइ	कपाटम् अररम्.	घर	द्व , [स्त्री] द्वारम् .
सगल	गृहलालम्, निगड .		गृहम्, गैहम्, वेदमन् [न०]
सिडकी	प्रच्छन्नम्, अन्तर्द्वारम्		पात्रविशेषा ।
सोने की	शयनस्नानम्	थाली	पात्रम्, भाजनम्
अगह		कलशा	कलश -शम् घट , उदक
		घड़ा लोट्टा	पात्रम्

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानां विनोपाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
टोकनी	खाली, उखा, [स्त्री] पिठरः पिष्टपचनम्.	लोहा	अक्षमसारः, अयः [न०] लोह-हम्, कालायसम्.
चमचा	चमसः-सम्, दर्विः वीं [स्त्री]	ताया	न घम्, शुष्यम्, उदुम्बरम्. गर्जम्, सुघर्णम्, कनकम्,
वर्तन	अमत्रम्, पात्रम्.		रुक्मम्, जाम्बूनदम्, चा
पली	कंचिः-वी, दर्विः, राजाफा.	सोना	मीःकरम्, काञ्चनम्, हेमन् [न०] हिरण्यम्.
कुर्णी	कुतूः [स्त्री०]		
चीमटा	कंकमुखम्.	सोसा	सोसम्, नागम्, यप्रम्.
संदासी	संवंशः-कम्. —	चान्दी	रजतम्, रूप्यम्.
गिलास	पानपात्रम्, शरायः. —	काच	क्षारः, काचः.
फटोरा	चपकः कम्, काचपात्रम्. अक्षमपात्रम्, लघुङ्गः, यष्टिः	मैलाकरना	कलुपयति, भायिली मलि नी करोति.
कूंडी, साँटा	[स्त्री०]		
मथानी	मन्थनी, गर्गी.	छवाना	आच्छादयति.
परात	बृहज्जाजनम्.	चाहना	अभिलपति, इच्छति, रोचते
विहॉट	कुठरः, विष्कम्भः.	फँकना	प्रास्यति, आपातयति.
कड़ाही	कटाहकः, बृहत्कटाहः.	झालना	प्रक्षिपति.
घंटी, हाँडी	हण्डी	लिप्पी-	लेपयति.
नाइ	प्रोणि-णी [स्त्री०]	कराना	
तया	श्राजीपम्, पिष्टपचनम्.	जलाना	दाहयति, ज्वलयति, तापयति.
पीतल	पित्तलम्, आरकूटः-टम्, रीतिः.	जलना	बृहति, ज्वलति, तपति, प्लुप्यति.
काँसी	कांस्यम्.		

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानां विशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।

राजाओं के घर "प्रासाद" धनवानों के घर "हर्म्य" और ऋषियों का "उट्टज" कहलाता है.

आप के घर में कोई बलग रसोई घर भी है.

नहीं, तो धूँआ गृहस्थ की चीजों को काला करही देगा.

शादी वगैरह में भट्टी से काम चलता है मामूली चूल्हे से नहीं.

मेरे घर में तो बैठक रसोई घर गुसलघर और पाखाना अलग २ हैं.

तुम्हारे घर में आँगन कैसा है.

न बहुत लम्बा चौड़ा न छोटा ही.

इस घर में बहुत से झरोखे, चार कोठे, चौंसठ शीशम की कड़िया, नीम के किवाड़, कितनीही खिड़कियां मौजूद हैं.

क्या सब किवाड़ बाहर भीतर की जंजीर घाली हैं ?

हां। सोने के कमरे में जाकर मेरा बिछौना बिछादो। तू कहाँ सोता है. गरमियों में और बसंत में अट्टे पर और दूसरे मौसम में घर के भीतर.

क्या वहां पंखा भी है ? है तो.

कल में छप्पर कदों से छप्पर छाया ऊँगा.

संस्कृत ।

राजां गृहं प्रासादः, धनिनां गृहं हर्म्यः, ऋषीणामुट्टज इति कथ्यते.

भयतः वेदमनि काचित्पृथक् पाकाण-
लाप्यऽस्ति.

नहि, तर्हि धूमः गृहस्थानां वस्तूनि
मलिनी करिष्यत्येव.

विवाहादौ गृहदाधिभ्रयण्या कार्यं भ-
वति ननु सामान्यचुष्टिभिः.

ममगृहेतु सत्कारालयः पाकशाला स्ना-
नगृहम् शौचागारं च पृथक्पृथगस्ति
नयं गृहे कीदृगङ्गणमस्ति.

नातिविस्तीर्णं न सङ्कीर्णमेव.

अस्मिन्गृहे घहघः गवाक्षाः, चत्वारः
कक्षाः, चतुःपष्टिः. शिशिपाया स्थूणा
निम्बस्य कपाटानि अनेकान्यन्त-
होराप्युपस्थितानि सन्ति.

घाद्यह्याभ्यन्तरस्य किं सर्वाण्यरराणि
शृङ्खलामयानि सन्ति ।

धोम् । शयनागारे गत्वा ममास्तरण
मास्तारय त्वद्दुकुत्र स्वपिपि.

भ्रांष्ये वर्षतीं चाट्टालकेऽन्यस्मिन्गृहौ-
गृहाभ्यन्तरे.

किं तथ व्यजनमप्यस्ति ? अस्तितु.
श्वोऽहं तृणपटलकारेभ्यस्तृणपटलमा-
रुछादयितासि.

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

तुम्हारे घर की बड़ी ऊँची हवा रोकने वाली भीतियाँ हैं.

बिना पानी की जगह में मैं एक कूआ बनवाऊँ यह चाहता हूँ.

मैं भी अश्वलतो फकी ईंटों का, हाथ चलने पर पक्कीही ईंटों का घर बनवाऊँगा.

घर में सौदो ज़रूर रखना चाहिये.

तुम्हारे शहर में कोई तलाव या बा-वड़ी है.

घर की देहली पर बैठ कर कभी मत खाओ.

छत के ऊपर चिकनी मिट्टी डाल दो. पतनाला तो पक्की ईंटों से बनवा कर चूना से लिपनी करा दो.

बलदेव के घर में मोरी बड़ी छोटी है और पलैड़ी बहुत ऊँची है.

मेरे घर में चार दर्वाजे हैं दो पुरुषों के और दो स्त्रियों के.

हमारे घर में छजे नहीं हैं इसी से चौछार घर में भीतर घुस जाती है.

गृहस्थ के वर्तन बयान करो.

वर्तन जैसे घड़ा, टोकनों, चमचा, चीमटा वा सँडासी, सोने के वर्तन, चाँदी के वर्तन, पत्थर के वर्तन, कूडियाँ, सोटा परास, गिलास,

तत्र वैश्वमनोऽत्युन्नता चायुरोघका भि-
त्तयस्सन्ति.

निर्जलभूमौ निर्मापयेयमेकं कूपमित्य-
भिलपाभि.

अहमपि प्रथमन्तु आमोएकानां, सति
वैभवे पकेएकानामेव गृहं निर्मापयि-
ष्यामि.

वैश्वमनि स्रोपानमवश्यं निर्मातव्यम् .

अस्ति कश्चित्तडागो यापिका या तय
नगरे.

गृहावग्रहण्यां स्थित्या कदापि मा
भुङ्क्ष्व.

पटलस्योपरि स्निग्धां मृत्तिकामापातय.
प्रणालन्तु पकेएकामिर्निर्माय्य चूर्णेन
सुधया वा लेपय.

बलदेवस्य गृहे जलनिर्गमोऽतीव सूक्ष्मः
जलस्थानं चातीवोन्नतमास्ति.

सन्ति चत्वारि द्वाराणि मम वैश्वमनि
द्वे पुरुषाणां द्वे स्त्रीणाञ्च.

अस्वङ्गृहे गोपानसी नास्ति अत एव
धारासम्पातोऽन्तर्गृहे प्रविशति.

गृहस्थपात्राणि वर्णय.

पात्राणि, यथा घटः, स्थाली,
वर्धिः, कङ्कमुखं, स्वर्णपात्राणि,
रजतपात्राणि, अश्मपात्राणि,
लघुघटः, गृहज्ञाजनं, पानपात्रं,

गृहस्थ और वर्तन इत्यादि का वर्णन—गृहस्थानांविशेषाः पात्रविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
कड़ाही, दाँड़ी, कड़ाह, कुल्पी, तवा इत्यादि अनेक होते हैं। दशोम लोग सीसा जला कर नागेश्वर बनाते हैं। राजा दशरथ बेटे के रंज से मरने के पीछे तेल की नाँद में भरत के आने तक रक्खा गया। यह स्त्री विलोड के पास दही की क मोरी लाकर रई से दही विलोती है और मक्खन बेटे को देती जाती है।	कटाहिका, हण्डी, बृहत्कटाहः, कुत्, ऋजीपमित्यादीन्यनेकानि सन्ति। वैद्याः सांसं दाहायित्वा नागेश्वरं निर्मापयन्ति। राजा दशरथः पुत्रशोकं मरणानन्तरं तैलदोष्यामाभरतागमनात्स्थापितः। मा स्त्री कुटरसमीपे दधिभाण्डं मन्थनीम्याऽऽदाय मन्थ्रा दधि मश्नाति हैयङ्गवानिञ्च पुत्राय प्रयच्छति।

छठवाँ अध्याय—पष्ठोऽध्यायः ।

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषाश्चानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
गौ गौ के गले का घमड़ा बैल बछरा भैंस पेन भूँग गोबर पेशाब	गौः, धेनुः। सास्ना, गलकम्बलः। शरीरदः, वृषः, उशन (पुं०) गोघरसः। महिषी, महिषः। ऊधः (न०) क्षपीगम्। शृङ्गम्, विषाणः-णम्। गोमयः-यम्, गोविद्। गोमूत्रः।	घोसी ग्याला घोड़ा अयाल घुड़ सवार गधा घुड़ साल बिबर दराही	घोषः, आभीरः, गोपः गो- धुकः। अश्वः, गुरगः, हयः, घाजी, घोटकः। कंसराः, सटाः। अश्वारोहः, सादिन (पुं०)। शरः, रासभः गर्दभः। अश्वशाला, मन्दुरा। अश्वतरः, घेसरः। अश्वतरपालः।

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषा यानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बकरी	अजा, छागी.	दहमर्दा	दशयानम् .
ऊँट	उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः.	कपड़े-	वासः परिधत्ते. /
नाथ, नकैल	नस्योतः.	पहरना	खुरघ्नं वध्नाति, खुरध्वेण स-
हाथी	गजः, हस्ती, करिन् (पुं०)	नालयन्दी	नाथीकरोति.
फीलवान	मातङ्गः.	करना	प्रतियोधयति, वि-प्रति रु-
हाथीशाल	आधोरणः, हस्तिपः.	मुकापला	णद्धि, प्रतिकरोति, प्रत्य-
पूँछ	घारी, गजवन्धनो.	करना	चतिष्ठते.
लौढ़	लाङ्गूलम्, पुच्छः-च्छम्,	चरना	चरति, भक्षयति, अत्तिं.
खुर	लूमम्, बालधिः.	मलना	घपंति, मर्दयति.
सूअर	पुरीषम्, विष्टा, गूथम्,	छकड़ा	अनः (न०) शकटः-टम्,
आनेकण्डे	शकृत्.	बहली	घाहनम्, प्रवहणम्.
विटौरा	खुरः, शफः-फम्.	विमन	कर्णारधम्, लघुशकटः-टम्.
घूरा	क्रोडः, चराहः, किरिः, कोलः.	बुलाना	विमानः-नम्, व्योमयानम्.
भेड	फरोपम्.	सिखाना	आकारयति, आह्वयति, ह्वयते
भूखी	करीपराशिः.	चदाना	शिक्षयति.
	अधकरनिचयः.	चढ़ना	आरोहयति.
	पडका, मेपी, ऊणांयुः.	तोड़ना	आरोहति.
	बुशः.	तुड़वाना	भिनत्ति.
	यानविशेषाः ।	गुद्ध करना	भेदयति.
रथ	रथः, स्यन्दनम्.	चलाना	युद्धयति-ते, योधयति, वि-
रथवान	सारधिः, सूतः, सन्नेष्टृ(पुं०)	हांकना	गृह्णाति, संप्रहरति.
बग्घी टम-	लघुयानम्, रथः.	सिद्ध कर्ना	वाहयति, नोदयति, चाल-
टम		वा काम	यति, प्रेरयति.
पालकी	नरयानम्, शिविका, याप्य	निकालना	साध्नाति, साधयति, राध-
तामझाम	यानम्, चतुरस्रयानम्.		यति.

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानविशेषाश्च ।

बिहारकर्ना खेलना	बिहरति, क्रीडति.	कोशिका करना उनरना	यतते, उद्यच्छते, प्रवर्तते, व्ययस्यति. अवरोहति, अवतरति.
---------------------	------------------	-------------------------	---

हिन्दी ।

संस्कृत ।

तुम्हारे पास जो घोसा रहता है उस की गोशाला में कितनी गायें कितने बैल हैं.

पाँच गाय, सात बैल.

घोसालोगों से गौओं का दूध और गोबर बेचा जाता है.

भैंसों का सींग गवल उनका दूध माहिय पेसा कहलाता है.

गौओं के गले में जो खाल लटकती है उसे मनुष्य "सास्ता" कहा करते हैं.

गोविन्द की छुड़साल में पाँच घोड़े हैं, उनमें एक घोड़ा अशिक्षित है उस को किसी चाबुकसवार को पुल्ला कर सिखवाओ.

बौमासे में तो गोबर घूरे पर ही फेंक दिया जाता है.

यह ग्वाला जल पीना चाहता है इसे जल पिलाओ.

मरखने बैल नाथ से ही बस में लाये जाते हैं.

श्रीमान्द गोपालदेव के राज्य में कितने छुड़सवार हैं? वेणुमार ।

युष्माकं समीपे यो घोषो वसति तस्य गोशालायां फति धेनवः कत्युक्षाणः सन्ति.

पञ्च गायः सप्त वृषभा इति.

गवां पयः गोमयञ्चापि विक्रीयते आभारैः.

महिषाणां शृङ्गं गवलं तासां पयो माहियञ्चैत्यंभिधीयते.

गवां गले यात्थक् प्रलम्बते तां सास्ता मिति प्रचक्षते जनाः.

गोविन्दस्याश्वशालायां पञ्च तुष्का विद्यन्ते, तेष्वेकस्तुरगो ऽशिक्षितो ऽस्ति सं कमण्यश्वायुनेतारमाकार्यं शिक्षय.

घातुर्मास्येतु गोमयमयकरनिचय एष प्रक्षिप्यते.

विपासत्ययं गोधुगेनं जलं पायय.

दुष्टवृषभा नस्योत्तेनैव बर्शमित्यन्ते.

श्रीमद्रोपालदेवराज्ये कत्यश्वसादिना सन्ति? असहृषाः ।

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

घोड़े और सिंहों के अयाल होते हैं।
गधा चढ़ा गरीब जानवर है।
इसका मुह काला करके गधे पर चढ़ा
कर शहर के चारों ओर घुमाओ।
ये दरायी खच्चरों को लेजाकर लड़ाई
को जाते हैं।
बकरी का दूध भी पष्य होता है।
क्या फौजों में ऊँट और हाथी भी
रफ़्ते जाते हैं?
ऊँट घोड़ा लेजाने के लिये हाथी तोपों
के लेजाने के लिये रफ़्ते जाते हैं।
घोड़े की पूछ में बहुत बाल होते हैं।
गौओं का गोबर गोमय घोला जाता है।
और संग साथ में मैस का भी।
गौओं के छुर फटे और घोड़े धरैरह
के समूचे होते हैं।
दो सूअरों के बीच में सिंह भी पानी
नहीं पीसका लेकिन दो सिंहों के
बीच में एक सूअर ज़रूरही जल पी
आता है यह मशहूर है।
पहिले ज़माने में रथी लोग रथों से ही
लड़ाई में लड़ते थे।
और सारथी लोगही रथ के घोड़ों को
जोतते थे।
गाय धरैरह चौपाये अक्सर घास
खाते हैं।

अश्वानां सिंहानाश्च केशरा भवन्ति,
आतिदीनपशूरासभोऽस्ति।
अस्य मुखं श्यावं कृत्वा गर्दभस्योपरि
आरोप्य नगरमभितः परिभ्रामयत।
एतेऽश्वतरपालाः धंसराश्रीत्वा युद्धार्थं
गच्छन्ति।
अजादुग्धमोष पथ्यं भवति।
किं पृतनासूद्रा गजाश्चापि रक्षन्ते।
उष्ट्राः भारोद्धहनार्थं गजाः शतघ्नाना-
मुद्धहनार्थं रक्षन्ते।
ह्यपुच्छे बहूनि लोमानि भवन्ति।
गर्वां पुरीषं गोमयमिति शब्धते।
प्रसङ्गान्महिषीणामपि।
गयादीनां खुरा युक्ता अश्वदीनाम-
युक्ता भवन्ति।
द्वयोर्वराहयोर्मध्ये सिंहोऽपि पानीयं
पातुं न क्षमः परश्च द्वयोः सिंहयो-
र्मध्ये एकः किरिः जलमवश्यं पिव-
त्येवेति प्रसिद्धम् ।
पूर्वाद्वा मृधे रथिनः रथैरेव युध्यन्ति
सः।
सूताश्चैव रथवाहान् याहयन्ति सः।
गवादयश्चतुष्पादाः प्रापशो घासं (श-
ष्यं) चरन्ति।

मनुष्योपयोगिनश्चतुष्पादविशेषायानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>सईस घोड़ा खुजाता है, अब तो बहुत से धनवान् और बड़े ओहदेदार अहलकार लोग घग्घियों में इधर उधर जाया करते हैं, बहुत से धनवान् अब भी पालकों पर चढ़ कर जाते हैं, घोच के दूज के लोग छकड़े मशालों या टमटमों से धपने काम निकाल लेते हैं, सब सवारियों में रेलगाड़ी बहुत ही आराम देनेवाली और थोड़े खर्च की है, पहिले देघतालोग विमानों में बिहार करते थे, अब अहरेजलोग विमान के रियाज के लिये अक्सर कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उनसे अभी तक कोई ठीक २ चढ़ने उतरने की तरकीब नहीं मिली, मुल्क कायुल में उस मुल्क के रहने वाले मुसलमानलोग भेड़ का मांस खाते हैं और उसकी खाल का घख पहरते हैं, रथवान् धपने घोड़े के नाल बँधवाता है, भेड़ी भेड़िये का तब मुकाबला करती है जब इसका मेमना पास होता है,</p>	<p>अश्वपालोऽश्व मर्दयति, इदानीन्तु बहवो धनाढ्या उच्चपदस्था यिनो राजसेवकाश्च द्विचक्राङ्गेषु लघुयानेष्वितस्ततो गच्छन्ति, बहवो धनिनोऽद्यापि शिबिकामारुह्य गच्छन्ति, मध्यमश्रेणिजना धनोभिः (शकटैः) लघुशकटैः लघुयानैर्वा स्वकार्याणि साधयन्ति, संपेषु यानेषु रेलाख्य, शकटोऽसौघ सुखप्रदोऽल्पव्ययश्च, पुरा देवा व्योमयानेषु विहरन्ति स्म, अधुनाङ्गलदेशयासिनोऽऽकाशविमान-प्रचारार्थं प्रायो यतन्ते, परञ्च न प्राप्ता यथोचिता रोहणापरो-हणक्रियाऽद्यावधि, कायुलाख्ये देशे तद्देशनिवासिनो यव-नाः ऊर्णयोर्मांसमवन्ति तत्तद्यज्ज यास्तः परिदधते, सव्येष्टा स्वाश्वस्य सुरन्नं यन्धयन्ति, मेघी तदा वृकं प्रति योधयति यद्वास्वाः शायकस्समीपस्थो भवति,</p>

सातवाँ अध्याय—सप्तमोऽध्यायः ।

पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पक्षी	पतत्रिन् (पुं०) विहगः, खे- चरः, रगमः.	नीलकंठ टटीरी	चापः-सः, किकीदिविः. टिट्टिभः
चोंच	चञ्चुः-चूः, (पुं० स्त्री०) त्रोटिः (स्त्री०), तुण्डम्.	चहगादर उल्लू	जतुका, अजिनपथा. उल्लूकः, कौशिकः, पेचकः.
पंख	पिच्छम्, पक्षः, गरत् (पुं०)	पुष्पू	धूकः, दिवान्धः.
चिड़िया	चटकः, कलविङ्कः.	हंस	मरालः, राजहंसः.
कौआ	काकः, चायसः, ध्वाङ्क्षः.	खुटपावरी	दार्वाघाटः, शतपत्रकः.
पंडक	छिद्रगलः.	मोर	मयूरः, शिर्षा.
तांता	त्रुकः, कीरः, चक्रतुण्डः.	मोरपेंच	घई-ईम्, चन्द्रकः, मेचकः.
मैना	सारिका.	मोरवाणी	केका, मयूरवाणी.
चील्ह	चिह्नः-ह्ला, आतापिन् (पुं०) कुररः.	पक्षियों की आवाज	रवः, रावः, कलकलः.
कगूतर	कपोतः, पारावतः, कलरवः.	घोंसला	कुलायः, नीष्टः.
मुर्गा	कुक्कुटः, ताम्रचूङ्गः, नखा- युधः.	पटवीजना	मघोतः, ज्योतिरिङ्गणः.
गिद्ध	शृभः, दाक्षाय्यः.	तीतर	तित्तिरः.
सारस	सारसः, कह्लः, वक्रः, पुष्क- राह्लः.	बटेर	वातिरः.
बाज	श्येनः, शशादन, पत्रिन् (पुं०)	लया	लावः.
शिकरा		कुलह	उत्क्रोशः, कुररः.
बाज पालने वाले	श्येनपालकः	चकवा	चक्रः, चक्रवालः, फोकः.
फोयल	फोफिलः, परभृत् (पुं०)	बालना	कूजति, रौति.
पर्पीहा	चापः, पिकः, चातकः.	रोशनहोना	प्रकाशते.
		यसेरालेना	विश्राम्भति.
		चमकना	द्योतते, शोभने, विद्योतते, प्रकाशते.

पक्षी इत्यादि का वर्णन-पक्षिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

देखो आसमान में पंखे उड़ रहे हैं।
खास २ पंखे हथौड़े के अलग २ नाम लें।

चिरौटा, कौआ, तोता, मैना, चील्ह,
कवूतर, मुर्ग, गिद्ध, सारस, शिकरा,
कोयल, परीहा, चामचिर, उल्लू,
धुधू, हंस, खुटकबढ़ैया, मोर,
तातर, बटेर, लघा, घंगौरह परन्द
अक्सर मांस खाने वाले होते हैं।

पंखे अपनी चौं चौं सेही हाथ का
काम निकालते हैं।

पटवोजने अक्सर जलघाली जगहों
में रात में चमकते हैं।

परन्दों की आवाज़ "रव" या कलकल
कहलाती है।

मोर की पूंछ बड़े और उसकी घाणी
केका कहलाती है।

मोर चौमासे में नीले घादलों को देख
कर बहुत खुश होते हैं।

फया सूरज का भी नाम खद्योत है ?
है तो।

बगीचे में इधर उधर पक्षी बोलते हैं।

शाम को परन्द अपने २ घोंसलों में
बसेरा लेते हैं।

पक्ष्याकाशे पक्षिण उडुयन्ते।

मुख्यविहगानां पृथक् पृथक् नामानि
घर्णयतु।

चटकः, काकः, शुक्रः, सारिका, चिल्लः,
कपोतः, कुक्कुटः, गृध्रः, सारसः,
श्येनः, कोकिलः, चापः, जतुका,
उल्लूकः, धूकः, मरालः, दावाघाटः,
मयूरः, तित्तिरः, घातिरः, खय
इत्यादयः पक्षिणः प्रायोमांसाशिनो-
भवन्ति।

पक्षिणः स्वचञ्चुभिरेव हस्तकार्यं
वाहयन्ति।

खद्योताः प्रायशो जलसनाथेषु स्थलेषु
रात्रौ द्योतन्ते।

पक्षिणां शब्दो रवः कलकलो वेत्यभि-
धीयते।

मयूरपिच्छं घर्हस्ताद्राकेकेत्यभिधीयते।

मयूराध्यानुमांस्ये नीलयलाहकान्द्रा-
ऽतोव हृष्यन्ति।

किं खुर्यस्यापि नाम खद्योतोऽस्ति ?
अस्ति तु।

उद्यान इतस्ततो खगाः कूजन्ति।

सायंकाले पतत्रिणः स्वेषु स्वेषु नीडेषु
विश्राम्यन्ति।

पक्षी इत्यादि का वर्णन—पक्षिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सबेरे उठ कर उनकी मनचाही जग हों में जाने की इच्छा होगी।	कल्यमुत्थाय तेषां स्वेष्टदेशेषु जिगमि- षा भविष्यति।
कबूतरबाज़ अपनी छत्रों पर आये हुए दूसरों के कबूतरों को पकड़ कर उनके पर कैच कर देते हैं।	कपोतपालकाः स्वच्छत्र आगतानन्वेपां पारावतान्भृत्वा तत्पक्षान्छुनन्ति।

आठवाँ अध्याय—अष्टमोऽध्यायः ।

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनो जीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
चाँटी	पिपीलिका, पिपीलकः।	छाँह	अनातपः।
टींडी	शरभः, शलभः।	सांप	सर्पः, अहिः, दन्वशूकः, सरीसृपः।
खेत	क्षेत्रम्, घनः—प्रम्, भूमिः (स्त्री)।	„ का फन	फणा, स्फटा।
अजदहा	अजगरः।	„ „ विप	श्वेडः, गरलम्, विपम्।
मकपी	मक्षिका, सरघा (मधुम- क्षिका)।	सपेरा	आहितुण्डिकः।
मोंग,	मधुच्छिद्यम्, शि (सि) क्यम्।	विपवैद्य	जाङ्गुलिकः।
छत्ता	मधुकोपः, चपालः, फर- ण्डकः।	विच्छू	वृश्चिकः, द्रोणः।
दीमक	श्वेतपिपीलिका।	डंक	लूमम्।
बमई	बलमोकः—कम्, बामलूरः।	कातर	शतपदी,
बर	बरटा, गन्धोली।	कानसलाई	कर्णशलाका।
भौरा	भ्रमरः, पद्पदः, अलिः, भृङ्गः।	अण्डा	डिम्बः।
खटमल	मत्कुणः, उईशः, खट्वामलः।	गोह	गोधा
भूप	आतपः।	छिपकली	पक्षी।
		मच्छर	दंशः, मशः—कः, वनम- डाँस
			क्षिका।

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का धर्षण-दुःखदायिनो जीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
धींगर	शोरुका, शिरिका, शिल्लिका.	भौकना	युक्ति. —
मजीरा		काटना	दशति, व्यथयति.
चूहा	मूपकः, उन्दुरः-रुः, आगुः.	डंकमारना	नाशयति.
घिलाव	ओतुः, घिडालः, मार्जारः, आगुमुक्.	नाश करना	नश्यति.
कुत्ता	श्या, कुक्कुरः, सारमेयः.	,, होना	आकर्षति, कृपति, समाकर्षति
गिलहरी	काष्ठमार्जारः, चमरपुच्छः.	खींचना	वसति, नि-प्रति-वसति ध-
रुपास	कार्पासः, तूलः.	रहना वा	तंते, तिष्ठति, अभ्यास्ते.
बन्दर	वानरः, कपिः, मर्कटः, शा- <u>खामुंगः</u> .	मस्त होना	माद्यति.
लंगूर	कपिः, लवङ्गः, मर्कटः, दी- घंलाङ्गुलः.	शिंदा रहना	जीयति, प्राणान्धारयति.
चींचरी	चर्चिका.	चुमाना	संलग्नकरोति, निघंशयति, संश्लेषयति.
कलीला		चुभना	संश्लिष्यति, संनिविशते, सलगति, संलशोभयति.
पतङ्ग	पतङ्गः, शलभः		आश्लिष्यति, आलिङ्गति, सज्जति, लगति, आ-अव- लंबते अनुचक्षति.
जूँ	यूकः (पुं० स्त्री).	चिपटना	कृन्तति, लुनाति, छिनत्ति, आवापयति
लीक	लिक्का (स्त्री०).	काटना	विदारयति, विटणाति, उ-
चूँस	घृहन्मूपकः.	चीरना	रुद्धयति.
गौला	नकुलः, यमुः, अङ्गुपः.	फटना	टणाति,
करकंटा	कृकलासः, सरटः.	छोड़ना	जहाति, त्यजति, उर्यजति, उज्झति.
यर्गा	दशकः, मोमक्षिया		खण्डयति, खण्डशः करोति.
छल्लन्दर	छुल्लुन्दरी, गन्धमुखी, दी- घंतुण्डी, विधान्प्रिका.	दुकड़े रक०	तनुते, तनोति, विस्तारयति.
डुमुही	विमुषा.	कैलाना	पिबति, धयति.
मकड़ी	तन्तुषायः, तन्तुनाभः, लृता मर्कटकः, ऊर्णनाभः.	पीना	संपति, मन्वंप्रसर्पति.
.. जाला	जालं, तन्तुसन्ततिः.	रिंगना	

दुःस देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःसदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यह देखो लाल चींटी ने मुझे काट रगया.
टींडी जिस पेट में गिरती हैं उसको
जड़ से उड़ा देती हैं.

कभी तुने अजगर भी देखा है ? नहीं.
लेकिन सुना है कि वह अन्दाज में वीम
सेर या इमसे कम ज्यादा होता है.
वह पास आये हुए जीवों को स्वास
सेही खींच कर मुंह में निगल जाता है.
मोहार की मफखी फूलों से रस खींच
कर छत्ते में रखती हैं.

ये वीमक इस कियारु को खागई.

धेले का मोम लाओ.

मफखी अक्सर मैली चीजों पर घेठती हैं.
बमई में सांप रहते हैं। सांप आहिस्ते
खला करता है। यही न समझो सांप
तेजी में घोड़े को भी मात देता है.
ततैये ने मुझे काट रगया जल्दी बीआ-
सलाई या आक का दूध लाओ.

फूलकी खुशबू सूँघ कर भौरा मस्त
होता है.

इस खाट में बड़े खटमल हैं इस को
धूप में डालदो.

सपेर बमई से सांप पकड़ कर अपनी
जीविका के लिये लाता है.

रक्तपिपीलिकेयं मामदशदिति पश्य.
शलभा यस्मिन् क्षेत्रे पतन्ति तत्समूलं
नाशयन्ति.

दृष्टस्त्वया कदाप्यजगरः ? न.

परञ्च श्रुतं समाने विंशति सेटकमित-
स्तन्यूनधिको वा भवति.

स समीपागताञ्जीवान् द्वासेनैवाकृष्य
मुञ्चेन निगिलति.

सरघाः पुष्पेभ्यो रसमाकृष्य मधुकोपे
निदधते.

श्वेतपिपीलिका इमे एतत्कपाटमखादन्.
अर्धेताम्रखण्डस्य (पणार्धस्य) मधु-
च्छिष्टमानय.

माक्षिकाः प्रायोगलिनेषु वस्तुषु तिष्ठन्ति-
वल्मीकेषु सर्पा निवसन्ति। सर्पो मन्दं
प्रसर्पति। एतदेव नावबुध्यस्व सर्पो
जये घोटकमप्यतिक्रामति.

रक्तघरटा मामदशत्पूर्णं दीपशलाका-
मर्कटुग्धं धानय.

पुष्पगन्धमाघ्राय भ्रमरो माघति.

अस्यां पट्टार्यां वहवो मत्कुणास्सन्ति
पनामातपे (घर्मे) निक्षिप.

आहितुण्डिको वामलूरात्सरीसृपं धृत्वा
स्वजीविकार्धमानयति.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनो जीवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

साँप के जहर का हकीम (गायड़ी)
जांगुलिक कहलाता है.

काले साँप का बड़ा फण होता है उस
का काटा हुआ जीव अक्सर नहीं
जीता.

धीछू ने अपना डंक मेरे पाँच के अंगूठे
में चुमो दिया.

मेरे कन्धे पर छपकली गिर पड़ी इस
का फल बिचारिये.

कातर जहाँ कहीं चिपट जाती है यहाँ
अपने पैरों को गाड़ देती है.

चोरलोग गोह के सहारे महलों पर
चढ़ जाते हैं यह सुना है.

इस घास में बहुत से डांस हैं.

झींगर अक्सर रात में झींझों शब्द
किया करते हैं.

इस घर में बहुत से चूहे हैं उन्होंने ने
मेरी बहुतसी चीजें काट डालीं.

उनके दूर करने के लिये क्या करना
चाहिये.

विपवैद्यो जांगुलिक इत्यभिधीयते.

रुष्णमर्षस्य महती फणा वर्तते तद्दृष्टो.
जीवः प्रायो न जीवति.

धृद्धिकः स्थलूमं मम पादांगुष्ठे सम-
न्धेपयत्.

मम स्कन्धेऽपतत्पल्ली फलमस्य विचा-
र्यताम्.

शतपदी यत्र कुत्राप्याङ्गिष्यति तत्रैव
स्वपादान् संलम्बीकरोति.

चौरा गोधायाः सकाशाद्दम्येप्यारोह-
न्तीति श्रुतं

अस्मिन्घासे बहवो दंशा विद्यन्ते.

शीरुकाः प्रायो रात्रौ झींझीतिशब्दं
कुर्वन्ति.

अस्मिन्गृहे बहवो मूषकास्सन्ति ते
ममानेकानि वस्तून्पहन्तन्.

किं कर्त्तव्यं तेषां निवृत्त्यर्थम्.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

कुत्ता भौंकता है - यहां जरूर कोई
भादमी है.

कुक्कुरो युक्ति अत्रावश्यं केनचिन्ननु-
ष्येण भाव्यम्.

यह कुत्ता सामने रो रहा है यह खोटा
शकुन दिखाई पड़ता है.

भ्यायमभिरौतितिदुःशकुनोऽयं दृश्यते.

यह गिलहरो मुह में रुई लेकर पेड़ पर
चढ़ती है.

काष्ठमाजोरौऽयं वधत्रे तूलमादाय वृक्ष-
मारोहति.

बन्दर जो कुछ चीज़ बाहर देखते हैं
उसीको लेकर फाड़ डालते हैं.

वानरा यत्किञ्चिद्वस्तु चहिः पश्यन्ति
तदेवनीत्वा दास्यन्ति.

बन्दर भेड़ियों और लंगूरो से डरते हैं.

मर्कटाः वृकेभ्यो दीर्घलांगूलैर्म्यश्च वि-
भ्यति.

चीचरी अक्सर मौ और भैंसों के धनों
में चिपटी रहती है.

चर्चिकाः प्रायो गवां महिषीणाञ्च स्तने
ष्ववलम्बन्ते.

पतङ्ग दोबे पर आकर अपनी जिन्दगी
से भी हाथ धो बैठते हैं.

पतङ्गाः दीपं प्रत्यागत्य स्वजायिनान्यपि
त्यजन्ति.

घूस घों की दीवारों को भी सब ओर
से खोद डालती है.

गृहन्मूपका गृहभिर्त्तारपि सर्वतः ख-
नन्ति.

न्याँले लड़ाई में साँपों को ठुकड़े २
कर डालते हैं.

नकुला युद्धे सर्पान्स्वण्डयन्ति, सण्डशः
कुर्वन्तीति वा.

छिपकली का गिरना और करकँटे का
चढ़ना भी शकुन होता है.

पङ्गीपतनम् कृकलासारोहणञ्चापि श-
कुनम्भवति.

इस गौकी बग्गी को पकड़ कर और
गोबर में रख दूर फेंक दो.

अस्या धेनोः गोमक्षिकां धृत्वा गोमये
च निधाय दूरे प्रक्षिप.

यहां बड़े मच्छर हैं इसलिये मसहरी
लाओ.

अत्र घहवो मशका अतो मशहरोमानय.

दुःख देने वाले जीव इत्यादि का वर्णन—दुःखदायिनोजीवविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>बिहारी छड़न्दर को चूहे के भोरे मार तो देती है लेकिन बसन्त बद्बू खाती नहीं।</p> <p>छड़न्दर जयमुंह से कृष् २ ऐसा शब्द करती है तभी उसके मुह से बद्बू निकलती है।</p> <p>दुगुही छ महीने तक एक मुह से और छ. महीने दूसरे मुह से खाती है यह मुना है।</p> <p>मकड़ी जाला पूरती है।</p> <p>कुत्ता सूखे हाड़ के जरिये से निकले हुए अपने मुह केही खून को खून मानता हुआ और उसे पीता हुआ खुश होता है यही दशा दुनिया के दु.खों को खुश माननेवालों की है।</p>	<p>माजारी दीर्घतुण्डीम् मूपकबुद्ध्या हति परञ्च तां गन्धवशात् खादति।</p> <p>गन्धमुषो यदा कृष्कृष् इति शब्द-करोति तदैव तद्मुखाद्गन्धो-निस्सरति।</p> <p>द्विमुखा षण्मासपर्यन्तमेकमुखात् षण्मासपर्यन्तञ्च द्वितीयमुखात् खाद-तीति श्रुतम्।</p> <p>ऊर्णनाभस्तन्तुसन्तानि तनुते।</p> <p>श्वशुष्कास्थिनिवृत्तं स्वमुखरक्तमेव रक्तमन्यमानः पिबेत्तमेव इयमेव वशा सांसारिकाणां संवृति दुःख-मेव सुर्यमन्यमानानाम्।</p>

नवौ अध्याय—नवमोऽध्यायः ।

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
सिंह	मृगेन्द्र, पञ्चाननः, हरिः, केशरी (पु०)।	भेड़िया	वृकः, कौकः, ईहामृगः।
गंडा	गडकः, गरु, गण्डदृकः।	गीबड़	गोमायुः, जम्बूकः, क्रोष्टा, शृगालः।
सेही	भ्याधिघ, (पुं०) दाह्यः।	रोह	मययः।
बाघ	व्याघ्रः, चित्रक. छोपी (पुं०)।	लोमड़ी	भुरिमायः, किशिः।
शेख	कशः, भल्लुकः, मालुकः।	खरहा	शदाः-कः।

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
वनबिलास	ओतुः, वनविडालः, अर- ण्यमार्जारः.	संगोलभा	गाहते.
वनमानुष	अरण्यमानुषः.	धिलोभा	
हिरन	हरिणः, कुरङ्गः, मृगः, पणः.	या विघ्न-	भामिपतांयाति, भक्ष्यंभवति
हिरन का	मृगशावः पोतः.	रना	
बच्चा		शिकार-	, करना
वारहसिंगा	द्वादशशृङ्गः.	होना	
वनगाय	वनधेनुः, गवयः.	शुकना	मृगायां करोति, मृगयते.
घरहेल्	वनशूकरः.	शुकना	आ-वि-नमति, आवृजति,
सूअर		वनरासभः-गर्दभः.	शुकाना
गोरखर			

हिन्दी ।

संस्कृत ।

शेर वन के जीवों का मालिक है परन्तु जहाँ आग जलती है वहाँ वह नहीं जाता.

क्या तुमने गेंडा भी देखा है ? हां सम्भवत् १९५२ में मैंने जयपुर के अजायबखाने में देखा था.

सेही फांटों से अपने से बलवान् जीवों से मुकाबला करता है.

सिंह ज्यादा बलवान होने की वजह से सब वन को छान डालता है.

छोटे जीव डर सेही सिंह के शिकार हो जाते हैं.

सिंहो हि वनजन्तूनामधिपतिः परञ्च यत्राग्निर्ज्वलति तत्र स न गच्छति.

किं त्वया गण्डशृङ्गोऽपि दृष्टः ? चाढम् एकौनविंशत्युत्तरद्विपञ्चाशत्तमे वि-
कमाब्दे मया जयपुरस्य कौतुका-
गारे दृष्टः.

शल्यः स्वकण्ठकैः स्वस्नाद्बलवतोऽपि जीवान् प्रतियोधयति.

सिंहोऽनीव बलवत्त्वाद्दपिलं वनं गाहते.

शुद्रजन्तवो भिद्येव सिंहस्यामिपतां यान्ति.

वन के जीव इत्यादि का वर्णन—वनजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>वाघ वा चीता सिंहही की एक किस है। जाम्बवान रीछ ने वामन अवतार में विशद रूप भगवान् की दो घड़ी में तीन परिक्रमा कीं।</p> <p>और भी वन के जीवों के नाम लिख्ये। सुनिये, भेड़िया, गोंदड़ गदग, लोमड़ी, परदा, वनचिलाव, वनमानुस, हिरन, धोजू, वारहसिंहा, गोरखर, वरेला सूअर, वनगाय वगैरह होते हैं।</p> <p>हिरन का बच्चाही मृगशाव कहलाता है। सूअर अपनी गर्दन इधर उधर मोड़ नहीं सक्ता है।</p> <p>वनचिलाव अकसर पेड़ों की खोलों में रहते हैं।</p> <p>सबही हिंस्रक जीव खिचर सहित मांस खाते हैं।</p>	<p>व्याघ्रश्चित्रको वा सिंहस्यैव भेदः। जाम्बवता ऋक्षेण वामनावतारे विगद् रूपिणो भगवतः द्विवटिकाभ्याम् तिस्रः परिक्रमाः कृताः।</p> <p>अन्येषामपि वनजन्तूनां नामानि लिख- श्रूयन्ताम्, वृकः, गोमायुः, गवयः, भूरिमायः, शशाः, अरण्यमार्जारी उरण्यमानुषः, हरिणः, (धोजू), द्वादशष्टहः, वनगर्दभः, वनसूकरः, वनधेनुरित्यादीनि सन्ति।</p> <p>मृगशिशुरेव मृगशाव इत्युच्यते। क्रोडः स्वकन्धरामितस्ततो नामयितुं न शक्नोति।</p> <p>अरण्यमार्जाराः प्रायस्तरुकोटरेषु नि- चसन्ति।</p> <p>सर्वे भ्यापदाः सरुधिरं पिशितमश्नन्ति।</p>

दसवाँ अध्याय—दशमोऽध्यायः ।

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
समुद्र	समुद्रः, सरित्पतिः अधिः, अर्णवः, जलनिधिः।	किनारा	कूलम्, रोधः (न०) तीरम्, तटम्, (त्रि०)।
नदी	सरित्, (स्त्री०) नदी।	कृष्ण	कृष्णः, उदपानम्, (ऽस्त्री) ग्रहिः अंधु, (पुं०)।

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
नहर बम्बे	कुल्या, प्रणाली.	नाव	नौः, तरणिः, तरिः [स्त्री०]
प्याऊ	आहावः, निपानम्.	(छोटी)	उडुपम्, हुवः, कोलः.
जीवोंकी		नौका दंड	क्षेपर्णी.
प्याऊ	प्रया, पानीयशालिका.	जोंक	यूका, जलौकसः [पुं०] ज-
वावई	वापी, दीर्घिका.		लौकस् [स्त्री०].
पोपर	तटाकः, तटागः, जलाशयः.	शंप	शहः, कम्बुः.
तालाव		सीप	शुक्तिः [स्त्री०].
जल	अम्भः [न०] तोयम्, पानी-	कूप की	वीनाहः.
	यम्, नीरम्, अम्बु [न०]	मन	
लहर	तरङ्गः, ऊर्मिः, चीचिः, आ-	मैंडक	मण्डूकः, मेरुः, शालूरः, दर्दुरः
	वर्तः [मैवर]		आलवालम्, आवालम्,
मच्छ	मत्स्यः, मीनः, झपः.	थामला	आवापः.
बबूले	बुद्बुदाः.	जलव्याल	अलगर्दः.
	धीवराः, कैवर्ताः मत्स्योप-	ऊदविलाव	उद्रः, जलमांजारः.
मछुप	जीविनः.	कैचुप	गण्डूपदः, किन्चुलकाः.
मछली		खाई	रेयम्, परिखा.
का कांट	वडिनाम्.		कर्दमः पद्मः पङ्किलः [की-
गाह, न. क	नक्रः, कुम्भीरः, मकरः प्राहः.	कीच	चदार].
कैकटा	कुलीरः, कर्कटकः.	काई	निपठरः, जम्बाला.
कछवा	कच्छपः, कूर्मः, कमठः.	यतक	घर्तिका, कादम्बः, कलहंसः
जल-			वर्तकः.
सुर्ग, धी	जलकुम्कुटः.	कमल	तामरसम्, पद्मेरुहम्, क-
टंक	घलाका, विसफण्टिका		मलम्, सहस्रपत्रम्.
बगला	बलाका, बकः, कहां.	कमल की	
जलमानुष	जलमानुषः.	टण्डी	मृणालम्, विसम्.
तल	तिमिः, तिमिद्विलः.		
नाव(बई)	पोतः, यानम्.	॥ जड़	करहाटः, शिफाकन्दः.

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कमल की केसर प्राप्त करना खुस होना बैठाना- रखवाना	किञ्जल्का, केदारः। कवलयति [ना०धा०] प्र- सति। प्रीणाति, मोदते, हृष्यति। स्थापयति। द्योतयति, प्रकाशयति द्- शयति, सूचयति, व्यञ्ज- यति, प्रकटोकरोति, आ- त्रिष्करोति, व्यक्तीकरोति।	मिलना उछलना छलांग- भरना सिकुड़ना सिकोड़ना	मिलति। उत्पतति, उत्प्लवते । भवे- ति, लहते। सहकुञ्च्यते, आकुञ्च्यते, संहियते, सङ्कोचयति, सं- हरति, आकुञ्चयति, नि- मीलति।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
समुद्र भी पूरे चान्द्र को देख कर खुश होता है और बढ़ता है मनुष्य तो कहाँ रहे। मछुए लोग काँटे के जरिये से या जाल से मछलियों को खींच कर धाड़ा में बेचने को लाते हैं। इस नदी में बड़े भयङ्कर नाके हैं, इस- के किनारे पर भी न जाओ। क्या तुमने कभी नाके की दाँतों की लड़ी भी देखी है। यह आदमियों को बिना टुकड़ेही किये निगल जाता है घेहलक होनेकी वजह से क्या नहर, बर्रों में भी नाके होते हैं?	समुद्रोऽपि पूर्णचन्द्रं दृष्ट्वा प्रीणाति वर्धते च किमुतान्ये जनाः। मत्स्योपजीविनो घडिशद्वारा जालेन वा शपानारूप्य हाटके विक्रेतुमा- नयन्ति। अस्यां नद्यामतीव भयङ्करा घहवो न- कास्सन्ति, अस्यासीरेऽपि भागच्छ। किं त्वया कदापि मकरस्य दन्तपंक्ति- रपि दृष्टा। अयं मनुष्यान्वण्डमरुतैव कवलयति निर्गलत्वात्। किंकुल्यासु प्रणालीषु चापि प्राहाभवन्ति

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>नहीं । कभी बड़ी नदियों से कोई आभी जाता है.</p>	<p>न । कदाचिद् बृहन्नदभ्यः कश्चिदागच्छत्यपि ।</p>
<p>इन चम्ये के दोनों किनारों पर बड़ी पेड़ों की छाया है यहां छाने की जरूरत नहीं.</p>	<p>अस्याः प्रणाल्याः द्वयो रोधस्तोः महती वृक्षच्छाया वर्तते नास्त्यत्रावश्य-फता छत्रस्य.</p>
<p>इस कूप पर पकी मन और जीवों की प्याऊ नहीं है.</p>	<p>अस्य कूपस्योपरि पक्वानीहो निपानञ्च न वर्तते.</p>
<p>गरमियों में बहुत से लोग प्याऊ रख-वाते हैं.</p>	<p>ग्रीष्मर्तौ बहवो जनाः प्रपां स्थापयन्ति.</p>
<p>अब तो बावड़ी नहीं बनवाई जातीं.</p>	<p>इदानीन्तु घाप्योऽन निर्माप्यन्ते.</p>
<p>इस बड़े तलाव में जो जलजन्तु हैं उनके नाम बत्ताओ । सुनिये—कैकड़ा, कछवा, जलसुर्गायी, ढँक, जलमानुस, चकवा, बतक, बगला, जाँक, मँडक, जल का सौँप धगैरह । गि-डोंये अक्सर चौमासे में पैदा होते हैं वे कभी देह को जल में सकोड़ लेते हैं कभी फैला देते हैं.</p>	<p>अस्मिन्बृहत्तडागे ये जलजन्तवस्तेषां नामानि ब्रूहि । श्रूयन्ताम् कुलीरकः, कूर्मः, जलकुक्कुटः, बलाका, जलमानुषः, चक्रः, वर्तकः, वकः, यूका, भेकः, अलगर्द इत्यादीनि । गण्डूपदाः प्रायश्चानुमांस्ये जायन्ते, ते देहं जले कदापि सङ्कोचयन्ति कदापि विस्तारयन्ति.</p>
<p>हवा के जोर से पानी में लहरें पैदा हो जाती हैं.</p>	<p>वायुधेगाजले तरङ्गा उत्पद्यन्ते.</p>
<p>अथाह (गहरे) पानी में ही भमर पड़ते हैं.</p>	<p>अगाधजल एवावर्ताः पतन्ति.</p>
<p>उनमें नावों का चलानाही महाहों की होशियारी जाहिर करता है.</p>	<p>तेषु तरणानां प्रचालनमेव कर्णधारणां कौशल्यं द्योतयति.</p>
<p>शङ्ख और सिप्पी भी अक्सर समुद्रों में ही मिलती हैं.</p>	<p>शङ्खाः शुक्रयश्चापि नदीशेषेव प्रायो मिलन्ति.</p>

जल के जीव इत्यादि का वर्णन—जलजन्तुविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

(बड़े खेद की बात है) कि जहाज का कप्तान (मालिक) भी बहुत आदमियों के साथ हेल के जरिये जहाज डूबने से समुद्र में डूब गया। महाह लोग नदियों में भी पतवार के जरिये स नारों को चलाते हैं। यह तालाब घड़ी कीचड़वाला है इसमें मत घुसो। इस तालाब में बहुत से कमल हैं। किले की खाईयों में अक्सर बहुत पानी होता है। इस थामले में तुलसी का बीधा लगादे। बहुत सी मछलियां खाई के पानी से उछल जाती हैं और डूब जाती हैं। कमल की जड़ का साग बहुत अच्छा होता है। इम्ताल रूपा से पञ्जाब में रक्यत दुखी है। पारसाल घड़ाली लोग तौरससाल मध्य देश के रहने वाले लोग से पीड़ित थे। अब ईश्वर सब जगह बुझाल करे।

अहो, पोताध्यक्षोऽपि बहुमिर्जनैस्सह
तिमिद्धारानानभङ्गेन सागरे न्य-
मज्जत्.
नायिका नदीष्वपि क्षेपणीद्वारोदुपानि
चालयन्ति.
अतीव पङ्किलमिदं सरः भास्विन्न-
विश.
अस्मिन्नडागे यद्गुनि तामरसानि सन्ति.
कोट[दुर्ग]परिखासु प्रायो महजल-
म्भवति.
अस्मिन्नावाले तुलस्या वृक्षं स्थापय.
यद्बो मत्स्याः परिखाजलादुत्पतन्त्य-
घपतन्ति च.
करहाटस्यापि शाकमतीव शोभनं भ-
वति.
पेपमः पञ्चालेष्ववग्रहेण पीडिता प्र-
जास्ति.
परुद्धदेशवासिनः पारश्चिमध्यदेश-
वास्तव्या महामारीरोगेण पीडिता
आसन् अधुनेश्वरः सर्वत्र द्वा विद-
ध्यात्.



१ ग्यारहवां अध्याय—एकादशोऽध्यायः ।

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
किताब	पुस्तकम्.	तजुमा	अनुवादः.
स्लेट	अर्दमपट्टिका, काष्ठपट्टिका.	जुगराफियः	भूगोलविद्याशास्त्रम्.
तखती		तारीफ	इतिहासः.
कागज़	पत्रम्.	साइन्स	पदार्थविज्ञानः, विज्ञानशा- स्त्रम्.
प्लम	लेखनी.	इइंग	आकर्षणः, आकर्षणं, चित्र आलेख्यम्.
दयात	मसोपात्रम्—	न्याय	तर्कशास्त्रम्.
स्याही	मसिः-सी [खी०].	वेदान्त	दर्शनशास्त्रम्.
पेन्सिल	तूलिका, बतिका, शीशक- शालाका.	मालियाना	वार्षिकपरीक्षा.
कलमदान	लेखनीपात्रम्.	इम्नहान	पारितोषिकः.
बोर्ड	फलकः-कम्, काष्ठखण्डम्.	इनाम	पाठशाला, विद्यालयः.
रुडिया	खटिका, कठिनी.	मदर्सा	घर्षकः, मार्जकः.
नक्शा	देशालेख्यम्, आलेख्यपत्रम्.	रघर	पत्रम्, सन्देशपत्रम्.
गुजराती	गुर्जरभाषा.	बिड्टी	मामुहिदिय, दत्तमहाद्यनाम.
उर्दू ज़बान	उर्दूभाषा.	सफ़ा	अक्षरम्, वर्णः.
अंग्रेजी	आङ्ग्लभाषा.	पता —	लेखनम्, लेखः.
बङ्गाली	बङ्गभाषा.	अक्षर	छात्रालयः मठः.
फ़ारसी	फारसीकभाषा	लेख	मर्यादा, सीमन [पुं०] अव- धिः प्रान्तः.
हिखाब	अङ्कगणितः.	बोर्डिंगहोस	निरीक्षणम्, अवेक्षणम्.
जघर	बीजगणितः.	अहाता	निरूपणम्, दर्शनम्.
मुकायला		इन्स्पेक्शन	
रेखा	रेखागणितः ज्यामितिः.		
गणित			
मसाह्त	मापनम्, मितिः [खी०]		

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
नौकरी	उपचारः, परिचर्या, आ- संश्रयः.	चालचलन फ़ीस, तन- रचाह	वृत्तम्, आचार' चर शुल्कः वक्रम्, वेतनम्, मा- सिकम्, भृतिः [स्त्री०].
नतीजा	फलम्, उदकं, परिणामः.	जुर्माना	घन-अर्ध-दण्डः.
मैनेजर	प्रणेतृ, [पुं०] कार्याध्यक्षः अधिपतिः सम्पादकः.	सिफर	शून्यम्, विन्दुः.
इन्स्पेक्टर	निरीक्षकः, अध्यक्षः.	स्पेसिमेन	आदर्शः, प्रतिमा, प्रतिरूपम्
डाइरेक्टर	शासिता, अधिष्ठाता.	चन्द्रा	अंशदानम्, उद्धारदानम्.
उस्ताद	गुरुः, अध्यापकः, आचार्यः.	ड्रॉनिमेन्ट	सादिक्रीडा युद्धम्.
तालिब	विद्यार्थी [पुं०] छात्रः, अ- ध्येता पठिता.	रेजिष्टर	लेख्यम्, लिप्यनस्थानम्.
इल्म	विषयः.	कालेज	बृहद्विद्यालयः-यम्.
मजमून	दिनपत्रिका, दैनिकवृत्त- पुस्तकम्.	प्रोफ़ेसर	अध्यापकः, गुरुः, आचार्यः.
डायरी	मानसी, मानसिकी. श्रुतः.	इन्स्ट्रालमेंट	भागः, अंशः.
दिली	कक्षा, श्रेणिः-णी.	सनद	प्रमाण निर्णय-पत्रम्.
रेजर	सहाध्यायी [पुं०].	हमउमर	वयस्यः, मित्रम्, सुहृद् [पुं०]
दर्जा	पाठशालाध्यायी [सतीर्थ्यः].	जल्दी	तूर्णम्, शीघ्रम्, श्रद्धिति.
इलास फ़ेलो	व्यायामः, महक्रीडा.	युलाना	आह्वयति ते, आकारयति.
स्कूल	आरम्भा [पुं०], नवच्छात्रः.	शिङ्कारना	निर्भर्त्सयते; तर्जयते; नि- प्टुरमभि-धा; निन्दति अ- धिक्षिपति.
जमना- स्टिक	कन्दुकः, गेन्दुकः.	सर्चकरमा	वि-उत्-सृजति, परित्यज- ति, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, क्षपयति, गमयति, वाप- यति [पुं०].
मुफ्तदी	यष्टिः, [स्त्री०] लगुडः.	चुपचाप-	निभृतं अलक्षितं अपयाति, अपगच्छति.
गैन्द	क्रीडावधिकाष्टानि.	चलेजाना	
बहा	व्याख्यानम्, शासनम्.		
विकेदस			
लेक्चर			

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तुनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पढ़ना	पठति, अध्यायति, घाचयति, अधिगच्छति.	देना(अदा करना)	ददाति दत्ते, अर्पयति.
निघटना	निघतेते.	पढ़ाना	अध्यापयति, शिक्षयति, पाठयति, उपदिशति.
गलती करना	भ्रमति, भ्राम्यति, मुह्यति, प्रमाद्यति अपराध्यति.	मना करना	अपलपति-चदति, नस्वीकरोति, निषेधति, प्रत्याख्याति, अप निन्दुते.
देर करना	चिन्त्यति (ना० धा०).	यदुना	प्रवर्धते, प्रचीयते, उपचीयते
बताना		निकलना	उदेति, उत्तिष्ठति, उत्पद्यते.
मालूम कराना	विज्ञापयति.	हिज्जेकरना	यथाक्षरं सम्याति - पठति, लिखति.

हिन्दी ।

संस्कृत ।

ऐ प्यारे उठो । सूरज निकल आया और सवेरा हो गया.

सुनो मुर्म बाँग दे रहे हैं और पटोरू भी अपने घोंसलों को छोड़ कर आस्नान में विहार कर रहे हैं.

पाथाना इत्यादि कामों से निघट कर मइसे जाओ.

अच्छा । अभी जाना है.

गोपालदत्त ! क्यों देर करते हो क्या जुमाने से नहीं डरते हो.

दोस्त ! डरता तो है लेकिन अभी देर नहीं है.

अच्छा, आओ २ देखो ये हमारे अंग्रेजों के उस्ताद जा रहे हैं.

उत्तिष्ठ वत्स । सूर्य उदतिष्ठत् प्रातः कालो जातश्च.

शृणु कुक्कुटसङ्घो रैति पक्षिणश्चापि स्वनीजानुत्सृज्याम्वरे विहरन्ति.

शोचादिकृत्येभ्यो निवृत्त्य पाठशालां गच्छ.

वाढम् । गच्छाम्यहमधुनैव.

गोपालदत्त ! कथं चिरयसि किमर्थं दृष्टान्न विभोगे ?

विभेमि त्यहं मित्र ! परश्चाद्य नाति-कालः.

घरम्, आगच्छागच्छ, पश्यते ऽस्माक-माङ्गलभाषाध्यापका गच्छन्ति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिघवस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

तो देर नहीं है हँले २ चलो.
 मङ्गलदत्त ! तुम्हारा कल्याण ही बहुत
 दिनों से पाठशाला में तुम्हारी गैर-
 हाजिरी का क्या सबब हुआ.
 मित्र दयामलाल ! मेरी माता बहुत
 दिनों से हुंकार से पीड़ित थी यही
 मेरे न आने का कारण था.
 क्या कोई और खबरगीरा न था ?
 नहीं मेरे पिता तो काशी गये और यड़े
 भाई कुरुक्षेत्र की यात्रा में.
 तुम्हारा एक छोटा भाई भी तो है.
 हाँ, यह तो बालक होने से निगहवानी
 करने में असमर्थ है.
 अब तुम्हारी घालिदह (माता) कैसे हैं.
 अब तो ईश्वर (खुदा) की कृपा (फ़ज़ल) है.
 आज हमारे मद्दसें मैं यह क्या भीड़
 है यह पूछ कर जल्दी मुझको
 खबर दो.
 क्या तुम नहीं जानते कि आज कालेज
 का टूर्नामेन्ट होगा.
 इसका मुन्तजिम कौन है ?
 हमारे मद्दसें के हेडमास्टर श्रीमान्
 महामहिममहोदय अपने अनुचर
 लोगों को खुदा रखने वाले श्रीमान्
 कूपरसाहिब हैं.
 निश्चयही इनका इन्तज़ाम तारीफ़ के
 लायक है.

तदाहि नातिकालः, दानः शनैश्चल.
 मङ्गलदत्त ! भद्रन्ते, बहुभिर्दिवसैः
 पाठशालायां तयानुपस्थितः किं
 कारणं जातम्.
 वयस्य दयामलाल ! ज्वरग्रस्तासीन्म-
 दीया माता बहुभिरहोभिः, पतदि
 ममातागमनकारणम्.
 किं कश्चिदन्यो निरीक्षको नासीत् ?
 न, मम पितरस्तु फार्शी गताः ज्येष्ठ-
 चातरश्च कुरुक्षेत्रयात्रायाम्.
 एकः कनीयान्भ्रातापि तत्र विद्यते.
 घाटम्, सतु बाल्यत्वाभिरीक्षणाक्षमः.
 अधुना तयाम्बाः कथं विद्यन्ते ?
 अस्तीश्वरानुकम्पा त्विदानीम्.
 अद्यान्माकं पाठशालायां कोऽयं महा-
 अनसम्मर्द इति पृष्ट्वा त्वणम् विज्ञा
 पय माम्.
 किं त्वं न जानास्यस्य आङ्ग्लविद्या-
 लयस्य सादिक्कीडा भविष्यति.
 कोऽयमस्य निरीक्षकः ?
 असत्पाठशालाध्यक्षः श्रीमन्महामहि-
 ममहोदयः स्वानुचरानुमोदप्रदः
 श्रीमत् कूपराभिधोमहाशयः.
 खतु प्रशंसनीयोऽस्य प्रयत्नः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तुनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इनके वक्त में हमारी पाठशाला सय तरह से चढ़वृद्धी को प्राप्त हुई.

पेसे हेडमास्टर जिनके वक्त में हम तालियइल्म और उस्ताद लोग अपने-कामों को होशियारी से करते हुए निडर रहते हैं, चिरखीब रहें.

अब बहुत बातें होली जमनास्टिक का वक्त हो गया.

वहां जाकर पहिले तो एक कतार में पड़े हो.

तब डिलमास्टर के हुकम से हर एक दफ्तब कतार में ही अपने-पढ़ने के स्थानों में जाओ.

इसके बाद विद्यार्थियों से पढ़ना शुरू किया जाता है.

यह अंग्रेजी का घण्टा है इसलिये हेड मास्टर साहिय के पास चलें.

कल संस्कृत और हिसाब में हमारा इस्तहान होगा.

देणिये कौन पास होता है कौन फेल.

जो विद्यार्थी अपने मुक़र्रिर किये हुए सबकों को मुक़र्रिरहही वक्त पर नहीं याद कर लेते हैं । उनका पास होना मुश्किल है.

इसीमें अक़मन्द तालिय इल्म को चाहिये कि दिये हुए सबकों को मुक़र्रिरहही वक्त पर याद कर ले.

अस्य समये नः पाठशाला सर्वथोन्नति गता.

चिरखीवत्ये तादृशोऽध्यक्षो यस्य समये धयमध्यापका विद्यार्थिनश्च स्वकृत्यानि सावधानतया कुर्वाणा निर्भीकाः (अफुतोभयाः) सः ।

शलम्बुभापणेन; व्यायामसमयो जातः.

तत्र गत्वा पूर्वन्त्येकस्यामेव पङ्क्त्यामघतिद्वध्यम्.

ततोव्यायामाध्यक्षानुशातः प्रत्येका कक्षा (श्रेणिः) पङ्क्त्यामेव स्वे स्वेऽध्ययनालये गच्छन्तु.

ततोऽध्ययनमारभ्यते छात्रैः.

अस्येवा घटिकादृग्लभापाया धनः प्रथमाध्यापकसमीपे चलत.

श्वो भविता संस्कृते गणिते चास्साकम्परीक्षा.

पद्यन्तु कञ्चीणः कोऽनुत्तीर्णो भवेत्.

ये विद्यार्थिनः स्वनियतपाठान् नियतसमय एव न स्मरन्ति (कंडस्थाकुर्यन्ति) तेषामुत्तीर्णता, दुस्साध्या, (कठिना वा).

अत एव विचक्षणश्टात्रः नियतपाठान् नियतसमय एवानुसरेत्.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिबन्धस्त्विति ।

हिन्दी ।

शुक्रमन्द लोग या तालिबान् आज के काम को दूसरे दिन के लिये नहीं छोड़ते.

उस्ताद् आते हैं मक्के हो जाओ.

सब एक धारणाही खड़े होते हैं और शुक्र को नमस्कार (प्रणाम) करते हैं.

उस्ताद् लोग अपने विद्यार्थियों को आर्शीर्वाद देकर पहिले तालिबान्ओं की धाजिरी लेते हैं.

इनके याद् पहिले दिन पढ़ाये हुए सबकों को सुनते हैं.

और लड़के अलग २ सुनाते हैं.

जो डीक २ सबक नहीं सुनाता वह पिदता और जुर्माना किया जाता है.

भाजक उल्लेदस का सबक बहुत मुश्किल है खुदाही खैर करे.

मणिधर ने फल मेरी पुस्तक खुरा ली.

हेडमास्टर भाहथ ने सहकीकात करके उसको पेसा मारा जिससे वह बे-होश होकर जमीन पर गिर पड़ा.

यह हेडमास्टर साहथ ने बहुत अच्छा किया.

यह फिर कुछ भी न खुरायेगा.

रुपा और दण्ड दो धर्मही मालिकों के हाते हैं.

संस्कृत ।

शुद्धिमन्तो जनादलाभा वाद्यतनं कार्यं
द्वितीयद्वियसार्थं न परित्यजन्ति.

अध्यापका आगच्छन्ति अभ्युत्थानमे-
भ्यो दीयताम्.

सर्वे सुगपदेयोनिष्ठन्ति गुरुव्रमस्कुर्व-
न्ति च.

अध्यापकाः स्वच्छालानभिनन्द्य प्रथमं
छात्राणां समुपस्थितिं गृह्णन्ति.

सदनन्तरं पूर्वदिशसाध्यापितपाठान्
शृण्वन्ति.

छात्राश्च पृथक् पृथक् ध्रावयन्ति.

यो यथावत्पाठं न ध्रावयति स वेहदण्ड-
मर्थदण्डञ्च लभते (वेदाध्वण्डभक्त-
भरति).

अद्यतनो रेखागणितपाठोऽतीव कठि-
नः ईश्वर एव कुशलं विदध्यात्.

मणिधरो ह्यो मदोद्यभ्युत्तकममुष्णात्.

मुख्याध्यक्षो निर्णयानन्तरं तं भृशं
तथात्ताडयद्यथा स निधेतनो भूत्वा
भूमावपतत्.

शोभनं विहितमेतन्मुख्याध्यक्षैः.

स पुनः न किमपि चोरयिष्यति.

अनुग्रहो निग्रहश्च द्वौ धर्मावैव प्रभूणां
भवतः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।

सालियाने इन्तहान में पाम हुए विद्यार्थियों में से पहिले दूसरे इनाम पायेंगे, मेरा तो तोमरा नम्बर है नहीं तो मैं भी इनाम पाना.

मित्र तुम्हारा कौन सा नम्बर है.

न मानूँ, मगर आज मैं लूके से पूछूँगा.

तुम्हारे मदरसे में किनने उस्ताद हैं और वे किस र जाति के हैं.

हेडमास्टर साहब तो यूरोप देश के एकता है.

उनकी क्या तनख्वाह है? ४०० रुपये. सैक्रिण्ड मास्टर कौन है? एक ईसाई साहब है.

उनकी सौ रुपये तनख्वाह है.

थर्ड, फोर्थ, फिफथमास्टर कायस्थ हैं वेभी क्रम से सत्तर, पचास, चालीस रुपये पाते हैं.

सिक्स्थ मास्टर साहब गौड़ ब्राह्मण मुसम्मी ज्वालाप्रसाद हैं वह भी ४० रुपये मदरसे से और पचीस रुपये योर्डिङ्गहौस सुपरिटेण्डेण्टी के इस तरह मिला कर ५५ रुपये पाते हैं.

इसी तरह धपनी अल्लू से बना ले. संस्कृत फारसी पढ़ानेवाले कितने हैं उनकी तलब (तनख्वाह) भी बताओ

संस्कृत ।

वार्षिकपरीक्षायामुर्त्तिणिषु विद्यार्थिषु प्रथमद्वितीयौ पारितोषिकलप्स्येत्ते. मदीया तु तृतीया संख्या नोचेदहमपि पारितोषिकमलप्स्ये.

मित्र तव कतमा संख्या ?

न जाने, पञ्चाहमथ लिपिकां (लेखकं) प्रश्यामि.

तव पाठशालायां कतिपया अध्यापका स्सन्ति किं किं जातीवाश्च ते.

मुख्याध्यक्षस्तु यूरोपदेशीयो एक एव.

नस्य किं घेतनम्? मुद्राणां चतुःशतम्. द्वितीयः, अध्यक्षः कः? स्त्रीऽमतानुयायी-महाशय एकः.

तस्य भृतिमुद्राणां शतमस्ति.

तृतीयचतुर्थपञ्चमाः कायस्थजातीयाः तेऽपि क्रमात्सप्ततिपञ्चाशच्चत्वारिंशन्मुद्रा लभन्ते.

षष्ठो ऽध्यापको गौडवंशीयो महाशयः ज्वालाप्रसादनामा सोऽपि चत्वारिंशन्मुद्राः पाठशालातः पञ्चविंशति-मुद्रादद्यात्. निरीक्षकपदव्या इत्येवं मिलित्वा पञ्चपञ्चाशन्मुद्रा लभते.

इत्थमेव स्वयुद्ध्या परिकल्पयेत्. संस्कृतपारसीकभाषाध्यापकाः कतिपयाः तेषां घेतनान्यपि विज्ञापय.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिबन्धस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

संस्कृत और हिन्दी के पढ़ानेवाले दो हैं पहिले ३० रुपये, और दूसरे २० रुपये पाते हैं.

अरबी फारसी के पढ़ानेवाले दो हैं वे भी क्रम से ३० और बीस रुपया पाते हैं. मैं पाठाने जाना चाहता हूँ महरबानी कर मुझे हुकूम दीजिये । जाओ देर न करो.

यह अहाते मैं फौज पेशाब करता है इसे पकड़ कर यहां लाओ.

कोई गौँ का नावाकिक आदमी है । अच्छा इससे आठ आने जुर्माने के-लेकर और गर्दन पकड़ कर निकाल दो.

इतनीही सजा काफी है.

फयादू इस घेत से नहीं डरता जो अपना सबक याद नहीं करता.

लायक तालिबइल्म उस्ताद के कहने कोही बहुत समझते हैं.

छोटे तालिबइल्म गुरु के बचनों को न मान कर पढ़ने से विमुख हुए अनेक तरह के छोटे भागों में पड़ कर बिन्दगी भर दुःख पाते हैं.

अच्छे शिष्य अमृत तुल्य गुरु का बचन मान उनको माता पिता से भी ज्यादा मानने हुए आदर करते हैं.

अमरमर्त्यवाष्पयोरध्यापकौ द्वौ, प्रथमस्तु त्रिशन्मुद्राः द्वितीयश्च विंशतिरूपकाणि लभते.

अरवपारसीकभाषाध्यापकौ द्वौ तावपि क्रमात् त्रिंशद्विंशतिमुद्राश्च लभेते. अहं शौचार्थं जिगमिषामि कृपयाऽनुभाषयन्तु भवन्तः । गच्छ.मा चिरय ।

कोऽयं परिसरभूमौ (प्र.रूपे वा) मेहति इमं घृत्वाऽप्राणय.

अस्ति फश्चिद्रामाणीऽनाभिः। वरमू अस्मादघ्राणकान् अर्धदण्डस्यादाया-र्धचन्द्रं दत्वा च निष्काशय (निस्सारय).

पतायानेव दण्डः पर्याप्तः.

किं त्वं न विभेष्यसाद्रेत्राथात्स्वपाठं नानुसरसि.

सुयोग्याश्छात्रा गुरुणां कथनमेव बहुमन्यते.

कुशिष्यास्तु गुरुवर्चास्यनाहत्याध्ययनात् पराङ्मुखाः सन्तः नानाविधेषु कुमार्गेषु पतित्वाऽऽजन्मावर्सादन्ति.

सच्छिष्या अमृतकल्पं गुरुवचो मत्वा त पितृभ्यामपि सविशेष मन्यमाना आद्रियन्ते.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

अपनी सिलेट निकाल कर हिस्साव और जबरमुकाबले के सवाल लिखो।

मेरे पास तो कलम कागज है।

क्या मैं इन्हीं पर लिख लूँ।

है तो यह हमारे हेडमास्टर साहब के हुक्म के तालाफ, मगर आज तेरा कसूर माफ़ करता हूँ।

कल जरूर सिलेट हो नहीं तो सज़ा-वार होगा।

बहुन अच्छा । गुरुजी ! दफ्तरी से दवात ले आऊँ।

यहाँ परही दवात है इन्हे लें।

इसमें स्याही नहीं है, तो क्या करूँ ?

गंगाराम भी स्याही देने को मना करता है अच्छा, पैन्सिल सेही जल्द लिखो।

लड़कों किताब बन्द करो यह किताब देपाने का समय नहीं है।

क्या तुम्हारे मय सवाल टोक है।

हाँ, तो घीजगणित के सवाल को बोर्ड पर लिखकर अपने दर्जे के लड़कों को दिखला दो । जो आधा।

तुम मैसे नक्शे में कौन ज्यादा होशियार है । कृष्णदत्तशर्मा।

इस दफा में कितने तालिबइल्म संस्कृत फारसी के हैं और कितने साइंस और ड्राइंग के।

स्यादमपट्टिकां निष्काश्याङ्गणितवीज-गणितप्रणान् लिखत।

मत्समीपे तु लेखनीपत्रञ्च विद्यते।

किमहमस्वोपप्येव लिप्यानि ?

अस्त्येपस्यादाभद्रोऽम्भारं पाठशाला-ध्यक्षस्य परश्चाद्य तत्र दीपं क्षमे (उपेक्षे)।

श्वोऽवश्यमेवाहमपट्टिकास्यात्रोचेद्-ण्डयो भविष्यति।

वरम् । गुरवः । मस्तीपात्राध्यक्षावसी-प.प्रमानयानि।

अत्रैव मग्निपात्रं वर्तते गृहाणैतन्।

मसिरस्त्रिभ वर्तते, तर्हि किं करयानि ?

गङ्गारामोऽपि मसि दातुं प्रत्याख्याति।

वरम्, तूलिकर्येव तूर्णं लिख।

पुस्तकानि पिवत्त छात्रः नास्त्ययं पु-स्तकावलीकनममयः।

किं त्वावसिलाः प्रण्णा उपपन्नाः (तथ्याः, अवितथाः) सन्ति।

ओम्, तर्हि घीजगणितप्रणं फलके

(काष्ठखण्डे) लिखित्वावसिलान्स्व-वर्गच्छात्रान् प्रदर्शय । यथाशा।

मुष्मारं मध्ये देशालेख्ये कतमोऽतीव निपुणः ? कृष्णदत्तशर्मा।

अस्मिन्वर्गे कतिपया विद्यार्थिनः संस्कृतपारसीकभाषयोः सन्ति कतिपया-श्चाकर्षं (चित्रविद्या)पदार्थविज्ञानयोः?

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयसूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

ग्यारह संस्कृत क चौदह कारसी के
और पांच २ साइन्स डाइज़ के है.
क्या आठवीं दर्जा में मसाहत है.
नहीं, यह नया दफ्तर से जुग कराई
जाती है.

अवके सालियाने इम्तहान में तर्जुमा
बहुत कठिन था.

पिछले एन्ड्रैस इम्तहान में शिबलाल
शर्मा तवारीय जुगराफियह में
केल हांगया था.

क्या तुम न्याय शास्त्र भी जानते हो ?
नहीं । विद्या तो पढ़ाने से बढ़ती है
और तरह से नहीं

मैंने तो दर्शन शास्त्र पढ़ा है.

यहां कफार ज्यादा है इसको रबर से
मिट्टा दो.

जिन लड़कों का अंग्रेजी और दूसरी
जवान का लिखना अच्छा है वे
ह्याम से बाहर निकल आवें.

उनका लेख लिखा कर आइन्दह मईने
की पहिली तारीख को इन्स्पेक्टर
साहय के पास भेजा जायगा.

पिछले इन्स्पेक्टरान का क्या नतीजा
हुआ ? अभी तक कुछ नहीं मालूम
पका.

उत्तरसंख्याका: संस्कृते चतुर्दश पारस्या
पञ्च पञ्चाक्षरपदार्थावहानयो .

किमष्टमकक्षायां मापन विद्यते.

न, नतु नयमकक्षान् आरभ्यते.

इदानीन्तनार्थां धार्मिकपरीक्षायामनुवा
दोऽनीत्य हिष्ट (कठिन.) आसीत्.
गतैरेन्ड्रैसपरीक्षायां शिबलालशर्मेति-
हासभूगोलशास्त्रयोरपतत्.

किं त्वं तर्कशास्त्रमपि जानासि ? नो ।
विद्यात्वश्यापनात्प्रथमंतेनान्यथा.

मया तु दर्शनशास्त्रमधीनम्.

कफारोऽयमत्राधिक. एतं चर्पकेण
शोधय.

येषां छात्राणामाङ्गुलभाषातिपिठिती-
यभाषातिपिष्ठ मनोहरा ते यर्गाद्वि-
हिरागच्छन्तु.

तेषां लेख लेखयित्वाऽऽगामिनो मास-
स्य प्रथमतयावध्यक्षमहाशयस-
मिधौ प्रेषयिष्यते.

गतनिरिक्षणस्य कः परिणामो जातः ?
नाहायत कश्चिदद्यावधि.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

बहुत से मदसँ हैं जिनका वन्दोवस्त
मैनेजर द्वारा होता है.

अब हमारे डाइरेक्टर कौन हैं.

श्रीमान् महोदय लूइस साहब.
उस्ताओं के लिये शिष्य का क्या फर्क है.
जो मन से बाणी से कर्म से गुरुओं के
भक्त हैं वेही अच्छे शिष्य हैं और नहीं.
गुरु भी वैसे आज्ञा अच्छे शिष्य को
बैठे स्वर्गीया जान कर हमेशा उस
को अच्छी नसीहत दे और हित-
कारी बचन बोलें.

वी. ए. इन्तहान में कै मज़मून है ? छै.
आजकाल के घमंडी तालियइलम थोड़ी
भी विद्या पढ़ कर गुरुओं को कुञ्ज
नाहीं समझते.

ऐसों का क्या नतीजा होता है ?
हुनियों में सुख न मिलना और अन्धों
में नरक में पड़ना.

इन्द्र पढ़नेवाला और वृहस्पतिजी पढ़ा-
नेवाले और हजार दिव्य धर्म तो भी
विद्या की चाह न पाई । विद्या तो
ऐसी है.

जो थोड़ी भी विद्या पढ़कर अभिमान
करते हैं वे मूर्ख हैं.

बह्वयः पाठशालाः सन्ति यासां प्रणय-
नम् (अधिष्ठानं । व्यवस्थापनं । प्र-
वर्तनं) प्रणेतृद्वारा भवति.

इदानीं (सम्प्रति) कोऽस्माकमधिष्ठाता
[शासिता वा].

श्रीमन्महोदया लूइसमहाशयाः.
गुरुप्रति शिष्यस्य किं कर्तव्यमस्ति.
ये मनसा वाचा कर्मणा गुरुणा भक्ताः
त एव सच्छिष्या नेतरे.

गुरुरप्येतादृशं विनयोपेतं सच्छिष्यम्
पुत्रवज्जात्या सदैव तस्मै सुशिक्षां
दद्यात् हितकरं वचश्च प्रयात्.

सन्ति कति विषया वी.ए.परीक्षायाम् पद-
आधुनिकाः सदर्पाश्छात्रा अत्यल्पाम
पि विद्यामधीत्य गुरुनयमन्यन्ते.

कः परिणामो भवत्येतादृशाम् ?
संसारे सुखानुपलब्धिर्वन्तै निरयपा-
तश्च.

इन्द्रध्याप्येता वृहस्पतिश्च प्रवक्ता वि-
व्यं धर्मसहस्रं तदापि नान्तं जगाम
विद्यायाः । विद्या त्वेतादृशी.

ये स्वल्पामपि विद्यामधीत्याभिमन्यन्ते
ते मूर्खाः.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।

तुम्हारी बैठक में बहुत सी तस्वीरें हैं
वे तुमने कहाँ से पाएँ.

क्या तुम्हारे पास डायरी है.

हे तो, परन्तु मैं उसे काम में नहीं लाता.
चाकू लाने के लिये किसी नौकर को
हुकम दो.

अच्छा, नये तालियरइलों (मुफ्तदियों)
के लिये विलाँ हिसाब बहुत फायदे
मन्द होता है.

तुम भी अपने छोटे भाई को इसे पढ़ाओ.
हमसबको के साथ हमेशा मेल से
रहो.

हमारे मद्रस में हर रोज शाम को गेंद
का खेल और कसरत होती है, अ-
च्छा, कसरत की जगह मुझे भी
दिखाओ.

वहाँ कितने विद्यार्थी जमनास्टिकया-
ले हैं ? चयालीस लड़के.

क्या वे सबही योर्डिङ्गहौस में रहने-
वाले हैं ? नहीं.

शहरी और योर्डर दोनों की ये तादा-
व है.

तू थोटा होगया वहाँ मुझे दे.

क्या तू शुक्रवाती और बङ्गाली भी
जानता है.

संस्कृत ।

युष्माकं सत्कारालये वद्वनि आलेख्या-
नि सन्ति कुतस्त्यया तानि लब्धानि.
किमस्ति तत्र सन्निधौ दैनिकवृत्तपुस्त-
कम्.

अस्ति तु; परञ्चाहं तत्र प्रयुनक्तिम्.
धुरानयनार्थं कश्चिदभृत्यमाह्वयम्.

धरम्, नयच्छात्रेभ्यो मानसिकोऽङ्क-
णितोऽतीयोपयोगी भवति.

त्वमपि ह्यकनिष्ठप्रातरमेमभ्यापय.
स्याभ्यायिभिः सह सर्वेषु सम्मेलनेन
वर्तध्वम्.

अस्माकं पाठशालायां प्रतिदिनं सायं-
काले कन्दुकक्रीडा व्यायामश्च भ-
वति । धरम्, व्यायामभूमिं मामपि
प्रदर्शय.

तत्र कति च्छात्राभ्यायामशीलिनः (से-
यिनः) सन्ति चतुश्चत्वारिंशच्छात्राः.
किमपि तत्र एव ते छात्रालयनिवासि-
नः ? न.

नागराणां छात्रालयाभ्येतृणाञ्चाम्योरे-
पा संख्या.

त्वं घाहोऽभव. कन्दुकयाष्टिं मां प्रयच्छ.
किं त्वं शुक्रवातीं वङ्गभाषाञ्चापि
चेन्नि.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

पहिली तो जानता हूँ दूसरी नहीं।
 बङ्गाली ज़बान तो संस्कृत जाननेवाले
 को बहुत आसान है क्योंकि उसमें
 अक्सर संस्कृत शब्दही इस्तेमाल
 किये जाते हैं सिर्फ़ धोलने में फुर्क है।
 क्या तुम्हारे मस्तिष्क में भी कभी व्या-
 ख्यान होता है।
 होता है शनैश्चर को।
 व्याख्यान देनेवाले कौन हैं ? हमारे
 हेतु परिशुद्ध।
 इन लैक्चरों का कुछ नतीजा भी है।
 ठीकर नहीं क्योंकि आज कल के
 बहुत से मन्दयुक्ति धर्मविद्वज्ज
 उपदेशों को तो जद्वीही अपने मन
 में रख लेते हैं न कि धर्म युक्त उप-
 देशों को।
 यह ठीक है। यह महाराज फाल्गुण
 का प्रभाव है।
 विद्यार्थी दशा में हमेशा अपने वेदे
 इत्यादिक के सदाचार की रक्षा
 करे क्योंकि यह कभी हालत है।
 इस उम्र में सीखे हुए सदाचार या
 दुराचार जीवन पर्यन्त सुख दुःख
 देते हैं।

प्रथमान्तु जानामि न चोत्तराम्।
 यङ्गभाषा तु संस्कृतप्रख्यातीव सुलभा,
 पठस्तस्यां प्रायः संस्कृतशब्दा एव
 प्रयुज्यन्ते केवलं भेदस्तुद्धारणे।
 किम् शुभ्रदोषायां पाठशालायामपि
 कत्रापि व्याख्यानम्भवति।
 भवति तु शनिपासरे।
 व्याख्यानदाता कः ? संस्कृतप्रथमाभ्या-
 पको नः।
 अस्तिकाश्चिरपरिणाम एषां व्याख्याना-
 नाम्।
 नास्ति याथातथ्येन, पठ आधुनिको
 यदप्यः क्षुद्रशूद्रयोर्धर्मविद्वद्धानु-
 पवेशाम्स्तु श्चदित्येष स्वमनस्सु
 धारयन्ति न च धर्मोपेतान्।
 सत्यमेतत् । अस्त्येषः प्रभावः महारा-
 जस्य कलेः।
 छात्राप्रस्थायां स्वपुत्रादिवृत्तं सदैव
 गोपायेत् यत एषा उपकावस्था।
 अस्यामयस्थायां शिक्षितानि सद्गुता-
 नि असद्गुतानि वा यावज्जीवं सु-
 खदुःखे प्रयच्छन्ति।

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।

जैसे कच्ची लकड़ी इधर उधर नवाई जाती है और सूखी लकड़ी नहीं ऐसेही हालत बालकों की होती है।

तुम्हारी दफ्तम की क्या फ़ीस है।

टाई रुपया।

इन्तहान के पच्चे छपाई के लिये धन कहां से आता है। लड़कों के चंदे से।

तुम्हारे मदर्स में इन्तहान के पच्चों का क्या इन्तजाम है।

वे हाथ के छापे (हैंड प्रेस) से यहीं छप जाते हैं।

क्या तुम्हारे मदर्स में उस्ताद लोग अपने क्लास रजिस्टर अलग २ रखते हैं या कुल मदर्स का एकही रजिस्टर है।

तुम्हारे शहर में कोई कालिज है ?

है तो एक मुसलमानों का।

यहां कौन प्रिन्सिपल, साहय, और कौनरिधात्री (द्विस्त्राय) के प्रोफ़ेसर हैं।

अंग्रेजी विद्यारूपी समुद्र के पारंगत दयालु मिस्टर मारिसन नामक साहय प्रिन्सिपल हैं।

हिस्त्राय के प्रोफ़ेसर तो श्रीमान् महाप्रतापी, कठणार्द्रचिंत, कोमलवाणी वाले गणित विद्यारूपी समुद्र के पारंगत, श्रीमान् यादवचन्द्र चक्रवर्ती नामक बहानी महाशय हैं।

संस्कृत ।

यथाऽपक्वः काष्ठ इतस्ततो नभ्रीक्रियते (नाम्यते) नच शुष्ककाष्ठस्तथैव दशा बालानाम्।

किमस्ति शुष्कं तव कक्षायाः।

सार्धरूपकद्वयम्।

परीक्षापत्राणां मुद्रणार्थं व्ययः कुत आयाति ? छात्राणामंशदानात्।

परीक्षापत्राणां कः प्रबन्धस्तव पाठशालायाम्।

तानि तु हस्तमुद्रणयन्त्रादथैव मुद्रितानि भवन्ति।

किमध्यापकास्तव पाठशालायां स्वयंगलेख्यानि पृथक् पृथक् रक्षन्त्यथवा एकमेव लिखनस्थानं समग्रायाः पाठशालायाः।

अस्ति कश्चिद्विद्यालयस्तव पत्तने ?

अस्ति त्वेषो यवनानाम्।

कस्तत्र प्रिन्सिपलमहाशयो गणिताध्यापकश्च।

अस्त्याङ्ग्लविद्यापाठ्यवारपारीणो दयालुमिस्टरमारिसिनाभिधोमहाशयः प्रिन्सिपलः।

गणिताध्यापकस्तु श्रीमन्महामहिममहोदयः कठणार्द्रचेताः कोमलवाक् गणितविद्यारूपारूपारूपताश्रीमद्यादवचन्द्रचक्रवर्त्याख्यो बहूदेशीयो महाशयः।

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।

ऐसेही और भी उस्ताद लोग यहां लायक हैं । अच्छा।

संस्कृत के प्रोफेसर का क्या नाम है ? संस्कृत-विद्या रूपी समुद्र के पारगा-मी पदकर्म साधधान, इलाहाबाद निवासी श्रीमान् परम विद्वान् शि-वाशंकरजी हैं.

नुम्हारे मकसस में माहवारी फीस एक ही पगाने में भेजी जाती है अथवा दो इन्स्टालमेण्ट [हिस्सों] में.

एक बारही । मोहनदत्त अपने दर्जे का राजिष्टर जल्दी लाओ.

यह कहाँ है । गंगाराम को पूछो या नन्हेसों चपरासी को.

वे दोनोंही नहीं मिलते हैं । वे दोनों कहाँ गये पहिले उन्हीं को ढूँढो.

हमेशा मेरे पते से चिट्ठी भेजो.

यह लड़का आठवीं वर्कस में भर्ती होना चाहता है.

इससे फीस लेकर इसका नाम अपने क्लास राजिष्टर में लिख लो.

यह हिसाब और अंग्रेज़ी में इस दफ्तर के नाकाबिल है.

अगरच यह नाकाबिल है तो भी इसकी कमज़ोरी घोडिङ्गहौस में रहने से दूर हो जायगी.

संस्कृत ।

इत्थमन्ये ऽप्यध्यापकास्तत्र सुयोग्याः।
वरम्.

संस्कृताध्यापकस्य किं नाम ?
अमरवाग्निद्याणवपारकृतः पदकर्मवत्-
चेताः प्रयागनिवासी श्रीमत् परम-
विद्वद्वयः शिवाशंकर इति.

तर्तु पाठशालायां मामिकमुल्कमेकदैव
कोपे प्रेष्यते ऽथवा द्वयोरंशयोः.

एकदैव । मोहनदत्त स्वयर्गलेख्यं तू-
र्णमानय.

तर्तु कुत्र वर्तते । गङ्गारामं पृच्छाथ-
वा नन्हेसौमिधं भृत्यम्.

तावैव न मिलतः । तौ कुत्र गता प्रथ-
मं तावन्विष्य.

सदैव मामुद्दिश्य (दत्तमहाशयनाम)
पत्रं प्रेषय (प्रदिणु).

छात्रोऽयमष्टमकक्षायां प्रविशति.

अस्माच्छुल्कमादायास्यामिधं स्वयर्ग-
लेख्ये लिख.

एषस्त्वयोग्योऽस्य वर्गस्य गणिताङ्-
ग्लभाषयोः.

यदि चायमयोग्यस्तथाप्यस्यायोग्यता
छात्रालयनिवासाददूरीभविष्यति.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्यन्धीनिचवस्तूनि ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह तालियरुम किस नाम का है । घट्टीमसाद.	किप्रामायंछात्रः । घट्टीमसाद इति.
इसके घाप का क्या नाम और क्या पेशा है ?	किप्रामास्य पितुः काच वृत्तिः ?
भाप का नाम भोपालदत्त, और सूद की जीविका है.	गोपालदत्तः पितुर्नाम, वृक्ष्याजीवि- त्थ (कुसीदत्त) वृत्तिः ।
पढिडे इसने किसी सरकारी मदसँ में भी पढ़ा है.	पूर्वमनेन कस्यामपि राजकीयपाठशा- लामधीतम्.
किसी भी सरकारी मदसँ में नहीं मगर यहाँ परही एक पब्लिक नाम के प्राइवेट मदसँ में.	न कस्यामपि राजकीयपाठशालायाम् परञ्च पब्लिकनामन्यामराजकीयपाठ शालायामधैव.
तो इसका दाखिला जाँच के बाद होगा. बोर्डिङ्गहीस का माहवारी खर्च यनाभो.	तद्यस्य प्रवेशः परीक्षानन्तरं भविष्यति. छात्रालयस्य मासिकव्यय उच्यताम्.
३) ६० तो खाने में ४) ६० फुट्रैल खर्च में पढ़ते हैं । यह तो मामूली खर्च है.	तिद्यो मुद्रास्तु भोजने चतस्रो मुद्रा- स्त्वतिरिक्तव्यये विद्यन्ति । एष तु साधारणो व्ययः.
चौथी दफ्त के पास हुए बिना सरको- री मदसँ में दाखिला नहीं होता यह कायदा अब भी है-या नहीं.	चतुर्थं कक्षासंनितां विना राजकीय- पाठशालायामप्रवेश इति नियमो- ऽद्यापि वर्तते न वा.
यह कायदा टूट गया. मुम्बारा मदसँ का खुलेगा.	स नियमो निरस्तः खण्डितो वा. मुम्बाराकं पाठशाला कदाऽपावस्थिते (उद्धृष्टस्यनि) ?
इस हफ्ते के अखीर में । तबही अपने माई को लाऊंगा.	अस्य समाहस्यावसाने । तत्रैव स्वन्ना- तरमानेष्यामि.
रगतदान का धरु; बहुत करीब है इस मिये इन दिनों में खूब पढ़े.	परीक्षासमयस्वयतीव समीपो ऽतः स- म्यद् अध्याप्येषु दियसेषु.

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचयस्तूनि ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

दिये हुए इन्तजाम में तुम पास होगे या नहीं।

आशा तो है परञ्च नतीजा तो ईश्वर-धीन ही है।

बोर्डिङ्गहौस में खाने का इन्तजाम अच्छा नहीं है।

कभी बालही स्वाद नहीं होती कभी रोटीही मोटी और कभी होती है।

यहां कोई अचम्भा नहीं है सभी बोर्डिङ्गहौसों में मैंने ऐसाही खाने का इन्तजाम देखा है।

चाहे जैसा हो तो भी यहां खाने का इन्तजाम और बोर्डिङ्गहौसों से अच्छाही है।

आज बहुत से नये तालियररूम दाखिले के लिये आरहे हैं।

हां। जैसे आरहे हैं तैसेही बहुतों के नाम भी खारिज, होंगे।

तुम्हारा निवास स्थान [शैलतणाना] फहां है।

विजयपुर-नाम के गाँव में। अपना भी निवास स्थान बताओ।

मैं तो अलौगढ़ शहर में रहता हूँ।

आज बहुत से बाल आसान को घेरे हुए हैं।

दत्तायाम्परीक्षायां तयोत्तीर्णता भविष्यति नवा।

आशासे त्वहं परञ्च फलन्तु वैद्याधीनमेव।

छात्रालये भोजनप्रबन्धो न प्रशंसनीयः।

कदापि द्विदलेषु सुस्वाद्यां न भवति कदापि करपट्टिका एव स्थूला अपक्काश्च भवन्ति।

न किञ्चिद्व्याप्तुं प्रायशः सर्वेष्वेव छात्रालयेष्वेतादृश एव भोजनप्रबन्धो मया दृष्टः।

यथाकथञ्चित्स्यात्तथाप्यत्र भोजनप्रबन्धोऽन्येभ्यश्छात्रालयेभ्यः भेदानेव।

अथ चहयो नन्याभ्यास्तः प्रवेशार्थमागच्छन्ति।

श्रीम् । यथागच्छन्ति तथा यद्गनां मान्यपि पृथग्भविष्यन्ति।

तव निवासस्थानं कुत्रास्ति ?

विजयपुराभिधे प्रामे । स्वनिवासमपि कथय।

अहन्तु अलीगढ़ाभिधे नगरे (पत्तने) यस्मिन्।

अथ यद्गयो मेघा आकाशमाच्छाद्यन्ति।

छात्रोपयोगीनिपाठशालासम्बन्धीनिचवस्तुनि ।

हिन्दी ।

फल मेह बहुत उपयोगी बरसा.
 वह स्टूल यहां लाओ । लाता हं भाई.
 क्यों चक्कर खाता है इस सबाल का
 और कायदा है.
 जो तालिचरुम फल देर कफे आये
 थे उनको आज हेडमास्टर बुला
 कर डाँटेने
 गोविन्द जिनना धन कमाता है उतना
 खो देता है.
 हमने यह लौहारों की छुट्टियां खेल
 में ही गुजरती मालूम होती हैं.
 कोई मुझे जगह दीजिये यह मेरी प्रा-
 धना है और यह मेरी सैन्य क्षमिये.
 हमारे दर्जे में तो कृष्णदत्त अच्छे अक्षर
 लिखता है.
 छात्रों से अपना पाठ रोज पढ़ लेना
 चाहिये नहीं तो भूल दिया जाता है.
 गोपालदत्त मदमें मैं आकर और छुट्टी
 न लेकरही चला गया था इसीसे
 हमारे हेडमास्टर साहब ने वह
 बेटों से मारा.

संस्कृत ।

हो मेघसूक्तीर्षोपयोगी कृष्टः.
 काष्ठपीक्ष्मदोऽन्नानय । आनयामि भ्रातः.
 विमथं भ्रान्त्यसि भस्य प्रणस्यान्या
 रीतिः.
 ये विद्याधिनी हो खेलानिक्रमं विधा-
 यागनास्तान्मुल्याभ्यक्षोऽद्याकार्यं
 भस्मैश्च्यवते.
 गोविन्दो यावद्वनमेजति तावद्गमयति.
 अतप्याभ्रमहोत्सवं खेलन्तः सम्भाष-
 यामः.
 कश्चित्प्रयो महा दीपतामित्यभ्यधना
 मदीयः । इदञ्च प्रमाणपत्रमपिदृश्यताम्
 कृष्णदत्तोस्माकं क्षेप्यान्तु समीचीना-
 न्यक्षराणि लिप्यति.
 छात्रैः स्वाप्यापो नित्यमध्येतव्यो नो-
 चेद्विस्मयते.
 गोपालदत्त पाठशालामागत्यावकाश-
 मगृह्यैतव्येय गतोऽत पयास्मदभ्यक्षेण
 स घेष्टेस्ताडितः.



वारहवां अध्याय—द्वादशोऽध्यायः ।

भोजने इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
नाज	धान्यम्, शस्यः, घ्रीहिः (पुं०)	लोभिया	शिथिकः.
गेंहू	गोधूमः, सुमनः (पुं०)	तिल	तिलम्.
जौ	यवः, प्रवेष्टः.	जई	यवभेदः
चना	चणकाः, पाजिमन्थः.	आम	आम्रः, रसालः-लम्, चूतः.
मटर	तुवरी, वरुलः, फलायः, हरेणुः त्रिपुटः.	नीबू	जम्बीरः, दन्तशठः.
अरहर	आड़फी.	बेर	कर्कन्धूः, यद्रीफलम्.
मसूर	मसूरः, मङ्गल्यकः.	बिजौरा नी-	बीजपूरः.
धोवा	सूपः, काश्चनसूपः.	बूचकोतरा	राजिका.
दाल	द्विवाला. —	राई	अम्लता, अम्लरसः.
वाल	मापः.	खट्टाई	सूतम्.
उरद	मुद्गकः.	शाहदूत	फरमदकम्.
मूंग	मकुष्टः.	करौंदा	कदलीफलम्.
मोठ	कोद्रवः	फेला फी	पटोलकम्.
फोदों	अक्षतम्, तण्डुलः.	फली	अमृतफलम्.
चावल	भक्तम्, आवन-भक्तम्.	परवर	प्रपुलम्.
भात	नीवारः.	अमरुद	अम्लिका, चिञ्चा, तिनित्ती.
प्याल	मण्डम्.	खीरा	दाहिमफलम्, दाहिमम्.
माड़	सर्पपः, तन्तुमः.	अनार	नारङ्गः, नागरङ्गः, नादेयी.
सरसों	शस्यम्.	नारंगी	नारङ्गफलम्, भूमिजम्बुका
मफा	जुर्णली.	लोकाट	लवफटम्, कोमलवलकला.
ज्वार	अणुः, मियङ्गुः.	अङ्गूर	द्राक्षा, मृत्तीका.
वाजरा	कङ्गुः.	चिथी	क्षीरिकाफलम्.

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
आलू	आलुनाः-कम्.	मूली	मूलिका, काथली.
रतालू		धैगन	धृन्ताकम्.
फसेरू	कमेयः.	गाजर	शुजनम्.
ककड़ी	ककटिका.	मिचं	मरीचम्, कलकम्.
फूट,		बनकरेले	
खरबूजे	चिर्भट्टिका.	ककोड़े	ककौटकम्, कुइमलः.
तरबूजे	तरम्बुजम्, कालिङ्गम्, क-	कचनार	
काशीफल	लिङ्गकम्.	की कली	काञ्चनारोद्भवाः कालिकाः.
फालसे	कुष्माण्डम्, कफोयः.	जमीकन्द	सूरणकम्.
कइद्	परुयः.	करेले	कारयेहम्.
मेथी का	तुम्बी.	तोरई	केशातकी, दीर्घफला.
साग	मेथिका शाकम्.	बधुआ	घास्तुकः.
नारी का		भिंडी	भिण्डिका.
साग	नाडिकाशाकम्.	बड़हल	लकुचः-चम्.
पालफ		सुँटया	भारवीकाः.
चौलाई	पालक्या.	सैम	सिम्विः.
कुलफा	मेघनादः.	गोभी	गोजिह्वा.
सैन्द	कुलयो.	जंभीरानीबू	जम्बोरम्.
केत :	चित्रफलम्.	फड़ी	काथली, काथिता.
सिंघाड़े	कापित्थः, दधित्थः दधिफल	बड़ी	मापयटी.
व्याज	शुहाटः.	मंगौरी	मुद्गयटी, मापरङ्गी.
लहसन	पलाण्डुः, सुकन्दकः.	बड़े	घटकाः
टिण्डे	लज्जुनम्, रसोतकाः.	कौंजी के	
कमरख	डिण्डिसम्.	बड़े	काञ्चिकघटकाः.
जामुन	कर्मरक्ष-क्षम्.	छुहारे	दुष्कलजूरः.
	जम्बुः-बु (खो)जम्बुफलम्.	थादाम	वादासम्.
	जाम्बयम्.		

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
अखरोट	अक्षोट'-टम्.	मुरब्बा	रागखाण्डव'.
दाख	शुष्कद्राक्षा, गौस्तनी.	चिलुआ	चिर्भटम्.
गोळा	नारिकेलफलम्.	आचार	सन्धितम्, सन्धानम्, स
चिरौंजी	घरस्कन्धः.		न्धितद्रव्यम्.
चिलगोजा	पद्मवीजाभम्, पानीयफलम्.	खटनी	अवलेहः. —
मखाने	निकुचः-चम्.	शकरपारे	शकरा-पाल.-पालिका.
मसाले	वेसवारः.	मठरी	मण्डः.
पापड़	पपंदाः. —	सैमई	सेविका:
भतां	भरता.	भाँग	मातुलानी, भङ्गा. —
परामठा	पोलिका.	दूध	दुग्धम्, पयः [न०] क्षौरम्
पूरी	पूलिका, शुष्कुलो. —	खीर	पायसम्.
रोटी	करपाट्टिका.	दही	दधि [न०]
बाटी	अङ्गारककेटी.	छाछ	तंक्रमः.
घेड़ई	घेढमिका, मापगर्भा.	घी	सर्पिः [न०] आज्यम्, घृतम्.
पन्ना	पानकम्.	तेल	तैलः, अनाज्यम्.
सिखरन	शिखरणी.	पेडा	पेडा, पीडिका.
लैनी,		बरफी	बरफी, चम्बिका.
मफखन	नवनीतम्, दैयङ्गयानम्. —	लड्डू	मोदकः.
सत्तू	सफतु'.	फैनी	फेनिका.
बोहरी	धाना.	जलेयी	कुण्डलिका. —
चिरघा	पृथुकाः.	इमरती	
खीलें	लाजाः, भर्जितप्रोहयः	खजला	खाजा.
होरा	होलकः	बालूसार्ह	मिष्टमण्ड .
गरम		लपसी	लप्सिका.
मसाला	सौरभम्. —	हलुआ	
साठी		मालपूआ	मल्लपूयः, पूपसम्. —
चावल	पट्टिका.		

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
गूँझा	संयायकम्;	रसोइया	सूदः, पाचकः, सूषकारः
गुलायजा- मन	दुग्धपृषिका.	अचार-	उपस्फूर्णाति-णीते,
घेघर	धृतपूरः	डालना	सं-वधाति, धत्ते.
रायता	दाधेयम्.	रौंधना	रष्यति.
ताहरी	तापहरी.	उयालना	उत्फधति, पचति, धाति.
खिचड़ी	कृशारा.	सूपना	शुष्यति, शोषंयाति,
गुड	गुडः.	सुपाना	शोषयति.
पोदीना	अजगन्धः.	तोड़ना	भ्रमति, खण्डयति.
शकर,	पार्करा, सिता, सण्डवि-	लिपना	लिप्यति.
बूरा	कारः.	भूलना	वि स्मरति, स्मृतः-अंशते,
गन्ना	इक्षुकाण्डम्, इक्षुः, रसाटः	पफना	घटति.
अँदरसे	इन्दुरसाः.	पफाना	पाचयति.
शाहद	मधु [न०] क्षौद्रम्, सारघम्.		

हिन्दी ।

संस्कृत ।

अन्नही मनुष्यों का ज्यादा भोजन का हिस्सा है.

अन्नो को सुनो—गेंडू, जौ, चना, मटर, साठो चावल, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, लोभिया, फांगनी घेघरह होते हैं। इनमें चावल और गेंडू अक्सर धनधानों का भोजन है और सब साधारण लोगों का.

जिनको शाल खाई जाती है उन भाजों के नाम भी कृपा कर आप कहें.

धान्यैरेयाधिको भोजनांशो मनुष्याणाम्.

धान्यानि शृणु—गोधूमो यवश्चणको बर्तुलः [कलायः] पष्टिका, अक्षतः शस्यं जुर्णली, त्रियङ्गुः शिविकः कङ्गुरित्यादीनि सन्ति । एष्वक्षतगोधूमौ प्रायो धनिनां भोजनमन्यदाधिलं सामान्यानाम्—

येषां त्रिदला खाद्यते तेषां धान्यानां नामान्यापि कृपया ह्यवन्तु भवन्तः.

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>मटर, भरहर, मसूर, उरद, मूँग, मोठ, चना घगैरह की चुली दाल और सतूरी दाल भी अक्सर मनुष्य खाते हैं। फ्या फोदों भी मनुष्य खाते हैं। नहीं। तिल का तेल जाड़ों में सरसों का गरमी में हितकारी होता है। शाग कितनी तरहके हैं उनके नामभी वर्णन करो।</p>	<p>तुघरी, आढकी, मसूरो मापो मुद्रको म-कुष्ठधनक इत्यादीनां काञ्चनसूपं स-तुपां छिदलाश्चापि प्रायोजना-यादन्ति। किं कोद्रवमपि मनुष्याः यादन्ति । न. तिलस्य तैलं शिशिगे, सपेपस्य प्रोक्षे पथ्यम्भवति। कतिविधाः शाकास्मेपां नामान्यपि-वर्णयतु।</p>
<p>आलू, अरबी, ककड़ी, काशीफल कद्दू, मेथी, नारी कासग, पालक, चौलाई, कुलफा, परयर, प्याज, टिण्डे मूली, बैंगन गाजर, ककोड़ा चथुआ कचनारकी कली, जमीकन्द, करेले तोरई, गोभी इत्यादि बहुतसे शाग होते हैं।</p>	<p>आलुका, अरबीका, ककटिका, कूष्माण्डं, तुम्बी, मेथिका, नाडिका, पालफ्या, मेघनादः, कुलथी, पटोलकं, पलाण्डुः डिण्डसं, मूलिका, वृन्ताकं, गृञ्जनं, कफौटकं, वास्तुकः, काञ्चनारोद्भवाः कलिकाः, सूरणकं, कारवेहं, कौशातकी गोजिह्वत्यादयो ग्रहयः शाकाः सन्ति।</p>
<p>हरी मिर्च और करौदों में राई जरूर डालो।</p>	<p>हरिन्मरीचेषु करमर्दकेषु च राजिकाम-घश्यं प्रक्षिप ।</p>
<p>दो पैसे का आचार ले आओ। इस साल तुमने आम का अचार डाला या नहीं। डाला तो है।</p>	<p>द्रयोस्ताम्रखण्डयोः सन्धितद्रव्यमानया अस्निन्वये त्वयाघ्नस्य सन्धितं सन्धातं (उपस्कृतं) नवा । सन्धातन्तु।</p>
<p>अब आप फलों को बयान करें। अच्छा। गिनो, आम, जँभीरा, घैर, सैद, विजौरा, शहतूत, केला, कैत, अनार, नारंगी, इल्ली, अंगूर, कसेरू, खित्री, फूट, तरबूज, खीरा, सिंघाड़े जामन इत्यादि बहुत से होते हैं।</p>	<p>अधुना फलान्याख्यान्तु भवन्तः । वरम् । गणय, आमो जम्बीरः कूर्कन्धू-ब्धिफलं, धोजपूरस्तूतं कदली-फलं, कपित्थोदाडिमो, नारङ्गः अ-म्लिकाफलं द्राक्षा कसेरुः, क्षीरिका चिर्मटिका, तरन्धुजं, त्रपुसं, शृङ्गादो जम्बूफलमित्यादीनि बहूनि सन्ति।</p>

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

हे रसोईयेजी आज तो कहीं से तोड़ सहित दही वा मट्ठा लाकर कढ़ी करो । अच्छा.

कल तैने क्या रांधा था ?

मंगौरी और उरदी.

कल तो दही के बड़े और कांजी के बड़े करा । जो आजा.

धोषा दाल और शाग के लिये मसाला पीसो देखो आज्ञा नौकर को रखोईया देता है.

दो आने के पापड़ लाओ.

पैगन का भर्ता अच्छा, हितकारी और ठण्ढा होता है.

और भी खाने की चीजों के नाम बताओ.

परामटे, पूरी, रोटी, घाटी, मटरी ताहरी, लिचड़ी कचौड़ी इत्यादि.

अब मिष्ठानों को भी कहो.

लडू, कैनी, अन्दरसे, जलेबी इमती, खीर, लप्ती [हलुभा], मालपूभा, गूँहा, गुलाबजामन, घेवर, शकर, बूरा गुड पेड़ा बरफी इत्यादि पदार्थ होते हैं.

शकर घनेरह रंख के गभों से पैदा होती है.

सूपकाराद्य दिने तु कुतोऽपि समल-
दधि तन्नं वानीय क्वथितां कुव ।
वत्स ।

हाः (गतेहि) त्वया किं रन्धितम् ?

मुद्रवत्सो मापरहृग्यध.

श्वस्तु दाधिवटकान् काञ्जिकवटका
शुक्र । यथाज्ञा.

सूपार्थं शाकार्यञ्च वेसवारं पिण्डोत्या-
ज्ञापयति भृत्य सूदः.

द्वयोरानकयोः पर्वटानानय.

घृन्ताकस्य मारुताशोभन (सुखादु)

पथ्यं शीतलञ्च भवति.

अन्येषामपि भोज्यपदार्थानां नामानि
ब्रूहि.

पोलिका, शुष्कुली, करपट्टिका अङ्-
गारकर्कटी, मण्डः, तापहरी, कुरारा,
घेदामिकेत्यादीनि.

अधुना मिष्ठानान्यपि कथय.

मोदकः, फोनिका, इन्दुरस्ताः, कुण्डलि-
काः पायसं, खाजा, लप्सिका, मल्ल-
पूपः, संयावः दुग्धपूपिकाः, घृत-
पूरः, शर्करागुडः पीडिकाचक्रिके-
त्यादिपदार्थाः सन्ति.

शर्करादय इक्षुकाण्डेभ्य उत्पद्यन्ते.

भोजन इत्यादि का वर्णन—भोजनपदार्थविशेषः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

सैमई घी और शकर से ही गरिष्ठ नहीं
होतीं इनके बिना गरिष्ठ होतीं हैं.

हे मा ! इस कटोरे में मुझको कुछ
दूध दे । देती हूँ बेडा.

अब पिये जाने वाले पदार्थ सुनो । पन्ना,
सत्तू, शिखरन, दूध बगैरहः.

दो पैसे का दूध मोठा लाओ.

लौनी, शहद, चटनी बगैरह लेख प-
दार्थ हैं.

चाबने योग्य पदार्थ जैसे बोहरी, खील
चिरवा, होले, भुनेचने, चिलवा
इत्यादि हैं.

अब सूखे फलों को वर्णन करूंगा.

सुहारे, चादाम, अपरोट, फिशमिश,
गोला, बगैरह होते हैं.

ऊपर कहीं चीजों मेंसे आधा २ सेर
संजोये के लिये खरीद लो.

यह फल कच्चा है इसको न तोड़ो.

आज फल कौन २ से शाक बाजार में
मिलते हैं । पैगन बगैरह बहुत से.

इन फलों के नाम किसी कामुज पर
लिख कर मुझे दे दो नहीं तो मैं
भूल जाऊंगा.

सैयिकाः सर्पिभाशकैरेवागरिष्ठा अ-
स्यथा गरिष्ठाः.

अस्मिँश्चपके मां किञ्चिदुग्धं देहि
मातः । ददामि चत्स.

पेयपदार्थान् शृणु । पानकं, सफ्तुः,
शिरारिणां दुग्धमित्यादयः.

सदाकरं दुग्धमानय द्वयोस्ताम्रखण्डयोः
नवनीतं, क्षौद्रं, अवलेह इत्यादयो-
लेह्यां.

घर्ष्याः यथा धानाः, लाजाः, पृथुकाः,
होलाकाः, मृष्टचणकाः, चिर्मटप्रभृ-
तय सन्ति.

अथ घनानि फोऽर्थः शुष्कफलानि
वर्णयिष्ये.

शुष्कपर्जूरः, चादामं, अक्षौद्रः गोस्तनी
नारिकेलफलमित्यादीनि सन्ति.

उपरोक्तैष्वर्धमर्धं सेटकं त्रिवाहप्रद-
शिन्यै क्रीणीहि.

शलाह्रिदं फलं भाभिन्धेनत्.

अद्यत्वे कानिकानि शाकानि विपणौ-
मिलन्ति । वृन्ताकादीनिवह्नि ।

एतेषां फलानां नामानि कस्मिँश्चित्पत्र-
लिखित्यामां देहान्यथाहं विस्मरि-
ष्यामि ।

तेरहवां अध्याय—त्रयोदशोऽध्यायः ।

सम्बन्ध जनानेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बाप	पिता, जनकः.	बाधा	पितामहः.
मा	माता, जननी, अम्बा.	परबाधा	प्रपितामहः.
पेटा	पुत्रः, सूनुः, आत्मजः.	बृद्ध पर-	बृद्धप्रपितामहः.
पेटो	पुत्री, आत्मजा, दुहिता.	बाधा	पत्नीभगिनीपतिः.
भार	भ्राता, सहोदरः, अग्रजः- अनुजः.	साहू	दौहित्रः. **
भतीजा	भ्रातृजः, भ्रातृभ्यः.	धेपता	जामाता, दुहितृपतिः.
बहिन	भगिनी, स्वसा.	जमाई	भगिनीपतिः, आतुला.
फुआ	पितृस्वसा.	बहनोई	देवरः, देवा (देव) (पुं०).
„ कापेटा	पैतृष्यभ्यः.	देवर	घोरानो
मामा	मातुलः, मामः.	जिठानी	यातृ (स्त्री०)
„ कापेटा	मातुलेयः.	जेठ	ज्येष्ठः, पतेरग्रजः.
भानजा	भागिनेय, स्वभ्रैयः.	चाचा	पितृभ्यः. —
पहू	भार्या, पत्नी, जाया, यधूः, कलभ्रम्.	ताऊ	पितृदरः, ज्येष्ठपिता.
पति	पतिः, भर्ता, धवः, कान्तः.	खान्दान	कुलम्, वंशः, अन्ययः, गो- * भ्रम्, सन्ततिः, अन्यवायः.
साला	श्यालः.	पुत्रयधू	पुत्रयधूः, स्तुषा.
सास	श्वश्रुः (स्त्री).	पोता, नाती	नाता, पौत्रः.
ससुर	श्वसुरः.	परनाती	प्रनता, प्रपौत्रः.
मौसी	मातृभ्यसा.	परपोता	वाङ्मदानधिधिः.
„ कापेटा	मातृभ्यभ्यः.	सगाई	विवाहः, उद्वाहः, परिणयः.
नाना	मातामहः.	व्याह	द्रव्य, सामग्री, वस्तुनि
परनाना	प्रमातामहः.	योहा,	गृहोपस्करः.
बृद्धपर- नाना	बृद्धप्रमातामहः.	बासबाथ	

सम्बन्ध जनानेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी	संस्कृत ।
व्याहक- रना	परिणयति, उद्वहति, उप- यच्छते.	बोझाला- दना	भारन्यस्यति, निवधाति, भा- रेणपीडयति, भारमारो- पयति भाराक्रान्तं करोति.
भजना, से- घनकरना	भजति—ते	लंडना	शेते, अभ्यास्ते.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तुम्हारे पिता कहाँ हैं ? चे तो लाहौर हैं. तुमकै भाई हो ? पाँच तुम्हारी यहन का सम्बन्ध कहाँ हुआ ? पटना शहर में. मेरे भाईके तीन घेटी हैं उनमें से एक तो लखनऊ व्याही है दूसरी अ- ल्मोड़ा शहर में और तीसरी को सगाई काशी में हुई है. मा चूचियों से पुत्र को दूध पिलाती है मेरी एक फूआ, पाँच फुफेरे भाई और चार भानजे दिल्ली में रहते हैं. तुम्हारा मामा किसनाम का है ? श- म्भुदत्त. मेरे दो मामाके लड़के लक्ष्मी प्रसाद- और जुगल किशोर हैं. तुम्हारी स्त्री का कैसा स्वभाव है ? यहूत तारीफकेलायक. रामसेवक की स्त्री तो कुलदा है पेसा मुना गया है.	तव पिता कुत्रास्ति ? ते तु लघपुरे वर्तन्ते. कति भ्रातरो यूयम् ? पञ्च. तव भगिन्याः सम्बन्धः कुत्राभूत् ? पाटलिपुत्रनाम्नि नगरे. मम भ्रातुः तिस्रः पुत्र्याः सन्ति ता- सामेका तु लक्ष्मणपुरे परिणीता द्वितीया त्वल्मोड़नगरे तृतीयाया याक्प्रदानविधिवीराणस्यामभूत्. माता स्तनाभ्यां पुत्रं दुग्धं पाययति. ममैका पितृष्वसा पञ्चपैतृष्वस्त्रेयाश्च- त्वानो भगिनेयाश्चेन्द्रप्रस्थे निवसन्ति. किन्नामा तव मातुलः ? शम्भुदत्तः. मम द्वौ मातुलेयौ लक्ष्मीप्रसादसुगल- किशोरायिते. कीदृशी प्रकृतिस्तव भार्यायाः ? सु- श्लाघ्या. रामसेवकस्य जाया तु कुलदेति श्रूयते.

सम्बन्ध जाननेवाले शब्दों का वर्णन—सम्बन्धद्योतकाः शब्दाः ।

कुलटा शब्दको मैंने नहीं जाना इससे खुलासा कहिये.

जो अपने पति को छोड़ जायको भजे-वही कुलटा है.

तुम्हारे कोई साला है? कोई भी नहीं. सुसरके पान्थान में तो बहुत हैं परन्तु कोई पास अपना नहीं है। मेरी सासता जीती हैं.

और भी रिद्धतों के नाम लिखिये.

अच्छा सुनो.

मौसी, मौसेराभाई, साहू, धेयता, जमाई, वहनोई, देवर, पतोहू वीरानी वाजिठोनी, जेट, चाची ताऊ, ननद, पोता, परपोता नाती, नाना, परनाना, बूख परनाना, चाचा, परचाचा, बूख परचाचा, चमेरहू है.

स्त्री पुरुष "दम्पती" और "जम्पती" कहलाते हैं.

दम्पती जौहे भाई हैं.

मेरेपिता अब दूसरी स्त्री व्याहेंगे.

यहां आपकी पतोहू है इसलिये यहां न जाइये.

व्याहों में सबचीन उकड़ों या ऊंटों में लादी जाते हैं.

उसका घंटा, भतीजा और ममेरा भाई लाहौर कालेज में अंमनी पढ़ते हैं.

कुलटा शब्दमहं नाहासिपमतो.

या पति हित्वा जारम्भजति सैव कुलटा.

अस्ति कश्चिच्छालस्तव । न कोऽपि-श्वसुरान्वयाये तु बहवस्सन्ति परञ्च न कोपि स्वकीयः । मम श्वश्रुस्तु जीवति.

अन्येषां सम्बन्धानां नामान्यापि लिखत.

वरम् शृणु.

मातृष्वसा, मातृष्वश्रेयः पत्नीभगिनी-पतिः दौहित्रः जामाता, भगिनी-पतिः, देवरः स्नुषा, याता, ज्येष्ठः, पितृव्यः, ज्येष्ठपिता, ननान्दा पौत्रः प्रपौत्रः नत्ता मातामहः प्रमातामहः बृहप्रमातामहः पितामहः प्रपितामहः बृहप्रपितामह इत्यादीनि सन्ति.

स्त्रीपुरुषौ दम्पती जम्पतीति शब्देते.

आद्यां यमजौ भ्रातरौ.

मम पितापुना द्वितीयां स्त्रियमुद्गृह्यति (परिषेप्यति.)

तत्र भवदीया स्नुषाध्यास्ते ऽतस्तत्र मा गच्छतु.

विवाहसमये परतुजानं शकटेषु उद्ग्रेषु वा भारत्येन न्यस्यते.

तस्य पुत्राः, भ्रातृजः, मातुलेयश्च लक्ष-पुरविद्यालयेऽऽहलभाषामधीते.

चौदहवां अध्याय—चतुर्दशोऽध्यायः ।

जाति इत्यादि का वर्णन—शातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
ब्राह्मण	भूसुरः, वाडवः, विप्रः, अग्र- जन्मा (पुं०) द्विजः.	यज्ञकर्त्तॆ- वाला	यायजूकः.
क्षत्री	क्षत्रियः.	साकल्य	चरः.
वैश्य	वैश्यः, विद् (पुं०) ऊरुजः, अर्यः.	देवाग्र	हव्यम्.
शूद्र	शूद्रः, यूपलः, पादजः, ज- यन्यजः, अन्त्यजः.	पित्र्यग्र	कन्यम्.
विद्वान्	विपश्चित्, कोविदः, बुधः, पण्डितः.	महाराजा	राजन्यः, मण्डलेद्वरः, स- म्राट्.
धेवपाठी	वेदाध्यायी, धोत्रियः, छा- न्दसः.	दीवान	मन्त्री [पुं०], सचिवः अ- मात्यः.
पढ़ानेवाला	उपाध्यायः, अध्यापकः, आ- चार्यः.	ड्यौर्द्धा- घान्	प्रतिहारः, द्वारपालः चेत्र- धरः, कञ्चुकी.
यज्ञ	क्रतुः, मरुः यज्ञः, सवः, अध्वरः.	खोजा	पण्डः, शण्डः.
पुरोहित	पुरोधाः [पुं०] पुरोहितः.	दुश्मन	रिपुः, वैरी, [पुं०] अरिः, शत्रुः, छिद्.
आचमन	उपस्पर्शः, आचमनम्.	मित्र	धयस्यः, स्निग्धः, मित्रम्, सुहृत्.
पूजा	पूजा, सपर्या अर्चा, नमस्या.	दूत	दूतः, सन्देशहरः.
सभा	समज्या, संसत्, सभा, गोष्ठी, परिपत् [स्त्री].	गुप्तदूत	चरः, स्पर्शः, गुप्तदूतः.
सभासद	सदस्याः, सभ्याः, सामा- जिकाः.	रस्तेगीर	पान्धः, पथिकः.
ज्योतिषी	द्वैवज्ञः, गणकः, ज्योतिषिद्.	भेट	उपायनम्, बलिः, उपहारः.
मत	उपवासः, उपोषणम्, मतम्, नियमः.	विवाहः	परिणयः, उद्वाहः, पाणि- पीडनम्.
		दहेज	यीतकम्, यौतुकम्.
		खीप्रसंग	व्यवायः, प्राम्यधर्मः, मैथु- नम्.

जाति इत्यादि का वर्णन—जातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
घूस	उत्कीचः, उपायनम् .	बहादुर	शूरः, वीरः.
चौर	चमरम्, चामरम् .	फौज	सेना, वृत्तना, चमूः, बलम्.
राजासन	नृपासनम्, सिंहासनम्.	लाश	कुणपः, शयम्.
सोनेकी- हारी	भृङ्गारः, कनकालुका.	मरघटा	दमदानम्, पितृघनम्.
संभ्राम	युद्धम्, आयोधनम्, समरः, मृधः.	छुरी	छुरी, छुरिका.
खिला	दुर्गम्, फोटः, फोडिः.	मौंगरा	मुङ्गरः.
पहरा	सञ्जनम्, उपरक्षणम् .	ढेरा, छा- पनी	निवेशः, शिविरम् .
तलवार	असिः, खड्गः.	हाथीका- मव	मवः, धानम्.
हाल	चर्म [न०]	हाथी की- झुल	कुपम् (शिपु).
धनुष	धनुः, [न०] चापः, शरासनः	„ चिंघाड	चिन्कारः.
बन्दूक,	बाहियन्त्रम् बालिकायन्त्रम्.	„ गलेफू	गण्डः, कटः, कपोलः.
सोप	शरम्, इपुः, मार्गणः.	हथिनी	फरिणी, घेनुका, वशा.
पाण	इसुधिः, सूर्पीरः, निपङ्गः.	धौकुश	अङ्कुशः, सृणिः
तरफत	घन्दीयुद्धः, काटायुद्धः-भारः-	घोड़ा	घात्री, [पुं.] घाहः, हयः, अदवः.
जेल-	प्रग्रहः.	घोड़ी	अश्वः, वङ्घा, घामी.
खाना	मृत्युः, निघन्तः, पञ्चत्यम्, मरणम्.	घोड़ी की दिनादिनाट	हेपा, हेपा.
मौत	जनुः [न०] जन्मम्, जन्म [न०]	कोड़ा	कशा.
जन्म	धर्म [न.] कथचः, शिरस्तम् शीर्षणम्.	लगाम	फविका, खलीनः [उस्त्री.]
निराह- घरर	परशुः.	रथ	रथः, स्वन्दनः, शताङ्गः.
करस्ता	भङ्गः.	जूना	कूबरः, युगन्धरः.
भाटा		पैदल	पत्तिः, पदातिः पवमः.

जाति इत्यादि का वर्णन—शातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
उधार	उद्धारः, ऋणम्, पर्युदञ्चनम्	सुनार	स्वर्णकारः, फलादः रक्म- कारकः.
बदला	परिवर्तः, विनिमयः.	कसौटी	शाणः, निकपः, कपः मूरा [सोना पकाने का पाथ].
जिस	याचितकम्.	लुहार	लोहकारः अयस्कारः.
साहूकार	उत्तमर्णः.	धौकनी	भस्त्रा, चर्मप्रसेविका दृतिः [पु०].
फर्जदार	अधमर्णः.	राज	लेपकः, सुभ्राजीवी, पलगण्ड
रोजगार	जीविका, वृत्तिः आजोवः	घसूली	दङ्कः, पापाणदारणः.
धोपार	घाणिज्यम्.	धोवी	रजकः, निर्णोजकः.
धन	वित्तम्, अक्षयम्, धनु, द्रविणम्, अर्थः.	इस्त्री	अयायन्त्रम्.
धरोहर	उपनिधिः, न्यासः.	कुंभार	कुम्भकारः, कुलालः.
परखू निया	वूर्णविक्रेता (पु०)	चाफ	चक्रम्.
गान्द	प्रसवः न्युतः	अवा	याकपुटी, आपाकः.
घोरा	शाणपुटः गोणी.	चितेरे	कारः, शिल्पी.
सुतली	सूत्रम्, तन्तुः.	माली	मालाकारः मालिकः.
इलवारं	आपापेकः, भक्ष्यकारः	मनिहार	फाचकङ्कणविक्रेता.
पजाज	घस्त्रविक्रेता-विकयी [पु०]	चूड़ी	फाचबलयम् फङ्कणम् फट- कम्.
अत्तार	औपधिचिकेता—विकयी	न्यारिया	द्रावकः
व्याज	अर्धप्रयोगः, कुसीदम्, घृ- द्धिजीविका.	भरभूजा	भर्जकः
वैसा	पणः, ताम्रपण्डम्	भाइ	भर्जनयन्त्रम्
रुपया	रूपकः रजतमुद्रा,	रंगरेज	रजकः घस्त्ररागलत् [पु०]
अशर्फी	स्वर्णमुद्रा, दीनारः	घमार	चर्मकारः पादुलत् [पु०]
अठथी	रूपकार्धम्	रांपी	गारा, चर्मप्रमेदिकाः.
चौभधी	चतुराणकः	पटीफ	शाकाविक्रेता
दुअधी	आणकद्वयम्		
कायथ	कायस्थः.		

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः । .

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कंपावना- नेवाला	कङ्कतकृत्	सरोता	सङ्कुला.
शिकलगर	शस्त्रमार्जकः, असिधायकः	तमोली	ताम्बूलिकः
पखवाजी	मार्देह्निकाः, मोरजिकाः	कहार	जलवाहः, उदवाहः
काथक	चारणः, कुशीलवः	बैहगी	जलानयनयन्त्रम्
सितारिया	घोणावादाः, घैणिकाः	प्याऊ	पानीयशालिका, प्रपा.
याजा	वादनम्, वाद्यम्	प्यासा	खुद, तपः, पिपासा.
सितार	घोणा, घहकी, चिपञ्जी	प्यासा	तृपितः पिपासितः
घांसरी	वंशी वेणुः	तेली	तैलिकः तैली [पुं०]
मृदग	मृदङ्गः, मुरजः	बोल्ह	तैलपेवणी
दोल	आनकः, पटहः	कान का	
नगारा	दुन्दुभिः	मैल नि-	कर्णमल निस्सारयिता
डोंडी	डिण्डिमः	कालेने-	
तुरई	तूर्यम्, तूरी.	पाला	
कसाई	मांसधिक्रेता, मांसिकः, घै- तंसिकः	कलाल	शौण्डि, मण्डहारकः सुरा जीवी, शौण्डिकः
धुना	तूलमार्जकः	शराव	मादिरा, सुरा, मद्यम्.
घडुफिया	वहुरुपधारी-धारकः	नरावधर	शुण्डापानम्, मदस्थानम्
वर्जी	सूचिकः श्लोचिकः सूचि- कर्मा [पुं०]	प्याला	चपकः पानपात्रम्
कैची	कतरी-रिका, छेदनी	छैपी	घस्त्रमुद्रकः
जुलाया- (कोली)	तन्तुवापः, पटकारः	महाह	नायिकः कर्णधारः
नारै	नापितः, शौरिकः, धुरिः,	आरा	प्रकचः, करपत्रम्
उस्तरा	मुण्डी	पटई	तक्षकः सूत्रधारः, रथकारः
	धुरः	मेड़	स्थपतिः, वर्धकः,
		किसान	मेधिः मेधिः [पुं०]
		चेती	रूपकः रूपीचलः, हालिकः रूपीः.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
रैत	वपः, केदारः, क्षेत्रं.	जूआ	कैतवम्, पणः, अक्षवती.
पैना	तोदनम्, प्राजनम्, तोत्रम्,	नचकैया	नर्तकः, लासकः
टोकरा य-	वैणवः, वैदलकारः.	भूरा	अवकरनिकरः
नानेवाला		कुढ़ा	अवकरः, सङ्करः
महतर	श्वपचः, संमार्जकः	यशकरना	यजति
नट	नटः, शैलाली, शैलूपः, जा- याजीवः	पूजाकर्ना	अर्चयति, पूजयति.
कंजर	अन्त्यजाः	आचमन- करना	उपस्पृशति, आचामति,
इत्यादि		ठणगहोना	शाम्यति
गड़ीरया	जावालः, अजाजीवः	भूनना	भर्जयति.
चिडीमार	जीवान्तकः, शाकुनिकः	जूआपो- लना	दीव्यति
जांलिया	वागुरिकः, जालिकः	पैनाना, पैनवाना	उत्तेजयति.
गौकर	भृतकः, भृत्यः, वैतनिकः	वजाना	वाद्यति—ते
होशियार	चतुरः, पेशलः, पट्टः, दक्षः	वजना	रणति, कणति, विरोति.
ध्याध	मृगयुः लुब्धकः मृगवधा- जीवः	गाना	गायति । कूजति, रौति [पक्षिणां]
शिकारी	विश्वकट्टः, कौलेयकः	हजामत- घनाना	मुण्डयति, आवपति
कुसा,	वर्करः	डौडी	घोषयति.
पकरा	भृगव्यम्, आषेटः मृगया	पिटना	घपति—ते
शिकार	स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोपकः	घोना	प्रतिपच्छति, विनि-मे-ते ।
चोर	स्तेन्यम्, स्तेयम् स्त्रीयम्	यदलना	
चोरों	प्रतिमानम्, प्रतिविषयम्,	चौचना	
प्रतिमा	प्रतिकृतिः, प्रतिनिधिः	घाहल	कर्पति
ज्वारी	कितयः, अक्षपूतः	जेतना	
पासे	अक्षः, देवनः, पाशकः.		

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः । .

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
कघावना- नेवाला	कङ्कतदृत्	सरौता	सङ्कुला.
शिकलगर	शस्त्रमार्जकः, असिधावकः	तमोली	ताम्बूलिकः
पखवाजी	मादङ्गिकाः, मोरजिकाः	कहार	जलघाहः, उदवाहः
कथक	चारणः, कुशीलयः	बैहंगो	जलानयनयन्त्रम्
सितारिया	घोणावादाः, घणिकाः	प्याऊ	पानोयशालिका, प्रपा.
याजा	घादनम्, बाधम्	प्यास	रुद्, तर्पः, पिपासा.
सितार	घोणा, घल्लकी, घिपञ्जी	प्यासा	तृपितः पिपासितः
पांसरी	घंशी घेणुः	तेली	तैलिकः तैली [पुं०]
मृदग	मृदहः, मुरजः	कोल्ह	तैलपेयणी
ढोल	आनकः, पटहः	कान का	
नगारा	दुन्दुभिः	मैल नि-	कर्णमल निस्सारयिता
झोंडी	डिण्डिमः	कालेने-	
तुरर	तूर्पम्, तूरी.	पाला	
कस्तूर	मांसधिकेता, मांसिकः, वै- तंसिकः	फलाल	शौण्डि, मण्डहारकः सुरा जीवी, शौण्डिकः
धुना	तूलमार्जकः	शराव	मादेरा, सुरा, मधम्.
बहुरुपिया	बहुरूपधारी-धारकः	शरावघर	शुण्डापानम्, मदस्वानम्
बर्जी	सूचिकः सौचिकः सूचि- कर्मा [पुं०]	प्याला	चपकः पानपावम्
कैची	कतरी-रिका, छेदनी	छैपी	घस्त्रमुद्रकः
खुलाया- (कोली)	तन्तुवायः, पटकारः	मल्लाह	नायिकः कर्णधारः
नार	नापितः, क्षौरिकः, धुरिः, मुण्डी	भारा	क्रकचः, करपत्रम्
उस्तरा	धुरः	बडर	तक्षकः सूत्रधारः, रथकारः स्थपतिः, धर्मिकः
		मेढ़	मेधिः मेधिः [पुं०]
		किसान	रूपकः रूपीवलः, हालिकः
		चेती	रूपीः.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पेत	वप्रः, केदारः, क्षेत्रं.	जूआ	कैतवम्, पणः, अक्षवती.
पैना	तोदनम्, प्राजनम्, तोत्रम्,	नचकैया	नर्तकः, लासकः
टोकरा व-	धैणवः, वैदलकारः.	घूरा	अवकरनिकरः
नानेवाला		कूड़ा	अवकरः, सद्गरः
महतर	श्वपचः, संमार्जकः	यज्ञकरना	यज्ञति
नट	नटः, शैलाली, शैलूपः, जा-	पूजाकर्ना	अर्चयति, पूजयति.
	यर्जीवः	आचमन-	उपस्पृशति, आचामति,
कंजर	अन्त्यजाः	करना	
इत्यादि		ठण्डाहोना	शाम्भयति
गडूरिया	जावालः, अजाजीवः	भूनना	भर्जयति.
चिडीमार	जीवान्तकः, शाकुनिकः	जूआखे-	दीव्यति
जांलिया	वागुरिकः, जालिकः	लना	
नौकर	भृतकः, भृत्यः, वैतनिकः	पैनाना,	उत्तेजयति.
होशियार	चतुरः, पेशलः, पट्टः, दक्षः	पेनवाना	
प्याध	मृगयुः लुब्धकः मृगवधा-	यजाना	वादयति—ते
	जीवः	यजना	रणति, कणति, विरौति.
शिफारी	विश्वकट्टः, कौलेयकः	गाना	गायति । कूजति, रौति
कुत्ता,			[पक्षिणां]
यकरा	वर्करः	हजामत-	मुण्डयति, आवपति
शिफार	मृगव्यम्, आपेटः मृगया	घनाना	
चोर	सोनः, दस्युः, तस्करः, मोपकः	डौंड़ी	घोषयति.
चोरों	स्तेन्यम्, स्तेयम् चौर्यम्	पिटना	
प्रतिमा	प्रतिमानम्, प्रतिविम्बम्,	योना	वपति—ते
	प्रतिठतिः, प्रतिनिधिः	यदलना	प्रतियच्छति, विनि-मे-ते ।
उवारी	फितवः, अक्षधूर्तः	र्याचना	
पासे	अक्षः, वैचनः, पादकः.	याहल	कर्पति
		जोतना	

जाति इत्यादि का वर्णन — ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
शरूल- घनाना	रूपं—आकार-विद्धाति ।	फाटना	घाति, छिनात्ति, कृन्तति, छि- नाति—ते
गोली	आग्नेयास्त्रमुञ्जाति, शरमु- ञ्जाति अस्वाति ।	दरांत से	क्षेत्रेण छिनात्ति
मारना	विनोति, विराययति ।	फाटना	क्रफत्वेन-करपत्रेण-हणाति
विराना	पदभ्यां—पांडयान-आक्रा- भ्यति, मर्दयति	ओर से	दशयति पाटयति, छिनत्ति
पोंछा से	समभाषति, उपांतष्ठति- तं, घटते, सम्पद्यते	चोरना	चिक्कयति ।
कुचलना		इस्तरा	
धाकअ		करना	
होना			

हिन्दी ।

चार जाति हैं ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और
शूद्र.

चार आश्रम हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान-
प्रस्थ और सन्यास.

न्यायजाननेवाला नैययिक, मीमांसा
जाननेवाला मीमांसक, वेदान्त
जाननेवाला वेदान्ती, वेद पढ़नेवाला
धोत्रिय सांख्य जाननेवाला कापिल
पेसा कहा जाता है.

गंगा जमनाके बीच में धीमान् धोत्रि-
नाम के पण्डित अत्यन्तार्थज्ञान हैं.
ब्राह्मणोंके छः कर्म सुनेजातेहैं वे कौन
से हैं.

यज्ञकरना, पढ़ना, दानदेना, यज्ञकराना
पढ़ना और तैत्तिरी दानदेना इन-
धर्मोंके छः कर्मवाला ब्राह्मण-
कहलाता है.

संस्कृत ।

चत्वारोवर्णाः ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः
शूद्रश्च.

आश्रमचारो ब्रह्मचर्यो गार्हस्थ्यवान-
प्रस्थ सन्यासश्च.

न्यायवेत्ता नैययिकः मीमांसांज्ञोमीमा-
ंसकः वेदान्तज्ञोवेदान्ती, वेदाभ्यायी
धोत्रियः सांख्यज्ञः कापिल इत्यु-
च्यते.

धौमच्छीधराभिधेयपण्डितोऽतीववि-
द्वान् गंगापमुनयोर्मध्ये वर्तते.

विभ्राणां पदकर्मणि श्रूयन्ते तानि कानि
सन्ति.

इत्याध्ययनदानानि याज्ञेयानि
प्रतिग्रहश्च तैशुक्तः पदकर्मविग्रह-
श्च्यते.

जाति इत्यादि का वर्णन—शातिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

जिस तरह यह बहककरनेवाला पक्ष करता है तैसे तुम भी बहकरो.

वेदवच वेदताओं की पूजा करता है. मरुलोग अपने इष्टदेवी की पूजा करते हैं.

पांच महायज्ञ कौन से हैं ? उनको तो पहिले अध्याय में देखलो. जगत् का कारण द्रूण्य है ऐसा माननेवाले नास्तिक होते हैं.

सभा काही दूसरा नाम गोष्ठी है. जो तुम व्याकरण जानते हो तो इसका अक्षरार्थकरो.

अच्छा ! गो अर्थात् अनेक वाणी जहां पर हों वह गोष्ठी है.

अग्निद्वारा देवताओंके लिये जो अन्न दिया जाता है वह हव्य होता है.

प्राहाण मुप से पितृलोकों को दिया हुआ अन्न कव्य ऐसा कहा जाता है.

बृह्णे इन्द्रोंके लिये और सुरों के लिये इमेशा अभ्युत्थान दो.

न्हानेसे पहिले और भोजन से पीछे आचमन करे.

पानेके घक्त चुप होकर रहे.

उपवास और दूसरे व्रत भी बालक पूरे और आतुर [मुसीबत जिदा] को छोड़कर कहे हैं.

यथायं पापजूकोपजति तथा त्वमपि यज.

वेदवचो वेदानचंपति.
भक्ताः सेष्टवेवानां सपर्या कुर्वन्ति ।

पञ्च महायज्ञाःके ?
तांस्तु प्रथमेऽध्याये पश्य.
जगत्कारणं द्रूण्यमिति मन्तारोनास्तिकाः

सभाया एव द्वितीयं नाम गोष्ठी.
यदित्वं चैवाकरणोऽसितहंस्या अक्षरार्थं कुच.

घरम् ! गावोऽनेकावाचस्तिष्ठन्त्यस्यां सा गोष्ठी.

अग्निमुखेन देवेभ्योयद्वचंदीयतेतद्द्रव्यम्.

विप्रमुखेन पितृभ्योऽरीयमानमन्नंकव्यमित्युच्यते.

बृह्णेभ्योऽसुरेभ्यश्च सदाऽभ्युत्थानं देहि.

स्तानात्प्राग् भोजनान्तरञ्चोपस्पृशेत्

भोजनाघसरे भौनमेवायतिष्ठेत्.

उपोषणमन्यान्यपि व्रतानि बालवृद्धा-
तुराण्यनोक्तानि.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
राजन्य और घाहुज, क्षत्रिय के ही पर्याय [हममानी] हैं.	राजन्यघाहुजौ क्षत्रियस्यैव पर्यायौ.
मामूली राजाओं के नाम भूप, क्षमाभृत् नृप और रह हैं.	सामान्यराजानां नामानिभूपक्षमाभृन्नु- पाइत्यादयस्सन्ति.
मण्टल शर्पात् घटुतसे देशोंका मालिक स्वघ्राद् कहलाता है.	मण्डलेश्वरः सम्राडितिकथ्यते.
उस राजराजेश्वर का दीवान वीरसिंह पुरोहित आदित्यशर्मा, और शंकरनाथ ड्यौढ़ीवान् हैं.	तस्य सम्राजोऽमाल्यो वीरसिंहः आ- दित्यशर्मा पुरोधाः, शंकरनाथः प्रती- हारः.
राजाओं के महलोंके दरवाजे पर पाँच खोजे हैं.	राज्ञामन्तःपुरद्वारि पञ्च पण्डा विद्यन्ते
उस प्रतापी राजाके शत्रु अपने आपही शान्त होजाते हैं.	तस्य प्रतापिनो राज्ञो रिपवः स्वयमेव शाम्यन्ति.
वामदेव उस राजाका लंगोटिया मित्र है. मेरेगाँव में एक मराहूर ज्योतिपी है.	वामदेवस्तस्यनृपस्य वयस्यः सुहृत्. मम ग्रामेऽस्त्येकः प्रसिद्धो दैवज्ञः.
जो राजाही घूस लेंतो इन्साफ़ फौल करे.	यदि राजानपवोत्कोचं शृङ्गीयुस्तदा न्यायं कः कुर्यात्.
राजाओं के घटुत से बुझिया पलची घूमा करते हैं.	राज्ञां बहयो गुप्तदूताः पर्यटन्ति.
राजाओं के सुलहभामे दूत लोग लेजाते हैं.	राज्ञां सन्धिधनं सन्देशहरैर्नियते.
राज्य के सात अङ्ग फहो ।	राज्यस्य सप्ताङ्गानि व्रत.
स्वामी, मंत्री, राज्य, किला, राजाना सेना, और आपस में मदद देनेवाले मित्र, ये सात अङ्गवाला राज्य कहलाता है.	स्वाम्यमाल्यथ राष्ट्रञ्च दुर्गं कौशो धलं- सुहृत् । परस्पररोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यं मुच्यते.

जाति-इत्यादि का वर्णन—शांतिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

साम, दान, भेद, और दण्ड ये राजा-
ओं के चार उपाय हैं.

इसको भी आप खुलासा करें । अच्छा
साम अर्थात् मीठा बोलना, दान अर्थात्
धनका देना, भेद अर्थात् फूट उल-
जाना वा मिलेहुजों का अलग कर
देना और दण्ड अर्थात् सजा देना.

दो तीन रोज मैं हमारे शाहशाह महा-
राज अपने चरण पधारकर इस
राजधानी को सुशोभित करेंगे यह
अफुआ कानोंकान सब नगर में फैल
गया.

छोटे राजा मण्डलेश्वर अर्थात् चक्रवर्ती
राजाके लिये भेंट देते हैं.

राजा भोजदेव अपनी लड़की के व्याह
के दहेज में एक अक्षीहिणी सेना,
एक सोने की क्षारी फीलवानों और
सोनेके अंकुशों सहित पचास हार्थी,
घुड़ सवार सहित सौ घोड़े, साठ-
रथ, तीनसौ छफड़े, दो सौ पाल-
कियाँ, दो चमार, एक तख्तशाही
एक तलवार, तरकस सहित एक
धनुष लड़ाई के पक्ष में पहरनेके
लिये एक जिरह बखर (फयच),
शिरटोप, एक फरसा, दो भले, एक
छुरी, और एक मुद्गर अपने जमाई
के लिये देता हुआ.

सामदानश्च भेदश्च दण्डश्चेत्युपायच-
तुष्टयं रामाम्.

एतदपि स्पष्टीकुर्वन्तु भयन्तः । वरम्,
साम प्रियवचनादि; दानं धनादेः सम-
र्पणं, भेदः (उपजापः) संहृतयोर्द्वि-
धीकरणमित्यर्थः दण्डनंदण्ड इति.

द्वित्रैषु दिनेषु राजराजेश्वरोसाकं स-
म्राट् पादार्पणेन शर्मां राजधानीमलं
करिष्यतीति किम्बदन्ती श्रोत्राधो-
त्रिअखिलेनगरेप्रथिताऽभवत्.

शुद्धराजानो मण्डलेश्वराय वलि प्रय-
च्छन्ति.

राजा भोजदेवः स्यकन्योद्गाहयौतुके
एकामक्षीहिणीं सेनामेकं भृङ्गारं
साधोरणान्तस्वर्णाङ्कुशान्पञ्चाश-
द्विपान्, सप्तादिनः शतं चाहान्,
षष्टि स्यन्दनानि, शतत्रयमनांसि,
शतद्वयं शिविकाः, द्वे चमरे, एकं
सिंहासनं, एकमसिं, सतूणीरमेकं
धनुः, युद्धसमये धारणार्थमेकं वर्मं,
शिरस्त्र्यैकं परशुं द्वौ भर्तौ एकां
छुरिकां मुद्गरत्र्यैकं स्रजामात्रे ददौ.

जाति इत्यादि का वर्णन—शातिविशेषाः ।

हिन्दी ।

अशौहिणी का अन्दाज़ भी छुपाकर कहो।
अशौहिणी का अन्दाज़ तो यह है कि
२१८७० हाथी, इतनेहीं रथ, इससे
तिमुने घोड़े और पचगुने पैदल।

राजा भोजके लमधी ने भी व्याह की
खुशी में १५० फेदी अपने जलखाने
से छोड़ दिये।

राजाओं के हरेक डेरमें पहरा रहता है।
फौजके जो बहादुर मरे (फौतहुप) वे
मरघटों में लेजाकर सिपाहियोंने
जलादिये।

न जलाई हुईं लार्से पशु पक्षियों ने
या डालीं।

व्यूह शब्दका क्या अर्थ है ?

फौज का तरतीब से रखना व्यूह कह-
लाता है।

जैसे किसीने कहा है।

मुहँपर रथ, पीछे घोड़े, उसके पीछे
पैदल, और इधर उधर घगलों में
हाथी करने चाहियें यह व्यूह कहा-
गया है।

लड़ाई के लिये जाते हुए फौजी लोग
रास्तेमें बहुत से छोटेजाँचों की पैरों
से कुचलडाकते हैं।

किन्हीं हाथियों के गले फुगों से मक्
बहा करता है।

संस्कृत ।

अशौहिण्याः प्रमाणमपि छुपया वदतु.
अशौहिण्याः प्रमाणन्तु खंगोर्द्वैकाद्वैकै
गंजैः रथैरंतेह्यैस्त्रिभिः पञ्चमैश्च
पदातिभिरिति.

भोजस्य सम्यग्धिनापि विवाहहर्षे
सार्धशतम्बन्दिनः स्वकाशामृहान्मो-
चिताः।

राज्ञां प्रत्येकशोधरे उपरक्षणं वर्तते.
पृतनाया ये पीराः पञ्चत्वमागता स्ते
पितृवने नीत्वा राजपुत्र्यै दीहिताः।

अदाहितानि शयानि पशुपक्षिभिः या
दितानि.

व्यूहशब्दस्य कोऽर्थः ?

सैन्यस्य रचनाविशेषेण स्थापनं व्यूहः
कथ्यते.

यथा केनापि भणितम्.

मुने रथा दयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदा-
तयः पार्श्वयोश्च गजाः कार्याः व्यू-
होऽयम्परिकीर्तितः.

युस्सार्थं गच्छन्तः सैनिका मामे चहन्
क्षुद्रजीवान् पशुभ्यामाक्रान्यन्ति,

केपाञ्चिन्नस्तिनां गण्ठेभ्यो वानं प्रच-
यति.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

हाथीसाल चारी कहलाती है।
 ये हथिनियाँ अपने बच्चों सहित जाती हैं।
 इस घोड़े को लगाम कहाँ है ?
 वह तो तेरे सौंहींही चमीन पर रक्ती
 है मेरी आँसों से तू देस।
 इस घोड़े को घूँट कैसे उम्दा मा-
 लूम होती है।
 रथवान इन दोनों घोड़ों को चाबुक
 से मार कर जूए में जोड़ता है।
 अब वैश्यों के रोजगारों को बताओ।
 खेत, व्याहार उधार, व्याज लेना,
 चीजों का बदल बदल करना, और
 गरीब किसानों के लिये राद (जिस)
 देना धर्मरह जीविका है।
 तुम्हारे गाँव में कौन २ साहूकार हैं;
 कोई नहीं।
 ये साहूच मेरे ५०० रुपये के कर्जदार
 हैं।
 अब तो सबही जाति खेती करते हैं।
 मोहनसिंह हल कंधे पर ररर, बेल जूए
 में जोड़ और आगे कर. सीधे हाथ
 में पैना ले, खेत जोतने के लिये
 जा रहा है।
 उसका बेटा फायड़ा और कुठारी ले
 पीछे से जाता है।

गजशाला चारीत्युच्यते।
 शमाः करिष्यः सकरभा गच्छन्ति।
 अस्याश्वस्य कविका कुत्र वर्तते ?
 सा तु तव सम्मुप एव पृथिव्यां धृता
 मश्रीयाक्षिभ्यां तु पश्य।
 कथं शोभते लूममस्या बड़वायाः।
 सारथिरेतावश्यो कशया तादृयित्या
 गुगन्धरे योजयति।
 अथ वैश्यानां वृत्तिर्ब्रूहि।
 कृषिः, वाणिज्यं, उदारदानं कुसीद-
 प्रदणं वस्तुनां विनिमयः अन्येभ्यो
 निर्धनेभ्यो कृषीवलेभ्यो याचितक-
 स्य दानमित्यादयो जीविकाः सन्ति।
 तव ग्रामे के के उत्तमर्णाः; न केऽपि।
 अधमर्णोऽयं महाशयो मे पञ्चशतमु-
 द्राणाम्, अधया
 एव महाशयः मह्यं पञ्चशतं धारयति।
 इदानन्ति सर्वे शतय एव कृषिं कुर्वन्ति।
 मोहनसिंहो लाज्जलं स्थान्धे कृत्वा धृष्टौ
 योके नियुज्य पुरतश्च कृत्वा सव्य-
 हस्ते तौदचश्च सृष्टीत्या क्षेपकार्यणा-
 र्थं गच्छति।
 तत्पुत्रः कुदालं कुठारीञ्च नीत्या पृष्ठनो
 याति।

जाति इत्यादि का वर्णन — ज्ञातिविज्ञेयाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

हिसं ईया कहलाती है.

अनाज और भुस अलग करने के लिये जो बहुत से बेल एक लकड़ी में बांधे जाते हैं वह मेक कहलाता है. इस चनों को बोरे में भर कर सूए से और सुतली से सांभ दो.

बहुत से पनिये परचूनिया, हलघाई, दूध दही बेचनेवाले, बज्राज, कया-फी, लाहिया, कसेरे, अचार, घी तेल बेचनेवाले और आदतिये (नाज बेचनेवाले) होते हैं.

इस जिले में बहुत से कायस कचहरी में नौकर हैं.

किसी पाल के परचूनिये से दो आने का गेड़ का आटा आध आने की उरव की दाल डेढ़ आने का घी एक पैसे का मसाला जल्दी लाभो.

अच्छा सधा चार आते मुझे दो.

लो । गोपालदत्त ! क्या धाजार जाते हो ? हां जाता तो है.

मुझा ! मेहरघानी कर मेरे लिये भी तीन पैसे का दूध बूरा और धेले के पान ले आना.

लाङ्गलदण्ड ईपेति कथ्यते.

धान्यं वुशञ्च पृथकरणार्थं या वृषसंहति रेकसिन्काष्टे निघष्यते सा मेधिरिति कथ्यते.

पताञ्चणकान्प्रसेवे भृत्वा वृहत्सूचिकया सूत्रेण च सींध्य.

पहयो वैश्याश्चूर्णविक्रेतारः, आपूपिकाः, पयोदधिविक्रेतारः, वस्त्रविक्रेतारः, सुव्रशणरज्जुविक्रयिणः, शयोपस्तु विक्रयिणः, ताम्रकाँस्यपित्तलविक्रयिणः, औषधिविक्रयिणः आज्यानाज्यविक्रेतारः धान्यविक्रेतारश्च भवन्ति.

पहयोऽथ मण्डले कायस्थाः राज्यद्वारे नियुक्ताः.

कस्माश्चित्सर्मापयतिंगश्चूर्णविक्रेतुराणकद्रवस्य गोधूमचूर्णमर्दाणकस्य मापद्विदला सार्धाणकस्य घृतमेकस्य पणस्य (ताम्रखंडस्य) पेतवारश्च शीघ्रमानय.

धरम् सपादचतुराणकान् मां देहि.

गृहाण । गोपालदत्त ! किं पण्यवीथिकां मजसि ? ओम् । गच्छामि तावत् । मद्र ! कृपया मद्र्धमपि पणत्रयस्य तुग्धं शर्करां, पणार्थस्य ताम्बूलञ्चानय.

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>और भी जातियों को बयान करो । सुनो, सुनार, लुहार, राज, धड़ई, धोबी, कुंभार, भरभूजा, रंगरेज, चमार, कौजड़ा, धुना, फट्टी बनानेवाले, दर्जी, जुलाया, नाई, फहार, तेली, फलाल, मणिहार, छँपी, घोसी, माली, भड़ी घग्गर जाति होती हैं.</p>	<p>अन्या अपि ज्ञातीर्पण्य । ध्यन्ताम्. स्वर्णकारोऽयस्कारः सुधाजोवी, तक्षकः रजकः कुम्भकारः, भर्जकः रक्षकः चर्मकारः, द्राकविक्रेता, तुलमार्जकः, फड्कतकृत्, खूचिकः, तन्तुघायः, नापितः, जलवाहः, तैलिकः, शौण्डिकः, काचफड्कणविक्रेता, वस्त्रमुद्रकः, गोपः, मालाकारः, श्यपच इत्यादयो ज्ञातयः सन्ति.</p>
<p>सुनार चान्दी के गहने आम की खटाई और पालू से साफ करता है.</p>	<p>स्वर्णकारो राजतान्याभूषणानि आम्राभ्येन सिक्कतया च धयलीकरोति (स्वच्छीकरोति).</p>
<p>लुहार धौंकनी से लोहा आग में तपाकर अहरन के ऊपर रख कर पीटता है.</p>	<p>अयस्कारो भद्रया लोहमग्नौ ध्मात्वा घनोपरि निक्षिप्य ताडयति.</p>
<p>न्यारिया मिठाई की चाँदी को मूले में रख कर आग में सोधता है.</p>	<p>द्रावकोऽसंस्कृतं रजतं मूपायां धृत्वाऽग्नौ शोधयति.</p>
<p>सोने की जाँच तो कसौटी परही होती है. राज घसुली के जरिये ईंट साफ कर भीत बनाता है.</p>	<p>स्वर्णपरीक्षा तु शाण पच भवति. लेपकः टड्कद्वारेष्टकाः संशोष्य भित्ति निर्मिमीते.</p>
<p>धोबी वस्त्र धोता है और इस्त्री से इस्त्री करता है.</p>	<p>रजको वस्त्राणि प्रक्षालयति अयोयन्त्रेण च चिकणयति.</p>
<p>कुंभार चाक पर मिट्टी के बर्तन बना कर अये में पकाता है.</p>	<p>कुम्भकारश्चक्रे मृद्भाण्डानि निर्मायापाके पाचयति.</p>
<p>भरभूजा भार में जो भुग कर दकान पर बेचता है.</p>	<p>भर्जको भर्जनयन्त्रे ग्रीहीनभ्रुद्वापणे विक्रीणाति.</p>
<p>रंगरेज अलग २ रंग के कपड़े रंगता और सुखाता है.</p>	<p>रक्षकः पृथग्वर्णानि यस्त्राणि रक्षयति शोधयति च.</p>

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

मोची रांपो से झाल साफ़ कर जूतियाँ बनाता है.

ज्वारी पासों से जूआ खेलता है । शास्त्रों में जूआ मना है.

यह जयपुर की बनी हुई अत्यन्त सुन्दर संगमरमर की गणेशजी की मूर्ति है इसे लो.

जुलाया तुरीयेमादि से कपड़ा धुनता है. नाई उस्तरे और फेंची से बाल कतर-ता और बनाता है.

यह नाई अपने उस्तरे को सिलीगर से पेनवाता है,

पढ़ई आरे से लकड़ी चीरता है.

आज एक मेला है सो धीवरलोग प्याऊ के लिये जल लाते हैं.

तेली कोल्हू में सरसों पेल कर तेल और राल बाजार में बेचता है.

और भी शूद्रजातियों को बताओ.

चिँतेरे, शिकलगर, गड़रिया, पराध जी, नट, कथक, सितारिया, कसार्द चिह्नामार, जालिया, बहेलिया यंग-रह.

यह सितारिया सिर्फ़ सितारही नहीं बजाना बरन सब बाजों के बजाने में होशियार है.

इसकी उगली में क्या है? मिजराब.

पादूहदारया चर्म संशोष्यापानहः क-
रेति.

कितयो ऽक्षदीव्यति । शास्त्रेषु केतवं
नापेक्षम्.

अतीवसुन्दरं जयपुरनिर्मिता स्फटिक
प्रतिमा गणेशस्य, गृहार्पणाम्.

तन्तुवायस्तुरीयेमादिना वस्त्रं वधति.
नापितः धुरेण कर्तव्या च कचान् कर्त-
यति मुण्डयति च.

नापितोऽयं स्वधुरं शस्त्रमाजंकादुत्ते-
जयति.

वर्द्धकः ककचेन काष्ठं धारयति.

अपैको महोत्सवः धोवराः पानोयशा-
लिकार्थे जूलमानयन्ति.

तेलिकस्तेलपेपण्यां सर्पं संपोष्य तैलं
पिण्याकञ्चापणे विक्रीणाति.

अन्या अपि शूद्रजातीस्सूच्य.

वारचः, शस्त्रमाजंकाः, अजाजीवाः, मा-
र्द्धिकाः, नटाः, चारणाः, धोणिकाः,
वेतसिकाः, जीवान्तकाः, घागुरिका,
मृगयव इत्यादयः.

एष धोणिकः केवलं धोणामेव न धाद-
यति परञ्चाखिलघातानां धादने
प्रवीणः.

अस्याङ्गुली किम्? कोणः.

जाति इत्यादि का वर्णन—शातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>वाजे घयान करो.</p> <p>वांसुरी, मृदङ्ग, ढोल, नकारे, घगैरह हैं.</p> <p>इस प्याह में तुरई कौन पजाता है.</p> <p>हैमा एक मुसलमान.</p> <p>यहफ्यामगादी है बाहर जाकर तो पृछौ.</p> <p>आज बहुत से हवा से गिराये हुए दररतों का नीलाम हमारे गदसे में होगा.</p> <p>ये होशियार शिकारी, शिकारी कुत्तों के साथ सूअर की शिकार के लिये बहुत से नौकरों के साथ जाते हैं.</p> <p>एक मूसा अपने आपही सांप की पिटारी को कतर कर सांप के मुंह में घुसा और मर गया.</p> <p>यह किसका बकरा है इसको चोरों से बचाना.</p> <p>जो आदमी चोरी करते हैं वे राजपुरखों से सजा दिये जाते हैं.</p> <p>कोई आदमी शराबघर में जाकर काला सराब प्याले में लेकर पीताहै.</p> <p>नचकैये शरमीले नहीं होते.</p> <p>ठीक, जो वे शर्मिलेही हों तो उनका नाचना भी अच्छा न होवे.</p> <p>यह यड़ी सभा है इस जगह बहुत से राजा और सभासद जेवर पहने हुए बिरसाई देते हैं.</p>	<p>वाद्यानि घर्णय.</p> <p>वंशी, मृदङ्ग आनको दुन्दुभिरित्यादीनि अस्मिन्विवाहे तूरों को घादयति.</p> <p>अस्येको यवनः.</p> <p>केयं घोपणा वहिर्गत्वा तु पृच्छ.</p> <p>अथ दिने वहनां पचनपातितवृक्षाणाम् घोपणापूर्वको द्रव्यविभ्रयोऽस्माकं पाठशालायाम्भविष्यति.</p> <p>एते दक्षा मृगयवः कौलेयकेस्सह शकररथ मृगयार्थं बहुभिर्भृत्यैस्सह गच्छन्ति.</p> <p>एको मूपकः स्वयमेव सर्पपेटकम्भिन्वा सर्पमुष्टे प्रविष्टो मृतश्च.</p> <p>कस्यायं वर्करः एनं दस्युभ्यो रक्षय.</p> <p>ये जना स्तैन्यं कुर्वन्ति ते राजपुरखैर्वृण्ड्यन्ते.</p> <p>कश्चिज्जनः शुण्डापाने गत्वा मण्डहारकान्मद्यं चपक आदाय पिबति.</p> <p>नर्तका हीमन्तो न भवन्ति.</p> <p>सत्यम्, यदि ते प्रपावेन्त एय भवेयुस्तर्हि तेषां ताण्डवमपि शोभनं न स्यात्.</p> <p>महतीयं समज्याऽत्र बहवो राजावः सदस्वाश्च सालङ्कारा दृश्यन्ते.</p>

जाति इत्यादि का वर्णन—ज्ञातिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
ताराचन्द्र के पास तो बहुत धन है परञ्च वह अपने पास नहीं रखता उसकी धरोहर बहुत से धनवानों पर रहती है।	ताराचन्द्रसमीपे तु विपुलं ऋकथं परञ्च स स्वसमीपे न न्यस्यति तस्योपनिधिर्वहुषु धनिषु वर्तते.
चौमासे से पहलेही भागों उपलों के दस बॉरे परोदूंगा। मा यह देवदत्त मुझे विराता है। लावा रोम दरान्त से काटता है।	चातुर्मास्यात्प्रागेव करोपाणां दशदा- णपुत्राः क्रेष्यामि। मातर्देवदत्तोऽयं मां विरौति। लावकः क्षेत्रं दात्रेण छिनत्ति.

पन्द्रहवां अध्याय—पञ्चदशोऽध्यायः ।

पेद, फूल, गिनती का वर्णन—वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पेद	तरः, पादपः, वृक्षः.	पीपल	अश्वत्थः, पिप्पलः.
जड़	मूलम्.	„ लाख	लाक्षा, जतुः (न०)
धड़	प्रकाण्डः, स्कन्धः.	बड़	यहुपाद्, घटः, न्यग्रोधः.
गुद्दे	शाखा, लता.	गूलर	पनसः, उदुम्बरः.
छाल	बलकलः-लम्, त्यक् [ली.]	ढाक	किन्तुकः, पलाशवृक्षः.
पत्ते	पत्रम्, पर्णम्, छद्मम्, दलम्	भाक	अर्कवृक्षः
गुच्छा	शुच्छकः.	गोंद	निर्यास, रसः.
जाम	माघ्नः, रसालः, चूतः.	कंजा	करञ्जः.
बगोसा	उचानम्, उपवनम्, धाटिका.	कीकर	पण्डकवृक्षः, वनुरः.
जामन	जम्बुवृक्षः.	हल्ली	अभिलका, चिञ्च (वृक्षः).
शादूग	वृत्तवृक्षः.	पिलयान	पृक्षः.
अनार	दाडिमीवृक्षः.	महुआ	मधुकाः.

पेट, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	, संस्कृत ।
सँजना	शिग्रुः.	अरंड	परण्डः, चित्रकः, चञ्चुः.
नारंगी	नारङ्गः, भूमिजम्बुका.	छोंकरा	शमी.
बेल	विल्वः शाण्डिल्यः.	फूल	पुष्पम्, कुसुमम्, सुमनः (न.)
रोर	खदिरः.	गुलाब	पादलम्.
केला	कदली, रम्भा.	ओदहुल	जपापुष्पम्, ओ३पुष्पम्.
नारियर	नारिकेलः, कौशिकफलम्.	चम्बेली	जातापुष्पम्, मही, नन- महिका.
बेर	वदरीवृक्षः.	बेला	बेला.
नीम	निम्बः, पारिभद्रः.	कनेर	कणोरः.
बकायन	महानिम्बः.	जुरं	यूथिना.
अमरूद	अमृतफलम्.	कमल	सहस्रपत्रम्, उत्पलम्, शतपत्रम्.
कचनार	काञ्चनारः.	मौरसिरी	पकुलम् पुष्पम्.
पीलू	पीलुः.	टैसू	किशुकः.
नीबू	दन्तशठः, जम्बीरः.	चम्पा	चम्पकम्.
शोसम	शिशिपा.	नारंगी का	जाम्भजम्.
कदम	कदम्बः.	फूल	
सिरस	कपोतनः, शिरीषम्.	चन्दन का	श्रीखण्डम्.
फरील	फरीरः, प्रकरः.	फूल	
धतूरा	धतूरः.	गुल्लाला	गौलालम्. —
सैमर का	शाल्मलिः.	मरुआ	मरुवम्.
पेड़		नीला कमल	नीलोत्पलम्.
खिछी	क्षीरिका.	कमोदनी	कुमुदत्.
बजूर	बजूरम्.	केतकी	कैतकम्.
ताड़	तालः.	रिला फूल	विकचम्, स्फुटम्, प्रकुलम्, विकसितम्.
कदम	कदम्बः.		
औंगा	अवामर्गः.		

पेदः, फूलः, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बन्द फूल	मुकुचितम्-पुष्पम्.	हतना	इत्यत्.
मुखमाया	म्लानम्.	जितना	यावान्.
हुआ		तिगना	तावान्.
पुष्परस	मकरन्दः.	उतना	पतावान्.
पुष्पकीधूल	परांगः.	एक प्रकार स इत्यादि	एकधा, द्विधा, त्रिधा इत्यादि
पहिला	प्रथमः, आदिमः, अग्रिमः.	गूजना	गुञ्जति, विरसति.
दूसरा	द्वितीयः, अपरः.	गौतना	आमन्त्रयते.
तीसरा	तृतीयः.	मस्तहोना	माघति.
चौथा	चतुर्थः, तुर्यः, तुरंग्यः.	गिनना	गणयति.
पाँचवां	पञ्चमः.	मोसर-	अनुवासयति.
लठी	पट्टः.	करना	
सानवां	सप्तमः.	हिलना	प्रकम्पते, वेपते, धुनाति- धुनाति.
आठवां	अष्टमः.	हिलाना	वेपयति, प्रचालयति, क- म्पयति.
नवां	नवमः.	एक	एकः, एका, एकम्.
दसवां	दशमः.	दो	द्वौ, द्वे, द्वे.
ग्यारहवां	एकादशः.	तीन	त्रयः, तिस्रः, त्रीणि.
बासवां	त्रिंशः, त्रिंशत्तमः.	चार	चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि.
तीसवां	त्रिंशः, त्रिंशत्तमः.	पाँच	पञ्च.
सौवां	शततमः इत्यादि.	छः	षट्.
एक बार	सरुत्.	सात	सप्त
दो "	द्विः.	आठ	अष्टौ, अष्ट.
तीन "	त्रिः.	नौ	नव
चार "	चतुः.	दश	दश
पाँच "	पञ्चरुत्थः (ऽ).		
छः "	षड्रुत्थः इत्यादि (ऽ).		
कितना	स्वियन्; कति (कितने).		

पेह, फूल, गिनती का वर्णन वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
ग्यारह	एकादशः.	सैंतीस	सप्तत्रिंशत्.
बारह	द्वादशः.	अड़तीस	अष्टात्रिंशत्.
तेरह	त्रयोदशः.	उन्तालीस	एकोनचत्वारिंशत्.
चौदह	चतुर्दशः.	चालीस	चत्वारिंशत्.
पन्द्रह	पञ्चदशः.	इकतालीस	एकचत्वारिंशत्.
सोलह	षोडशः.	व्यालीस	द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्.
सत्रह	सप्तदशः.	तेतालीस	त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्.
अठारह	अष्टादशः.	चौवालीस	चतुश्चत्वारिंशत्.
उन्नीस	एकोनविंशतिः.	पैंतालीस	पञ्चचत्वारिंशत्.
बीस	विंशतिः.	ट्यालीस	षट्चत्वारिंशत्.
इक्कीस	एकविंशतिः.	सैंतालीस	सप्तचत्वारिंशत्.
बाईस	द्वाविंशतिः.	अड़तालीस	अष्टचत्वारिंशत्-अष्टाचत्वारिंशत्.
तेईस	त्रयोविंशतिः.		
चौबीस	चतुर्विंशतिः.		
पचास	पञ्चविंशतिः.		
छब्बीस	षट्विंशतिः.	उनचास	एकोनपञ्चाशत्.
सत्ताइस	सप्तविंशतिः.	पञ्चास	पञ्चाशत्.
अट्ठाइस	अष्टाविंशतिः.	इक्यावन	एकपञ्चाशत्.
उन्तीस	एकोनविंशत्.	बावन	द्विपञ्चाशत्.
तीस	त्रिंशत्.	त्रेपन	त्रिपञ्चाशत्.
इकतीस	एकत्रिंशत्.	चौअन	चतुःपञ्चाशत्.
बत्तीस	द्वात्रिंशत्.	पचपन	पञ्चपञ्चाशत्.
तेतीस	त्रयस्त्रिंशत्.	छप्पन	षट्पञ्चाशत्.
चोतीस	चतुस्त्रिंशत्.	सत्तावन	सप्तपञ्चाशत्.
पैंतास	पञ्चत्रिंशत्.	अट्ठावन	अष्टपञ्चाशत्.
छत्तीस	षट्त्रिंशत्.	उनसठ	एकोनषष्टिः.

पेद, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
साठ	षष्टिः.	छपासी	षडशीतिः.
इकसठ	एकषष्टिः.	सतासी	सप्तशतीतिः.
असठ	अष्टिः.	अठासी	अष्टशतीतिः.
त्रेसठ	त्रिषष्टिः.	नवासी	एकोनवतिः.
चौंसठ	चतुःषष्टिः.	नव्वे	नवतिः.
पैंसठ	पञ्चषष्टिः.	इक्यानवे	एकनवतिः.
छपासठ	षड्षष्टिः.	धानवे	द्विनवतिः.
सरसठ	सप्तषष्टिः.	त्रानवे	त्रिनवतिः.
अरसठ	अष्टषष्टिः.	चौरानवे	चतुर्नवतिः.
उनहत्तर	एकोनसप्ततिः.	पिचानवे	पञ्चनवतिः.
सत्तर	सप्ततिः.	छपानवे	षण्णवतिः.
इकहत्तर	एकसप्ततिः.	सत्तानवे	सप्तनवतिः.
यहत्तर	द्विसप्ततिः.	अट्टानवे	अष्टनवतिः.
तिहत्तर	त्रिसप्ततिः.	निन्यानवे	एकोनशतम्.
चौहत्तर	चतुःसप्ततिः.	सी	शतम्.
पिचत्तर	पञ्चसप्ततिः.	एकसौ एक	एकोत्तरशतम्.
छियत्तर	षड्सप्ततिः.	डेढ़ सौ	सार्धशतम्.
सतत्तर	सप्तसप्ततिः.	दो सौ	द्विशतम्.
अठत्तर	अष्टसप्ततिः.	तीन सौ	त्रिशतम्.
उनासी	एकोनाशीतिः.	चार सौ	चतुश्शतम्.
अस्सी	अशीतिः.	हजार	सहस्रम्.
इक्यासी	एकाशीतिः.	दस हजार	अधुतम्.
व्यासी	द्व्यशीतिः.	लाख	लक्षम्.
तियासी	त्र्यशीतिः.	दस लाख	प्रयुतम्.
चौरासी	चतुर्शीतिः.	करोड़	कोटिः.
पिचासी	पञ्चाशीतिः.	दस करोड़	दशकोटिः.

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-शृक्षविशेषाः पुष्पाविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
अरब	अरुंदम्.	दस नील	दशनिष्यर्षः.
दस अरब	दशाबुंदम्.	पदम	पद्मः.
एवं	खर्चः.	दस पदम	दशपद्मः.
दस एवं	दशएवंः.	सह	शकम्.
नील	निखर्चः.	दस सह	दशशकम्.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>हवा से पेड़ हिला करते हैं. करील के पेड़ जो रंग पत्ते नहीं आते तो यसन्त का क्या दौप है. पीपल के पेड़ में से चन्दा उगाड़ दो. कीकर और ढाक का गोंद प्रायः स्त्री लोग खाती हैं. पीपल की लाख भी बड़े काम की होती है. अमलतास का शूदा दस्त कराने को दिया जाता है. आक के पेड़ अपने आपही पैदा हो जाते हैं. क्या अमरूद के पेड़ तुम्हारे बगीचे में नहीं हैं. महदी के पत्तों से स्त्रियां अपने हाथ रचाती हैं. अंगूठा की लकड़ी भी हवन में ली जाती है. और भी बहुत सी समिध हैं.</p>	<p>घातेन वृक्षाः प्रकम्पन्ते. करीरवृक्षे पत्राणि चेन्नागच्छन्ति तर्हि यसन्तस्य को दौपः. अभ्रत्थवृक्षाद्बृन्दाकमुत्पाटय. कण्टकवृक्षाणां पलाशवृक्षाणां च निर्यासं प्रायस्त्रियः खादन्ति. अभ्रत्थस्य लाक्षापि महदुपयोगिनी भवति. (अमलतास) मास्तिष्कं गोर्दं वा विरेचनार्थं प्रयुज्यते. अर्कवृक्षास्तु स्वयमेवोत्पद्यन्ते. किं (अमरूद) वृक्षास्तव घाटिकायां न सन्ति. (महदी) पत्रैः स्त्रियः स्वहस्तौ रञ्जयन्ति. अपामार्गस्यापि समिद्धवने गृह्यते. अन्या अपि समिधो बह्व्यः सन्ति.</p>

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

जैसे—आक, ढाक, सैर आँगा, पीपल, गूलर, छोकर, दुद्र और कुशा यों नौ तरह की समिध होती हैं.

इस पेड़ का मोटा घड़ नरम पत्ते और कड़ी छाल है.

मेरे बगीचे में एक बड़का पेड़ दो पीपल के, तीन शहदूत के, चार अनार के, पाँच गूलर के, छः इमली के, सात जामुन के, आठ पिलयान के, नौ ढाक के, दस आम के, ग्यारह महुए के, बारह कजरे के, तेरह सेंजने के, चौदह पेल के, पन्द्रह सैर के, सोलह गारियल के, सत्रह केले के, अठारह नारङ्गी के, उन्नीस बेर के, बीस नीम के, इक्कीस कचनार के, बारहस पीपल के तेईस सैमल के, चौबीस सिप्री के, पन्नीस खजूर के, छत्तीस ताड़ के, सत्ताईस कदम्ब के, अठ्ठाईस सिरस के, उन्तीस नावू खट्टी के, तीस शीशम के, इक्कीस कैत के, बत्तीस छोकरे के, तेतीस चारों और वृक्ष के हैं.

यथा—अर्कपलाशसदिरः अपाम.गो-
ऽथपिप्पलः उदुम्बरशमीदूरी कु-
शोति नवधा समिध्.

अस्य वृक्षस्य स्थूलः प्रकाण्डः कोम-
लानि पर्णानि फटिना त्यक् च वर्तते.

ममोद्यान एको वृटतरुर्गो पिप्पलदृशी
प्रपस्तृतवृक्षाश्चत्यारोदाडिर्मावृक्षा
पशोदुम्बराः पडम्लिकावृक्षाः सप्त
जम्बुवृक्षाः अष्टगृक्षाः नव पलाश-
वृक्षाः दशात्रवृक्षा एकादशमधूकाः
द्वादशकरत्रवृक्षास्योदश शिशुवृ-
क्षाश्चतुर्दशविल्ववृक्षाः पञ्चदश-
सदिरवृक्षाः षोडशनारिकेलवृक्षाः
सप्तदशरम्भावृक्षा, अष्टादशभूमि-
जम्बुकाः, एकोनविंशतिः चंद्रीवृ-
क्षा विंशतिः पारिभद्रा एकविंशतिः
पञ्चनारवृक्षाः, द्वाविंशतिः पीलवः,
त्रयोविंशतिः शालमलिवृक्षाः, चतु-
र्विंशतिः शोरिकावृक्षाः पञ्चविंशतिः
सर्जूरवृक्षाः षड्विंशतिस्तालाः सप्त-
विंशतिः कदम्बाः, अष्टाविंशतिः
कपीतनाः, एकोनत्रिंशत् हन्तशठ-
वृक्षाः त्रिंशत् शिशिपावृक्षाः, एक-
त्रिंशत् कपित्थाः, द्वात्रिंशत् (छो-
करा) वृक्षाः प्रपञ्चिंशत् परितः
कण्टकवृक्षाश्च सन्ति.

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षविशेषाः पुष्पविशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>जैसे एक चन्दन का वृक्ष फूल बनको सुगन्धित कर देता है तैसेही सत्पुत्र अपने सान्दान को शोभित कर देता है.</p>	<p>यथैकचन्दनवृक्षो ऽतिलमरण्यमनुवा- सयति तथैव सत्पुत्रः स्वकुलमनु- भूषयति.</p>
<p>हे ज्योतिषी हिसान की गिनती का क्रम श्लोक से कहिये.</p>	<p>गणितज्ञ गणितमहद्याक्रमः श्लोकेन उ- च्यतां; वरम्.</p>
<p>एक १ दश १० शत १०० सहस्र १००० अयुत १०००० लक्ष १००००० प्रयुत १०००००० कोटि १००००००० अर्बुद १००००००००० चुन्द १०००००००००० खर्व १००००००००००० निरख १०००००००००००० शह १०००००००००००००. पद्म १०००००००००००००० सागर १००००००००००००००० अनन्त्य १०००००००००००००००० मध्य १००००००००००००००००० परार्थ १००००००००००००००००००</p>	<p>एकम्, दश, शतम् (त्रैव) सहस्रम् अयुतं (तथा); लक्षञ्च प्रयुतञ्चैव कोटिरर्बुदमेव च । चुन्दं खर्वौ नि- रखश्च शहं पद्यश्च सागरः; अनन्तं मध्यं परार्थञ्च दशवृद्ध्यु यथाक- मम्.</p>
<p>भाव की गणीची में कितनी तरह के फूल हैं. सुगो, गुलाब, फनेर, चमेली, बेला, जूही, मौसिरी, नारङ्गी का फूल, चम्पा, गुल्लाला, चन्दन का फूल, मरुआ, केतकी का फूल वगैरह फूल हैं.</p>	<p>भवदीय वाटिकायां कतिविधानि पु- ष्पाणि सन्ति. शृणु, जपापुष्पम्, फनेर, जातीपुष्पम्, बेला, यूधिका, वकुलपुष्प, जाम्भज चम्पक, मौलालं, श्रीरण्ड, मरुव [गुलाब], केतक मित्यादीनि पुष्पा- णि सन्ति.</p>

पेड़, फूल, गिनती का वर्णन-वृक्षावशेषाः पुष्पावशेषाः संख्याविशेषाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

कमल, नील कमल, कमोदनी वगैरह
फूल अक्सर बड़े तालाबों में पाये
जाते हैं.

सूरजमुखी फूल तो अक्सर जैसे सूरज
धूमता है वैसेही धूमता है.

जितने बर्तन मिल सके उतने ब्राह्मणों
को स्योता दो.

यह लड़का शिशुमाही इम्तिहान में
अपने दर्जे में आठवां है.

तुम दोनों में से कौन नैयायिक है.

तुम सब में कौन व्याकरण जाननेवाला है

परशुराम इफतीस बार पृथ्वी को क्ष-
त्रियरहित करते हुए.

इस दफ्त में कितने लड़के हैं.

सौबक भी तुम गिन सके हो या नहीं?

हां गिन सका हूं। यह कितनी गिनती
है। मैं कुल गिनती गिन दूं.

रसिकभारे फूलों से रस लेकर मस्त
होते हैं.

रुद्रदत्त बीस ब्राह्मणों के लिये रोज
अन्न देता है.

बीस क्षत्रिय सौ शर्षों से मुकाबला कर
सके हैं.

तेतीस करोड़ देवता, आठ बसु, न्यारह
रुद्र, धारह सूर्य्य हैं.

शाहद की मक्ली फूलों पर गूँजती हैं.

सहस्रपत्रं, नीलोत्पलं, कुमुद्वित्यादीनि
पुष्पाणि प्रायः घृहत् कासारेषु
लभ्यन्ते.

सूर्यमुखाभिर्धं पुष्पं तु प्रायो यथा सूर्यो
पुरिभ्रमति तथैव भ्राम्यति.

यावन्तोऽमत्राणि सम्भवन्ति तावन्तो
ब्राह्मणानामन्त्रयस्व.

पाण्मासिकपरीक्षायामष्टमोऽयं छात्रः
स्वकक्षायाम्.

कतरो भवतो नैयायिकः.

कतमो भवतो ध्याकरणः.

परशुराम एकविंशतिकृत्यो निःक्षत्रियां
महीञ्चकार.

अस्मिन्वर्गे कतिच्छात्रास्तन्ति.

यावच्छतमपि गणयितुं शक्नोषि नवा.

ओम् शक्नोमि। एषां सत्या तु कियतां।
अहमखिलां संख्यां गणयेयम्.

रसिका भ्रमराः पुष्पेभ्यो रसमाकृष्य
माद्यन्ति.

ब्राह्मणानां विंशत्ये रुद्रदत्तः प्रत्यह
मन्नं प्रयच्छति.

विंशतिः क्षत्रियाः शतशूद्रेभ्यः प्रति-
योद्धुं क्षमाः.

त्रयस्त्रिंशत्कोटिर्देवा अधो वसव एका-
वश रुद्रा द्वादशादित्यास्तन्ति.

सरघाः पुष्पेषु गुञ्जन्ति.

सोलहवां अध्याय—षोडशोऽध्यायः।

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी।	संस्कृत।	हिन्दी।	संस्कृत।
आकाश	नभः, वियत्, व्योम, गगनं, स्वम्.	कौम्हरा दुपहर	पूर्वाह्न, प्राह्न.
बादल मेह	मेघः, चारिवाहः, अन्नम्, घन	पहर	यामः, प्रहरः.
चन्द्रमा	चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, सु- गाहः, कलानिधिः.	तीसरा प- हर	अपराह्नः.
ग्रहण	उपरागः, ग्रहः.	साँझ	सायम्, सन्ध्या.
सूर्य	सूर्यः, अर्यमा, आदित्यः.	आधीरात	अर्धरात्रिः, निशीथः.
तार	नक्षत्रम्, क्रक्षम्, भम्, ताराः, तारकाः, उडुगणाः.	दिन रात	अहोरात्रः, नक्तन्दिवम्, नक्तन्दिवा.
बिजली	नक्षित्, बिद्युत्, चपला.	रात	निशा, रात्रिः, प्रियामा, र- जनी, क्षया.
ओला	वर्षापलः, करकाः.	वन्	कालः, दिष्टः समयः.
इन्द्रधनुष	इन्द्रधनुः, चापम्.	शुद्ध मोर्निंग	शुभस्तेप्रातःकालोभूयात्.
पारस	परिवेशः, परिधिः.	सबेरे का भजन	प्रातरुपासना.
बरफ	तुषारः, तुहिनम्, हिमम्.	लालटेन	प्रच्छन्नदीपः, आवृतदीपिका.
धुव	ध्रुवः, औत्तानपादिः.	अफुआ	किम्बदन्ती, जनश्रुतिः.
मेह की बौछार	शौकरः, अम्बुकणाः.	आज	अद्यदिने.
॥ झड़ी	आसारः, धारासम्पातः.	कल [धीता हुआ]	ह्यः.
अहोरात्रादिविभागाः।		परसों [बी ताहुआ]	परह्यः.
दिन	घन्तः, दिनम्, अहः, (न०) दिवसः.	कल [आने- वाला]	श्वः.
सबेरे	प्रभातः, प्रत्युषः.		
दुपहर	मध्याह्नः.		

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्थी अहोरात्रदिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
परसों [आ नेवाला]	परश्वः ।	२ पाख	= एकमासः ।
घार	यासरः ।	१२ महाना	= एकःसम्पत्सरः, परसरः, अन्दः, वर्षः, हायनः ।
अंधेरी रात	तमिस्रा ।	इस साल	वैषमः (ऽ) ।
उजेली रात	ज्योत्स्ना ।	पार साल	परन् (ऽ) ।
उजाला	चन्द्रिका, फौमुदी, ज्योत्स्ना ।	त्यौरस ,,	परारि (ऽ) ।
१८ पलक	फाष्टा ।	ठहरने को	विरतिः, विरामः, यतिः ।
३० फाष्टा	एकाकला ।	जगह	वर्षति ।
३० कला	एकःक्षणः ।	बरसना	आधुणोत्ति-ते ।
१२ क्षण	मुहूर्त (दो घड़ी) एकः ।	घेरना	श्यापते, शिली-घनी-भवति ।
३० मुहूर्त	अहोरात्र एकः ।	जमना	
१५ अहो- रात्र	एकःपक्षः ।		

हिन्दी ।

संस्कृत ।

देखो बादलों से घिरा हुआ यह आकाश कैसा अच्छा लगता है.

शीघ्र ही मेह बरसेगा नीली घटाओं से यह अनुमान होता है.

कर्मीं पूर्व में कभी दक्षिण में कभी पश्चिम में कभी उत्तर में विजलियाँ भी चमकती हैं; तारे भी तो अब अच्छी तरह नहीं चमकते.

चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण पर बहुत से यामी कुरुक्षेत्र घोरह पवित्र स्थानों में जाकर और वहाँ नहाकर दीन ब्राह्मणों के लिये वित्तानुसार दान देते हैं.

पश्य मेघैरावृतमिदं नभः कथं दोषभते.

सद्य एव वारि वर्षिष्यतीति स्वभाव्यते नीलघटाभिः.

कदाचित्प्राच्यां कदाचिद्व्याच्यां कदाचित्पृथ्वीच्यां कदाचिदुदीच्यां विद्युत्तोऽपि चकासन्ते; नक्षत्राण्यपि तु यथायत्र द्योतन्तेऽधुना.

चन्द्रसूर्योपरामे चह्यो याधिणः कुरुक्षेत्रादिपुण्यस्थलेषु गत्वा तत्र स्नात्वा च यथाशक्ति दीनेभ्यो माह्वणेभ्यो दानमप्रयच्छन्ति.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन-आकाशपदार्थ अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>यहां कौओं की तरह अपनाही पेट पालनेवाले नास्तिक आजकल के नवीन मतों को ग्रहण करनेवालों की यह बात नहीं है।</p> <p>मेह की बौछार ओलों के साथ तिरछी पड़ रही है।</p> <p>ध्रुव तो उत्तर दिशा में ही हमेशा रहता है।</p> <p>कल में चन्द्रमा के मण्डल में पारस देखा था इसी से यह मेह बरसता है।</p> <p>जल के आने का यह एक सङ्गुन है। जलके किनके ही शीकर कहलाते हैं।</p> <p>आज जगादह जाड़ा है इसी से आज रात को ज़रूर ही पाला जमेगा।</p> <p>१८ पलकों की एक कला; ३० कलाओं का एक क्षण; १२ क्षण का एक मुहूर्त; ३० मुहूर्त का एक दिनरात; १५ दिन रात का एक पाप; २ पाप का एक महीना; १२ महीनों का एक वर्ष; मनुष्यों के एक महीने का पित्राश्रयों का दिनरात; मनुष्यों के एक बरस का देवताओं का दिनरात होता है।</p> <p>तहां उत्तरायण देवताओं का दिन और दक्षिणायन रात होती है।</p>	<p>नात्र काकघटुदरभ्ररीणां नास्तिकानामाधुनिकमताघलम्बिनामेषां चार्ता।</p> <p>मेघासाराः सकरफास्तिपंक् पतन्ति।</p> <p>ध्रुवस्तुद्दीच्यामेव दिशि सदा वर्तते।</p> <p>हो मया चन्द्रमण्डले परिधिर्दृष्ट अत एवायं मेघो वर्तते।</p> <p>जलागमनस्यैव शकुनः।</p> <p>अभ्युक्षणा एव शीकरा इत्युच्यन्ते।</p> <p>अद्याधिकः शीतो वर्तते ऽतएवायरात्राववश्यमेव हिमं इयायिष्यते।</p> <p>अष्टादश निमेषाणा (पलाना) मेकाकला त्रिंशत्कलानामेकः क्षणः, षाडशक्षणांशमेको मुहूर्तः, त्रिंशत्मुहूर्तानामेकोऽहोरात्रः, पञ्चदशाहोरात्राणामेकः पक्षः, द्वयोः पक्षयोरेको मासः, द्वादशमासानामेको वर्षः, मनुष्यमासेनैकोऽहोरात्रः पितृणां, मनुष्यवर्षेण देवानामहोरात्रः स्यात्।</p> <p>तत्रोत्तरायणं दिनं, दक्षिणायनं रात्रिर्देवानाम्।</p>

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन आकाशपदार्थ अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।

संस्कृत ।

देवताओं के ३६५ दिनरात का एक दिव्य वर्ष होता है.

देवताओं के १२ हजार वर्षों के मनुष्यों के चार युग होते हैं, और वही देवताओं का एक युग होता है, ऐसे देवताओं के हजार युग का ब्रह्मा का एक दिन होता है वही प्राणियों का स्थितिकाल है, और उतनीही रात्रि प्राणियों का प्रलयकाल है.

इसही क्रम से सौ वर्ष की ब्रह्मा की परमायु है उसके बाद महाप्रलय होती है जिसमें चौदह लोकों का खातिमा होजाता है.

ब्रह्मा के रोजमरों की प्रलय में तो तीन लोकही नष्ट होते हैं.

अथवा, देवताओं के ७१ युगों का एक मन्वन्तर होता है, एक मन्वन्तर में चौदह इन्द्र राज्य भोगते हैं ऐसे चौदह मन्वन्तरों का ब्रह्मा का एक दिन होता है.

मरने के बाद जीव के साथ पुण्य पाप ही जाते हैं.

मोक्ष में रोक लगानेवाले काम क्रोध लोभ मोह चार ही हैं.

अज्ञानही संसार की पैदायश का सबब है किस्मतही प्राणियों का कल्याण और अकल्याण करती है.

देवाहोरात्राणां पृथगधिकशतत्रयेण दिव्यं वर्षम्.

दिव्यैर्त्रादशभिर्षपैसहस्रैर्मानुषचतुसृगम्भवति, तत्रैव देवानामेकं युगं एतादृशानां देवयुगानां सहस्रस्य ब्रह्मण एक दिनम् तत्तु भूतानां स्थितिकालः तावत्येव रात्रिर्भूतानां प्रलयकालः.

अनेनैव क्रमेण वर्षाणां शतस्य परमायुर्महाप्रलयस्तदनन्तरं महाप्रलयो यस्मिंश्चतुर्दशलोकानां परिसमाप्तिर्भवति.

दैनन्दिनप्रलये तु त्रयो लोका एव नश्यन्ति.

अथवा, दिव्यानां युगानांैकसप्ततिस्तन्मन्वन्तरम्; एकस्मिन्मन्वन्तरे चतुर्दशेन्द्राः राज्यं भुञ्जते; तैश्चतुर्दशमन्वन्तरैर्ब्रह्मणो दिनम्भवति.

मरणानन्तरं जीवेन सह पुण्यपाप एव गच्छतः.

मुक्तौ प्रतिघन्धका कामक्रोधलोभमोहाश्चत्वार एव.

अविद्यैव जगदुत्पत्तेः कारणम्, भाग्यमेव जीवानां महलज्जामहलं विद्धाति.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यह मेरा कहना पण्डितों की खुशी के लिये और मूलों के घमण्ड दूर करने के लिये हो.

हमारे हेडमास्टर जल्दही इन्स्पेक्टर होंगे यह अफुआ मैंने मोतकिद आदमियों से सुना है.

जैसे दिन में चार पहर होते हैं तैसे रात में भी.

(गुडमॉर्निंग) तुम्हारे लिये सबेरा मद्दलदाता हो.

छुण्णदत्त सबेरे की संभ्या करता है.

आज मैं दुपहर को, कल तीसरे पहर को, परसों कोम्हरे दुपहर अपनी नौकरी से लौटूंगा । अच्छा.

कल शाम को और परसों आधी रात को मेरी भी बारी थी.

आजकल तो अंधेरी रात है और शुक से चांदनी आवेगी.

यह रात तो उजाली है यहां लालट्रेन की ज़रूरत नहीं.

समय का इतनाही विभाग मैंने दिखाया.

महरवानी करके आप धिराम की निशानियां भी वर्णन करें.

एषा मदीयोक्तिर्विदुषां मुदेऽविदुषाञ्च दपांपहाराय भवतु.

अस्मद्देडमास्टरः सद्य एवेन्स्पेक्टरो भविष्यतीति किम्वदन्ती मया वि-
श्वासपात्रेभ्यः पुरुषेभ्यः श्रुता.

यथा दिने चत्वारो यामास्तथा रात्रा-
वपि भवन्ति.

शुभस्ते प्रातःकालो भूयात्.

छुण्णदत्तः प्रातरुपासनो करोति.

अद्य दिनेऽहं मध्याह्ने श्वोऽपराह्णे पर-
श्वः पूर्वाह्णे स्ववृत्तितो निवर्तिष्ये ।
वरम्.

ह्यः सन्ध्यायां परहोऽर्धरात्रौ च समा-
पिचार आसीत्.

अद्यत्वे तु तमिस्रा रात्रिः शुक्राश्च ज्यो-
त्स्ना आगमिष्यति:

एषा राधिस्तु चन्द्रिकयान्विता घर्तते
मास्त्यावश्यकतात्र प्रच्छन्नदीपस्य.

एतावानेव कालविभागो मया प्रदर्शितः.

विरतेऽभिन्दान्यपि छुपया वर्णयतु म-
घान्.

आकाश के वस्तु दिन रात का वर्णन—आकाशपदार्था अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>यह निशान अल्पविराम का है, । यह चिह्न अर्ध विराम का है, : यह चिह्न अपूर्ण विराम का है, . या । यह चिह्न पूर्ण विराम का है, " " यह चिह्न दूसरे के फथन का है, ? यह चिह्न सवाल का है, । यह चिह्न विस्मयबोधक व सम्बोधन का है, () यह चिह्न कोष्ठ अथवा अन्तरित वाक्य का है, वगैरह.</p> <p>इम्साल जेटकी सब तपा सण्डित हो गई इससे ऐसा भान होता है कि सूपा पड़ेगा.</p> <p>पारसाल और तयोरस साल दुनियाँ के लिये आनन्ददायक थे.</p>	<p>एतच्चिह्नमल्पविरामस्य, ; एतच्चिह्नमर्धविरामस्य, : एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, . वा, । एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, " " एतच्चिह्नमपरोक्तेः, ? एतच्चिह्नमप्रश्नस्य, ! एतच्चिह्नमविस्मयसम्बोधनयोः, () एतच्चिह्नमकोष्ठनामान्तरितवाक्यस्य इत्यादीनि.</p> <p>एषमो ज्यैष्ठ्यस्य वर्षप्रतिबन्धकानि नक्षत्राणि सण्डितानि अतो वृष्टिर्न भविष्यतीति सम्भाव्यते.</p> <p>परुत्पारिवर्षी प्रजाभ्य आनन्ददायिनावास्ताम्.</p>

सत्रहवां अध्याय—सप्तदशोऽध्यायः ।

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
परमेश्वर	• विष्णुः, नारायणः, कृष्णः, गोविन्दः, इत्यादि.
लक्ष्मी	• पद्मालया, पद्मा, श्रीः, हरिमिया, कमला, इत्यादि.
हरिवाहन	• गरुडः, तार्क्ष्यः, धैतयेयः, खगेश्वरः, इत्यादि.
हरि गदा, शंख, सङ्ग, चक्र और मणि.	• कौमोदकी, पाञ्चजन्यः, नन्दकः, सुदर्शनम्, कौस्तुभः.
ब्रह्मा	• सृष्टा, प्रजापतिः, वेधाः, विधाता, विधि इत्यादि.
ब्रह्मा की स्त्री	• सरस्वती, वाग्देवी, इत्यादि.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
महादेव	• शिवः, शङ्करः, उग्रः, श्रीकण्ठः, हरः इत्यादि.
महादेव की स्त्री	• सती, दाक्षायणी, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, उमा इत्यादि.
इन्द्र	• मघवा, पुरन्दरः, शक्रः, शचीपतिः, वासवः, इत्यादि.
इन्द्र की स्त्री	• शची, इन्द्राणी, पुलोमजा इत्यादि.
इन्द्र का लोक	• स्वर् (S) स्वर्गः, नाकाः, त्रिदशालयः, त्रिदिव इत्यादि
इन्द्र का हथियार	• वज्रम्, कुलिशम्, बिदुरम्, पविः इत्यादि.
गणेश	• विनायकः, गणाधिपः, लम्बोदरः, गजाननः, इत्यदि
देव सेनापति	• कार्तिकेयः, पट्टाननः, स्कन्दः, गुहः, इत्यादि.
देवताओं के पुत्रानन्धी	• कुबेरः, अश्वकसरः, यक्षराट्, पोलस्त्यः इत्यादि.
पुत्राना	• निधिः (पुं.), श्रेयधिः (पुं.) इत्यादि.
अग्नि	• वैश्वानरः, वह्निः, ज्वलनः, ह्यगानुः, अनलः इत्यादि.
अग्नि की चिनगारी	• स्फुलिङ्गः, अग्निकणः.
धर्मराज	• कृत्वातः, यमः, दामनः, वितृपतिः, काल, इत्यादि.
जलदेवता	• प्रचेताः, चरुणः, पाशो, यावसांपतिः आपतिः इत्यादि
पवन	• समीरः, मारुतः, गन्धघहः, वायुः, अनिलः, इत्यादि.
देव भोजन	• पीयूषम्, असृत्तम्, सुधा इत्यादि.
देव वृक्ष	• मन्दारः, पारिजातकः, सन्तान, फलपवृक्षः, हरि- चन्दनं-नः.
देहस्थ पथन	• प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, ध्यान.
देवता	• अमराः, निर्जगाः, देवाः, सुराः, आदित्याः इत्यादि.
दैत्य	• असुराः, दनुजाः, दानवाः, शुक्रशिष्या. इत्यादि.
राक्षस	• कौणपाः, भ्रव्यादः, अश्रपाः इत्यादि.
कामदेव	• पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, कामः, सग. इत्यादि.
रवि,	• सूरः, सूर्यः, आदित्यः, दिवाकरः.
जिहण	• मयूगः, उच्चः, अश्रुः.

आकाश के वस्तु त्रिर्न रात का वर्णन—आकाशपदार्थी अहोरात्रादिविभागाश्च

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>, यह निशान अल्पविराम का है, ; यह चिह्न अर्ध विराम का है, : यह चिह्न अपूर्ण विराम का है, . या । यह चिह्न पूर्ण विराम का है, “ ” यह चिह्न दूसरे के कथन का है, ? यह चिह्न सवाल का है, ! यह चिह्न विस्मयबोधक व सम्बोधन का है, () यह चिह्न कोष्ठ अथवा अन्तरित वाक्य का है, वगैरह.</p> <p>इम्साल जेठकी सब तपा यण्डित हो गई इससे पेसा भाग होता है कि सूखा पड़ेगा.</p> <p>पारसाल और त्योरस साल दुनियाँ के लिये आनन्ददायक थे.</p>	<p>. एतच्चिह्नमल्पविरामस्य, ; एतच्चिह्नमर्धविरामस्य, : एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, . वा । एतच्चिह्नमपूर्णविरामस्य, “ ” एतच्चिह्नमपरोक्षे, ? एतच्चिह्नमप्रश्नस्य, ! एतच्चिह्नमविस्मयसम्बोधनयोः, () एतच्चिह्नकोष्ठनामान्तरितवाक्यस्य इत्यादीनि.</p> <p>एपमो ज्यैष्ठस्य वर्षप्रतिबन्धकानि नक्षत्राणि खण्डितानि अतो वृष्टिर्न भविष्यतीति सम्भाव्यते.</p> <p>परुत्परारिवर्षी प्रजाभ्य आनन्ददायिनावास्ताम्.</p>

सप्तदशोऽध्यायः—सप्तदशोऽध्यायः ।

स्वर्गायष्टान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
परमेश्वर	. विष्णुः, नारायणः, कृष्णः, गोविन्दः, इत्यादि.
लक्ष्मी	. पद्मालया, पद्मा, श्रीः, हरिमिया, कमला, इत्यादि.
हरिवाहन	. गरुडः, तार्क्ष्यः, चैततेयः, खगेश्वरः, इत्यादि.
हरि गदा, शंख, खड्ग, चक्र और मणि.	. कौमोदकी, पाञ्चजन्यः, नन्दकः, सुदर्शनम्, कौस्तुभः.
भद्रा	. खटा, प्रजापतिः, वेधाः, विधाता, विधि इत्यादि.
भद्रा की स्त्री	. सरस्वती, यागदेवी, इत्यादि.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
महादेव	• शिवः, शङ्करः, उग्रः, श्रीकण्ठः, हरः इत्यादि.
महादेव की स्त्री	• सती, दाक्षायणी, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, उमा इत्यादि.
इन्द्र	• मघवा, पुरन्दरः, शक्रः, शचीपतिः, वासवः, इत्यादि.
इन्द्र की स्त्री	• शची, इन्द्राणी, पुलोमजा इत्यादि.
इन्द्र का लोक	• स्वर् (5) स्वर्गः, नाकः, त्रिदशालयः, त्रिदिव इत्यादि.
इन्द्र का हथियार	• वज्रम्, कुलिशम्, भिदुरम्, पविः इत्यादि.
गणेश	• पिनायकः, गणाधिपः, लम्बोदरः, गजाननः, इत्यादि.
देव सेनापति	• कार्तिकेयः, पट्टाननः, स्कन्दः, गुहः, इत्यादि.
देवताओं के खजानची	• कुबेरः, त्र्यम्बकसरः, यक्षराज, पौलस्त्यः इत्यादि.
गङ्गाना	• निधिः (पुं.), शेषधिः (पुं.) इत्यादि.
अग्नि	• वैश्वानरः, वह्निः, ज्वलनः, कृशानुः, अनलः इत्यादि.
अग्नि की चिनगारी	• स्फुलिङ्गः, अग्निफणः.
धर्मराज	• कृत्वांतः, यमः, शमनः, पितृपतिः, कालः, इत्यादि.
जलदेवता	• प्रचेताः, चरुणः, पाशी, यादसांपतिः, अप्पतिः इत्यादि.
पवन	• समीरः, मारुतः, गन्धवहः, वायुः, अनिलः, इत्यादि.
देव भोजन	• पीयूषम्, अमृतम्, सुधा इत्यादि.
देव वृक्ष	• मन्दारः, पारिजातकः, सन्तानः, कल्पवृक्षः, हरि- चन्दनं-तः.
देहस्थ पवन	• प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः.
देवता	• अमराः, निर्जराः, देवाः, सुराः, आदितेयाः इत्यादि.
दैत्य	• असुराः, दनुजाः, दानवाः, शुक्राशिप्याः इत्यादि.
राक्षस	• कौणपाः, क्रव्यादः, अस्त्रपाः इत्यादि.
कामदेव	• पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, कामः, सगः इत्यादि.
रवि,	• सूर्यः, सूर्यः, आदित्यः, दिवाकरः.
किम्प	• मयूरः, उग्रः, अंगुः.

स्वर्गायवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिन्नोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
रवि सारथी	सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः.
चन्द्र	हिमांगुः, चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्गः, इत्यादि.
मङ्गल	अङ्गारकः, कुजः, भौमः, महीसुतः, इत्यादि.
बुध	रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, इत्यादि.
बृहस्पति	गीष्पतिः, सुराचार्यः, गुरुः, इत्यादि.
शुक्र	उशना भार्गवः, वैश्वगुरुः, इत्यादि.
शनिश्चर	शौरिः, शनैश्चरः, इत्यादि.
राहु, केतु	तमः, (ऽखी) सर्मानु, संहिकेयः, विधुन्तुदः, इत्यादि.
अपहन.	मार्गः, मार्गशीर्षः, सहाः (पुं०)
पूस	पौषः, तैषः, सहस्यः.
माघ	तपाः, [पुं०] माघः.
फागुन	तपस्यः, फाल्गुनिकः, फाल्गुनः.
चैत्र	चैत्रः, मधुः, चैत्रिकः.
वैशाख	वैशाखः, माघवः, राधः.
जेठ	ज्यैष्ठः, शुक्रः.
आषाढ	शुचिः, आपाढः.
सावन	श्रावणः, नभा [पुं०] श्रावणिकः.
भादों	नभस्यः, भाद्रः, प्रौष्ठपदः.
कार	आश्विनः, इषः, आश्वयुजः.
फातिफ	घाहलः, ऊर्जः, कार्तिकिकः.
दिशाँ	दिशः, ककुभः, काष्ठा, आशाः, हरितः, इत्यादयः.
जीनना, जयहोना	जयति, विजयते.
पैशाहोना, करत्ता	उत्पद्यते, जायते, रोहति, स्फायते, सञ्जनयति-त्ते, उत्पादयति.
जाना	गच्छति, मजति, चरति, यानि, पति, सरति, क्राम्यति.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तारीफ़करना	• स्तौति, श्लाघते, प्रशंसति, विफत्थते.
प्राप्तकरना	• लभते, आप्नोति, अधिगच्छति, अर्जति, विन्दति-ते
उपासनाकरना	• उपासते.
गिरना	• पतति, च्यवते, झंसते, झंशते, झश्यति, गलति,
तरना, धारके सामने तैरना	• तरति, म्रवते । प्रतीपंतरति.
बयानकरना	• वर्णयति, कथयति, आचष्टे चदति, ब्रवीति, ब्रूते, वक्ति, व्याख्याति, भणति.
नामलेना	• अभिदधाति, नामगृह्णाति.
कहाजाना	• उच्यते शब्द्यते, निगद्यते, अभिधीयते.
होना	• अस्ति, भवति, वर्तते, विद्यते, सम्पद्यते.
सुनना	• शृणोति [प्र०] श्रावयति । आकर्णयति, निशाम्य- ति [प्र०] निशामयति.
जानना	• वेत्ति, जानाति, अवगच्छति.
गुल्लासाकरना	• विवृणोति—ते.
समाना	• माति.
उड़ना	• डीयते, उडुयते, उत्पतति, आकाशेनयाति, खे वि- सर्पति.
देखना वा ढूँढना	• पश्यति, ईक्षते, आ-अवलोकते । निरूपयति, नि- र्वर्णयति, लक्षयति, अन्विष्यति, मृगयति.
रक्षाकरना वा रखना	• रक्षति, पाति, प्रायते, निदधाति, स्थापयति, न्य- स्यति—ते.
पढ़ना, सीखना	• शिक्षते, अधीते, पठति, अधिगच्छति । घाचयति, अध्येति.
निकालना	• निष्काशयति, अपचाहयति, नि.सारयति.

स्वर्गायित्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
रवि सारथी	सूरसूतः, अरुणः, अनूरः.
चन्द्र	हिमांजुः, चन्द्रमाः, चन्द्रः, ग्लौः, मृगाङ्कः, इत्यादि.
मङ्गल	अङ्गारकः, कुजः, भौमः, महीसुतः, इत्यादि.
बुध	रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, इत्यादि.
बृहस्पति	गीष्पतिः, सुराचार्यः, गुरुः, इत्यादि.
शुक्र	उशना भार्गवः, दैत्यगुरुः इत्यादि.
शनिश्चर	शैतिः, शनैश्चरः इत्यादि.
राहु, केतु	तमः, (ऽस्त्री) स्वर्भानु, सैहिकेयः, विधुन्तुदः इत्यादि
अगहन.	मार्गः, मार्गशीर्षः, सहाः (पुं०)
पूस	पौषः, तीषः, सहस्यः.
माह	तपाः, [पुं०] माघः.
फाल्गुन	तपस्यः, फाल्गुनिकः, फाल्गुनः.
चैत	चैत्रः मधुः चैत्रिकः.
वैशाख	वैशाखः, माधवः राधः.
जेठ	ज्येष्ठः शुक्रः.
भाषाढ	शुचिः, भाषाढः.
सावन	आश्विनः, नभा [पुं०] आश्विनिकः.
भादो	नभस्यः, भाद्रः, प्रौष्ठपदः.
कार	आश्विनः, इषः, आश्वयुजः.
कार्तिक	काहलः ऊर्जः, कार्तिकिकः.
दिशाँ	दिशः, ककुभः काष्ठा, आशाः, श्रुतिः, इत्यादयः.
जानना, जयहाना	जयति, विजयते.
पैदाहाना, करना	उत्पद्यते, जायते, रोहति, स्फायते, सज्जनयति-ते, उत्पाद्यति.
जाना	गच्छति, प्रजति, च्यति, याति, एति, सरति, क्राम्यति.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
तारीफ़करना	स्तौति, श्लाघते, प्रशंसति, विकल्पते.
प्राप्तकरना	लभते, आप्नोति, अधिगच्छति, अर्जति, विन्दति-ते
उपासनाकरना	उपासते.
गिरना	पतति, च्यवते, संसते, भ्रंशते, भ्रश्यति, गलति,
तरना, धारके सामने तैरना	तरति, ग्लवते । प्रतीपंतरति.
बयानकरना	वर्णयति, कथयति, आचष्टे चदति, ब्रवीति, ब्रूते, वक्ति, व्याख्याति, भणति.
नामलेना	अभिदधाति, नामगृह्णाति.
कहाजाना	उच्यते शक्यते, निगद्यते, अभिधीयते. . .
होना	अस्ति, भवति, वर्तते, विद्यते, सम्पद्यते.
सुनना	शृणोति [प्रि०] श्रावयति । आकर्णयति, निशाम्य- ति [प्रि०] निशामयति.
जानना	वेत्ति, जानाति, अवगच्छति.
खुलासाकरना	विदृणोति—ते.
समाना	माति.
उड़ना	डीयते, उड्यते, उत्पतति, आकाशेनयाति, खे वि- सर्पति.
देखना वा छुंढना	पश्यति, ईक्षते, आ-अवलोकते । निरूपयति, नि- वर्णयति, लक्षयति, आन्विष्यति, मृगयति.
रक्षाकरना वा रखना	रक्षति, पाति, प्रायते, निदधाति, स्थापयति, न्य- स्यति—ते.
पढ़ना, सीखना	शिक्षते, अधीते, पठति, अधिगच्छति । वाचयति, अध्येति.
निकालना	निष्काशयति, अपवाहयति, निःसारयति.

स्वर्गायवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

राधामाधवको जयहो ।

राधामाधवौ विजयेताम् ।

परमेश्वर ही जगत् का कारण है उसही से स्थावरजङ्गमरूपसृष्टि उत्पन्न होती है और उसही में लयको प्राप्त होती है.

परमेश्वरोहि जगतां कारणं तस्मादेव स्थावरजङ्गमरूपे जगती उत्पद्यते तस्मिन्नेव लयं गच्छतश्च.

भक्त उसको "हरि कृष्ण, गोविन्द नारायण, वासुदेव" इत्यादि नामों से स्तुति करते हैं.

भक्तास्तं हरि कृष्ण गोविन्द नारायण वासुदेवत्यादिनामभिः स्तुवन्ति.

ईश्वरपाने केलिये दोही मार्ग पहिले आचार्यों ने कहेहे पहिला प्रवृत्ति-मार्ग और दूसरा निवृत्ति मार्ग.

ईश्वर प्राप्ते द्वौवेव मार्गौ पुराणाचार्यैः प्रौक्तौ प्रथमः प्रवृत्तिमार्गः द्वितीयो निवृत्तिमार्गश्च.

नहीं नष्ट हुए हैं सम्पूर्ण पाप जिनके और जानना रहा है जाननेयोग्य पदार्थ जिनको ऐसे अल्पज्ञ, भृगु इत्यादि महर्षियों से दिखाया हुआ जो प्रवृत्तिमार्ग तिससेही श्रीकृष्ण की भक्ति में तत्पर हुए उस ईश्वरको प्राप्त करते हैं.

अहताग्निलकल्मषाः विदितवेदितव्या अल्पज्ञा भृगवादिप्रदर्शितप्रवृत्ति-मार्गोणैव श्रीकृष्णभक्तितत्परस्तन्तः तमीश्वरं लभन्ते.

नष्टहोगये है सम्पूर्ण पाप जिनके और रागद्वेषादि दोपरहित महात्मालोग सनकादि महर्षियों से दिखाये हुए रास्त सेही योगादि के जरिये से उस स्वच्छिदानन्द स्वरूप ब्रह्मको प्राप्त करते हैं.

निर्धूनापिलकल्मषाः रागद्वेषादिदोष शून्या यतयः सनकादिप्रदर्शित मार्गोणैव योगादिद्वारा तत्स्वच्छिदानन्दस्वरूपं ब्रह्माधिगच्छन्ति.

अपने धर्म में मौनभी अच्छी है और दूसरों का धर्म भयनायक होता है.

स्वधर्मं मृत्युरपि धेयान् परधर्मश्च भयप्रदः.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>जो पुरुष चित्तकी सफाई और गगड़े-पाई रहित हुएबिना निवृत्त मार्ग को ग्रहण करने हैं वे अनधिकारी कहने मात्र के ज्ञानी दोनों ओर से (इसलोक व परलोक से) भ्रष्ट हुए नरक मेंही अवश्य पड़ेंगे (क्योंकि) उनमें पाण्डित्यका अभाव होने से.</p>	<p>ये जनाः चित्तशुद्धिं रागद्वेषादिदोष रहित्यश्च विना निवृत्तमार्गमुपासते तेऽनधिकारिणो वाचकज्ञानिन उभयतो भ्रष्टा निरय एवावश्य पतिप्यन्ति तेषु पाण्डित्याभावात्.</p>
<p>इससे संसार समुद्र को तरने की इच्छा करता हुआ मनुष्य हमेशा आस्तिक होकर सनातनधर्मरूपी नौका को आश्रय ले कर भक्ति रूपी डौड़ के जलिये से संसार समुद्र को तरजाय.</p>	<p>अतः संनारार्णवं तितीर्षुं क्षिमान् जनः सदास्तिको भूत्वा सनातनधर्मोपेत मेवावलम्ब्य भाकीक्षेपणाद्वारा तं तरेत्.</p>
<p>चतुर्भुज रूप विष्णु के हथियार वर्णन-करो कौमोदकी नाम गदा, नन्दक-नाम तलवार पाञ्चजन्यनाम शंख, सुदर्शन नाम चक्र.</p>	<p>चतुर्भुजरूपिणः विष्णोर्गयुधानि वर्णय कौमोदकी गदा, नन्दकः खड्गः, पाञ्चजन्यः शंखः चक्रं सुदर्शनमिति.</p>
<p>भगवान् की सवारी कौन है? गरुड.</p>	<p>हरिवाहनः कः? गरुडः.</p>
<p>भगवान् की पत्नी का क्या नाम है? श्रीं लक्ष्मी वगैरह.</p>	<p>तत्पत्न्याः किं नाम? श्रीः लक्ष्मी-रित्यादि.</p>
<p>रुद्र और प्रजापति की स्त्रियों का क्या नाम है.</p>	<p>रुद्रप्रजापत्योः स्त्रियोः किं नाम?</p>
<p>उमा, और सरस्वती.</p>	<p>उमा सरस्वती च.</p>
<p>(१)—विद्याधिनय सम्पन्न ब्राह्मण में गौमें और हाथी में कुत्ते में और चाण्डाल में पण्डित समदर्शी होते हैं । यह गीताका वाक्य है ।</p>	<p>(१)—विद्याधिनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि-हस्तिनि मुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः । १ । इति गीता वाक्यात्.</p>

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यही भगवान् सृष्टि के उत्पन्न करने के समय स्रष्टा, प्रजापति इत्यादि नामों से, और पालन समय में विष्णु इत्यादिनामों से, और प्रलय समय में रुद्र इत्यादि नामों से बोले जाते हैं। देवताओं का राजा कौन है? और उस की पत्नी कौन है?

इन्द्र । शची।

गणेशजी की पूजा सयही सनातन धर्म को मानने वालों के घर सयही अच्छे कामों में विघ्न दूर करने के लिये पहिलेही होती है।

देवताओं के सेनापति और खजानची का क्या नाम है?

कार्तिकेय और कुबेर।

धनके सञ्चालन के दोनाम निधि और शेषधि हैं।

आंच के धौंकने से चिनगारी उड़ती हैं। धर्मराज के नाम भी कृपा कर सुनाओ।

कृतान्त, यम, शमन और रुद्र।

जलके अधिष्ठाता देवके नाम अथ कृपा कर जताओ।

वरुण, प्रचेता और अप्सति वरुणरुद्र।

हवा के नाम भी कहो।

समीर, मारुत और अनिल वरुणरुद्र।

म एव भगवान् सृष्टेरत्पादनसमये स्रष्टा प्रजापतिं रित्यादिनामभिः, पालनसमये विष्णु रित्यादिनामभिः प्रलयसमये रुद्र इत्यादिनामभिः शब्धने (अभिधीयते निगद्यते वा)।

देवराजः कः? तत्पत्नी च का?

इन्द्रः । शची।

गणेशस्य पूजा सर्वेषामेव सनातनधर्म-मतावलम्बिनां श्रुते सर्वेषु शुभकार्येषु विघ्नविघाताय प्रथममेव भवति।

देवसेनान्यः, धनाध्यक्षस्य च किं नाम?

कार्तिकेयः कुबेरश्च।

द्रव्यसमूहस्य निधिः शेषधिश्च द्वे नाम्नी स्तः।

अग्नेः प्रथमापनात्स्फुलिङ्गाः उत्पत्तन्ति।

धर्मराजनामान्यपि कृपया भावयन्तु।

कृतान्तः यमः शमनः, इत्यादीनि।

विहापयाधुना कृपया जलाधिष्ठातृदे-
वस्य नामानि।

वरुणः प्रचेताः, अप्सतिः, इत्यादीनि।

धायोर्नामधेयान्यपि ब्रूहि।

समीरः, मारुतः, अनिलः, इत्यादीनि।

स्वर्गायतृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकत्रिपयाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

देहकी वायु कितनी हैं उनके स्थान भी अलग २ वर्णन करो । सुनो। हृदय में प्राण, गुदा में अपान, टूंडी में समान, कण्ठ में उर्दान, सबदेह में व्यौन इस प्रकार पांच देहकी वायु हैं- संसार को बंध करने वाले कामदेव के नाम भी कहो।

काम, स्मर, कन्दर्प वगैरह जानो- स्वर्ग में देवता और दानवों के नाम भी बताओ।

देवता तो देव, निर्जर, अमर वगैरह नामों से और असुर दैत्य, दनुज, दानव वगैरह नामों से मशहूर हैं। आठसिद्धि जो सुनी जाती हैं उन्हें खुलासा करो।

अणिमातो पहिलीसिद्धि है दूसरी महिमा कहलानी है, तीसरी गरिमा-कही है चौथी लघिमा, तैसेही

कतिसंख्याका देहस्वभावः तेषां स्थानान्यपि पृथक्तया व्याख्याहि 'शृणु। हृदि प्राणः, गुदेऽपानः, नाभा समानः कण्ठ उर्दानः अखिलशरीरे व्यौन। इत्थं पञ्च देहस्था वायवः सन्ति। जगद्गदाकर्तुः कामदेवस्य नामान्यपि भण।

कामः, स्मरः, कंदर्पः इत्यादीनि विद्धि।

त्रिदिवं सुरासुराणां मारया अप्याख्याहि

सुरास्तु देवाः, अमराः, निर्जरा इत्यादि नामभिः, असुगश्च दैत्या, दनुजा, दानवा इत्यादिनामभिः प्रसिद्धाः।

अष्टसिद्धयो याः शृयन्ते ताः समासेन ग्रहि।

अणिमातु प्रथमासिद्धिः द्वितीया महि-
माच्यते तृतीया गरिमा प्रोक्ता
चतुर्थी लघिमा तथा पञ्चमी

१ अणिमा=सूक्ष्म शरीर धारण करना।

२ महिमा=जिससे ब्रह्माण्ड में न समाय।

३ गरिमा=इतना भारी होजाय कि बड़े बलवानों से भी न लेजाया जा सके।

४ लघिमा=जिससे रई के तुल्य होकर जहां मन में आवे वहां उड़जाय।

१ अणोर्भावः=अणिमा कोऽर्थः सूक्ष्म शरीरधारित्वम्।

२ महतोभावः=महिमा कोऽर्थः येन ब्रह्माण्डे न माति।

३ गरिमा=गुणेर्भावः कोऽर्थः येनोत्कृष्टबलवद्भिर्गपि अनुह्यः स्यात्।

४ लघोर्भावः=लघिमा कोऽर्थः येन तूलसदृशो भूत्वा यथेष्टगुणैर्येत्।

स्वर्गायतृचान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

पाचवीं प्राप्ति नाम की है छठी प्राकाम्य, यहाँ से आगे सातवीं ईशित्व और तेसेही आठवीं वशित्व कहाँ है. इनके अर्थ भी क्रमसे टिप्पणी में देखा नवग्रहों के प्रसिद्धपर्यायों कोभी अलग २ इसी पाठकी लक्ष्मियों की श्रेणी में देखा.

सप्तमिं कौनहें उनके नाम श्लोक बंद-कहो. सुनिये.

मरीचि, अङ्गिरा, अग्नि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वाशिश्वेति सात बुद्धिमानों ने सप्तमिं माने हैं.

चन्द्रह लोक कौन से हैं ?

भूः भुवः, स्वर, जन, तप, मह और सत्य ये सात ऊपरके लोक हैं.

तल, वितल, सुतल, महानल, तलानल रसानल, पाताल ये सात नीचे के लोक जानने.

१ प्राप्ति=उगली की नौक से चन्द्रमां आदि अलभ्य चीजोंका जितने लाभ हो.
२ प्राकाम्य=इच्छा न मारी जाय.

३ ईशित्व=जिससे स्थावर भी आश-कारी हों.

४ वशित्व=जिससे पृथ्वीमें भी उन्मज्जन निमज्जन होजाय.

प्राप्तिनाम्नीस्यात्पृष्ठी प्राकाम्ये मित्यन ईशित्वं सप्तमी प्राकावशित्वं चाष्टमी तथा.

पनासामर्थानपि टिप्पण्यां क्रमतः पश्य नवग्रहाणां प्रसिद्धपर्यायानपि पृथक्यास्थेय पाठस्य शब्दश्रेण्यां पश्य.

सप्तम्यः के तन्नामानि श्लोकवद्वानिवद-श्रूयन्ताम्.

मरीचि रङ्गिरा अग्निः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वशिष्ठश्चेति सप्तैते प्राज्ञेः सप्त-पर्यायो मताः.

चतुर्दशलोकाः के ?

भूः, भुवः, स्वरः, जनः, तपः, महः सत्यः एते सप्तोपरिस्था लोकाः.

तलः, वितलः, सुतलः, महानलः, तलानलः, रसानलः, पातालः एते सप्ताधःस्था लोका ज्ञेयाः.

१ प्राप्तिः=कोऽर्थः अंगुल्यमेण चन्द्रादीनामलभ्यवस्तूनां येन लाभः.

२ प्राकाम्येय भावः=प्राकाम्यं कोऽर्थः इच्छानभिधानः.

३ ईशिनो भावः=ईशित्वं कोऽर्थः येन स्थावरा अपि आशायारिणः स्युः.

४ वशिन्नोभावः=वशित्वं कोऽर्थः येन भूमावपि उन्मज्जननिमज्जने स्याताम

स्वर्गायवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>साल के दो अयन होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायण.</p>	<p>पर्यस्य द्वेअयने स्तः दक्षिणायनमुत्तरायणञ्च.</p>
<p>एक साल में छः ऋतु नीचे लिखी तरतीब से होती हैं.</p>	<p>एकस्मिन् वत्सरे षड्ऋतवो निम्न क्रमेण भवन्ति.</p>
<p>अगहन और पूस में हेमन्त; माघ और फागुन में शिशिर वाजङ्ग; चैत्र और वैशाख में वसन्त; जेठ और असाढ़ में ग्रीष्म; सावन और भादों में वर्षा वा प्रावृत्; कार और कार्तिक में शरद् पूर्वदिशा प्राची, पश्चिमदिशा प्रतानी दक्षिणदिशा अवाची और उत्तर दिशा उर्दीची कहलाती है.</p>	<p>मार्गशौषेच हेमन्तः जठो (शिशिरः) माघे च फाल्गुने; चैत्रे राधे (वैशाखे) वसन्तः स्यात्, शुचीश्रुके (आषाढे) च ग्रीष्मकः, वर्षंतुः श्रावणे भाद्रे; आश्विने कार्तिके शरद इति. पूर्वादिक प्राची, पश्चिमादिक प्रतानी, दक्षिणा दिग्वाची उत्तरादिगुदीचीति भण्यते.</p>
<p>साहित्य सम्बन्धी आठ रस वयान क्रमे चाहिए.</p>	<p>साहित्यविषयकाः अष्टौ रसाः वर्णनीयाः.</p>
<p>शृङ्गार, वीर करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र ये आठ रस जानने.</p>	<p>शृङ्गारः, वीरः करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, वीभत्सः, रौद्रः इत्यष्टौ रसा ज्ञेयाः.</p>
<p>काम, माल, नेत्र, जीभ और नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय; घ्राणी, हाथ, पाँच, गुदा और लिंग ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं इस प्रकार मिलकर दस इन्द्रिय हैं । और दिल दोनों तरह का है.</p>	<p>श्रोत्रं, त्वक्, जश्रुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, वाक्, पाणिः, पादः, पायुः, उपस्थः, इति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एवं मिलित्वा दशेन्द्रियाणि सन्ति. उभयात्मकं मनः.</p>
<p>शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँच तरतीब वार ज्ञानेन्द्रियोंके विषय हैं.</p>	<p>शब्दः, स्पर्शः, रूपम्, रसः, गन्धः इत्येते पञ्च क्रमशो ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः.</p>

स्वर्गायष्टचान्नाः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविधाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

पाचवी प्राप्ति नाम की है छोटी प्राकाम्य, यहाँ में आगे सातवीं ईशित्व और तैसही आठवीं वशित्व कही है. इनके अर्थ भी क्रमसे टिप्पणी में देरों नवग्रहों के प्रसिद्धपर्यायों कोभी अलग २ इसी पाठको लक्ष्मों की ध्रुवों में देरों.

सप्तर्षि कौनहैं उनके नाम श्लोक चन्द्र-कहो. सुनिये.

मरीचि, अहिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वांशष्टयं सात बुद्धिमानों ने सप्तर्षि माने हैं.

चौदह लोक कौन से हैं ?

भूः भुवः स्वः, जनः, तपः, मह और सत्य ये सात ऊपरके लोक हैं.

तल, वितल, सुतल, महातल, तलातल रसानल, पाताल ये सात नीचे के लोक जानने.

१ प्राप्ति=उंगली की नोक से चन्द्रमां शादि अलभ्य चीजोंका जिसमे लाभ हो.

२ प्राकाम्य=इच्छा न मारी जाय.

३ ईशित्व=जिससेस्थावर भी आश-कारी हों.

४ वशित्व=जिससे पृथ्वीमें भी उन्मज्जन निगज्जन होजाय.

प्राप्तिनाम्नीस्यात्पृष्ठी प्राकाम्यं मित्यन ईशित्वं सप्तमी प्रोक्ता वशित्वं चाष्ट-मी तथा.

एतास्वामर्थानपि टिप्पण्यां क्रमतः पश्य नवग्रहाणां प्रसिद्धपर्यायानपि पृथ-कयास्त्यैव पाठस्य शब्दध्रुव्यां पश्य.

सप्तर्षयः के तन्नामग्नि श्लोककथनानिचद-ध्रुवन्ताम्.

मरीचि रङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः । वशिष्टश्चेति सप्ततं प्राप्तिस्त-र्षयो मताः.

चतुर्दशलोकाः के ?

भूः, भुवः, स्वः, जनः, तपः, महः सत्यः एते मतोपरिस्थां लोकाः.

तलः, वितलः, सुतलः, महातलः, तला-तलः, रसानलः, पातालः एते सप्ता-धःस्था लोका ज्ञेयाः.

१ प्राप्तिः=कोऽर्थः अंगुल्यग्रेण चन्द्रा-दीनामलभ्यवस्तूनां येन लाभः.

२ प्रकामस्य भावः= प्राकाम्यं कोऽर्थः इच्छानभिधानः.

३ ईशिनो भावः=ईशित्वं कोऽर्थः येन स्थावरा अपि आशकारिणः स्युः.

४ वशििनोभावः=वशित्वं कोऽर्थः येन भूमापि उन्मज्जननिगज्जने स्यानाम

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>साल के दो अयन होते हैं दक्षिणायन और उत्तरायन.</p>	<p>वर्षस्य द्वेअयने स्तः दक्षिणायनमुत्तरायनञ्च.</p>
<p>एक साल में छः ऋतु नीचे लिगी तरतीब से होती हैं.</p>	<p>एकस्मिन् वत्सरे षड्ऋतवो निम्न क्रमेण भवन्ति.</p>
<p>अगहन और पूस में हेमन्त; माह और फागुन में शिशिर ऋतु; चैत्र और वैशाख में वसन्त; जेठ और असाढ़ में ग्रीष्म; सावन और भादों में वर्षा वा श्रावण, कार और कार्तिक में शरद्वर्षादिशा प्राची, पश्चिमदिशा प्रतीची दक्षिणदिशा अवाची और उत्तर दिशा उर्ध्वी कहलाती है.</p>	<p>मार्गशीर्षश्च हेमन्तः जेठो (शिशिरः) माघे च फाल्गुने; चैत्रेराधे (वैशाखे) वसन्तः स्यात्, शुर्चाश्रुने (आषाढे) च ग्रीष्मकः, वर्षर्तुः श्रावणभाद्रे; आश्विने कार्तिके शरद्वर्षा इति.</p> <p>पूर्वादिर् प्राची, पश्चिमा दिर् प्रतीची, दक्षिणा दिग्वाची उत्तरादिर्गुर्धी चीति भण्यते.</p>
<p>साहित्य सम्बन्धी आठ रस विधान करने चाहिये.</p>	<p>साहित्यविषयकाः अष्टौ रसाः वर्णनीयाः.</p>
<p>शृङ्गार, वीर करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, घोमत्स, रौद्र ये आठ रस जानने.</p>	<p>शृङ्गारः, वीरः, करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, घोमत्सः, रौद्रः इत्यष्टौ रसा श्रेयाः.</p>
<p>काम, खाल, नेत्र, जीभ और नाक ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय; घ्राणी, हाथ, पाँव, गुदा और लिंग ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं इस प्रकार मिलकर दस इन्द्रिय हैं । और दिल दोनों तरह का है.</p>	<p>श्रोत्रं, त्वक्, नशुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, नाक, पाणिः, पादः, पायुः, उपस्थः, इति षड् कर्मेन्द्रियाणि एवं मिलित्वा दशेन्द्रियाणि सन्ति. उभयार्थकं मनः.</p>
<p>शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पाँच नरतीव वार ज्ञानेन्द्रियोंके विषय हैं.</p>	<p>शब्दः, स्पर्शः, रूपम्, रसः, गन्धः इत्येते षड् प्रथमो ज्ञानेन्द्रियाणां विषयाः.</p>

स्वर्गायट्टचान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।

जीभ से अनुभव किये हुए छः रसों को कौन २ रस कहां २ हैं इस प्रकार खुलासा वर्णन करो।

पहिला मीठा जलमै; दूसरा लवण लाहौरी नमक में; तीसरा कड़ुआ मिर्च इत्यादि में; चौथा तीखा नीम धगेरह में; पाँचवा खट्टा इम्ली इत्यादि में; छठवाँ कसैला हरड इत्यादि में यह छः रस जानने।

गाने पजाने की विद्या में सात स्वर कहां २ और कैसे २ हैं अलग २ वर्णन करो।

पहिला निषाद (हाथी के नाद सरीया), दूसरा आपमे (गाओं के नाद तुल्य), तीसरा गान्धार (यकारियों के नाद तुल्य), चौथा पद्म (मोरों के नाद तुल्य), पाँचवा मध्यमे (म्राँच के नाद तुल्य), छठा धैवते (घोड़े के नाद तुल्य), सातवाँ पञ्चम (कोहल के नाद तुल्य) ये सात स्वर वर्णना के कण्ठ से निकलते हुए जानने।

वीरह विद्या कौन हैं ?

ब्रह्मज्ञान, रसायन, श्रुतिकथा, वैद्यक, ज्योतिष, ध्याकरण, धनुर्विद्या, तैरना, गाना, नाचना, घाँड़े पर चढ़ना, कौकशास्त्र, चोरी में हो-दिपारी, चतुराई ये १४ विद्या हैं।

संस्कृत ।

त्रिद्वानुभूतान् पद्मस्मात् कुत्र कुत्र कः कः रसः इति समासेन व्याख्याहि-

प्रथमो मधुरः जले, द्वितीयो लवणः सेन्धुवाद्यौ, तृतीयः कटुः मरीचाद्यौ, चतुर्थस्तिकः निम्बाद्यौ, पञ्चमोऽम्लः तिक्तिकाद्यौ, षष्ठः कषायः हरीतक्याद्यौ इतिपद् रसाः श्रेयाः।

गानवाद्यविद्यायां सप्त स्वराः कुत्र कुत्र च कीदृशाः इतिपृथक्तया वर्णय।

प्रथमो निषादः (गजनादवत्), द्वितीयो अपमेः (गुर्वानादवत्) तृतीयो गान्धारः (अजादीनां नादवत्), चतुर्थः पद्मः (मयूरनादवत्), पञ्चमो मध्यमेः (कौञ्चनादवत्), षष्ठो धैवतेः (अश्वनादवत्), सप्तमः पञ्चमः (कोकिलनादवत्) इति सप्त तन्प्रीकण्ठोत्थिता स्वराः श्रेयाः।

चतुर्दश विद्याः काः ?

ब्रह्मज्ञान, रसायनं, श्रुतिकथा, वैद्यकं, ज्योतिषं, ध्याकरणं, धनुर्धर्मत्वं, जलतरत्वं, सङ्गीतं, नाटकं, अश्वारोहणं, कौकशास्त्रं, स्तेयप्रागल्भ्यं, चातुर्यमेताश्चतुर्दशविद्याः।

स्वर्गायवृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>जीव की चार अवस्था कौन हैं? जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया ये चार अवस्था हैं.</p>	<p>चतस्रोऽवस्था जीवस्य काः? जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिपुरीया इत्यवस्थाश्च- तस्रः.</p>
<p>रुपाकर नौ प्रकार की भक्ति भी बयान करो.</p>	<p>रूपया नवधां भक्तिमपि वर्णयतु.</p>
<p>भगवान् का स्मरण, कीर्तन, कथा श्रवण, पाद सेवन, पूजन, वन्दना, दास्य, और सख्य और अपने आपे का निवेदन कराना इस प्रकार नौ प्रकार का है.</p>	<p>स्मरणं कीर्तनं विष्णोः; श्रवणं पादसे- वनं; अर्चनं घन्दनं दास्यं; सख्यमा- त्मनिवेदनमिति नवधा.</p>
<p>पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश आदि पांच तत्व हैं.</p>	<p>पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि पञ्च त- त्वानि.</p>
<p>छः दर्शन शास्त्र उन २ के आचार्यों सहित वर्णन करो.</p>	<p>षड्दर्शनानि तत्तदाचार्यसहितानि वर्णय.</p>
<p>गौतम का किया हुआ न्यार्य, कणाद का किया हुआ वैशेषिक, कपिल का किया हुआ सांख्य, पतञ्जलि का किया हुआ योग, व्यास का किया हुआ वेदान्तदर्शन, जैमिनि का किया हुआ मीमांसादर्शन ये छः दर्शन हैं.</p>	<p>गौतमकृतो न्यार्यः, कणादकृतं वैशेषि- कम्, कपिलकृतं सांख्यम्, पत- ञ्जलिकृतो योगः, व्यासकृतं वेदान्त दर्शनम्, जैमिनिकृतं मीमांसादर्शनं- मिति षड् दर्शनानि सन्ति.</p>
<p>६४ कला जो भक्तवत्सल श्रीकृष्ण भग- वान् ने ६४ दिन में श्रीसान्दीपन नाम के गुरु से पढ़ीं उन को स्पष्ट रीति से सुनो.</p>	<p>चतुःषष्टिः कलाया भक्तवत्सलेन शौह- ष्णेन भगवता चतुःषष्टिविधसेषु श्री- सान्दीपनाभिधाद्गुरोरधीताः ताः समासेन श्रूयन्ताम्.</p>

स्वर्गायतृत्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविषयाश्च ।

हिन्दी ।

गाना, वाजा, नाच (गात्रविक्षेप), नाटक (भावप्रदर्शन), तस्वीर, अति सूक्ष्म वस्तु का द्विधा करना, तण्डुलकुसुमवलि प्रकार, फूलों का बिछौना, दाँत वस्त्र और शरीर का रंगना, मणियों की भूमि (करी) घनाना, शय्या का रचना, जल का वाजा, उदकवात, चित्रों का योग करना, फूलों का शूँघना, मुकुट बनाना, नेपथ्ययोग (अलङ्कार धारण) कर्ण-भूषण रचना, अंतर निकालना, भूषणों की योजना, इन्द्रजाल, कामोद्दीपन करना, हाथ की फुर्ती, विचित्र शाक पूजा इत्यादि भक्ष्य पदार्थों की किया, टंडाई रस अनेक प्रकार के रङ्गयुक्त आसच बनाना, दर्जी का काम, सूत्रक्रीड़ा, पहेली बनाना व जानना, माला समतुल्य कुल बनाना, दुर्वचकयोग, पुस्तक-वाचन, नाटक की कथा का दिखाना काव्य समस्या पूर्ति, पट्टी घेत और धाण इनकी रचना, तर्ककर्म, वढ़ई का कर्म, घर बनाना, रूपारत्न परीक्षा, धातुओं का कहना, मणि रंगमान, रानों का ज्ञान, वृक्षों के आयुर्वेद का योग, मैडा, शीतर,

संस्कृत ।

गीतं, वाद्यं, नृत्यं, नाट्यं, आलेख्यं, वि-
क्षेपकच्छेद्यम्, तण्डुलकुसुमवलि-
प्रकाराः, पुष्पास्तरणं, दशनवसना-
ङ्गरागाः, मणिभूमिकाकर्म, शयन-
रङ्गनं, उदकवाद्यं, उदकघातः, चित्र-
योगाः, माल्यग्रन्थनविकल्पाः, शैल-
रार्पाद्योजनं, नेपथ्ययोगाः, कर्ण-
पत्रभङ्गाः, सुगन्धयुक्तिः, भूषणयो-
जनं, वेन्द्रजालं, कौतुमारयोगाः,
हस्तलाघवं, चित्रशाकापूपभक्ष्य-
कारप्रियाः, पानकरसरगासवयो-
जनं, सूचीकर्म, सूत्रक्रीड़ा, प्रहेलिका,
प्रतिमाला, दुर्वचकयोगाः, पुस्तक-
वाचनं, नाटकाख्यादिकादर्शनं, का-
व्यसमस्यापूरणं, पट्टिकावेत्रधाण-
विकल्पाः, तर्ककर्माणि, तक्षणं, वा-
स्तुविद्या, रूप्यरत्नपरीक्षा, धातु-
वादः, मणिरामज्ञानं, आकरज्ञानं,
वृक्षायुर्वेदयोगाः, मेपकुम्भकुटलावक-
युद्धविधिः, शुक्रसारिकाप्रलापनं,
उत्सादनं, केशमार्जनकौशलं, अक्षर-
मुष्टिकाकथनं, म्लेच्छित्तकुतर्कविक-
ल्पाः, देशभाषाज्ञानं, पुष्पशकटिका-
निमित्तज्ञानं, यन्त्रमातृका, धारण-
मातृका, संवाच्यं, मानसीकाव्य-
प्रिया, अग्निधानकोशः, छन्दोज्ञानं,

स्वर्गायित्तान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>मुर्गा इत्यादि लट्टाने की रीति, तोना मैना का चुलावना, स्थानान्तर दूरीकरण, केश मार्जनकी चतुराई, अक्षरों से आंर मुष्टिका से कथन अष्टाद्व तर्क रचना, देशभाषा ज्ञान, फूलों की गाढ़ी बनाने की क्रिया, यन्त्रों के निर्माण की विधि, धारण करने की विधि, समय की कहना मानसी काव्यक्रिया, अभिधानकोप छन्दज्ञान, अनेक क्रियाओं का करना छलने के उपाय, घस्त्र रक्षण, जूथा विशेष, आकर्ष (सूचनेकी) क्रीड़ा चालकों के सिलोने धनाना, धैनायक (विघ्नकर्ता) और चैतालों की विद्या का ज्ञान ये चौंसठ कला हैं.</p>	<p>क्रियाविकल्पा, छलितकयोगाः, चस्त्रगोपनानि, सूतविशेषः, आकर्ष-क्रीड़ा, चालक्रोडनक्रानि, धैनायकानां चैतालिकानाञ्चविद्यानांज्ञानमितिचतुःषष्टिःकलाः.</p>
<p>जो इन ऊपर की कही हुई कलाओं को ६४ दिन में पढ़लेते हुए और जो पांचवर्ष के गोवर्धन पहाड़ को उखाड़कर कानी उंगली की नौक पर धारण करते हुए और इन्द्रके डर से प्रजधसिंघा को बचातेहूए उनको आजकल के मन्दमति "मनुष्य" मानते हैं यह उनकी भूल है.</p>	<p>य पता उपरोक्ताःकलाश्चतुःषष्टिदिवसेष्वेवाधिजगे, यः पञ्चहायतो गोवर्द्धनगिरिमुत्पात्य कनिष्ठिकया सप्तदिवसपर्यन्तं दधार प्रजवासिनश्चेन्द्रप्रासाद् ररक्ष तमाधुनिकाः क्षुद्रमतयः मनुष्यं मन्यन्त इति तेषां प्रतिशमः.</p>
<p>तीन ताप हैं—आध्यात्मिक, आधिभौतिक, और आधिदैविक.</p>	<p>तापास्त्रयः आध्यात्मिकः, आधिभौतिकः, आधिदैविक इति.</p>

स्वर्गीयवृत्तान्ताः, धर्ममन्त्रिनोऽनेरविषयाश्च ।

हिन्दी ।

तीन प्रकारके धर्म हैं—सञ्जित, प्रारब्ध, और क्रियमाण.

तीन अवस्था देहका बाल, युवा और वृद्ध हैं.

चारवेद ऋक्, यजु, साम और अथर्व हैं.

उपवेद भी चार हैं ऋग्वेदका आयुर्वेद, यजुर्वेदका धनुर्वेद, (शस्त्र-विद्या) सामवेद का गान्धर्व (गान-विद्या) अथर्व वा स्वापत्य (शिल्प-विद्या.)

दश उपनिषद् कौन से हैं ?

ईश केन, कठ, प्रण, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय पेत्रेय, छान्दोग्य, बृहदारण्य, दश उपनिषद् हैं.

अठारह स्मृतियों के नाम लिखो.

मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क उशना, अंगिरा, यम, आपस्तम्ब, सवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पाराशर, व्यास शङ्ख, लिपित, दक्ष, गौतम, शातातप, वशिष्ठ इन २ नामोंके ऋषियों से बनाई हुई स्मृति जाननी.

द्विजातियों के १६ संस्कार वर्णनकरो.

संस्कृत ।

त्रिविधं कर्म—सञ्जितं, प्रारब्धं, क्रियमाणञ्चेति.

अवस्थास्त्रिष्वेदेहस्य—बाल्यं यौवनं, धार्धन्यञ्चेति.

चत्वारो वेदाः ऋग्यजुःसामाथर्वेति.

उपवेदा अपि चत्वारः—ऋग्वेदस्यायुर्वेदः यजुर्वेदस्य धनुर्वेदः (शस्त्रविद्या) सामवेदस्य गान्धर्वः [गानविद्या] अथर्वणश्च स्वापत्यः [शिल्प]

दशोपनिषदः के ?

ईशकेनकठप्रणमुण्डकमाण्डूक्यतैत्तिरीयैतरेयछान्दोग्यबृहदारण्यका दशोपनिषदः.

अष्टादशस्मृतीनां नामानि लिख.

मनु, अत्रिः, विष्णु, हारीतः, याज्ञवल्क्यः, उशना, अङ्गिराः, यम, आपस्तम्बः, सवर्तः, कात्यायनः, बृहस्पतिः, पाराशरः, व्यासः, शङ्खः, लिपितः, दक्षः, गौतमः, शातातपः, वशिष्ठः, इत्येतेषामभिः ऋषिभिः प्रणीता स्मृतयो ज्ञेयाः.

द्विजातीनां षोडश संस्कारा वर्णयन्ताम्.

स्वर्गायष्टचान्ताः, धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नाम क्रिया, निष्क्रम, अन्नप्राशन, पवनक्रिया कर्णवेध, व्रतादेश, वेदारम्भ क्रियाविधि केशान्तःस्नान, उद्वाह, विवाहाग्निपरिग्रह, व्रता अग्नि संग्रह ये १६ संस्कार हैं.

अठारहों पुराणों के नाम सुनो.

ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण शिवपुराण, श्रीमद्भागवत या देवी भागवत, चारुद पुराण, मार्कण्डेय पुराण अग्नि पुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, लिङ्गपुराण, चरित्र पुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुडपुराण और ब्रह्माण्डपुराण ये अठारह पुराण हैं.

राने की चीजें के प्रकार की हैं ?

चाटे जाने योग्य, चींराने योग्य, पीने योग्य, राने योग्य, चाबने योग्य ये छः तरह की हैं.

नौ रत्न सुनिये.

मोती, सुवर्ण, वैडूर्य, पद्मराग, पुष्पराग और शोभेद, नीलम, गारुत्मत तैल-ही प्रवाल ये नौ रत्न कहें हैं.

गर्भाधानं, पुंसवनं सीमन्तो जातकर्मच, नामक्रिया निष्क्रमोऽन्नप्राशनपवनक्रिया । कर्णवेधोव्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः केशान्तःस्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः व्रताग्नि-संग्रहश्चैव संस्कारापोडशस्मृताः.

अष्टादशपुराणानां नामानि दृशुत.

ब्रह्मपुराणं, पद्मपुराणं, विष्णुपुराणं शिवपुराणं, श्रीमद्भागवतं देवीभागवतं वा, चारुदपुराणं, मार्कण्डेयपुराणं, अग्निपुराणं, भविष्यपुराणं, ब्रह्मवैवर्तपुराणं, लिङ्गपुराणं चरित्रपुराणं, स्कन्दपुराणं वामनपुराणं । कूर्मपुराणं, मत्स्यपुराणं, गरुडपुराणं ब्रह्माण्डपुराणञ्चैतान्यष्टादशपुराणानि.

भोजनपदार्थाः कतिधाः ?

लेह्यं, चोष्यं, पेयं, भक्ष्यं, भोज्यं, चर्ष्य-मिति षड्धाः.

नवरत्नानि थ्यन्ताम्.

मुक्ताफलं, हिरण्यञ्च, वैडूर्यं, पद्मरागकं, पुष्परागञ्च शोभेद, नील, गारुत्मतं, तथा प्रवालमुक्तान्मुक्तानि महारत्नानि चैव नव.

स्वर्गीयवृत्तान्ताः धर्मसम्बन्धिनोऽनेकविपयाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>मांग में सिंदूर, भाल में तिलक, हाँकी में तिलक लगाना, मेहदी लगाना, आभूषण पहरना, पुष्पधारण, सुगन्ध लगाना, मुखराग, अक्षरराग, चन्दन अंग में लगाना, दान्त रँगना, काजल लगाना.</p> <p>वेद के अंग ६ हैं—१ शिक्षा में वर्णस्थानोच्चार वर्णन, २ कल्प में कर्म करने की रीति, ३ व्याकरण में शब्द सिद्धि और शुद्धता का वर्णन, ४ निरुक्त में वेद के कठिन शब्दों का अर्थ वर्णन, ५ छन्द में अक्षर और मात्रा के वृत्तों का वर्णन, ६ ज्योतिष में गणितादि वर्णन,</p> <p>योनौ चौरासी लाख हैं—जिनमें जलचर नौ लाख, मनुष्य चार लाख, स्थानचर सत्तार्हस लाख, कृमि ग्यारह लाख, पक्षी दश लाख, चौपाये नैर्हस लाख</p>	<p>सीमन्तकः(शिरसि सिन्दूरधारणम्) भालतिलकः, चितुकनिलकः, हस्तरञ्जनम्, आभरणधारणम्, पुष्पधारणम्, सुगन्धलेपनम्, मुखरागः, ओष्ठरागः, चन्दनलेपनम्, दशनरागः, काजलनिवेशनमित्यायः.</p> <p>वेदस्याङ्गानिषद्—प्रथम शिक्षा यस्यां वर्णस्थानोच्चारवर्णनम्; द्वितीयं कल्पे. यस्मिन् कर्मकाण्डरीतिः, तृतीयं व्याकरणम् यस्मिन्शब्दसिद्धि-शुद्धतावर्णन, चतुर्थम् निरुक्तं यस्मिन्वेदस्य शूद्रशब्दार्थविवर्णनम् पञ्चमं छन्दः यस्मिन्अक्षरमात्रावृत्तवर्णनं षष्ठं ज्योतिष यस्मिन्गणितादिवर्णनम् .</p> <p>चतुरशीनिलक्षं योनयः, यासु जलचराः नवलक्षं, मनुष्याः चतुर्लक्ष, स्थानचराः सप्तविंशतिलक्ष, कृमय एका दशलक्ष, पक्षिणो दशलक्षं, चतुर्भा दारुणयोर्विंशतिलक्षमिति,</p>



अठारहवां अध्याय—अष्टादशोऽध्यायः ।

रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
रोग	रुक्, रोगः, गदः, आमयः.	कोड़	कुष्ठः-ष्टम्, भिन्नम्, मण्ड- लकम्.
शफाखाना	चिकित्सालयः.	लकुआ	घानरोगः, अर्द्धाङ्गः.
दवाखाना	औषधालयः.	हेजा-	विसृचिका.
पुखार	ज्वरः.	जिरियान	प्रमेहः, मेहः.
जाड़ा	शीतज्वरः.	पेरजारी	प्रदरः [स्त्रीरोगः].
दवा	अगदः, भेषजम्, औषधम्.	होना	घ्रणः, ईमम्, अरुः.
कफ	कफः, श्लेष्मन् [पुं०]	घाघ	उपदंशः.
पित्त	मायुः, पित्तम्.	आतशक,	अक्षिशूलम्, चक्षुःपीडा.
घात	घातः.	सूर्जाक	आनादः.
शीतला	विस्फोटकः, शीतला, म-	आंसदुखना	अर्शः.
खांसां	सूरी-रिका.	अफरा	शिरोवेदना.
दस्त	कासः क्षयधुः.	वयासीर	दन्तवेदना.
के	सङ्ग्रहणी, प्रवाहिका.	शिरकादर्द	दन्तवेदना.
हूनफेसाद	प्रच्छदिका, घमिः, घमधुः.	दांतकादर्द	कर्णवेदना.
घद्दहउमां	रक्तधिकारः.	कानकादर्द	अश्मरी.
खुजली	मन्दाग्निः.	पथरी	मूत्ररुद्धम्.
वाद	कण्डूः, अज्जूः.	बहुमूत्र	अपस्मारः.
शूलका दर्द	दुडः दूः.	मृगी	अर्शपदम्, पादचर्मिकम्.
पीनस	शूलम्.	फौलपाया	वैद्यः, भियक्, चिकित्सकः.
सूजन	प्रतिश्यायः, पीनसः.	हकीम	दिका.
फोड़ा फुसी	शोधः शोफः.	बुचकी	छिका.
गियार्	विस्फोटकः, पिटकः.	छीक	घ्रणः, क्षतः.
श्वेत कोड़	पादस्फोटः, विपादिका.	घाघ	
	किलासम्, मिष्मम्.		

रोग इत्यादि का वर्णन रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
फुस्त भोगना (दुःख) बढ़ना खीरना	शिरामोक्षः ज्वमुद्धक्ते, विहसते, क्षिश्यते पीड्यते, तप्यते. वर्धते, एधते. चिदारयति.	मूल्म होना फूटना फोड़ना	भा-प्रति-भाति, दृश्यते ल- श्यते. स्फुटति, दलति, स्फोटयति दलयति.

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>कोई दवाखाना और दफ्तराना तुम्हारे शहर में है. बहुत हैं.</p> <p>यह रोगमरह कमज़ोर होता जाता है इसके रोग का किसी होशियार हकीम से इलाज कराओ और मा- .कूल दवाइयां दिलाओ.</p> <p>यात पित्तकफ इनके जोर होनेपर जय सन्निपात हो जाताहै तभी हकीम की बहामन्दी देखी जाती है.</p> <p>मैं एक हफ्ते से जाड़े बुज़ार में मुक्ति- लाहं.</p> <p>फंया तुम्हारा बेटाभी शिरमें फोड़ो से पीडित है.</p> <p>पांचदिन से देचदत्त को खांसी और मन्दाग्नि दिक् कर रही है.</p> <p>कमज़ोर आदमी की फुस्त कभी न खोले. यह चिचारा मुसल्मान दस्त, खून फि- साव और खुजली से बुज़ी है.</p>	<p>स्तः कौचिदौषधालयचिकित्सालयौ भवदीयपत्तने. धहवस्तान्ति. प्रतिदिनमयं निर्वलो जायते ऽस्य रुजः केनापि सुशिक्षितेन वैद्येन चिकि- त्सांकार्यानुकूलामौषधिञ्च दापय.</p> <p>यातपित्तकफानां वेगे सञ्जाते यदा स- न्निपातो जायते तदैव वैद्यस्य बुद्धि- कौशलं दृश्यते. अहमेकसप्ताहाच्छीतज्वरेण क्षिश्ये.</p> <p>किं तव पुत्रोऽपि शिरसि विस्फोटकैः परिपीड्यते. आपञ्चद्विषसेभ्यः क्षवथुर्मन्दाग्निश्च दे- चदत्तम्याधते. दुर्बलस्य शिरामोक्षो कदापि न कुर्वीत. ययनोऽय वराकः संग्रहण्या, वमथुना, रक्तविकारेण कंद्वाच्च परितप्यते.</p>

रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इसमें ज्वर में बटाई खाकर सय शरीर में सूजन करली।

हमारा कमलसिंह भी शूल, जुकाम और प्रमेह से दुखी है इसकी रोग-शान्ति डाक्टरों इलाज सेही होगी ऐसा मालूम होता है।

रामदत्त के पाओं में बड़ी पियवाई है।

इस सालतो सुदाके फूल से हीजा और मरीरोग नाम कोई नहीं सुना। रामसिंह के शिर में बड़े फोड़े हैं इनको शफाखाने में जाकर चिरयाओं।

मेरा फोड़ा रात में फूट गया।

क्या इस बीमारी का कोई इलाज है। देवदत्त फोठों की सूजन बहिचकी की बीमारी से पीड़ित है । लीलावती घायरोग से और पैर रोग से पीड़ित है।

यह मनुष्य सफेद कोढ़ में मुग्नितला है। किलास क्या? कोढ़काही यह एक भेद है। मेरी बाँह में एक घाव है।

ग्यारह दिनों से मैं नेत्र पीड़ा और दाँत का दर्द भोग रहाहूँ।

मेरा दुग्धन सूजाक जलधर और भगन्वर घौरह रोगों से पीड़ित है।

अनेन ज्वरं ऽम्लतामत्सर्वां सर्वहृदं शोधः कृतः।

असत्कमलसिंहोऽपि, शूलेन, प्रतिघ्नायेन, मेहेन च परिहृत्यतेऽस्यरोग-शान्तिं राङ्ग्लोच्चकत्सयैव भविष्य-तोऽंत प्रतिभाति।

रामदत्तस्य पादयो महस्यो विपात्रिका-रुसान्ति।

असिन्वपेत्वाभ्वरूपयो विसृष्टिकारा-गो महामारोरोगश्च नाम्नाऽपेन भुज रामसिंहस्य शिरासेमहान्तः [अधिकाः] पिटकास्सन्ति एनाभ्यांकत्सालये-यत्वा विदारय।

मम स्फोटको राजौ अस्फुटत्-

भालि काचिच्चिकित्साऽस्य रोगस्य ?

वेपदक्षो वृषणशोधेन दिफारोगेण च पीडितोऽस्ति । लीलावती घातरोगेण प्रदररोगेणच परितप्यते।

किलासमस्तोऽयजनः।

किलास किम् ? कुष्ठसैत्रापमेको भेदः।

महाहावेको ग्रणः वर्तते।

एकादशम्यो दिनेभ्योऽहमक्षिशूलन्-न्तवदनाञ्चोपमुञ्जे।

मम शत्रुरूपदेशजलधरभगन्वरादीनि गतैः पीडितोऽस्ति।

रोग इत्यादि का वर्णन—रोगविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>केदारसिंह जाट सिरके बर्दे और घवा- सीर से बुखी है.</p> <p>अंग्रेजी डाक्टर ने कल कृष्णसिंह की पथरी निकाली.</p> <p>मृगी का रोग बड़ा भयङ्कर होता है यह आरा और पानी को देखकर बढ़ता है यह हमने सुना है.</p> <p>पादवल्मीकवालारोगी भाषामें फील- पाँव कहलाता है.</p> <p>और भी बहुत से रोग हैं ग्रन्थ बढ़ने के डरसे नहीं लिखे.</p>	<p>केदारसिंहोजट्टः शिरोवेदनयाशंरोगेण च परितप्यते.</p> <p>आङ्गलैर्वचो ह्यः कृष्णसिंहस्यादमरीं निरकाशयत्.</p> <p>अपसारारोगो महद्भयङ्करो भवति सो- ऽमिञ्जलश्च दद्वैधत इतिश्रुतमस्माभिः</p> <p>पादवल्मीकयान् रोगी फीलपाँव इति भाषायां कथ्यते.</p> <p>सन्त्यन्येऽपि बहवो रोगा ग्रन्थभूयस्त्व मयात्र लिखिताः.</p>

उन्नीसवां अध्याय—एकीनविंशोऽध्यायः ।

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन—औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
लौंग	लयङ्गम्, देयकुसुमम्.	मनिहारी	सौवर्चलः.
साँठ	शुण्ठिः—पठी, विश्वा—भ्वम्.	नमक	
मिर्च	मरीचम्, कालकम् [रक्त- श्यावौ भेदौ अस्य]	सैधानमक	सैन्धवः—वम्.
पीपर	पिप्पली, कणा, घेहूजम्	सांभर	रौमकम्, वसुकम्.
जीरा	जीरकः—कम्, जरणः, श-	काला	पाक्यः, विडम्, क्षारम् [खारी.]
सफेद	जाजी.	हींग	हिङ्गु [न०] जतुकम्, राम- ठम्, यालिकम्.
„ काला	सुपवी, कारवी, उपकुञ्जिका.	हड	हरीतकी.
साँफ	शताह्निका.		

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
आमले	शिवः.	घनिया	छत्रा, धान्याकम्, धन्याकम्.
यहूदा	विभातकः.	बेलगिरी	दिव्यमञ्जकः, आम्बिजाफलम्.
” मींग	मञ्जकः.	अवाखार	ययक्षारः ययजः.
बफो	पला, निष्कुटः.	हलदी	हरिद्रा, काञ्चनी, पीता.
रुलायची	त्रिपुटा, तुत्या.	चौलाई	पयोनादः.
छोटो ”	अद्रकम्, शृङ्गवेरम्, शु-	पान	ताम्बूलम्.
अद्रक	ल्ममूलम्.	चूना	चूर्णकम्.
शहद	शौद्रम्, माक्षिकम्, मधु	कत्या	खदिरम्.
	[न०]	सुपारी	पूगम्—पूगीफलम्.
छत्ता	मधुकौषः, करण्डः.	कमलगट्टा	अरविन्दबीजकम्.
अजमान	मालेयः, मधुरिका.	सिरका	शुक्रम्, शौकिकम्.
भाग	जया, भक्षा.	राल	यक्षधूपः, रालः.
अमचूर	आम्रचूर्णः—र्ण	कस्तूरी	मृगमदः, कस्तूरिका.
गिलोय	अमृता, गुडूची.	गावजवा	शोजिहा.
अरक	रसः, द्रवः, आसवः.	अगर	अगर.
काड़ा	काथः, कपायः.	असगंध	अश्वगन्धा.
बटनी	अवलेहः —	खसखस	खाखसम्.
मिथ्री	सिताखण्डः, खण्डमोदकः.	केशर	शुश्रुणम्, कुडूकुमम्.
वारचोनी	त्वचा.	कपूर	कपूरम्, घनसारः.
पश	त्यक्षीरी, घंशरो [लो]-	चन्दन	मलयजा, भद्रश्रीः, चन्दनः.
लोचन	चना.	लाल ”	पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम्.
नागरमेथ	मुस्ताभम्.	अफीम	आदिफेनम्, अफेनम्.
मुनका	शुष्कद्राक्षा, गोस्तनी.	जयासा	यासः, यवासः, धन्ययासः.
जायफल	जातिफलम्, जातीफलम्.	फिटकरी	इफटी, तुवरी, सौराष्ट्री.
		चौटनी	शुजा, रुण्णला.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
पारा	सूतः, पारदः चपलः.	१६ तौलें-	कुडयाः.
अम्रक	अम्रजम्, गिरिजाफलम्.	प्रावसेर	
सुरमा	स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, यामुनम्, अञ्जनम्.	६४ तौला १ सेर	प्रस्थः.
तृतीया	तुर्थम्.	३२ तौला १ सेर	शगायकम्.
गन्धक	गन्धाश्मा, गन्धि-(न्ध)कः.	१०० पल २० तुला	तुला. भारः.
जस्तका- सुर्मा	रीतिपुष्पम्, कुसुमाञ्जनम्.	रूपया पैसा	कार्पापणः, कार्पिकः. पणः, नाम्नखण्डम्.
हरताल	पिञ्जरम्, पीतनम्, ताल- म्, हरितालम्.	५ प्रस्थ ८ आदक	आदकम् (५ सेट कं.) द्रोणः.
शिला	शिलाजतु, गरेयम्, अश्म- जम्.	घा १ मन २ द्रोण घा २ मन ३ मन सा धे शूर्ये २ शूर्ये घा ४ मन ४ भार घा ८ मन	शूर्पः खारी. द्रोणी वा भारः.
जीत			
सिन्दूर	सिन्दूरम्, नागसम्भवम्, मनःशिला, नागजिह्विका.		
मनसिल			
सर्जी	सांज्ञिकाक्षारः, सुजिका- क्षारः.		
घार			
मानविशेषाः.			
कांटा	एषणी, एषणिका, नाराची.		
तौल	मानम्, भारः, तौलः परि- माणम्.		
तराजू	तुला, धटः तुलायन्त्रम्.	घाट तेलना	घण्टकः. तेलयति.
१ तौला	कर्पः.	इकट्टा क- रना	सञ्चिनोत्रि.
१/२ तौला	टङ्कः.		
४ तौले	पलः.		

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

गरम प्रसालेके लिये लौंग कालीमिर्च-
जीरा और इलायची लाभो. . . .

सौंठ, मिर्च, पीपल, दोजीरे, सैधा नमक
- अजमोद और हींग एकट्ठाकर हिंसा
एक चूर्ण बनता है.

सौंफ विना पूषअच्छे और स्वाद नहीं
होते.

शहद के साथ अदरक खांसी दूर कर-
नेवाला है.

बड़ी हर, बड़ेका आमले मिलाकर त्रि-
फला और सौंठ मिर्च पीपल मिला-
कर त्रिकुटा कहलाती है. . .

पांच नमक सैधा, सांभर, काला, मानि-
हारी, खारी घणेरह होते हैं.

मिर्चो, वशलोचन, छोटी इलायची
पीपर [छोटी] दालचीनी, गिलोय-
सत ये एकट्ठी करके हलके दुस्वार
के दूर करने वाला, मूख बढ़ाने,
पाला सितोपलादि चूर्ण होता है.

सैंगन के शाग केलिये एक पैनेकी ख-
टाई लाभो. . .

नमक के साथ अनारका खोपटा, या
अजमाहन भी खांसी दूर करने-
वाली है.

इस छत्ते में शहद है वा नहीं.

क्या भांग भी भूजलमानेवाली है ?

ऊष्णवसथारार्थं लवङ्गानि कृष्णमरी-
चानि जीरकमेलाश्चानय.

शुण्ठि, मरीच, पिप्पली जीरके ठे सै-
न्धवमजमोदं हिङ्गुचूर्णं पिण्डीकृत्य
हिङ्गवट्ठकामिश्रचूर्णं सम्पद्यते.

शताहिकाम्बना पूषाः शामना सुस्वा-
द्वो वा न भवन्ति.

सर्षपाद्रमाद्रकं कासहरम्.

बृहत्सरोतकी विभीतकः आमलकाः
पिण्डीकृत्य त्रिफलेति शुण्ठिमरीच-
पिप्पलयः त्रिकुण्डेति शक्यते.

पञ्चलवणानि सैन्धवं, रोमक, विडं, सौ-
षचलः, क्षारमित्वादीनि सन्ति.

सिता त्वक्षीरी, त्रिपुटा, पिप्पली,
दारचीनी अमृतासार एताः पिण्डी-
कृत्य मन्वज्वरघ्नं बुभुक्षावर्धनञ्च
सितोपलादिचूर्णं भवति.

वृन्ताकशाकार्थमेकस्य पणस्याम्रचूर्ण-
मानय.

सलवणः दाडिमन्वक् सानेयोऽपि वा
क्षययुद्धः.

अस्मिन्मधुकोपे मध्वस्ति न वा.
किञ्चपि बुभुक्षा दायिका.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
है ना मगर अकल को गुम करने- वाला है.	अस्ति तु परञ्च बुद्धिहरा.
पञ्चभद्र [गिलोय, पित्तपापड़ा, सौंठ, नागर मोथा चिरायता] का काढ़ा सब बुमारों को दूर करनेवाला है. सिरके की चटनी दीपन और पाचन है. आलूबुखारा ओर मुनका प्याम्बुशाने केलिये दिया जाता है.	पञ्चभद्रस्य काषोऽग्निलज्वरहरो भ- वति. शुक्रस्यावलेहो दीपकः पाचनञ्च. वौषाग्लुका गोस्तनो च तृद्शान्त्यर्थ- दीयते.
बेलगिरी दस्तों में हित होती है. काढ़े के काठेन पर सिरके का लेप याग्य है.	विल्वमज्जकः सङ्ग्रहण्यां हितम्. कीदक्षते शुक्रम्य लेपो युक्तः.
पेशाब बन्द होनेपर मिश्री सहित ध- निया जल में पीमकर ओर कपड़े में छानकर पीवे.	मूत्रावरोधे सस्ति धान्याक जले पिष्ट्वा पटे प्रावपित्वा पिबेत्.
सुपारी चूत कल्था सहित पान मनुष्य पाते है.	सपूगन्धूर्णरादिर ताम्बूलं जने. ताद्यते.
क्या चौलाई भी मत में है ? है तो. क्या कमल गद्दा भी कोई दवा है ? न मालूम.	किं पयोजाटोऽपि मतेऽस्ति अस्ति तु. अस्ति काचिदोषीधररविन्दर्वीजक मपि ? न जाने.
और दवाओं के भी नाम बताओ. राल, कन्तूरी, जायफल, अगक, अस- गन्ध, सिन्दूर, सनपुत्र, केसर, म- मिलल, फिटकरी, कपूर, गिरंटी, सुर्मा, जस्तका सुर्मा, मिलाजीन, जवासा, चन्दन, लाल चन्दन, गाथ- जवा, सजीवार, अफीम चाँटनी चर्गरह है.	अन्यासामप्योपधीनां नामानि कथय. यक्षधूपः, मृगमदः, जातीफल, अगक, अश्वगन्धा, सिन्दूरं, चाग्नस, कुङ्- कुम, मन शिला, तुङ्गी, कर्पूर, पुन- नैवा, खोतोन्न, रीतिपुष्प शिला- जतु, यवासः, मलयजः, पत्राङ्गं, गो- जिह्वा, सज्जिकादारः, अहिफेनं शु- भ्रजेत्यादीनि सन्ति.

औषधि के तौल आँर औषधि का बर्णन-औषधिविज्ञेपास्तन्मानविज्ञेपाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इसी सिस्लिले में तोल भी सुनो.
 ६४ तोलों का एक प्रस्थ या सेर.
 १६ तोलों का एक कुडव या पायसेर.
 ४ तोलों का एक पल.
 तोले का चौथाहिस्सा टंक होता है.
 १ तोले का एककर्म होता है.
 ३२ तालोंका एक शरायक होता है.
 १०० पलों की एक तुला होती है.
 २० तुला का एक भार होता है.
 ८ चावलोंकी एक रत्ती होती है.
 ८ रत्तियोंका एक मासा.
 १२ मासों का एक तोला, पाँच तोलों-
 की एक छटाँक, सोलह छटाँकों का
 एक सेर, ४० सेर का एक मन.

यह आजकल की तोल है.

उपधातु भी दशाओं में इत्तमाल की-
 जाती है.

चान्दी, सोना, पीतल, तामा, लोहा
 काँसा, सीसा, पारा, भुङ्गभुङ्ग, वृत्ति-
 या, गन्धक, हरताल वर्णरह जला-
 कर इनकी साक मुखतालिङ्ग रोगों में
 हकीम काम में लाते हैं.

यह पुरुष अकारे से पीड़ित है इसे
 हकीम को दिखलाओ.

प्रसङ्गवशात् मानमपि शृणु.
 तालकानां चतुःपष्टैरेकः प्रस्थः सेटको वा.
 षोडशतालकानामेकः कुडवः [पावसेर].
 चतुर्णां तालकानामेकः पलः.
 कर्मस्य चतुर्धांशपट्टः स्यात्.
 एकस्य तालकस्य एकः कर्मः स्यात्.
 त्रिंशत्तालकानामेकं शरायकम्.
 पलानां शतस्यैका तुला स्यात्.
 तुलाया विंशतेरेको भारः.
 अष्टाशतानामेका रत्तिका भवति.
 अष्टरत्तिकानां (गुञ्जानां) एको मासः.
 द्वादशमासानामेकस्तोलकः, पञ्चतोल-
 कानामेकश्छटाकः, षोडशच्छटका-
 नामेकस्सेटकः, चत्वारिंशत्सेटका-
 नामेको मणः.

एतस्याधुनिकम्मानम्.

उपधातवोऽपि भोगधिषु प्रयुज्यन्ते.

रजते, दकमं, पित्तले, ताघं, लोहं
 कांस्यं, सीसं, सुतं, अन्नकं, तुरधं, ग-
 न्धकं, पिञ्जरमित्यादीन्, दग्धैतेषां
 भस्म विविधेषु गदेषु प्रयुज्जन्ति
 वैद्याः.

मानाहेन पीडितोऽयञ्जन एनं भिषजं
 प्रदर्शय.

औषधि के तौल और औषधि का वर्णन-औषधिविशेषास्तन्मानविशेषाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
जस्त का सुमां आंखों के लिये बड़ा लाभ दायक होता है।	रीतिपुष्पमाक्षेभ्यां महदुपयोगि भवति।
लङ्गूर शिलाजीत खाता है इन्मी सबब बहुत दूर फूटजाता है और जो अपनी चाहीहुई जगह को पाने में नाकामिल होता है तो पहिली ही जगह पर फिर लौट आता है यह सुना है।	दीर्घलाङ्गूलः शिलाजत्वच्च अत एव स महदन्तरमुत्लवते यद्यशक्तश्चेन्न- र्विष्टस्थानप्राधिगन्तुं तर्हि पूर्वस्थान एव पुनरावर्तते इति श्रुतं।
शहद की मक्खी फूलों से शहद बटोरती है।	सरघाः पुष्पेभ्यो मधु सञ्चिन्वन्ति।

वीसवां अध्याय—विंशोऽध्यायः ।

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
भाग्यवान्	सुरती (पुं०) पुण्यवान्, धन्यः	दाता खुशदिल	दानशौण्डः, वदान्यः ✓ हर्षमाणः, प्रमनाः (पुं०) हृष्टमानसः. —
फैय्याश् उदार साफदिल	महेच्छः, महाशयः. हृदयालुः, सुहृदयः, महो- त्साहः, महोद्यमः.	व्याकुल- चित्त उत्कण्ठित	विमनाः, दुर्मनाः. — उत्कः, उन्मनाः. —
प्रवीण हो- शियार	निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, नि- ष्णातः.	सीधा योग्य	वक्षिणः, सरलः. — समर्थः, क्षमः, शक्तः. —
फिकरमन्द	सांशयिकः, संशयापन्नमा- नसः.	मशहूर	प्रतीतः, प्राथितः, ख्यातः, विश्रुतः.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
धनी	इभ्यः, धाल्यः, धनवान्, सधनः.	पहरावा	दीर्घसूत्रो—त्रः, विलम्बो, मन्दः, मन्थरः.
गुरीब	निर्धनः, दरिद्रः, दीनः.	गजा	गल्पाटः.
मालिक	नायकः, पतिः, अधिपतिः, प्रभुः.	कुचड़ा	कुञ्जः, न्युञ्जः.
दयावान्	दयालुः, कृपालुः, कारुणिकः.	नकटा	विग्रः, विखुः, विनासिकः,
स्वार्धन्त	स्वतन्त्रः, अपावृत्तः.	घौना	खर्वः, ह्रस्वः, घामनः.
पराधीन	परतन्त्रः, परायत्तः.	घपटी—ना	अवटोटः, नवनासिकः,
आधीन	अधीनः, आयत्तः.	कवाला	गृध्रुः, लुब्धः, अभिलाषुकः.
अन्धा	अन्धः, नेत्रविकलः, अदृक्.	लोभी	लोलुपः, लोलुभः.
बहरा	बधिरः, श्रोत्रविकलः, एडः.	अति लोभी	धृष्टः, अचिन्तितः, समुद्धतः.
काना	बलिरः, केकरः, काणः.	ढीठ	साम्यः, प्रथितः, सुशीलः,
तूला	पञ्जः	घातहजीब	सुचिन्तितः.
लंगणा	—	मतवाला	मत्तः, शौण्डः, क्षीवः.
हकलापूगा	अवाक्, मूकः.	कामी	कामुकः कम्पः, कम्पन' कामयिता.
आलसी	मन्दः, अलसः.	बश में रहने वाला	वश्यः, प्रणयः.
भूरा	बुभुक्षितः, भुधार्तः, भुधितः, बुभुधुः.	नम्रतायुक्त	निभृतः, प्रथितः.
प्यासा	पिपासितः, पिपासातः, पिपासुः.	शरमिन्दा	सलजः, सदीडः, सत्रपः,
पिटमरु	आत्मम्भरिः.	—	लज्जालुः.
खाने माला	अन्नरः, भक्षकः, घसरः.	आम्तिक (श्रद्धावान्)	श्रद्धालुः, आस्तिक्यबुद्धिमान्.
बडादुर	शूरः, धीरः.	घबड़ाया हुआ	अधीरः, कातरः.
उरपोक	त्रस्तः, भीमकः, भीतः.	गुस्सेवर	क्रोधी (पुं०) कोपी, क्रोधनः
बदमाश	शठः, धूर्तः, कितवः.	—	अमर्षणः.
लुटेरा	सुण्टाकः	—	—

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
जागनेवाला	जागरूकः.	दिलपसद	अभीष्टम्, अभीष्टितम्,
सोनेवाला	निद्रालुः, शयालुः, सुप्तः, शयितः.	खराब	दृढम्, प्रियम्.
विमुक्त	पराङ्मुखः, पराचीनः.	नीच	निकृष्टः, प्रतिनिकृष्टः.
बहुत घो- लनेवाला	वाचदृकः, अतिवक्ता.	मैला	अधमः, कुत्सितः, अवयः, गर्ह्यः.
मिन्त्यबचन	वाचालः, वाचाटः.	पवित्र	मलीमसम्, कचरम्, म- लिनम्.
घोलनेवाला	वाचालः, वाचाटः.	रीता	पूतम्, पवित्रम्, मेध्यम्.
अंडवंड ब- कनेवाला	मुखरः दुमुखः अवज्रमुखः.	प्रधान	शून्यम्, रिक्तकम्, तुच्छम्. प्रधानम्, प्रमुखः, उत्तमः, वरेष्यः, वर्यः.
आतिमूढ़	अक्षः, जड़ः.	मामूली	अप्रायवम्. उपसर्जनम्.
सुपचाप	तूर्णशीलः, तूर्णीकः. —	बड़ा	पृथु (न०) विशालम्, बृह- त्, महत्, विपुलम्.
नंगा	नग्नः, अवासाः (पुं०) दि- गम्बरः.	मोटा	पीनम्, पीवरम्, पीवन (न०)
ठगा हुआ	घञ्जितः, विप्रलब्धः.	थोड़ा	स्तोकः, अल्पः, क्षुल्लकः.
ठग	धूर्तः, वञ्चकः, प्रतारकः.	सूक्ष्म	सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, कृशम्, तनु, अणुः.
सुगल	पिशुनः, दुर्जनः, बलः. —	बहुत	प्रचुरम्, प्रभूतम्, अदन्नम्, बहुलम्.
मंगिता	मार्गणः, यात्रकः, वर्या (पुं०)	सब	विश्वम्, कृत्स्नम्, समस्तम्, अखिलम्, पूर्णम्.
घमंड़ी	अहंयुः, अहङ्कारवान्.	गाढ़ा घना	घनम्, निरन्तरम्, सान्द्रम्.
मनोहर	सुन्दरम्, रम्यम्, वचि- रम्, मनोह्रम्, मञ्जुलम्.	पासका	समीपः, आसन्नः, निकटः, अभ्यासः-शः, उपकण्ठः, अन्तिकः.
कठोर	नृशंसः, क्रूः.		
वस्तुविशेषणानि ।			
दिलचस्प	सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, मनोरमम्.		

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
बहुन पास का दूर	नेदिष्टम्, अन्तिकतमम्.	नया	प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवः, नूतनः.
बहुन दूर दीर्घ, चौड़ा	दूरम्, विप्रदृष्टम्.	मुलायम	कौमलम्, मृदुलम्, मृदु.
गोल	दवीयः, दधिष्टम्, सुदूरम्.	फिज़ूल	व्यर्थम्, निरर्थकम्, मोघम्.
ऊंचा	दाँधम्, आयतम्.	साफ़	स्पष्टम्, स्फुटम्, प्रव्यक्तम्, स्वच्छम्, निर्मलम्.
छोटा	वर्तुलम्, निस्तलम्, वृत्तम्.	उलटा	प्रसव्यम्, प्रतिकूलम्, अपसव्यम्.
टेढ़ा	उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, तुङ्गः.	सस्ता	अल्पार्थः, अल्पमूल्यः, मुलमः.
नित्य स्थिर	वामनः, लघुः, इक्षुः.	अकरा	महर्घः, तुल्यमः.
कड़ा, कठिन	अरालम्, वृजिनम्, जिह्वम्, कुटिलम्, घकम्.	मारना पीटना	प्रहरति.
पुराना	शाश्वतः, ध्रुवः, सनातनः, स्थासुः, स्थिरतरः.	मांगना	प्रींथियते, अभ्यर्थयते, याचते.
	कठिनम्, क्रूरम्, निष्ठुरम्, दृढ़म्, कर्कशः.	छलकाना-गिराना	अधः शिपति, अवपातयति.
	पुराणम्, प्रतनम्, प्रलम्, पुरातनम्, चिरन्तनम्.	दूदना	अन्विष्यति, मृगयते, निरूपयति, विचिनोति.

हिन्दी ।

संस्कृत ।

सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रवीण महर्षि वशिष्ठ अतिदानी परम पुन्यात्मा, बदर, साफ़ दिल, भक्तवत्सल श्री रामजी को दुश्मन की धिजय रूप आशीर्वाद देते हुए.

मैंने गोविन्द को हमेशा खुशदिल और सब कामों में समर्थ देखा.

अखिलशास्त्रप्रवीणो महर्षिवशिष्ठः वदान्दाय परमसुहृदितने, महच्छाय, भक्तवत्सलाय श्रीरामाय शत्रुविजयात्मिकामाशिषं ददौ.

मया गोविन्दः सदैव हृष्टमानसः सर्वकार्येषु क्षमन्न दृष्टः.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन-विशेषणशब्दाः।

हिन्दी।

संस्कृत।

यह आदमी भूखा और ध्यासा है इसी से घबड़ाया हुआ दिखाई पड़ता है। आजकल के बहुत से पिटरूक लोभी खैरात को फिज़ूल मानते हैं।

यह तो पापियों की बात है। मेरे काम की सिद्धि होगी वा नहीं यों फिक्रमन्द हूँ।

मैं आपके दर्शन के लिये बड़ा उत्कण्ठित था अब ईश्वर ने मेरी उम्मेद पूरी की।

यह मशहूर धनवान् बड़ा लोभी सुना जाता है।

रहीम मालिक लोग गरीबों पर भी दया करते हैं।

मैं तो खुद मुस्तार हूँ और तुम पराधीन हो इतनाही तुम्हारे मेरे में फर्क है।

यहरावा और आलसी मत बने। गूंगे भी कलकत्ता राजधानी में पढ़ाये जाते हैं।

यह बड़ा भला आदमी है इसको मत उगो घातहजीव तालिचइल्म ही विद्या सीखते हैं नाकि बदतहजीव।

धजालुही ज्ञान प्राप्त करता है दूसरानहीं। शरायी आर कामी यह आदमी रण्डा के पास बैठा है।

बुभुक्षितः पिपासितश्चायं जनः अत एव विमना इव लक्ष्यते।

आधुनिका बहव उदरम्भरयो लोलुपाः पुण्यं व्यर्थं मन्यन्ते।

एपातु पापघसरानां वार्ता। मत्कार्यसिद्धिर्भविष्यति नचेति सांशयिको ऽहम्।

अहमतीवांमना आसं श्रामतां दर्शनायाधुनंश्वरण ममाशा पूरिता।

विश्रुतो धनघानयं महद्गृभु भूयते।

व्यालवःप्रभवोनिर्धनेवपिदयांकुर्वन्ति

अहन्तु स्वतन्त्रस्वञ्च परायत्त एतावानेव हि त्ययि मयि च भेदः।

दीर्घसूत्र्यलसश्च मा भव।

मूका अपि कलिकातायां राजधान्यां पाठयन्ते (मूकान् पाठयन्ति या)।

अतीव सज्जनोऽयज्जनो मैत्रं प्रतारय। प्रथिता विद्यार्थिन एव विद्यां शिक्षन्ते न धृष्टाः।

शुद्धानुरेव ज्ञानं लभते नेतरः। मत्तो कामुकश्चायज्जनो घेइयासमीपे तिष्ठति।

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।

यह स्त्री भलीमानस और घबड़ाई हुई है इसको तमहरी दो।

डरपोकही संग्राम से भागते हैं नकि यहादुर।

द्वन्द्व का घेडा शरमाला और सतो-गुणी है।

तम्हारे घरमें कौन जागने वाला और कौन जगाडह सानेवाला है।

लज्जाराग अपने मा चाप से धरगिलाफ़ निन्हा बचन बोलनेवाला और कठोर है इसकी स्वहति न करो।

मदं या औरत कोई भी जल में नंगा न न्हाय।

ठग ठगे हुआं को भी फिर ठगते हैं।

यह बादमी चुगल और बंड बंड धरने वाला है इसका यकीन न करो।

गोविन्दगामशर्मा ज्यादह बोलनेवाला और हांशियार होनेके कारण स्व या के योग्य है।

घमडी और मैंगता सरकार नहीं किये जाते।

यह धौता चपटी नाकवाला है इस पर न हसो।

नकटे, धरे, कुचड़े, लूले, काणे, गजे और अन्धों को देखकर कभी न हँसे।

संस्कृत ।

अधृष्टा धीम ज्ञेय स्त्री एनां विश्वामय।

भीरुका एव समामान्यलायन्ते न शूराः।

द्वन्द्वस्तस्य पुरो वदयोऽक्रोधनध्व।

तत्र गृहे को जागरुकः कश्चाऽतोय निद्रालुः।

लज्जारागः पितृभ्यां पराङ्मुखो घा-
चालो नृशंसश्चास्ति मास्य सहति
पुरः।

पुरुषोऽथवा स्त्री न कोपि नप्तो जले
स्नायात्।

पूर्वा विशल्लब्धानपि पुनर्यञ्चयन्ति।

पिशुनोऽवस्यमुपध्यायजनः मैत्रं विश्व-
सिंहि।

सभायोग्यो गोविन्दरामशर्मा घावदूक-
त्वाधिष्णातरवाद्य।

अहंययो मार्गणाद्य न सतिशयन्ते।

अचट्टीटोऽयं घामनो मैत्रमुपहसत्।

विमान्, अधिरान्, कुञ्जान्, यज्ञान्,
काणान्, खल्वादानन्धैश्च लुप्तान्
कदाप्युपहसेत्।

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन-विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह खुशनुमा ज़ेवर है इसे अपनी औरत को पहिगाओं.	रम्यमाभूषणमिदमेतत्स्वस्त्रियं परिधापय.
घुगल का काँद भी यकीन नहीं करता. लुटेरों ने अलीगढ़ में लौटते वक़्त मेरा रास्ता रोकलिया.	पिशुनाद्य काँऽपि प्रत्येति. लुण्टाका अलीगढ़ात्परिवर्तनकाले मम मार्गमवारुन्धन्.
रामके दूत हनुमान् रामके आने का अभीष्ट वृत्तान्त भरत के पास आकर सुनाते हुए.	रामदूतो हनुमान् रामागमनस्याभीप्सितं वृत्तं भर्तान्तिक आगत्य धावया-मास.
रू सूना घर छोड़ कहाँ गया था ? कहीं भी नहीं सिर्फ पानी लाने को. यह आदमी नीच है इसकी आदत बड़ी खराब है और दिल भी बहुत मैला है. देखकर पाँव रफ़से, छानकर जलपीये सत्य बचन बोलें और मन साफ़ रफ़से.	त्वं शून्यं गृहं मुफ्त्या कुत्र गतः ? न शुभ्रापि केवलं जलमानेतुम्. अधमोऽयज्जनोऽन्य प्रकृतिरतीव नि- रूपा मान समप्यतीव मलोमममस्ति. दाष्टपूतं न्यसेत्पाद धस्त्रपूतम्पिबेजलम् । सत्यपूतम्बदेढाक्यं मनःपूतं समा- चरेत्.
सब व्याकरणों में सिद्धान्तकौमुदी नाम व्याकरण मुख्य है. आज गाढ़े यादल बहुत जल वर्षायेंगे. दर्याज़े पर एक मिरासी है उसको थोड़ा खानादो, उसके पास एक लक्ष्मी की सुन्दर मूर्ति है उसे लेंलो. इस राजा की बड़ी कीर्ति, मोटा शरीर गोल मुँह चौड़े नेत्र ऊँचे फन्धे हैं. इसका थोड़ा हाल भी कहो.	अखिलेषु व्याकरणेषु प्रधानमिदं व्या- करणं सिद्धान्तकौमुदीनाम. अद्य सान्द्रा मेघा प्रभूतं वागि मोक्ष्यन्ति. दार्थ्यंको मिधुको धर्तेते तं स्तोऽम्भोजं प्रयच्छ. तन्समीपे चैका मनोरमा लक्ष्म्याः मूर्तिर्धर्तेते नां गृहाण. अस्य रामो विपुलं यशः पातं शरीरं धर्तुलं धर्मं, आयतं नेत्रं उग्रनाधर्मा मन्ति. अन्य मूक्यं घृत्नमपि वर्णये.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन-विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।

इसकी जगह से मेरी जगह दूर है
गोविन्द की जगह दूर है और रा-
मसिंह की बहुतही जगह दूर है.
जीव दो तरह के हैं खाकर और जन्म.
इस सवाल की तरकीब सहल है और
उसकी टेढ़ी है.

महर्षानी फर अपना पुराना और, नया
हाल साफ कहिये.

पहिले तो ब्राह्मणों की घाणी सफल
थी आजकल तो उलटी होती है.

तप का प्रभाव नष्ट होगया यही का-
रण है.

वंगन मुलायम पथ्य होते हैं और का
शी फल मुलायम जहर होता है.

क्या यह भैरव खल्लर (घांश) है.

इसका घेन बड़ा है इसको खूँटे में
बँधो.

गुरुओं की पूजा, साँझ और दिन में
सोना और स्वो प्रभंग, राने के आदि
और अर्घ्य में आचमन और एका-
दशी को अन्नस्याग यह सदा का
कायदा है.

सिपाही (जल्लाद) लोग उस ठग को
धेतों से पीटते हैं.

गरीब लोग धनधानी से नाज मागते हैं.

संस्कृत ।

अस्य स्थानान्मम स्थानं दूरं, गोविन्दस्य
दूरीयो, रामसिंहस्य दूचिष्टमस्ति.

जीवा द्विप्रकारा स्थास्तवश्चरिष्णवश्च.

अस्य प्रष्णस्य प्रक्रिया ऋज्वी नस्य च
चक्रा वर्तते.

कृपया स्वपुराणमभिनवञ्च वृत्तं स्पष्टं
कथयन्तु भयन्तः.

पूर्वदा तु विप्राणां घाचो ऽमोघा आस-
न्निदानान्तु प्रतिफूला भयन्ति.

तपःप्रभावो नष्ट इत्येव हेतुः.

वृन्ताकं कोमलं पथ्यं कृष्णाण्ड कोमलं
विषम्.

किमेवा महिषी वशा.

अस्या ऊधस्तु धिपुलमेनां शिषके वधान.

गुरुणां सपर्यां, सायंकालेद्विच स्वापो
ब्राम्यधर्मनिषेधश्च भोजनादावन्ते
चोपस्पृशे एकादश्यामन्नत्याग एव
नियमः सनातनः.

राजपुरया तं भूर्तं वेत्रैः प्रहरन्ति.

दरिद्रा धनिकानघं याचन्ते.

विशेषण शब्द इत्यादि का वर्णन—विशेषणशब्दाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
इस घोषी की लड़की ने दूध गिरा दिया. देवदत्त उदासीन है न उसका किसी के साथ विरोध है न मित्रता. जो हुआ सो हुआ इसमें पछतावा क्या. दुनियाँ के पाराण्ड और तमाशों का छोड़ कर ईश्वर की शरण में जाऊँ नहीं तो नरक में गिरना होगा. इस अफुआ पहेली और अकाल की खबर को सुनकर भरे देह में शरीर- कम्पा होती है. तू कहाँ से आया है तेरे कपड़े पसीनों से बहुत तर दिखाई देते हैं. आज यहाँ ढोल बजते हैं यह क्या उ- त्सव है न मालूम.	पपा ऽऽभीरकन्या दुग्धमध्यक्षिपत्. उदासीनो देवदत्तः न तन्म्य केनापि सह विरोधो न मैत्री. यज्जातं तज्जातं कोऽत्र पश्चात्तापः. सांसारिकान्दम्भान्कोत्हलांश्च हित्वा ईश्वरशरणे यायां नो चेन्निरयपातो भविष्यति. इमां किम्बदन्तीं प्रहेलिकां दुर्भिक्षधृ- त्तान्तञ्च श्रुत्वा मम शरीरे वेपथु- र्जायते. कुत आगतोऽसि तव वस्त्राणि स्वेदै- रतीवार्द्राभूतानि दृश्यन्ते. अत्राय पटहा वाद्यन्ते कोऽयमुत्सवः न जाने.

इकीसवां अध्याय—एकविंशतितमोऽध्यायः ।

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Vowel	= स्वरः, अच्	Lengthened	= त्रिमात्रिकः.
Consonant	= व्यञ्जनम्, इड्.	Orthography	= वर्णविचारः.
Short Vowel	= लघुः, ह्रस्वः, एक- मात्रिकः.	Letter	= वर्णः, अक्षरम्.
Long Vowel	= दीर्घः, गुरु, द्वि- मात्रिकः.	Alphabet	= वर्णमाला.
		Word	= शब्दः.
		Noun	= संज्ञा, नाम.

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Proper noun	= व्यक्तिवाचकः.	8 Interjection	= विस्मयनादिव्यो- धकमव्ययम्.
Common Do	= जातिवाचकः.	Gender	= लिङ्गम्.
Abstract	= भाववाचकः.	M. Do.	= पुल्लिङ्गम्.
Collective	= समूहवाचकः.	F. Do.	= स्त्रीलिङ्गम्.
Material	= पदार्थवाचकः.	N. Do.	= क्लीयम्, नपुंसकम्.
Adjective	= गुणवाचकः.	Com. Do.	= संयुक्तलिङ्गम् उभयलिङ्गम्
Primitive word	रूढिसंज्ञा.	Number	= वचनम्.
Derivative	= यौगिकः.	Singular	= एकवचनम्.
Compound word	= योगरूढिः.	Dual	= द्विवचनम्.
Conjunction of letters	= सन्धिः, संहिता.	Plural	= बहुवचनम्.
Do. vowels	= स्वर(अच्)सन्धिः.	Case	= कारकम्, विभक्तिः.
Do. consonant	= हल्(व्यञ्जन)सन्धिः.	Nominative	= कर्ता.
Do. visarga	= विसर्गसन्धिः.	Accusative	= यमं.
Etymology	= शब्दविचारः शब्दसाधनम्.	Instrumental	= करणम्.
Inflection or declension	= शब्दरूपम्.	Dative	= सम्प्रदानम्.
Derivative	= व्युत्पत्तिः.	Ablative	= अपादानम्.
Part of speech	= शब्दभेदः.	Genetive	= सम्बन्धः.
1 Noun	= संज्ञा, विशेष्यः.	Locative	= अधिकरणम्.
2 Adjective	= विशेषणः, गुणवा- चकः.	Vocative	= सम्बोधनम्.
3 Pronoun	= सर्वनाम.	Parsing	= पदसाधनम्, पद- च्छेदः.
4 Verb	= क्रिया.	Person	= पुरुषः.
5 Adverb	= क्रियाविशेषणः.	1 st "	= उत्तमः (अहम्, आयाम्, वयम्).
6 Preposition	= उपसर्गः, अव्ययम्.	2 nd "	= मध्यमः (त्वम्, युयाम्, वृयम्).
7 Conjunction	= समुच्चायकम् अव्य- यम्.		

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन--व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
3rd Person	= अन्यपुरुषः (सः, ताँ, ते इत्यादयः).	3rd Preterite	= लुङ् (सामान्यभूतः)
Transative	= सकर्मका क्रिया.	Potential	= इच्छादिङ्
Intransative	= अकर्मका क्रिया.	Benedictive	= आशीर्षिङ्
Verb having two objects	= द्विकर्मकाः क्रियाः.	1st Future	= लुट् (आसन्न भविष्यत्)
Causative	= प्रेरणार्थका क्रिया, णिजन्ताः.	2nd Do.	= लृट् (सामान्य भविष्यत्)
Desederative	= इच्छार्थकाः, सन्नन्ताः.	Conditional	= लृङ् (हेतुहेतुमन् विध्यत्)
Frequentative verbs	= यञन्ताः, पौनःपुन्यद्योतकाः क्रियाः.	Imperative	= लोट् (आज्ञा).
Nominal verbs	= नामधातवः.	Direct	= स्पष्टोक्तिः.
Verbal affixes	= रुदन्तः कृत्प्रत्ययाः.	Indirect	= बक्रोक्तिः.
Nominal affixes	= तद्धितप्रत्ययाः.	Explanation	= व्याख्या, विवृतिः, विवरणम्
Root	= धातुः.	Abbreviation	= संक्षिप्तरूपम्.
Conjugation	= धातुरूपाणि.	Example	= दृष्टान्तः उदाहरणः.
Voice	= वाच्यः.	Pronunciation	उच्चारणः.
Active	= कर्तृवाच्यः.	Synonym	= एवर्थायः समानार्थवाची.
Passive	= कर्म "	Autonyms	= विपरीतार्थवाची.
Intransative Passive	= भाष्य "	Homonyms	= द्व्यर्थकः.
Tense	= कालः.	Compound	= समासः.
Present tense	= वर्तमानः, लट्.	Indeclinable compound	= अव्ययीभावः.
Past "	= भूतः.	Subordinate compound	= तत्पुरुषः २
Future "	= भविष्यत्.	Relative compound	= बहुमीहिः ३
1st Preterite	= लङ् (आसन्नभूतः)		
2nd Do.	= लिट् (पूर्णभूतः)		

व्याकरण के संज्ञी शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Appositional compound	= कर्मधारयः ४	Prosody	= छन्दोनिरूपणम्.
Numeral compound	= द्विगुः ५	Prose	= गद्यम्.
Copulative compound	= उन्मः ६	Verse, poetry	= पद्यम्.
Syntax	= वाक्याविचारः.	Metre, stanza	= वृत्तः, छन्दोजातिः
Prose order	= अन्वयः.	Fect	= चरणः, पादः.
Analysis	= वाक्यविभागः.	Poem	= काव्यम्
Sentence	= वाक्यः, पदः.	Short syllable	= लघुः.
Figures of speech	= अलङ्कारः.	Long Do	= गुरुः.
Do. words	= शब्दालङ्कारः.	SSS	= मगणः
Do. thought	= अर्थालङ्कारः.	III	= नगणः
Simile	= दृष्टान्तः, उपमालङ्कारः.	SI	= भगणः
Metaphor	= रूपकालङ्कारः.	ISS	= यगणः
Synecdoche	= उपलक्षणः.	ISI	= जगणः
Hyperbole	= अत्युक्त्यलङ्कारः.	SIS	= रगणः
Analogy	= सादृश्यालङ्कारः.	IIS	= सगणः
Aniethesis	= विरोधाभासः.	SSI	= तगणः
Allegory	= उद्देशः ?	,	= विरामः
Irony	= व्यङ्गोक्तिः.	:	= द्विविरामः
Personification	पुरुषभाषारोपणम्.	;	= त्रिविरामः
		.	= पूर्णविरामः
		?	= प्रष्णचिह्नम्
		!	= सम्बोधनचिह्नम्
		()	= कोष्ठः
		' '	= परोक्तिचिह्नम्



व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्यक्रिणपरिभाषाः ।

- हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>इस अध्याय में संस्कृत के व्याकरण सारको अंग्रेजी भाषाके पढ़नेवाले विद्यार्थियों के उपकारार्थ प्रायः कुछ लिखता हूं.</p>	<p>अस्मिन्नध्याये व्याकरणसारमाङ्गलभाषाध्येतृणां छात्राणांभुपकारार्थम्प्रायोऽनुसरामि.</p>
<p>संस्कृत वैयाकरणतो अच्छीतरह जानतेही हैं.</p>	<p>संस्कृतवैयाकरणास्तु समीचीनतया जानन्त्येव.</p>
<p>वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ?</p>	<p>वर्णमालायांकत्यक्षराणि सन्ति.</p>
<p>अकार से लेकर चौदहस्वर, ककार से ले तेतीस व्यञ्जन इन् प्रकार मिलाकर ४७ अक्षर हैं.</p>	<p>अकारादयःचतुर्दशस्वराः ककारादयस्त्रयस्त्रिंशद्व्यञ्जनानीत्येवं पिण्डीकृत्य सतत्त्वर्गिंशद्वर्णाः.</p>
<p>स्वर, ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद से तीन प्रकारके और व्यञ्जन भी स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म भेद से तीन प्रकार के हैं.</p>	<p>स्वरा ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदेन त्रिधाः, व्यञ्जनान्यापि स्पर्शान्तस्थोष्मभेदेन त्रिविधानि.</p>
<p>शब्द दो प्रकार का है सार्थक और निरर्थक.</p>	<p>शब्दो द्विविधः सार्थको निरर्थकश्च.</p>
<p>सार्थक शब्द संज्ञा, क्रिया, अव्यय, भेद से तीन प्रकार का है.</p>	<p>सार्थकाः शब्दाः संज्ञाक्रियाऽव्ययभेदेन त्रिधाः.</p>
<p>चीजका नाम मात्र घतानेवाला शब्द संज्ञा कहलाता है.</p>	<p>वस्तुनो नाममात्रप्रवक्ता शब्दः संज्ञेत्यभिधीयते.</p>
<p>वह छः प्रकार की है जाति वाचक जैसे आदमी; व्यक्तिवाचक जैसे कृष्ण भाव वाचक जैसे लघुता; समूह वाचक जैसे सेना; पदार्थ वाचिका जैसे जल; गुणवाचिका जैसे सुन्दर.</p>	<p>सा षड्विधा, जानिवाचिका [यथामनुष्यः], व्यक्तिवाचिका [यथा कृष्णः], भाववाचिका [यथालघुत्वम्], समूहवाचिका [यथा सेना] पदार्थवाचिका [यथा जलम्], गुणवाचिका [यथासुन्दरः.]</p>

व्याकरण के संज्ञी शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

अंग्रेजी ।	संस्कृत ।	अंग्रेजी ।	संस्कृत ।
Appositional compound	= कर्मधारयः ४	Prosody	= छन्दोनिरूपणम्.
Numeral compound	= द्विगुः ५	Prose	= गद्यम्.
Copulative compound	= द्वन्द्वः ६	Verse, poetry	= पद्यम्.
Syntax	= वाक्याविचारः.	Metre, stanza	= वृत्तः, छन्दोजातिः
Prose order	= अन्वयः.	Feet	= चरणः, पादः.
Analysis	= वाक्यविभागः.	Poem	= काव्यम्
Sentence	= वाक्यः, पदः.	Short syllable	= लघुः.
Figures of speech	= अलङ्कारः.	Long Do	= गुरुः.
Do. words	= शब्दालङ्कारः.	SSS	= भगणः
Do. thought	= अर्थालङ्कारः.	III	= नगणः
Simile	= दृष्टान्तः, उपमालङ्कारः.	SH	= भगणः
Metaphor	= रूपकालङ्कारः.	ISS	= यगणः
Synechdoche	= उपलक्षणः.	ISI	= जगणः
Hyperbole	= अत्युक्त्यलङ्कारः.	SIS	= रगणः
Analogy	= सादृश्यालङ्कारः.	HS	= सगणः
Aniethesis	= विरोधाभासः.	SSI	= तगणः
Allegory	= उद्देशः ?	,	= विरामः
Irony	= व्यङ्गोक्तिः.	:	= द्विविरामः
Personification	पुरुषभाषारोपणम्.	:	= त्रिविरामः
		.	= पूर्णविरामः
		?	= प्रपञ्चिहम्
		!	= सस्वोधनीचिहम्
		()	= कोष्ठः
		' '	= परांक्तिचिहम्



व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

- हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>इस अध्याय में संस्कृत के व्याकरण सागका अंग्रेजी भाषाके पढ़नेवाले विद्यार्थियों के उपकारार्थ प्रायः कुछ लिखता हूँ.</p>	<p>अग्निव्रध्याये व्याकरणम्मारमाङ्गलभाषाभ्येतृणां छात्राणांमुपकारार्थम्प्रायोऽनुसरामि.</p>
<p>संस्कृत व्याकरणतो अच्छी तरह जानतेही हैं.</p>	<p>संस्कृतवैयाकरणास्तु समीचीनतया जानन्त्येव.</p>
<p>वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ?</p>	<p>वर्णमालायांकृत्यक्षराणि सन्ति.</p>
<p>अकार से लेकर चाँदहम्वर, ककार में ले तैतीस व्यञ्जन इस प्रकार मिलाकर ४७ अक्षर हैं.</p>	<p>अकारादयः चतुर्दशस्वराः ककारादयस्त्रयस्त्रिंशद्व्यञ्जनानीत्येवं पिण्डीकृत्य सप्तचत्वारिंशद्वर्णाः.</p>
<p>स्वर, ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद से तीन प्रकारके और व्यञ्जन भी स्पर्श, अन्नस्य और ऊष्म भेद से तीन प्रकार के हैं.</p>	<p>स्वरा ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदेन त्रिधाः, व्यञ्जनान्यापि स्पर्शान्तस्थोष्मभेदेन त्रिविधाणि.</p>
<p>शब्द दो प्रकार का है सार्थक और निरर्थक.</p>	<p>शब्दो द्विविधः सार्थको निरर्थकश्च.</p>
<p>सार्थक शब्द संज्ञा, क्रिया, अव्यय, भेद से तीन प्रकार का है.</p>	<p>सार्थकाः शब्दाः संज्ञाक्रियाऽव्ययभेदेन त्रिधाः.</p>
<p>चीज़का नाम मात्र बतानेवाला शब्द संज्ञा कहलाता है.</p>	<p>वस्तुनो नाममात्रप्रयक्ता शब्दः संज्ञेत्यभिधीयते.</p>
<p>वह छः प्रकार की है जाति वाचक जैसे आदमी; व्यक्तिवाचक जैसे कृष्ण भाव वाचक जैसे लघुना; समूह वाचक जैसे सेना; पदार्थ वाचिका जैसे जल; गुणवाचिका जैसे सुन्दर.</p>	<p>सा षड्विधा, जातिवाचिका [यथामनुष्यः], व्यक्तिवाचिका [यथा कृष्णः], भाववाचिका [यथालघुत्वम्], समूहवाचिका [यथा सेना], पदार्थवाचिका [यथा जलम्], गुणवाचिका [यथासुन्दरः].</p>

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
फिर वह रूढि, यौगिक, योगरूढि भेद से तीन प्रकारकी है.	पुनः सा रूढियौगिकयोगरूढिभेदेन त्रिधा.
रूढिजैसे (घड़), यौगिक जैसे (पाचक) योगरूढि जैसे (पद्मज).	रूढियथा [घटः] यौगिको यथा [पाचकः] योगरूढियथा (पद्मजः).
स्वर, व्यञ्जन और विसर्ग भेद से सन्धि तीन प्रकार की है. *	अक्षरलपिसर्गभेदेन संहिता*स्तिश्रः.
स्वर संहिता जैसे सुधी+उपास्यः=सु-धुपास्यः.	असंहिता यथा सुधी+उपास्यः=सु-धुपास्यः.
व्यञ्जन सन्धि जैसे काश्यां मरणात्+मुक्तिः=काश्यां मरणांमुक्तिः.	द्वलसंहिता यथा काश्यांमरणात्+मुक्तिः=मरणांमुक्तिः.
विसर्ग सन्धि जैसे देवः+याति=देवो-याति.	विसर्गसंहिता यथा देवः+याति=देवो-याति.
जहाँ सन्धि का निमित्त होने परभी संहिता न हो प्रकृति भाव सन्धि कहलाती है जैसे माले + आनय=माले आनय धरैरह.	यत्र सन्धिनिमित्तेऽपि संहिता न स्यात् सा प्रकृतिभावसहितेत्युच्यते यथा माले+आनय इत्यादि.
शब्दों के भेद भी अंग्रेजी में आठ हैं. पहिला भेद संज्ञा है जैसे पेंड़, दूसरा विशेषण या गुणवाचक संज्ञा जैसे मनोहर; तीसरा सर्वनाम संज्ञा जैसे अपि; चौथा क्रिया जैसे जाता है; पाचवाँ क्रियाविशेषण जैसे भली प्रकार; छठा उपसर्ग वा अव्यय जैसे पास, भी, नहीं धरैरह; सातवाँ	शब्दभेदा अपि आह्नभाषायामष्ट. प्रथमो भेदः संज्ञा यथा वृक्षः; द्वितीयो विशेषणः गुणवाचिका संज्ञा वा यथा—मनोहरः; तृतीयः सर्वनाम-संज्ञा—यथा—भवान्; चतुर्थः क्रिया—यथा गच्छति; पञ्चमः क्रिया-विशेषणः यथा—सुष्टु प्रकाशते; षष्ठः उपसर्गः अव्ययं वा यथा—उप,
* नोट—इनका विशेषवर्णन दूसरे भाग के पहिले तरंग में देखो.	* एषां विशेषवर्णनं द्वितीयभागस्य प्रथमे तरङ्गे पश्यत.

व्याकरण के संज्ञासन्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>जोड़नेवाला या अलग करनेवाला अव्यय जैसे और, या धरहरद; आठवां आश्रयादि स्रोतक अव्यय जैसे—आः, हा, हँहो.</p>	<p>अपि, न इत्यादि; सतमः समुच्चायकं पृथक्त्वबोधकञ्चाव्ययं यथा च, या इत्यादि; अष्टमः विसृष्टापनादिवो- धकमव्ययं यथा—आः, हा, हँहो.</p>
<p>लिङ्ग तीन प्रकारके हैं पुलिङ्ग जैसे म- नुष्य स्त्रीलिङ्ग जैसे स्त्री; नपुंसक जैसे मित्र.</p>	<p>लिङ्गं त्रिविधम् पुं० (यथा नरः); स्त्री (यथा-नारी) नपुंसकं (यथामित्रम्).</p>
<p>संस्कृत में लिङ्ग व्यवहार प्रत्यय और द्विक्सनरी द्वारा जसा होता है अं- ग्रेजी में घेला नहीं.</p>	<p>संस्कृते तु लिङ्गव्यवहारः प्रत्ययकोपा- दिद्वारा यथा भवति न तु तथा ऽङ्गुल भाषायाम्.</p>
<p>वचन भी तीन तरह का है अंग्रेजी में तो दोही तरह का है.</p>	<p>वचनं चापि त्रिविधमाङ्गुलभाषायान्तु द्विविधमेव.</p>
<p>एक वचन जैसे रामः, द्विवचन जैसे रामौ वहुवचन जैसे रामाः.</p>	<p>एकवचनं यथा रामः; द्विवचनं यथा रामौ; बहुवचनं यथा रामाः.</p>
<p>कारक (केस) भी अंग्रेजी जवान के माफिक आठ हैं पहिला कर्ता (ना- मिनेटिव) जैसे राम दूसरा कर्म (अङ्जकिटव) जैसे रामको, तीसरा करण (रत्सदूमन्टेड) जैसे रामने; चौथा सम्प्रदान (बुटिक) जैसे रामके लिये; पांचवां अपादान (एक्लेटिव) जैसे रामसे, छठा सम्बन्ध (जैनि टिव) जैसे रामका; सातवां अधि- करण [लीफेटिव] जैसे राममें आ- ठवां सम्बोधन [धाकेटिव] जैसे हे राम.</p>	<p>कारकः षड्भाष्यप्याङ्गुलभाषानुसारेण अ- ष्ट, प्रथमकर्ता—यथा रामः; द्वितीयं कर्म यथा रामः; तृतीयं करणम् यथा रामेण; चतुर्थं सम्प्रदानम् यथा रा- माय; पञ्चमं अपादानम् यथा रामा- त्; षष्ठं सम्बन्धकारकम् यथा रा- मस्य; सप्तममाधिकरणम् यथा रामे; अष्टमं सम्बोधनम् यथा हे राम.</p>

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इस किकरे में रखे हुए पदोंका पद साधन [पासिंग] करो.

तीन पुरुष [पर्सन] हैं तृतीय वा भन्व्य, दूसरा वा मध्यम, पहिला वा उत्तम इस प्रकार.

अकर्मक धातुगण को खुलासा रीति से सुनो.

लजाना, रहना वा होना, ठहरना, जाना बड़ना, नष्टहोना, डरना, जीना, मरना, सोना, क्रीड़ा करना, भीति करना, दौंसहोना [जलना शोभित होना] इत्यादिधातुगण अकर्मक कहा है.

क्रियाएं तीन प्रकारकी हैं अकर्मक जैसे सोता है, सकर्मक जैसे खाता है द्विकर्मक जैसे मांगता है.

बेचदत्त घेडेको मुलाता है यहां प्रेरणार्थक क्रिया है.

रुष्णदत्त व्याकरण पढ़ना चाहता है इस वाक्य में इच्छार्थक.

आज जाड़ा बहुतही है और हवा बहुतही चलती है.

यहां दोनों क्रियाही अतिशयार्थ घो- तक है.

क्यों गंधेको तरह करता है यह नाम धातु है.

अस्मिन् वाक्ये स्थितानां पदानां पदसा- धनं कुरुत.

पुरुषात्प्रथः तृतीयोऽन्यो वा, द्वितीयो मध्यमो वा, प्रथम उत्तमो वेति.

अकर्मकं धातुगणं संक्षिप्तरीत्या शृणुत.

लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभय जीवितमरणम् । शयनर्काङ्काञ्चि दीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः.

क्रियास्त्रिविधा, अकर्मका यथा स्वपि- त्ति, सकर्मका यथा भुङ्क्ते; द्विकर्मका यथा वाचते.

देवदत्तः पुत्रं शामयतीत्यत्र प्रेरणार्थका क्रिया.

कृष्णदत्तो व्याकरणं पिपठिषतीत्यत्र सश्रान्ता क्रिया.

अद्य शीतं वरीचर्त्ति सरीसर्त्ति समीरणः.

अत्र क्रिया द्वयमेव पौनःपुन्यघोतकं.

किमर्थं "रासभायसे" इति नामधातुः.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन — व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>क्रियाओं में जो प्रत्यय लगाई जाती हैं वे कृतप्रत्यय हैं जैसे द्रष्टुम् । शब्दों में जो प्रत्यय लगाई जाती हैं वे तद्धित प्रत्यय होती हैं जैसे राघवः ।</p>	<p>तिङ्ब्यतिरिक्ता, धातुभ्यः कर्त्राद्यर्थे ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते कृतप्रत्ययाः* कथ्यन्ते यथा द्रष्टा, द्रष्टुम् शब्देषु ये प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते ते तद्धिताः* प्रत्ययाः यथा राघवः ।</p>
<p>तिङ् प्रत्ययान्त धातु क्रियापद औरसुप् प्रत्ययान्त शब्द संज्ञा पद ये कहलाते हैं ।</p>	<p>तिङ्प्रत्ययान्तो धातुः क्रियापदमिति, सुप्प्रत्ययान्तः शब्दः संज्ञा पदमित्यभिधीयते ।</p>
<p>वाच्य (वचस) भी तीन हैं, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य ।</p>	<p>वाच्या अपि त्रयः कर्तृवाच्यः, कर्मवाच्यः भाववाच्यः ।</p>
<p>में पुस्तक पढ़ता हूँ यह कर्तृवाच्य है । पुस्तक मुझ से पढ़ी जाती है यह कर्मवाच्य है ।</p>	<p>अहं पुस्तकं पठामीति कर्तृवाच्यः । पुस्तकं मया पठ्यते इति कर्मवाच्यः ।</p>
<p>मुझ से बैठा जाता है यह भाववाच्य है । भाववाच्य तो अकर्मकही क्रिया से बनता है ।</p>	<p>मया स्वीयते एष भाववाच्यः । भाववाच्यस्तु अकर्मिकैव क्रिया भवति ।</p>
<p>काल वा लकार दस हैं— पहिला वर्तमान वा लट्—जैसे भवति (होता है)</p>	<p>काला लकारा दश । प्रथमः वर्तमानो लट् वा यथा भवति ।</p>
<p>दूसरा अनद्यतनभूत वा लङ् जैसे अभवत् ।</p>	<p>द्वितीयः अनद्यतभूतः लङ् वा यथा अभवत् ।</p>
<p>तीसरा परोक्षभूत वा लिट्—जैसे बभूव । चौथा विधि वा लिङ्—जैसे भवेत् ।</p>	<p>तृतीयः परोक्षभूतो लिट्वा—बभूव । चतुर्थः विधिः लिङ्वा—भवेत् ।</p>
<p>पांचवां आशीः—लिट्—जैसे भूयात् । छठा अनद्यतनभविष्य वा लुट्—जैसे भविता ।</p>	<p>पञ्चमः आशीः लिङ्वा—भूयात् । षष्ठः अनद्यतनभविष्यः लुङ्वा—भविता ।</p>

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
सातवां सामान्यभविष्य वा लट् जैसे भविष्यति.	सप्तमः सामान्यभविष्यः लट् वा-यथा भविष्यति.
आठवां क्रियातिपात्ति वा लृट् जैसे अभविष्यत्.	अष्टमः क्रियातिपात्तिः—लृट् यथा अभविष्यत्.
नवां सामान्यभूत वा लुङ् जैसे अभूत्.	नवमः सामान्यभूतः—लुङ्—अभूत्.
दशवां आज्ञा वा लोट्—जैसे भवतु.	दशमः आज्ञा—लोट्—यथा भवतु.
इस श्लोक की व्याख्या करो.	अस्य श्लोकस्य व्याख्यां कुरु.
अंग्रेजी ज़बान में बहुत से शब्दों के मुपशक्ति (संक्षिप्त) रूप होते हैं.	आङ्ग्लभाषायां घट्टनां शब्दानां संक्षिप्त-रूपाणि भवन्ति.
यदि शर्मनी यात है कि तुम इस शब्द का उच्चारण भी नहीं कर सकते.	अस्य शब्दस्योच्चारणमपि कर्तुं न शक्नोतीति घातैयं महत्याः लज्जायाः.
गूढ़ शब्द का हम मानी ओर विरुद्धार्थाची शब्द लिखो.	गूढशब्दस्य पर्यायार्थविपरीतार्थाच्चकौ शब्दौ लिखत.
समाप्त छः हैं.	समाप्ताः षट्. *
पहिला अव्ययीभाव जैसे उपकूलम्.	प्रथम अव्ययीभावः यथा कूलस्य समीपे उपकूलम्.
दूसरा तत्पुरुष ॥ राजपुत्रः.	द्वितीयः तत्पुरुषः—राज्ञःपुत्रः राजपुत्रः.
तीसरा बहुव्रीहि ॥ लम्बकर्णः.	तृतीयः बहुव्रीहिः यथा लम्बो कर्णो यस्य स लम्बकर्णः.
चौथा कर्मधारय ॥ रक्तलता.	चतुर्थः कर्मधारयः यथा रक्ताद्यासौ-लता रक्तलता.
पौंचवाँ द्विगु [संख्या याची शब्द पूर्व] जैसे त्रिलोकी.	पञ्चमः द्विगु [संख्यापूर्वः] त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी.
* इनका स्पष्ट विवरण दूसरे भाग में क्रमशः मिलेगा.	* अस्य विवरणो द्वितीये भागे क्रमशः स्पष्टतया मिलिष्यति.

व्याकरण के संज्ञाशब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>छटा इन्द्र [चार्थक] जैसे हरिहरौ।</p> <p>नीचे लिखेहुए श्लोक का अन्यय वर्णन करो।</p> <p>यत्कृपा मूर्कं वाचालं करोति पट्टगुं गिरिं लङ्घयते तम् परमानन्दमाधवम् अहं वन्दे</p> <p>अन्वय दो प्रकार का है खण्डान्वय और वण्डान्वय।</p> <p>जहाँ श्लोक का टुकड़े २ व्याख्यान है वह खण्डान्वय है।</p> <p>जहाँ श्लोक की एक साथही व्याख्या हो वह वण्डान्वय है।</p> <p>तो कहो किसरीति से अन्यय करुं। वण्डान्वय से । अच्छा।</p> <p>अन्वय—जिसकी कृपा मूर्गे को झोलने वाला बनाती है और पंगे को पहाड़ लँघाती है उस परमानन्द माधवको मैं वन्दना करता हूँ।</p> <p>तुम पनेलिसिस भी जानते हो या नहीं । जानताहूँ।</p> <p>कान्य अलङ्कारों के बिना ऐसे नहीं अच्छा लगता जैसे बिना नमक शाक।</p> <p>तीन गुरुका भगण, और तीन लघु का नगण, आदिगुरु भगण और फिर</p>	<p>पट्टः इन्द्रः [चार्थकः] यथा हरिश्चहरश्च हरिहरौ।</p> <p>निम्नश्लोकस्यान्ययो वर्णनीयः।</p> <p>मूर्कं करोति वाचालं पट्टगुं लङ्घयते गिरिम् । यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।</p> <p>अन्ययो द्विविधः खण्डान्वयो वण्डान्वयश्च।</p> <p>यत्र श्लोकस्य खण्डशः व्याख्यानं स खण्डान्वयः।</p> <p>यत्र श्लोकस्य गुणपदैव व्याख्या स वण्डान्वयः।</p> <p>तर्हि कथयं कतरया रीत्याऽन्वयं करोमि। वण्डान्वयेन । वरम् ।</p> <p>अन्वयः—यत्कृपा मूर्कं वाचालं करोति पट्टगुं गिरिं लङ्घयते तं परमानन्दमाधवं अहं वन्दे।</p> <p>वाक्यविभागमपि त्वं वेत्सि नचा। वेत्सि।</p> <p>कान्योऽलङ्कारान्विना तथा न शोभते यथा लघुणं विना व्यञ्जनम्।</p> <p>मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः जो गुरुमध्यगतो र</p>

व्याकरण के संज्ञा शब्दों का वर्णन—व्याकरणपरिभाषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
आदि लघु रगण, गुरुमध्य जगण और लघु मध्य रगण, अन्तगुरु सगण और अन्त लघु रगण होता है- उपसर्ग से धातुका अर्थ जबईस्ती दूसरी जगह ले जायाजाता है जैसे प्रहाग (चोट) आहार [खाना] संहार, [नाश] विहार [फ्रीड़ा] और परिहार [त्याग]	लमध्यः सौन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः । १ । उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ।
अगला अध्याय देखो ।	अग्रिमं अध्याये पश्य ।

बाईसवां अध्याय—द्वाविंशोऽध्यायः ।

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
डूर करना हटाना ” मरोड़ना निचोड़ना नाछानना छिपाना	स्नानान्तरंनयति, अपसारयति विचालयति, दूरीकृत, निर्वासयति निष्कासयति. सं निष्पीडयति, (बलवत्) आकुञ्चयति शोधयति, स्त्रावयति [पटात्] निर्गलयति. प्रच्छादयति, गोपायति-अन्तः-तिरः—धा, अप-धारयति.	फिसलना मुलम्मा-करना लपेटना बांधना उधार देना	च्यवते, स्पलति, भ्रंशते, भ्रदयति. स्वर्णेन रञ्जयति, हेमरसेन हेमद्रवेण लिम्पति. परि-अधि वेष्टयति, परि-शृ आचघ्नाति, परिघत्ते, नि-सं-यच्छति. अविहितकालात्-दा, ऋणं दा; निक्षिपति, न्यस्यति, समर्पयति.

बाकी क्रिया इत्यादि का चर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
खोना	त्यजति, जहाति, हापयति.	लटकाना	निदधाति, उद्वध्नाति, आ०
ढीला होना	श्लथते, संसते.	फाँसीदेना	अव-लम्बयति, व्यापाद- यति.
“ करना	शिथिलयति, श्लथयति.	लटकना	प्र-अव-लम्बते, दोलायते.
भेजना	प्रहिणोति, प्रेरयति प्रेषयति.	झूलना	आन्दोलयति, प्रेरति, प्रे- “ झोलयति, दोलायते.
निश्चय करना	सं-व्यव-स्थापयति, व्यव- स्यति निर्-अव-धारयति.	खिलाना	भोजयति, आशयति, परि-
पौंछना	प्रमाष्टि, परिमार्जयति, प्रक्षालयति.	चराना	पोषयति-पुष्पाति.
व्याव दे- यना	स्वप्नंपश्यति.	मिलना	समेति, सङ्गच्छते, सम्मि- लति, समागच्छति.
सलूककर्ना	आचरति, वर्तते, व्यवहरति.	जलदी च- लना	शीघ्रं—सवेगं—गच्छति;
मालूम करना	अनुभवति, विभावयति, उपलभते	„ करना	त्वरयति, त्वरते.
चूमना	चुम्बयति.	चक्कर दे- नाघुमाना	जिह्वं—कुटिलं—गच्छति- सर्पति, परि-आघर्तयति.
महूरूम करना	वियोजयति, विना—रु०;	यसना	वसति, तिष्ठति, वर्तते, प्र- तीक्षते.
इस्तजा कर्ना	अनुनयति, प्रार्थयते.	लज्जित	लज्जते, जिहेति.
नुफसान	क्षिणोति, लुब्धति, अर्दति.	होना	„ करना
पहुंचाना	वाधते, व्यथयति.	कमहोना	हेपयति, लज्जयति प्रपयति.
उखाड़ना	उन्मूलयति.	„ करना	हस्यति, न्यूनीभवति.
जाद कर्ना	उद्गायति.	„ करना	हसयति, लघयति, न्यूनी- करोति.
काम कर्ना	कार्यं करोति.	याज रहना	विरमति, निवर्तते परिहर- ति, सहते, क्षमते.
खयाल करना,	चिन्तयति, ध्यायति, वि- मृशति, आ-पर्या-लोचयति		
जोर से फैकना	सहासा घलेन क्षिपति, पा- तयति, अस्यति.		

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।	हिन्दी ।	संस्कृत ।
हिम्मत करना	धृष्णोति, उत्सहते साहस करोति.	याद करना	स्मरति.
फैलना	प्र वि सर्पति, विस्तारयति, प्रसारयति.	भूलना	विस्मरति.
पासिने निकलना	प्रस्विद्यति, परिधाम्यति, स्थेदयति.	कूचकरना	प्रतिष्ठते, अनुतिष्ठति.
नफरत-करना	द्रेषि, असूयति, स्पधेते.	अनुष्ठा न करना	विनगति.
होना, अनुभव करना	भयति.	धेना	विरमति.
हारना	अनुभवति.	ठहरना	कम्बिष्यति [इष विधादि]
उत्पन्न होना	परिभयति.	दूढना	दधाति, धत्ते
समर्थ होना	उद्भयति.	धारण करना	विदधाति.
जीतना	प्रभयति.	कहना	अभिधत्ते.
हराना	जयति.	पहिरना	परिधत्ते.
	पराजयति.	लेना	आदत्ते.
		पाना [मु-यादिधा]	व्याददाति.
		जाना	गच्छति.
		जानना	अयगच्छति.

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यह चीज यहां अच्छी नहीं लगती इस-
लिये इसको दूसरी जगह लेजाओ
देवदत्त ने मेरी याँह मरोड़दी तो भी
मैंने कुछ न कहा.
अच्छे लोग दूसरों के दोषों और अपमं
गुणों को दबाया करते हैं.

यस्येतदत्र न शोभते एतदतः स्वाना-
न्तरं नय.
देवदत्तो मद्राद् बलपत्समपीडयत्तदा-
पि मया किञ्चिन्नोक्तम्.
सज्जना. परंपरां दोषान्सगुणांश्च प्रच्छा
दयन्ति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

महल की चोटी पर मत जाओ वहां से ज़रूर ही किसल जाओगे.

आजकल बहुत से मुलम्मेलाय ऐसे गहने सोने चाँदी से मुलम्मा कर घनाते हैं कि बहुत से अहमन्द भी ठगों से धोखा खाजाते हैं.

आज शीत बहुत ही ज्यादा है और हवा भी तेज चलती है इसलिये तुम गुल्लबन्द सिरपर लपेटलो.

किसी आदमी को कर्ज न दो क्योंकि कर्जदार देते वक्त दुश्मन होजाता है यह निश्चय है.

इस काच केही घर्तन में मेरे पास शहद भेजा मैं उसको अपने घर्तन में फरके और साफकर तुम्हारे घर्तन को फिर लौटा दूंगा.

मा बेटेका मुंह चूमती और लड़ाती है. मुझे आप इनाम से क्यों महरूम करते हैं.

यह भिखारी रोटी केलिये प्रार्थना [इत्तजा] करता है.

किसी जीव को कभीमत सताओ. आनेवाले चैत के महीने में भूकम्पहोगा.

तेज हवा बड़े दरखनों को भी उखाड़ देती है.

प्रासादशिसरस्थोपरि मागच्छ ततोऽ-
घश्यं व्यविष्यसे.

अद्यत्वे वदयः स्वर्णरत्नका ईदृश्याभूय-
णानि स्वर्णेन रजतेन वा रक्षयन्ति
यद्दृष्ट्वा युद्धिमन्तोऽपि धूर्तैः प्रता-
र्यन्ते.

अद्य शीतं वरीषतिं सरीसतिं समीरणो-
ऽतस्तर्षं गलवन्धनं शिरस्वधिबे-
द्य.

कसौचित्पुरुषाय धनं मानिक्षिप यतोऽ-
धर्मणः प्रतिस्मर्येणसमये शत्रु-
वर्तीनि निश्चयः.

अस्मिन् काचपात्रे हि मत्सन्निधौ मधु
प्रेषय अहं तत्स्वपात्रे कृत्वा प्रमाज्यं
च तत्र पात्रं पुनरावर्तयिष्यामि.

माता पुत्रस्य मुखं चुम्बति लालयति च.
कथं मां पारितोषिकेण वियोजयन्ति-
भवन्तः.

एष भिक्षुकः करपीड्यकार्थमनुनयति.

कम्पि जीवं कदापि मा व्यथय.
आगामिनि चैत्रे मासि भूकम्पो भवि-
ष्यति.

प्रकम्पनो महतो वृक्षानपि उन्मूलयति.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इसचोत्र को जोर से न फेंको क्योंकि शायद बिसर जायगी,

अक्सर स्त्रियाँ खौवन के महीने में झूटा झूलती हैं,

कभी ऐसा मत सोचो मैं कभी तुम्हारे खिलाफ़ न करूंगा,

जल्दाव ने जज साहब के हुक्म से उस बालक के मारने वाले को फाँसी दी, मैं आज सौ ब्राह्मणों को खिलाऊंगा,

यह पुस्तक कहां से मिलती है । चम्बई से,

महबानी घर जल्दी कीजिये यह बहराने का घन्ट नहीं है,

चौद अंधेर पाख में रोगाना घटता है और उजाल, पाख में बढ़ता है,

इन अशुभ आचरण से तु मुझको क्यों लज्जित करता है,

यह बालक बड़ी हिम्मत करता है जो अकेला बियाधान में रात को फिरता है,

जैसे बुराई जल्दीही आदमियों में फैल जाती है तैसे भलाई नहीं,

आज बड़ी धूप है इसी से मेरे देह में पसीने आते हैं,

यहूत से मुसलमान आर्याओं से नफ़रत करते हैं,

एतद्बस्तु सदसा माक्षिप यतः प्रकिरेत्.

प्रायः स्त्रियः श्रावणे मासि दोलायं प्रेङ्गन्ति.

कदापीदृग्मा धिमृशाहं तथ विदुजं नाचरिष्यामि.

घातको न्यायाधीशाह्वया तं चालघातिनमवालम्बयत्.

अहमद्य शतं ब्राह्मणान्भोजयिष्यामि, तत्पुस्तकं कुतस्सम्मिलति। मुम्बापुरीतः

कृपया त्वरय नास्त्ययं समयो दीर्घसूत्रतायाः.

चन्द्रमा कृष्णपक्षे प्रतिदिनं हस्यति शुद्धे पक्षे वर्धते.

कथं मां हेपयसि एतेनाशुभाचरणेन.

अतीवोत्सहतेऽयं चालो यदेकाकी निर्जने नक्तं परिभ्रमति.

यथाऽप्यशस्तूर्णमेघ जनेषु प्रसरति न तथा यशः.

अद्याधिको घर्मोऽत एव मम गात्राणि प्रसिघन्ति.

घहयो यवना आर्च्येभ्यो द्विपन्ति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः।

हिन्दी।	संस्कृत।
<p>अर्जुन ने कहा कि गाण्डीय हाथ से निकला जाता है और खाल जली जाती है.</p>	<p>अर्जुनोक्तं गाण्डीयं क्षेप्तते हस्तात्त्वक् चैव परिदह्यते.</p>
<p>यह कौन आदमी है जो बाहर दरवाजे पर है है कोई फकीर। नहीं यह फकीर नहीं है. फकीर का लक्षण तो सुनो.</p>	<p>कोऽयं जनो योवहिर्द्वारि घर्तते ? अस्ति कश्चित् फकीरः। नो नाम फकीरः फकीरलक्षणं तु शृणु.</p>
<p>दियाजा के चरणों में दिया है चित्त जिसने और कौड़े आदि में ब्रह्मबुद्धि देनेवाला, रक्षा के लिये और भिक्षा के लिये अह्ने महे हूँ वख जिसके वह कथियाँ ने फकीर कहा है.</p>	<p>फणीशभूयांघ्रिनिविष्टचेताः कीटादिषु ब्रह्ममतिप्रकाशी । रक्षार्थभिक्षार्थ विघर्णवासा निगद्यतेऽसौ कविभिः फकीरः.</p>
<p>अनेक प्रकार के, व अनोखे वाक्य और ४८ मशहूर सांसारिक कहावतें.</p>	<p>विविधवक्यानि, विशिष्टस्वरूपाणि वाक्यानि, अष्टचत्वारिंशत्प्रसिद्धलौकिकन्यायानि च.</p>
<p>आपका दौलतखाना कहाँ है और इस्समुबारिक क्या है और किसलिये आप यहां आये हैं?</p>	<p>शुभ्रत्या भयन्तः किमभिधानं किमर्थमिहावाताश्च.</p>
<p>मैं बंगाल देश में रहनेवाला कृष्णदत्त नाम अतिथी हूँ रात को ठहरने की जगह ढूँढना हुआ आपको कुछ परिश्रम देने के लिये यहां आया हूँ.</p>	<p>घङ्गदेशवास्तव्योऽतिथिः कृष्णदत्तनामाहं रात्रिवासगृहमन्विष्यमाणो भयते परिश्रमं दातुमश्रगतः.</p>
<p>बहुत अच्छा इस आसन पर तशरीफ रखिये और अपने घर से ज्यादा खुसपूर्वक रहिये.</p>	<p>घरम्, इदमासनमलङ्करोतु भवान् (अत्रार्थनाम्बो) स्वगृहनिर्घोषं यथा सुखमुप्येताम्.</p>
<p>मुझे अपने बापकी कसम है कि मैं कभी तुम्हारे खिलाफ न करूंगा.</p>	<p>कदापि तव विरुद्धं नाचरिष्यामीत्ययं शपथस्तातपादानाम्.</p>

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

हाथ धोने फेलिये मिट्टी तो लामो.

ऊसर धरती की मिट्टी नाज के लिये अच्छी नहीं होती.

लेकिन चमई की मिट्टी लिपाई के लिये पकी होती है.

यह रास्ता तो बड़ा खेतीला है तो और रास्ते से जायेंगे.

वटना नामक शहर यहां से दो कोश है.

इस गाँव में सिर्फ पांच दुकान हैं बाजार नहीं.

इस गली में एक घरकी दीवार गिरने वाली है इसलिये होशियारी से जाना खत्री लोगों के और मुसलमानों के राज्य में शहरों के परकोटे थे.

यह किसका शापड़ा है ? महानन्द नाम सन्यासी का.

यह पत्थर की प्याऊ तुम्हारी छुड़साल के नग्देक किसकी बनवाई हुई है. गोविन्द की.

पत्थर यहां कहां से आते है ?

पहाड़ों से.

पहाड़ के पास की भूमि उपत्यका और नीचे की अधित्यका होती है.

पहाड़ों में मस्तुई जगह कन्दरा और शीर मस्तुई शुष्ण कहलाती है.

हस्तप्रक्षालनार्थं मृत्तिकां त्वानय.

ऊपरभूमेशृत्स्नाश्रादिभ्यो न धरा.

परञ्च वामनूरस्य मृत्तिका लेपार्थपक्वा.

शर्करासनाथोऽयम्भार्गस्तदन्येन पथा गमिष्याथः.

पाटलिपुत्रं नाम नगरमतः क्रोशयुगं वर्तते.

अस्मिन्ग्रामे केचले पञ्चापणां विद्यन्ते नच पण्यवीधिषा.

पिपतिपत्थेका शूद्रमिसिरस्यां प्रतौल्या-
मतस्सावधानतया गच्छ क्षत्रियरा-
ज्ये यथनराज्ये च नगराणाम्प्राकारा
आसन्.

कस्य एष वृद्धः ? महानन्दनाम्नः स-
न्यासिनः.

पाषाणप्रपेयं तव मन्दुरासमीपे केन निर्मापिता वर्तते । गोविन्देन.

प्रस्तरा अत्र कुत आगच्छन्ति ?

महाधिभ्यः.

उपत्यकाद्वेरासन्ना, अधोभूमिरधित्यका.

पर्यतेषु कृत्रिमं स्थानं कन्दराऽह्वयि-
मुहेति कथ्यते.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>बेलों से ढंका हुआ ग्यान कुञ्ज पेड़ों की पंक्ति आराम [बगीचा] कहलाता है। इस घर की छतपर बड़ा कूड़ा है इसलिये यहाँ नसेना लाकर इसको साफ करो।</p>	<p>लतादिपिहितं स्थानं कुञ्जः मदीरुद्वा- चलिः आराम इति भण्यते। अस्य गृहस्य पटले महानवकरः अतो ऽत्राधिरोहिणीमानीय एनं शोधय।</p>
<p>इस पेड़ की खोइर में बहुत साँप हैं।</p>	<p>अस्य हुमस्य निष्कुहे बहवस्तर्पा- स्तन्ति।</p>
<p>वन में तो ईंधन थोड़े से मोल से मिल जाता है।</p>	<p>अरण्ये त्विन्धनमल्पीयसा मूल्येन ल- भ्यते।</p>
<p>इस पेड़ की फलियाँ, गुच्छे और फूल कैसे अच्छे लगते हैं।</p>	<p>अस्य वृक्षस्य फलिकाः स्तवकाः पुष्पा- णि च कथं शोभन्ते।</p>
<p>जो तुम मेरा बचन ठीक मानते हो तो यह छः महीने के भीतर राजा होगा।</p>	<p>यदि मद्रचः श्रद्धेयं मन्यसे तर्ह्ययं प- ण्मासाभ्यन्तरे राजा भविष्यति।</p>
<p>फैंदा बांधकर राम त्रिलोकी के भी मुकाबला करने को समर्थ हैं।</p>	<p>वज्रपरिकरो रामत्रैलोक्यमपि प्रत्यव- स्थातुं क्षमः।</p>
<p>श्री कृष्ण महाराज के दर्शन के अनन्तर उसको कुल भी अभीप्सित न था।</p>	<p>श्रीकृष्णदर्शनानन्तरं न किमपि तस्य स्पृहणीयमासीत्।</p>
<p>बहुत से मनुष्य बहुत जगहों पर शारदापीठाधीश्वर शंकर स्वामी ने लाजबाव करदिये परन्तु वे ऐसे निर्लज्ज हैं कि हारे हुए भी नहीं शरमाते।</p>	<p>निरुत्तरीकृता बहवो जना बहुषु स्थ- लेषु शारदापीठाधीश्वरेण शङ्कर- स्वामिना परञ्चैतादृशा निर्लज्जास्ते यत् पराजिता अपि न लज्जन्ते।</p>
<p>मैंने एक हाथी वनके बीच में देखा। ईश्वर इच्छा बलवान होती है।</p>	<p>दृष्टो मयैको गजः कान्तारमध्यवर्ती। ईश्वरेच्छा बलीयसी वा प्रभवति भग- वान् विधिः।</p>

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

दोस्त । तुम्हारे मुकद्दमे में कितने ग-
घाह हैं और कौन तारीख है? किस
हाकिम की कचहरी में तुम्हारा
मुकद्दमा है? मेरी रायमें तो मुद्दई
मुद्दाइलह मिलकर राजीनामा फरलो
नहीं तो दोनों का बड़ा सच पड़ेगा।
चाहे जिस पुरुष के लिये यह अन्न देदो।
उस बचन के समाप्त होनेपर बलराम
जी बोले.

क्रोधमें भरकर तू फ्यों घुरे मार्ग में
पैर अड़ाता है.

तैंने उस मुसीबत ज़दद को समझा-
दिया यह बड़ा उपकार किया.

बुछ बेर इन्तजार करिये.

तुम्हारा दुदमन दुदमनी निकालना
चाहता है उससे होशियार रहो.

उपकार प्रत्युपकार से पलटा देना
चाहिये.

ईश्वर की व्याहृतियाँ कभी लोक में
विपरीत अर्थ नहीं बनती.

उनमें से एक पैरो से कुचल कर मर
गया.

पकड़ने वालों से चोर, माल और राज
से पकड़ा गया है.

मित्र तवाभियांगो कति साभिणः कत-
माङ्गलतिथिः कस्य न्यायाधीशस्य
न्यायालये तवाभियोगोऽस्तीति मां
पूर्वमेव सूचय मम सम्मतौत्वर्थि-
प्रत्यर्थिनौ मिलित्वा सन्धिं कुरुतम्
नोचेद्द्वयोरपि महान्वययो भविष्यति
यस्य कसौचित्पुरुषायेदमन्नं देहि.

बचस्यावसिते तस्मिन् बलरामोऽववा-
दिदम्.

क्रोधेहो भूवा त्वं किमर्थमपथे पदम-
पंयसि.

प्रत्यासन्नापदं तं त्वं प्रावोधय इति म-
हानुपकारः कृतः.

कालः कश्चित्प्रतीश्यताम्.

धैरानिर्घातनोत्सुकस्ते दाशुस्तसात्समव-
हितो भव.

उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः.

ईश्वरव्याहृतयः कदाचिद्दोके विपरी-
तमर्थे न पुण्यन्ति.

तेषामेकतमः पादाक्रान्तोऽघ्नियत्.

प्राहकैः गृह्यते चौरो लोभेणार्थपदेनघा-

* लोभं स्नेयधनम्.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>तू तो सब तरह से घरवाली के कहने में है इसलिये यन्त्र की तरह चलायाजाता है.</p>	<p>त्वन्तु सर्वथा गेहिन्याह्वानुवर्ती तेन यन्त्रवचाल्यसे.</p>
<p>दाँत निकलने और डाढ़ी मूँछ निकलने पर बालक अच्छीतरह रक्षा करनी चाहिये.</p>	<p>दन्तोद्भेदे श्मश्रुद्रमे च बालस्सुतराम् रक्षणीयः.</p>
<p>यह जल्दीही आरोग्य होगया इससे मैं खुश हुआ.</p>	<p>सोऽचिरात्सुस्थोऽभवद्येनाहं प्रमुदितोऽभवम्.</p>
<p>उठो, यह घफ़ नहाने और राने का है.</p>	<p>उत्तिष्ठत, समयोऽयं स्नानभोजनं सेवितुम्.</p>
<p>जैसे २ जवानी ढलती गई तैसे २ ही सन्तान न होने का दुःख बढ़ता गया. गरीब ने रक्षाकरने वाले से कहाकि आपसे मैं अनुग्रहीत हुआ.</p>	<p>यथा यथा यौवनमतिचक्राम तथा तथा ऽनपत्यताजन्मा अवर्धतास्य सन्तापभवतानुगृहीतोऽसीति रक्षितारमुवाच दीनः.</p>
<p>जिनके चित्त आपत्तियों में भी नहीं विगड़ते वेही धीर हैं.</p>	<p>आपत्तिप्रपि येषां चिंतांसि न विक्रियन्ते त एव धीराः.</p>
<p>मारने में यह भी मददगार था इसीसे सजावार है.</p>	<p>विशेसनेऽयमेव सहायो बभूवात एव दण्ड्यः.</p>
<p>बहुत से हमारे पैभव में सुरी होते हैं.</p>	<p>घटवोऽस्मदभ्युदये सुखभाजो भवन्ति [मोदन्ते प्रीयन्ते]</p>
<p>यह बड़ी धार्मिका है उस दुःख पाती हुई का स्वर्गवास निश्चयही है.</p>	<p>सातीच धार्मिका सीदंत्याः तस्याः स्वर्गवासोऽवस्थित एव.</p>
<p>बहुत काल सोचते हुए मेरे यह उपाय मन में पैदा हुआ.</p>	<p>चिराच्छोचतो मेऽयमुपायो मनासे प्रादुर्बभूव.</p>
<p>दुर्गुत्ति करनेतो दुष्ट और फल भोगे सजान.</p>	<p>फलः करोति दुर्गुत्ति नूनं फलति साधुषु.</p>

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
मुझ भूख थी तृप्ति के लिये यह भय बहुत है.	मम क्षुधितस्य तृप्त्यै इदमन्नमलं [पर्याप्तं]
मैं भय क्या करूं मेरी सब कोशिश फिजूल हुई.	किं करोम्ययं मम सर्वे प्रयत्ना शून्यफलाः [शक्तिपक्षा] अभवन्.
शृंग सिंह की गर्जना सुनतेही बेहोश हो जाते हैं.	शृंगाः सिंहनादश्रवणेनैव मूर्च्छन्ति.
यह अजीब मामला सुन मेरे दिल में अचम्भा होगया.	एतद्बहुतं घृत्तमाकर्ष्य विस्मयो मे हृदयमस्पृशत्.
महल की शिपर की शोभा को देख मैं अचरमे में आतथा.	प्रासादशृङ्गशोभां दृष्ट्वाऽहं विस्मयमापन्नः.
चामनजी ने कहा कि जितनी धरती मैं तीन पैंडे से नापलूँ उतनी मुझेदो.	यावती भूमि त्रिपदेनाहं व्याप्तयाम् [आक्रमेयं] तावती मे देहीन्युवाच वामनः.
यक पर की हुई थोड़ीसी भी कोशिश पीछे की जानेवाली बड़ी कोशिश की दर देती.	स्वपोऽपि काङ्क्षतो यन्वी महान्तमुत्तरकरणीयं यत्ने श्रावर्तयति.
यह युक्ति भी बहुत देर न ठहरेगी.	इयमीत्युक्तिर्न चिरं स्थास्यति (अधिरास्त्वंडयिष्यते).
वह सबके ऊपर है इसी लिये उसका बचन सयुक्तिक और सोंपपत्तिक भाम होता है.	स सर्वेषां भूर्ध्रि तिष्ठति अत एव तस्य एवः सयुक्तिकं सोंपपत्तिकञ्च भाति.
यह वना बुद्धिमान है मेरे भावार्थ को ही लेकर उसने मेरी आक्रा करदी.	महानयं बुद्धिमान् मद्भावाधमेव पृथीत्वा ममाज्ञामनुष्ठितवान्.
इस दुःखको भाप से कहना मुझे बहुत दुःख देता है.	अस्य दुःखस्य भवते निवेदनं मे मददुःखमावहति.
यह कहना सहल है करना सहल नहीं.	वक्तुं शुकमिदं न तु कर्तुम्.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह पराभव (हार) मेरे दिल में लगे हुए चाणकी नाई हुई.	पराभवोऽयं मम हृदि प्रत्युत्तं शक्यमिवाभवत्.
मुझसे भी इस मामले में चुप चाप नहीं रहा जाता.	मयाप्यस्मिन्विषये न शयानेन स्थायिते.
रामसिंह को तप तपते हुए कितने वर्ष हुए.	रामसिंहस्य कतिपये घत्सरास्तपस्तपतोऽभवन्.
गोविन्द ने अपने पुत्रको आँखों के इशारे से बलाया.	गोविन्दः स्वपुत्रं नेत्रसंज्ञयाऽऽह्वयन्.
वह विषय तो दूर रहे.	आस्तां [तिष्ठतु] तावद्दूरे स विषयः.
बिनाश धर्म वाले विषयों में मन मत दो.	बिनाशधर्मेषु विषयेषु मनो मा संनियेशय.
आप चाहे जैसे इस दास को काम में लगाइये.	भवन्निर्यधेच्छं नियुज्यतामयं दासः.
देवदत्त ने अयने मालिक का नमक हलाल किया जो अपने मालिक के दुश्मनों से लड़कर मारागया.	सफलीकृतभर्तृपिण्डं देवदत्तो यत् स्वस्वामिशत्रुभिस्सह युद्धाग्निधनं गतः.
वह ओरत बाँप हाथ पर मुँह रक्खे हुए बैठी है.	सा स्त्री वामहस्तोपहितवदना तिष्ठति.
सज्जन लोग दूसरों के दोषों को भी गुणपक्ष में लगाते हैं.	सज्जनाः परदोषमपि गुणपक्षे समासेपयन्ति.
मित्र मेरी अर्ज तुमको टालना न चाहिये.	मित्र नार्हेसि त्वं मे प्रणयं विहन्तुम्.
यह उसके गुण और दोषों को छिपाता है.	तस्यायं गुणान्दोषांश्च प्रमाष्टिं (लोपयति).
दायों से गिराई हुई गैद भी ऊपर फो उछलतीही है.	पातितोऽपि कराघातेरुपतत्येव कन्दुकः.
मरना भला अपमान नहीं.	घरं मृत्युर्न पुनरपमानः.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
बाँई और फड़कने से मेरा मन कुछ अनिष्ट की शङ्का करता है.	वामाक्षिस्फुरणात्किमप्यनिष्टमाशङ्कते मे मनः.
यह चौर लानत देकर शहर से निकाला जाता है.	एष चौरः सनिकारं नगरान्निर्वास्यते.
उपाय सफल हो यह अनुमान तो किया जाता है.	उपायस्सफलो भवेदित्यनुमीयते तु.
श्रीमान् विद्वद्भ्यः बालशास्त्री सब शास्त्रों में परम प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए. तेरे दुःख का क्या कारण है यह मुझ से कह.	श्रीमद्विद्वद्भ्यः बालशास्त्रिणः सर्वेषु शास्त्रेषु परां प्रतिष्ठां गताः. किं निमित्तं ते सन्ताप इति मां कथय.
क्यों कीच में ईंट डाली और छोट्टियाई कीच को धोने से न छूनाहीं अच्छा है.	प्रक्षालनादि पङ्क्त्यं दूरमस्पर्शनं धरम्.
यहां आप तशरीफ रखिये आप की क्या जीविका है.	अत्रोपविशत्वार्थ्यः कां वृत्तिमुपजीवति भवान्.
इस काम के करने में उसने पुण्य को बीच रक्खा.	एतत्कार्यकरणे तेन सुरुतमन्तरे भूतम्.
मेरी भेटोंको उसने घड़े प्रसन्न मन से रधीकार किया.	ममोपायनानि स सुप्रीतमनसा (सु-प्रसन्नं) स्वीचकार.
यह धूर्त अपने को पण्डित मानता है.	पण्डितम्मन्योऽसौ धूर्तः.
यह क्या, अक्सर सबही समाजी ऐसे ही होते हैं.	स किम्, प्रायोऽपिल एव सामाजिकाः तादृशाः भवन्ति.
बाँझ, यच्चे होने की यक्षा भारी तर्हीफ को क्या जाने.	नहि वन्ध्या विजानाति गुपी प्रसववेदनाम्.
यह दुःख समाचार तो हो लिया अब अपने घेटों की राजी खुशी कहो.	आस्तां तापद्यं दुःखवृत्तान्तः, अधुना स्वशिदानां कुशलं कथय.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
यह बिना तगमा लिये क्यों फौज से निकलता है.	किमर्थमगृहीतमुद्रः कटकान्निष्कामति.
अपने आदमी के आगे दुःख खुले हुए दर्वाजे की तरह हो जाता है.	स्वजनस्य हि दुःखमप्रतो चिबृत्तञ्चार- मिवोपजायते.
आपकी जो मर्जी हो सो फौजिये.	स्वरुच्या वर्ततां भवान्.
इस जगह से भागजाओ नहीं तो तू मार दिया जायगा.	अपसरास्मात्स्थानान्प्रोचेत्त्वं जीवितेन- वियोक्ष्यसे.
पहिले उसकी अकू में यह बात नहीं आई थी.	इति तस्य बुद्धौ पूर्वं न सञ्जातम्.
दुष्ट सरसों सरीखे दुमरों के पेयों को देखता है और अपने बेल सरीखे पेयों को देखता हुआ भी नहीं बेचता है.	खलः सर्पपमाप्राणि परच्छिद्राणि प- श्यति, आत्मनो चित्त्वमाप्राणि पश्य- क्षपि न पश्यति.
अच्छा मौका तूने खो दिया.	शोभनावसरस्त्वयाक्षिप्तः (त्यक्तः).
राजा लोग तो सेयापर दूर रहो खु- शामदी प्रजामी तो पीछेही लगी चली जाती है.	तिष्ठन्तु तावत्सेवापरा राजानः, प्रजा अपि तु चाटुपरा पृथतो लगति.
तुम्हारी कृपा से मैं कृतार्थ होऊं.	कृतार्थो भूयासं तवानुकम्पया.
उसने जल्दीही सब का सार लेलिया.	अचिरादेव तेन सर्वस्य सारो गृहीतः.
ससार में बड़प्पन या नीचपन मनुष्य को अपनेही कर्तव्य प्राप्त कराते हैं.	लोके गुरुत्वं विपरीताम्बा स्वचेष्टिता- भ्येव नरं नयन्ति.
अपि लोग और घनघासीघन के फलों से अपनी शरीर युक्ति करते हैं.	ऋषयो घनघासिनश्च घन्यफलैः शरी- रवृत्तिं निर्वर्तयन्ति.
तू बहुतही झूठ बोलता है सब तरह से तेराही कसूर है.	त्वं नितान्तमनृतं वदासि सर्वथा तवै- घायं दोषः.
विषय के सुखों में लगे हुए राजा ने अपना जीवन बिताया.	विषयसुखनिरतो राजा जीवितमत्य- याहयत्.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

मूर्खों के लिये उपदेश करना गुस्से का कारण होता है शान्ति के लिये नहीं.

देवदत्त मारेज्वर के उठ नहीं सकता.

चित्रकूट को जानेवाले रास्ते में मैंने अपना मित्र देखा.

अपने घर की तरह यहाँ रहिये.

मेरे आगे उनकी क्या असल है.

भाग्य अपने आप नहीं देता पुरुषार्थ की अपेक्षा करता है.

वह दिलोजान से उस काम में लगा हुआ है.

उसने गंगा में बहुत पुत्र पैदा किया.

अनुकूल अवसर पर इष्टसिद्धि करो.

यह ही मेरा बड़ा भाग्य है कि मेरा पुत्र इस लकड़े से बच गया.

जो धन जाता जानिये आधा दीजे बाँट.

उस की तो मेरे दर्शन सेही आँखों से आसुओं की धार बहने लगी.

इस हालत में मैं तुझ को देख कर डुरी हूँ.

वह कीताप तो मेरे पास है.

पीछे आकर वह इस हाल को सुनाता हुआ.

उसको मैंने अपनी सुक्तियों से निस्सन्देह कर दिया.

इस किताप का मोल सवा रुपया है.

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये.

देवदत्तो ज्वरेणोत्थातुमक्षमः.

चित्रकूटयायिनि घर्तमनि स्वमित्रमहमपश्यम्.

स्वगृहनिर्विंशोपमत्र वस.

क्रियती (का) मात्रा तेषां मत्पुरतः.

न स्वयं वैधमादत्ते पुरुषार्थमपेक्षते.

स सर्वात्मना तस्मिन्कर्मणि व्यापृतः.

स गङ्गायां बहन्पुत्रानुदपादयत्.

अनुकूलेऽवसरे इष्टसिद्धिं कुरु.

इदमेव तावन्मम परमभाग्यं यन्मत्पुत्रोऽस्मान्छकटान्मुक्तः.

सर्वनाशे समुत्पन्नेऽर्धे त्यजति पण्डितः.

तस्यास्तु महशनादेव आबद्धधारमशु प्रावर्तत.

एतदयस्थं त्वां वीक्ष्य दुःखितोऽस्मि.

तत्पुस्तकान्तु भस्मकाशे वर्तते.

पञ्चदित्य स एतद्गुप्तं धावयामास.

तं निर्मुक्तसेदेहमकरवम् स्वयुक्तिभिः.

सपादरूपकं मूल्यमस्य पुस्तकस्य.

चाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>राम के चर्पे वनमें रहे । चौदह चर्पे.</p> <p>मैं तुम्हारे लिये दुःखी हूँ तू अपने आचरण को क्यों नहीं बदलते.</p> <p>मैं तुम्हारेही पक्ष को पुष्ट करता हूँ. ऐसे कष्टों को भी कुछ न समझ कर हरिश्चन्द्र सत्यही मैं रहा.</p> <p>इस काम को सिद्ध करने को वह समर्थ है.</p> <p>बहादुरी में कोई भी मेरे समान नहीं है. आप मेरी प्रार्थना मंजूर कीजिये.</p> <p>औरों के अभ्युदय से हमेशा खुश हो न कि जलो.</p> <p>तुम्हारे दर्शन के लिये मेरा दिल चाहता है.</p> <p>मनुष्यों में पक्षियों से ज्ञानही विशेष है. बहुतसे धनसे यह दौप दूर हो सकता है. घर के जलने पर कूँआ खोदना यह कैसा उद्यम.</p> <p>यह अर्थ विचार के योग्य है. मेरे पिता अब घड़ी हो रहे हैं. राम ज्वर के दूर होने से नीरोता हो गया.</p> <p>इसकी सब कोशिश फामयाव हुई.</p>	<p>कियन्ति चर्पाणि वनेऽवसद्रामः । चतुर्दशसमाः.</p> <p>अहं तव कृते दुःखाकुलोस्मि त्व स्ववृत्तं कथं न परिवर्तयसि.</p> <p>अहं त्वपक्षं समर्थे.</p> <p>एवंविधान्यपि कृच्छ्रान्यविगणय्य हरिश्चन्द्रः सत्य एव स्थितः.</p> <p>तत्कार्यं साधयितुं सोऽलम्.</p> <p>न कोऽपि शौर्येण मम समानः. मम प्रार्थनामनुमन्तुं प्रसीदतु भवान्. अन्येषामभ्युदयेन सर्वदा मोदस्व न तु स्पर्धस्व.</p> <p>उत्ताम्यति मे हृदयं तव दर्शनाय.</p> <p>नरेषु तिर्यग्भ्यः प्रबोध एव विशेषः. भूरिद्रव्येणायं दौपः प्रमाणुं शक्यः. प्रोदिते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः.</p> <p>अयमर्थोऽवेक्षामर्हति. मम पिता जीवितसंशये वर्तते. रामो ज्वरोपशमनाशीरोगः (प्रकृतिस्थः) सञ्जातः. सर्वेऽस्य प्रयत्नाः सफलतां ययुः (फलिताः).</p>

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

हज़ार रुपये में यह घर मैंने खरीदा है।
बहुत से धन से विवाह का विधि की।
इसका मुख सीता के मुख की बराबरी
करता है।

अपनाही भला मत चाहो मनुष्यों का
हित भी तो तुमको अपने मत में
धारण करना चाहिये।

यह पद इस तरह नहीं बनता है।

ज्योतिषी जन्मपत्री में शुभ, अशुभ
विचारता है।

जब साहब ने हुकम दिया कि यह
चौर शूलों पर चढ़ाना चाहिये।

च्यवनजी के लिये मेरी नमस्कार
फहना।

कृष्णदत्त ने भाई के अचिनय आचरण
को पिता से नियेदन किया।

रामदत्त जवर्दस्ती मुझ नचाहते हुए
को भी पूछने के काम में लगता है।

इसी युक्ति से तुला जवाब किया।

जो करना है वह विचार कर करो।

अज (राजा का नाम) के मार्ग को
रोक कर रड़ा हो गया।

मैं इन तरीकों से पावन्द नहीं हूँ।

तुम्हें जो बुझाने पालन जरूरही करना
चाहिये।

सहस्ररूपकेनेदं गृहं मया कृतम्,
बहुधनव्ययेन निष्पादितो विवाहविधिः।
अस्य मुखं सीताया मुनेन सम्यदति।

स्वहितपरायणो मामूः जनहितमपि
तावत्स्यया मनसि धार्य- (अवक्षणे-
यं) मेव।

इदं पदमेवं न सम्बध्नाति।

ज्योतिर्विज्जन्मपत्रिकायां शुभाशुभं प-
र्यालोचयति।

शूलमारोप्यतामसौ चौर इतिदण्डः
समादिष्टो न्यायकारिणा।

च्यवनाय मदयो नमस्कारो वाच्यः मां
प्रणिपस्यत।

कृष्णदत्ते भ्रातुरचिनयाचरणं पिले न्य-
वेदयत्।

घलादिनिलन्तमपि मां प्रणकर्मणे
नियोजयति रामदत्तः।

अनया युक्त्यैव निगृहीत (निरुत्तरी-
कृतः) स्त्वम्।

यत्कर्तव्यं तस्मिन्दय (समीक्ष्य) कुरुत।
आवृत्य पन्थानमजस्य तस्थौ।

नाहमेभिर्विधिभिर्नियन्त्रितोस्मि।

त्वया बुद्धमपोपणमयदयमेव कतेन्यम्।

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>कौप की तरह पिटभरून होना चाहिये। वह फिर भी अपने काम में मन लगाता हुआ.</p>	<p>काकचदुदरम्मरिण मा भवितव्यम्. स पुनरपि स्वकार्ये मनो न्यदधात् (न्यवेशयत्).</p>
<p>भक्त गोविन्दराम कृष्ण की कथाओं से दिन को बिताता है.</p>	<p>गोविन्दरामो भक्तः कृष्णकथाभिर्दिव- समतिचाहयति.</p>
<p>जब परशुराम की बहुत इलाज करने पर भी रोग शान्ति न हुई तब जंग होनहार है सो होउ ऐसा कह कर वह भाग्य पर छोड़ दिया.</p>	<p>यदा परशुरामस्य बहुचिकित्सानन्तर- मपि रोगशान्तिर्नाभूत्तदा यद्भावि तद्भवतु इत्युक्त्वा स परित्यक्तः (दैवाधीन-कृत).</p>
<p>सब गुणों को छोड़ कर स्वभाव सिर पर रहता है.</p>	<p>गुणान्कृतस्तान्परित्यज्य स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते.</p>
<p>शिवकी सती की परित्याग रूपदारुण प्रतिज्ञा संसार में प्रसिद्ध हुई.</p>	<p>शिवस्य सतीपरित्यागरूपा दारुणा प्रतिज्ञा लोके प्रसिद्धाऽभूत् (लोके प्रकाशतां गता).</p>
<p>सम्पत्तियाँ आपत्तियों का स्थान हैं. प्रमाण का भोजन ही सुख का हेतु है. तेजस्वियों की अवस्था नहीं देखी जाती है.</p>	<p>सम्पदः पदमापदाम्. मितभोजनं हि सुखहेतुः. तेजस्विनां न वयः समीक्ष्यते.</p>
<p>वे अपने काम को भली प्रकार करते हुए.</p>	<p>ते स्वकर्म साधु निरयाहयन्.</p>
<p>यह दूसरा गंडस्थल पर फोडा हुआ, (फोड़में राज का होना)</p>	<p>अयमपरो गण्डस्थलोपरि विस्फोटः.</p>
<p>तुम्हारा वचन बिलास कब बुयेके हे. भाई से बैर रखने वाले उसकी मदद करो. यम्बई में मेरा रहना तन्दुरुस्तीदह नहीं है.</p>	<p>तव वचनं न सन्देहास्पदम्. भ्रातरि वदधैरस्य तस्य साहाय्यं कुरु. मुम्बापुरनिवासो ममारोग्याय न कल्पते.</p>

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

खयाली पुलाव मत पकाओ.

बस इतनी ही खातिर मुझसे आपकी होसकी है, बस मेरी तो इतनी ही सामर्थ्य है.

एक रुपया थी का पांच पुस्तकों के और चौदह तनप्वाह के ऐसे मिलाकर मुझे २०) रुपये दो ।

दर्या के वेग से लाई हुई मिट्टी पुलिन कहलाती है.

तुम्हारा उद्योग मेरे उद्योग का सौधाँ हिस्सा भी नहीं है.

मेरे लिखे का जबाब भेजो.

यह मेरी इष्ट सिद्धि के लिये हो.

इस मामले में आप को मुन्सिफ़ बनाता हूँ.

रामदत्त अपने मुकद्दम में अपील चाहता है मगर कोई गवाह नहीं है.

धोलागणों की प्रशंसा की याणी कहने पर भाई के कन्धे पर हाथ रख कर कहने को उठ खड़ा हुआ.

यह उद्योग ठीक नहीं कोई दूसरी तरफ़ करनी चाहिये.

इन दोनों का झगड़ाही मुझे अच्छा नहीं लगता और न तेरे बचन की सार्द करता हूँ.

आलसी बालक अक्सर दुराचार्य होतेहैं.

गगनपुष्पाणि मा चिनुहि,

भाकाशे मन्दिरं न निर्मापय.

एतावान्मे विभवो भवन्तं सेवितुम्.

एको रूपको घृतस्य पञ्च पुस्तकानां चतुर्दशचेतनस्येत्थं पिण्डीकृत्य मह्यं विशति रूपकान्देहि.

नदीरयसमाहता मृत्तिका पुलिनमित्यभिधीयते.

तत्र व्यवसायो ममोद्योगस्य शततमीमपि कलां न स्पृशति.

मम लेखस्योत्तरं प्रहिणु (प्रेषय.)

इदं म इष्टसिद्धये कल्पेत.

अत्र विषये भवन्तं प्रमाणीकरोमि.

रामदत्तः स्वविषये पुनर्विचारं प्रार्थयते परञ्च न कोऽपि साक्ष्युपतिष्ठति.

उच्चैः प्रशंसायाच उदीरयत्सु धोलापुसन्नातुरंशे हस्तनिवेश्य स वक्तुमुदतिष्ठत्.

अनेनोद्योगेनालं कोऽपरो नियोगोऽनुष्ठियताम्.

एतयोर्विवाद एव मे न रोचते, न चापिते वचोऽभिनन्दामि.

अलसा बालकाः प्रायो दुर्वृत्ता भवन्ति.

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

उसका क्रम कैसे बढ़ा करना चाहिये यह भी तो सांच.

सब बाकी क्रम को नियत दूगा. जीवधारियों को विपत्ति मंजूद है.

अथ "लौकिकन्यायमंत्रह" से निकाले हुए लौकिकन्याय वर्णन किये जाते हैं पहिली-अन्धे और हाथी की कहावत.

अस्तित्व से नहीं जाना है शास्त्र का अभिप्राय जिन्होंने ऐसे वादी लोग अपनी २ अङ्ग से कल्पना की हुई बातों को ही सिद्धान्त मानते हुए आपस में झगड़ा करते हैं वहाँ अन्ध गजन्त्याय प्रवृत्त होता है। जैसे कितने एक जन्मांध किसी सूझते हुए पुरुष से बोले कि हमको हाथी दिखाओ। सूझता आदमी उनको हाथीखाने में ले जाकर हरेक हाथी के अंग को हरेक से पकड़वा कर बोला कि यह हाथी है तब वे लोग उनी २ गज के अङ्ग को ही हाथी निश्चय कर अपनी २ जगह आकर खूब के बराबर गज होता है ऐसा कान का छूने वाला, मूसल सा हाथी होता है ऐसा सँड का छूनेवाला, खम्मे सा हाथी होता है ऐसा जांघ पकड़ने वाला और विष्टैरे सा हाथी

तस्य क्रमं कथं प्रतिदेयमित्यपितु विचिन्तय.

सर्वं मवाशिष्टेयं परिशोधयिष्यामि. विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता.

अथ लौकिकन्यायसङ्ग्रहाद्बुद्धृतानि लौकिकन्यायानि वर्णयन्ते. १ प्रथम. अन्धगजन्त्यायः.

याथाथ्येना विदितशास्त्रामिप्राया चादि-त', स्वस्वबुद्धिकल्पितानर्थनिवृत्ति-दान्त मन्यमानाः परस्परं विवदन्ते तत्रान्धगजन्त्यायः प्रवर्तते यथाकेचि-जन्मान्धाः कञ्चिदनन्धं पुरुषमूचु-रस्मान्गजं प्रदर्शयेति। अनन्धस्तान् गजशालायां नीत्वा प्रत्येकं गजाध-यवं तेन तेन ग्राहयित्वावाचायं गज इति। ततस्ते न तं गजावयवमेव गजं निश्चित्य स्वस्वानामगत्य सूर्यसदृशो गज इति कर्णस्पर्शी, मुशलसदृशो-गज इति शृणुवास्पर्शी, स्तम्भतुल्यो गज इति जङ्घामाही करीपरशिखमो गज इति पृष्ठस्पर्शी स्थूलरज्जुतुल्यो गज इति पुच्छग्राहीति मिथः कलह चक्रुः

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

होता है ऐसा पीठ झूने वाला, मोटी रस्सी सा हाथों होता है ऐसा पूंछे पकड़ने वाला, आपस में झगड़ा करते हुए.

दूसरी—“कूप के मैडक की कहावत”

दूसरे के मजहब के न जानने वाले और उस में दोष निकालने वाले कूप के मैडक के नाई इसी के पात्र होते हैं.

जैसे कोई समुद्र का मैडक किसी प्रकार उस के किनारे के कूप में घुस आया, वहाँ उसको अजनबी मान कर कूप के मैडक ने पूछा कि आप कहाँ से आये हैं । ‘समुद्र से’ यह बचन सुनकर उसने पूछा कि यह कितना होता है उस (समुद्र मण्डक) ने जवाब दिया कि ‘बड़ा होता है’ तो कूप के मैडक ने अपनी जाँघ फैलाकर कहा कि क्या यह इतना है, ‘मर्दों बहुत ही बड़ा’ यह सुन कर दूसरी जाँघ भी फैलाकर बोला कि तो इतना होगा फिर भी उसने मनाकिया तब तौसरा और चौथा जाँघ फैलाकर ओर डेढ़ हाथ उछल कर पूछता हुआ क्या इतना होता है, तौसरी उसने मनाकिया तो फिर बोला कि हहहै कूप सा होगा

द्वितीयः कूपमण्डकन्यायः.

अन्वमतानभिधास्तद्वृषणपराः कूपमण्डकशेषहासारूपदा भवन्ति.

यथा कश्चित्समुद्रमण्डकः कथञ्चित् तत्सौरस्यकूपे प्रविष्टस्तत्रतमपूर्वं मत्वा कूपमण्डकोऽपृच्छत् कुत आगतो भवान् इति. समुद्रादिति वचनं श्रुत्वा कियान् न इति पृष्टवान् महा-निति तेन प्रत्युक्तः तर्हि कूपमण्डकः स्वजहां प्रसार्योवाच किमेतावान्सः, नहि महत्तमः, तच्छ्रुत्वा द्वितीयमपि जहां प्रसार्य तद्धेतवान् भविष्यतीत्युवाच पुनरपि तेन निराकृतः, ततस्त्वृतीयां तुरीयां जहांच प्रसार्योत्स्य प्रादेशचितस्तिहस्यपरिमितं देश किमेतावानिति पृच्छंस्तेन निरस्तः तर्हि कूपसदृशो भविष्यतीत्युवाच, न हि भ्रातः सह सरितापतिरनघगाष्टगाम्भीर्योऽल-श्वपाराचरोऽतीवमहत्तमः इतितेन प्रत्युक्तः, तर्हि नास्त्येव स यः कूपा-

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

तो उसने फिर जवाब दिया “ कि नहीं भाई वह नदियों का स्वामी गहराई की चाह न देनेवाला बार पार न दिराई देनेवाला बहुत ही बड़ा है, तो वह कुछ नहीं है जो कूप से भी बड़ा है तू तो झूठही बोलता है इस प्रकार उसको झूठा बनाता हुआ इसे सुनकर समुद्र का मंडक अपने मन में उसपर हंसा.

दपि महत्तमस्त्वं तु मिथ्यैव प्रलप-
सीति तं निराचक्रं तच्छ्रुत्वा समुद्र-
मण्डूकः स्वमनसि तं हसितवा-
निति.

३ “ राजा और नारी के घंटे की कहावत.
अन्धा घंटे रेवड़ी फिर २ घरको कोही
देय. घ
कूकरी को कूकर प्यारा शूकरी को
शूकर.

३ तृतीयः नृपनापितपुत्रन्यायः.

पूर्व जन्म के संस्कार जन्य प्रेम के अ-
धिक होने से अति तुच्छ भी देवना
में हरिहर आदिकों को छोड़ कर
सर्वोत्तमत्व बुद्धि होती है जैसे कोई
नारी ‘प्रातःकाल सय नगर में दूढ़-
कर बहुतही सुन्दर बालक मेरे दर्शन
के लिये लाओ’ राजा से यह आज्ञा
दिया गया । वह नारी खेदे उठकर
सय नगर में तलाश कर और वहां
बड़े २ सुन्दर बालकों को देख कर भी
अपने घंटे के बराबर न मान कर
उसी को राजा के घर ले जाकर

जन्मान्तरीयसंस्कारजन्यरागातिशय-
घशात् अतिक्षुद्रेऽपि देवे, हरि-
हरादीन्परित्यज्य सर्वोत्तमत्वधीर्भ-
वति यथा कश्चिन्नापितः प्रातः सर्व
पुरमन्विष्यातीवरम्यो बालो मे दर्श-
नाय त्वयाप्राणैः इति नृपेणाज्ञप्तः ।
स नापित प्रातःकथायात्पिल पुरम-
न्विष्य दृष्ट्वापि च तत्र तत्रातिरम्या-
न्बालान्स्वसुतसमानानामत्या तमेव
राजवेदमनि नात्वा राज्ञे निवेद्यामा-
स स्वामिन्नानीतोऽयं रम्यतमो बाल
इति ।

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

राजा से निवेदन करने लगा कि स्वामी सय से सुन्दर ये बालक ले आया।

राजा उस लड़के को बुधे हुए अंगारे के समान, काणा, गङ्गा, लट्टे हुई यांह और जघा वाला भोर बड़े और लम्बे पेटवाला देख कर 'यह दुष्ट मेरी हसी करता हुआ' ऐसा मान कर गुस्सा होगया और फहने लगा कि भेर राजा यह क्या है । नाई राजा को बुद्ध देख कर हाथ जोड़ कर बोला । हे राजाधिराज ! मैं आपका चरण पकड़ता हूँ यह हंसो नहीं है बल्कि मेरे दिल में यही निश्चय है कि ऐसा [सुन्दर बालक] त्रिलोकी में नहीं है आपकी नगरी की तो क्या बात है । राजा, माह रूपी ग्रह से पकड़े हुए चिसशालों की यही हालत होती है यह मान कर कोप त्यागता हुआ यह दुनिया की कहावत है ।

शैशो- 'अंधे के हाथ घंटेर' कहावत है, जैसे अज्ञानक अंधे के हाथ आई हुई चिड़िया अंधे ने पकड़ली यह लोक में मशहूर होगई तैसेही भाग्य ने प्राप्त किया जो अभीष्ट है उसे अपने

राजा च तमुपशान्तानलाद्वारामं कापं खन्वाटं वृशहस्ववाहुजह्वं स्थूललम्बोदरं दृष्ट्वोपहासमयं यलः कृतवान्मयीति मत्वा चुकोप, उवाच च रे जाल्म किमिद्रमिति । नापितश्च कुपितं नृपं ज्ञात्वा कृताञ्जलिभूत्वोवाच राजेन्द्रमैले ! तत्र चरणमुपालभे नाथमुपहासः किन्तु मे मनसीत्यमेव निश्चयो यन्नास्तीदृक्त्रिलोक्यां तव पुण्यास्तु का कथा । राजा च सत्यमीदृश्येव रागग्रहवृहीतचित्तदशेति मत्वा कोपं तत्याजेति लौकिकी गाथा ।

४ चतुर्थः अन्धचटकन्यायः ।

यथाऽकस्मादन्धस्य हस्ते पतितश्चटकोऽन्धेन गृहीत इति लोके प्रसिद्धिमगात् तथा देवाहन्धमभीष्टं स्वेषु देवादिदत्तं मन्यन्तेऽयुधाः ।

बाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविज्ञेयाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>दृष्ट देवादि से दिया हुआ अज्ञानी मानते हैं.</p>	
<p>पाँचवाँ 'घुणाक्षरन्याय' है. जैसे घुन [फोड़े] में गाये हुए काष्ठादि में अचानकही ककारादिनुलय छिद्रहो जाने पर घुनने अक्षर बनाये हैं ऐसा अज्ञानी लोगों से मान लिया जाता है.</p>	<p>५ पञ्चमो घुणाक्षरन्यायः. यथा घुणेन भक्षिते काष्ठादावकम्मात्कारादिसदृशाच्छिद्रेषु सत्तनु घुणे नाक्षराणि निर्मितानीति कल्प्यतेऽ- बुधैः.</p>
<p>छटा- 'मैंडक के तोलने की कहावत' साफ है.</p>	<p>षष्ठः मण्डकतोलनन्यायः (स्पष्टः)</p>
<p>सातवाँ- 'छेदवाले घड़े में जल की कहावत' साफ है.</p>	<p>सप्तमः सच्छिद्रयटाम्बुन्यायः (स्पष्टः)</p>
<p>जहाँ फिजूलही परिश्रम हो और कुछ मतलब न सिद्ध हो वहाँ ये दोनों न्याय प्रवृत्त होते हैं.</p>	<p>यत्र वृथैवपरिश्रमः स्यात् न काचिद्भी- ष्टसिद्धिस्तत्रोपरोक्तौ द्वौ न्यायौ प्रव- र्तते.</p>
<p>जैसे कुछ तोलने के लिये कुछ मैंडकों को तराजू में रक्खा तो दूसरे उछल कर चले गये, तैसेही और २ जगह भी जानना.</p>	<p>यथा केपुचिद्दुरेष्वभीष्टमानपूर्व्यर्थं तुलायामारोपितेष्वन्ये उत्सृत्य ग- च्छन्ति तथा प्रकृतेऽपि.</p>
<p>८ "बूढ़ी धारी के चाफ्य की कहावत,, जहाँ एकही बात या काम से सब मनोरथों की सिद्धि होजाय, वहाँ ऊपर कही हुई कहावत काम में आती है। जैसे किसी बूढ़ी अनव्याही स्त्री से इन्द्र ने कहा कि घर मांग। उसने घर</p>	<p>अष्टमः वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः. यथैकैव क्रिययाखिलाभीष्टसिद्धिः स्यात् तत्रोपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते । यथा काचिद्वृद्धकुमारी इन्द्रेणोक्ता घरं घृणीष्व सा च घरमघृणीत "पुत्रा मे घृक्षीरघृतमोदनं कांस्य-</p>

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

राजा से निवेदन करने लगा कि स्वामी सच से सुन्दर ये बालक ले आया.

राजा उस लड़के को बुझे हुए अंगारे के समान, काणा, गज्जा, लटो हुई बांह और जघा धाला और बड़े और लम्बे फेटवाला देण कर 'यह दुष्ट मेरी हसी करता हुआ' ऐसा मान कर गुस्सा होगया और कहने लगा कि और पाजो यह क्या है । नाई राजा को दूध देण कर हाथ जोड़ कर बोला । हे राजाधिराज ! मैं आपका चरण पकड़ता हूं यह हंसी नहीं है बल्कि मेरे दिल में यही निश्चय है कि ऐसा [सुन्दर बालक] विलोकनी में नहीं है आपकी नगरी की तो क्या बात है । राजा, मोह रूपी ग्रह से पर्वड़े हुए चित्तवालों की यही हालत होता है यह मान कर कोप त्यागता हुआ यह दुनिया की कहावत है .

श्रीश्री—'अधे के हाथ बटेर' कहावत है, जैसे अचानक अधे के हाथ आई हुई चिड़िया अधे ने पकड़ली यह लोक में मराहूर होकर तैसेही भाव्य ने प्राप्त किया जो अभीष्ट है उसे अपने

संस्कृत ।

राजा च तमुपशान्तानलाद्वारागं वाणं खलवाटं वृशहस्थवाहुजर्हं स्थूललम्बोदरं दृष्ट्वापहासमयं खलः कृतवान्मयीति मत्वा चुकोप, उवाच च रे जाल्म किमिदमिति । नापितश्च कुपितं नृपं ज्ञात्वा, कृताञ्जलिभृत्योवाच राजेन्द्रमौले ! तव चरणमुपा लभे नायमुपहासः किन्तु मे मनसोत्थमेव निश्चयो यदार्त्तादृक्त्रिलोक्यां तथा पुर्व्यास्तु का कथा । राजा च सत्यमोदश्येव रागग्रहशृहीताचित्तदशेति मत्वा कोपं तत्याजेति लौकिकी गाथा.

४ चतुर्थः अन्धचन्द्रकन्यायाः.

यथाऽकास्मादन्धस्य हस्ते पतितश्चन्द्रकोऽन्धेन शृहीत इति लोके शसिद्धिमगात् तथा देवाहन्धमर्भाष्टं स्वप्नदेवादिदत्तं मन्यन्तेऽपुधाः.

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

इष्ट देवादि से दिया हुआ अज्ञाने मानते हैं.

पाँचवाँ 'घुणाक्षरन्याय' है.

जैसे घुन [कीड़े] से चाये हुए काष्ठादि में अचानकही कफारादितुल्य छि-
द्रहो जाने पर घुनने अक्षर बनाये
हैं ऐसा अज्ञानी लोगों से मान लिया
जाता है.

छटा—'मैंडक के तोलने की कहावत'
साफ है.

सातवाँ—'छेदवाले घड़े में जल की क-
हावत' साफ है.

जहाँ किजूलही परिश्रम हो और कुछ
मतलब न सिद्ध हो यहाँ ये दोनों
न्याय प्रवृत्त होते हैं.

जैसे कुछ तोलने के लिये कुछ मैंडकों
को तराजू में रक्खा तो दूसरे उ-
छल कर चले गये, तैसेही और
२ जगह भी जानना.

८ "बूढ़ी कारी के चाक्य की कहावत,,
जहाँ एकही बात या काम से सब मनो-
रथों की सिद्धि होजाय,वहाँ ऊपर
कही हुई कहावत काम में आती है।
जैसे किसी बूढ़ी अनन्याही स्त्री से
इन्द्र ने कहा कि धर मांग।उसने धर

५ पञ्चमो घुणाक्षरन्यायः.

यथा घुणेन भक्षिते काष्ठादावकस्मा
त्कफारादिसदृशाच्छिद्रेषु सत्सु घुणे
नाक्षराणि निर्मितानीति कल्प्यतेऽ-
बुधैः.

षष्ठः मण्डकतोलनन्यायः (स्पष्टः)

सप्तमः सच्छिद्रघटाम्बुन्यायः (स्पष्टः)

यत्र वृथेषपरिश्रमः स्यात् नकाचिद्भी-
ष्टसिद्धिस्तत्रोपरोक्तौ द्वौ न्यायौ प्रव-
र्तते.

यथा केपुचिद्दुर्देव्यभीष्टमानपूर्वथं
नुलायामारोपितेष्वन्ये उत्प्लुत्य न-
च्छन्ति तथा प्रकृतेऽपि.

अष्टमः वृद्धकुमारीवाक्यन्यायः.

यत्रिकथैव क्रिययाग्निलामीष्टसिद्धिः
स्यात् तत्रोपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते ।
यथा काचिद्वृद्धकुमारी इन्द्रेणोक्ता
वरं वृणीष्व सा च वरमवृणीत
“पुत्रा मे बहुशीरघृतमोदनं कांस्य-

वाक्की क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

मांगाकि "मेरे पुत्र बहुतसा दूध घी भात कांसे के बर्तनों में स्ताया करे" इसने एकही वाक्य से पति, पुत्र, गौ, धन और धान्य सबही मांगलिये ऐसेही और जगह भी.

९ "कीड़े और विरोरी की कहायत"

जैसे कीड़ा विरोरी से पकड़ा हुआ उसी को हरवक्त ध्यान करता हुआ उस कीही शकल बन जाता है वैसेही हरिभक्त प्रेम से वाद्वेप से उस ईश्वर को ध्यान करते हुए उसी के रूप में लीन हुए और भागे होंगे.

१० "बेल और गंजे की कहायत".

कमवक्त सब जगह ही दुःख पाते हैं यह जहाँ जाहिर किया जाता है वहाँ यह कहायत होती है भर्तृहरि राजा की नीचे लिपी कहन इस कहायत को स्पष्ट करता है.

"सूर्य की किरणों से सिर में सन्तापित हुआ कोई गंजा छायाकी जगह चाहता हुआ भाग्यबदा ताड़ के नीचे गया वहाँ भी शीघ्रही एक गिरे हुए बड़े फल से आवाज के साथ खोपड़ी गिर गई, अक्सर जहाँ मन्दभागी जाता है वहाँ आपत्ति जाती है.

११ नरथ कौगन को भारती क्या ?

संस्कृत ।

पाश्यां भुञ्जीरश्रिति" अनया एकैनेव वाक्येन पतिः पुत्राः गावो धनं धान्यं सर्वमेव संगृहीतम्भवति इत्य प्रकृतेऽपि.

नवमः कीटभृङ्गन्यायः

यथा कीटो भृङ्गेण गृहीतस्तमेव प्रतिक्षणमभिध्यायन् तत्स्वरूपतामेति तथाहरिभक्ताः प्रेम्णा द्वेषेण वा तन्मीश्वरं ध्यायन्तस्तत्स्वरूपतां गता यास्त्यन्तिचेति.

दशमः विल्वखल्व्वाटन्यायः.

दत्तभाग्यास्सर्वत्रैव दुःखमनुभवन्तीति यत्र सूच्यते तत्रायं न्यायः प्रवर्तते भर्तृहरिकिरणं न्यायं निम्नपथेन स्पष्टीकरोति.

खल्व्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः सन्नापितो मस्तके, वाञ्छन्देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः; तत्राप्याशुमहाफलेन पतता भारं सशब्दं शिरः, प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः.

एकादशः नदि करकङ्कणदर्शनायादशोपेक्षत न्याय.

घाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवशिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
प्रत्यक्ष प्रमाण में यह कहावत इस्तेमाल होता है.	प्रत्यक्षप्रमाणे उपरोक्तो न्यायः प्रयुज्यते.
<p>१२ मरे को मारना.</p> <p>१३ पानी को मथना.</p> <p>१४ कौए के दान्त जाँचना.</p> <p>१५ गधे के रोम गिनना</p> <p>१६ रस्सी और साँप की कहावत.</p> <p>भ्रम से जहाँ उलटा दिखलाई देखा है वहाँ यह कहावत होती है ! जैसे साँप में रस्सी का भ्रम और रस्सी में साँप का भ्रम । ऐसेही और जगह भी.</p>	<p>द्वादशः मृतमारणन्यायः.</p> <p>त्रयोदशः जलमन्थनन्यायः.</p> <p>चतुर्दशः काकदन्तपरीक्षान्यायः.</p> <p>पञ्चदशः गदभरोमगणनन्यायः.</p> <p>षोडशः रज्जुसर्पन्यायः.</p> <p>यत्र विपरीताभासो भवति तत्रायं न्यायः प्रवर्तते । यथा सर्पे रज्जु-भ्रान्तिः रज्जौ सर्पभ्रान्तिस्तथा-प्रकृतेऽपि.</p>
<p>१७ "कौए की आँख की कहावत"</p> <p>जैसे कौए की एकही आँख दोनों आँखों से सम्बन्ध रखती है तैसे और जगह भी जगह भी.</p>	<p>सप्तदशः काकाक्षिन्यायः.</p> <p>काकस्यैकमेव चक्षुरिन्द्रियं गोलैकद्वये यथा सम्बन्ध्यते तथा प्रकृतेऽपि.</p>
<p>१८ जो अक्षर में रण्डा का विवाह हो तो पहिलेही फ्यों नहो । जो करना वह पहिलेही करना चाहिये इस मतलब में यह कहावत होती है.</p>	<p>अष्टादशः अन्त्ये रण्डाविवाहश्चेदादा-धेय कुतो न सः यत्कर्तव्यं तत्पूर्व-मेव करणीयमित्यभिप्रायेऽयं न्यायः प्रवर्तते.</p>
<p>१९ जितनी सम्पत्ति उतनी विपत्ति.</p> <p>या जितना सिर उतनी तर्झीफ</p>	<p>एकोनविंशः यावच्छिरस्तावती शिरो-वेदानान्यायः स्पष्टः.</p>
<p>२० "सुर और फड़ाह की कहावत"</p> <p>अनेक व्याख्येय वाक्य और पदों में पहिले पढा हुआ वाक्य या पद जिस-</p>	<p>विंशः सूचीकटाहन्यायः.</p> <p>अनेकेषु वाक्येषु पदेषु वा व्याख्येयेषु प्रथमपठितमपि वाक्यं पदम्वा बहु-</p>

वाकी क्रिया इत्यादि का वर्णन—अवनिष्टक्रियाविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

मे बहुत देर लगे उस छोड़कर बीच-
में या अन्धोर में पड़ा हुआ थोड़ा देर
में व्याख्या किये जानेवाला वाक्य
या पदहो पहिले कहा जाता है वहाँ
यह कहावत है.

जैसे लुहार के पास पहिले कोई कड़ाह
बनवाने वाला आया पीछे सुई बन
वाने वाला भा मौजूद हुआ, तहाँ
जैसे लुहार पहिले बनाने योग्य क-
ड़ाह को: बहुत देर में बनने के कार-
ण, छोड़ कर पीछे बनाने को आई
हुई थोड़े काल में बनाने योग्य सुई
को पहिले बनाता है तैस्सेही और र
यातों में समझना.

इसो सबी ऊँट और लठिया की कहावत है
अपने मत में दूसरे से आरोपण किये
हुए दूषण उसीके मत में डाल दिये
जाए वहाँ यह कहावत होती है.

जैसे ऊँट से लेजाई हुई लठियों से
ऊँटही स्वयं पिटाता है । तैस्से नैया-
यिकों के उठाये हुए दोषों से उन-
का मतही वेदान्तियों से काट दिया
जाता है.

चारसयों मुर्दे के उबटने की कहावत.

तेईसयों अन्धे को दर्पण की ,,
चौबीसयों कुत्ते की पूंछ को सीधा करना.

वक्तव्य परित्यज्य मध्येऽन्ते वा प-
टितं स्वल्पवक्तव्यं पूर्वस्याख्याय-
तेऽत्रायं न्यायः प्रगुज्यते.

यथा लोहकारमग्निं पूर्व कश्चित् कटा-
होत्पादनार्थी आगतः पश्चात्सूच्यु-
त्पादनार्थी प्राप्तः, तत्र यथा लोह-
कारः प्रथमं कर्तव्यत्वेन प्राप्तमपि
कटाहं बहुकालसाध्यत्वात्परित्यज्य
पश्चात्कर्तव्यतया प्राप्तमपि स्वल्प-
कालसाध्यं सूचीं पूर्वमुत्पादयति
तथा प्रकृतेऽपि.

एकविंशः उपूलगुडन्यायः.

स्वमते परेणोद्गाढ्यमानानां दूषणानां-
तन्मत एव पातनेऽयं न्यायः प्रव-
र्तते.

यथोद्वेगोऽमानेनैव लगुडेन तत्प्रहारः
क्रियते तथा तार्किकोऽथापितदूषणै-
स्तन्मतमेव वेदान्तिभिर्निराक्रियते.

ठाविंशः शबोद्धर्तनन्यायः.

अथोविंशः अन्धदर्पणन्यायः.

अनुविंशः श्यपुच्छोऽग्रामनन्यायः.

फहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

पच्चीसचीं वन में रोने की कहावत,
छन्वीसंचीं वहिरे के कान में जप की
कहावत.

यह पाचों न्याय कहावत फिज़ूलपन
बाहिर करता है.

सत्तार्दसचीं मक्खी और जोंक की
कहावत.

स्वभाव से सब आदमी अपनी इष्ट
वस्तुही को लेता है जैसे मक्खी
सब देह को छोड़ कर घाव परही
बैठती है और खी के दुग्दी पर
लगाई हुई जोंक दूध छोड़ खून को
पीती है तैसेही और २ जगह भी.

२८ हंस दूध की कहावत और सूय की
कहावत है जहां सार मात्रही ग्रहण
किया जाता है वहां ये दोनों कहा-
वत होती है.

जैसे हंस जल को छोड़ कर दूध को
ही लेता है जैसे छाज भुस योगरह
कूड़े को छोड़ कर शुद्ध भद्र को ही
रख लेता है तैसेही जो पुरुष इन
दोनों न्यायों से सज्जनों के गुणों को
ही ग्रहण करता है वही दिम्प भाव
से अङ्गीकार करना चाहिये.

२९ गाये पीछे जात पूछना, या व्याह
पीछे घर की जांच करने की कहावत है

पञ्चविंशः अरण्यरोदनन्यायः.
षड्विंशः चधिरकर्णजापन्यायः.

एतन्न्यायपञ्चकं वैयर्थ्यद्योतकं.

सप्तविंशः मक्षिकाजलौकान्यायः.

प्रकृत्याखिलो जनः स्वेषु वस्त्वेषु गृहा-
ति यथा मक्षिका सर्वे देहं परित्यज्य
मृणमेवावलम्बते, जलौकाऽपि
स्त्रीस्तनाग्रे लग्ना क्षीरं त्यक्त्वा रु-
धिरं पिवति तथा ग्रहतेऽपि.

अष्टाविंशः हंसक्षीरन्यायः, शूर्पन्या-
यश्च यत्र सारमात्रमेव गृह्यते तत्रै-
तो न्यायो प्रवर्तते.

यथा हंसः जलं त्यक्त्वा क्षीरमेव गृ-
ह्णाति यथा शूर्पः शुशाचवकरं त्य-
क्त्वा शुद्धमन्नमवशेषयति तथा यः
एताभ्यां न्यायाभ्यां सतां गुणानेव
गृह्णाति स एव दिम्पत्वेन स्वीकार्यः.

एकोनविंशः विवाहानन्तरं वरपरीक्षा-
न्यायः.

कहावत इत्यादि का वर्णन—लौकिकविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>शिष्य और वैराग्य वर्गरह की परीक्षा अब्बल ही करना चाहिये क्योंकि विवाह के पीछे दुल्ह की जांच नहीं होती.</p>	<p>शिष्यवैराग्यादिपरीक्षा चादावेव कर्तव्या यतः नहि विवाहानन्तरं घरपरीक्षा भवतीति.</p>
<p>३० कल करे सो आज कर यह कहावत साफ़ है.</p>	<p>त्रिंशः श्वः कर्तव्यमथ कुरु न्यायः स्पष्टः.</p>
<p>३१ जूँ के डर से कथरी छाँड़ना साफ़ है.</p>	<p>एकविंशः यूकामिया कन्यात्यागन्यायः स्पष्टः.</p>
<p>३२ कैमुतिकन्यायः जब सदाशिव सम्पूर्ण पापयुक्त शरणागतों को मो बन्धन से छुड़ाते हैं तो शरणागत धोड़े पापियों या साधुओं को छुड़ा दें इस में तो कहनाही क्या है.</p>	<p>द्वात्रिंशः कैमुतिकन्यायः. यदि सदाशिवोऽखिलपापयुतानपि शरणागतान् यन्त्रनान् मोचयति तदाख्यपापान्वितान्माधुन्वा शरणागतान् मोचयतीति किमुचकर्म.</p>
<p>शिष्य जरूर जांचलेना चाहिये क्योंकि कुत्ते की खाल में रक्खा हुआ गी का दूध इस कहावत से असतपात्र में अच्छा उपदेश भी अपवित्र हो जाता है.</p>	<p>अथभ्यं परीक्ष्यश्च शिष्यः यत्ने नहि पथिभ्रं म्याद्दोक्षीरं श्वहती भृतमिति न्यायेन असतपात्रे सदुपदेशोऽप्यपवित्रतां याति.</p>
<p>इसी प्रकार शिष्य से भी शाल ज्ञान करकेही परम शील सम्पन्न दुयालु, शाल वेत्ता, अद्वैत निष्ठ गुरु करना चाहिये.</p>	<p>एवं शिष्येणापि यथाशक्तं परीक्ष्यैव परमशीलसम्पन्नोऽनुदासः श्रोत्रियोऽद्वैतनिष्ठो गुरुराश्रयणीयः.</p>
<p>३३ दर्दारी की कहावत. रङ्ग निश्चय चाहे की ईश्वर की रूप से कार्य निधि होती है.</p>	<p>३३ त्रयस्त्रिंशः टिङ्गिन्यायः. रङ्गाध्ययसायिन ईशानुभवात् कार्यसिद्धि भवतीति.</p>

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

जैसे किसी टिट्टिम नाम के पक्षी के किनारे पर रखे हुए अण्डों को समुद्र अपने लहरों से बहा लेगया। वह पक्षी इस को सुरा दूंगा इस प्रकार प्रवृत्त हुआ उसकी स्त्री आदि से बहुत प्रकार से रोका हुआ भी न माना धरत उनको भी सहायक होने के लिये बुलाया। उनको उड़ने और फिर नीचे आने से बहुधा ह्देश पाते हुए सब को देख कर दयालु नारद उस के पास गरुड़ को भेजते हुए, तब उनके पंखों की हवा से सूपता हुआ समुद्र डरा हुआ अण्डे लाकर पक्षी को देता हुआ,

३४ अहलकार (राज पुरुष) सेवन करने चाहिये और राजा भी सेवन करना चाहिये सिर्फ राजाही नहीं यह कहावत सारु है-

तत्त्व जानने की इच्छा वाले पुरुष से केवल श्रवणही नहीं सेवन करना चाहिये बल्कि उसके अन्न रूप शम दमादि और मननादि सेवन करने चाहिये इसी प्रकार राजा को सेवन करने की इच्छा वाला पुरुष उसके मंत्री वगैरह की भी सेवा करे,

यथा कस्यचिद्विद्विभाष्यस्य पक्षिणः तीरस्थान्पण्डानि समुद्र उल्लेखेनापजहार स च पक्षी एतं शोष्यामीति प्रवृत्तः भार्यादिभिर्बहुधा वार्यमाणोपि नोपरराम । प्रत्युत तानपि सहकारिणो चक्रे। तांश्च पतनेत्पतनाभ्यां बहुधा क्लिशतः सर्वानचलोक्य कृपालुर्नारदः तत्समीपे गरुडं प्रेषयामास ततस्तत्पक्षवातेन शुष्यन् समुद्रो भीतोऽण्डान्यानीय पक्षिणे ददौ।

३४ चक्रं सेव्यं नृपः सेव्यो न सेव्यः केवलो नृपः न्यायः स्पष्टः।

तत्त्वबुभुत्सुना केवलं श्रवणमेव न सेव्यं किन्तु तद्गभूताः शमादयो मनना दयश्च सेव्याः इत्थमेव राजानं सिंघेय विपुस्तन्मन्त्र्यादीनीपि सेवेत।

कहावत इत्यादि का वर्णन—लौकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

शिष्य और वैराग्य वर्गरह की परीक्षा अव्यल ही करना चाहिये क्योंकि विवाह के पीछे दुल्ह की जांच नहीं होती.

३० कल करे सो आज कर यह कहावत साफ है.

३१ जूओं के डर से कघरी छोड़ना साफ है.

३२ कैमुतिकन्यायः

जब सदाशिव सम्पूर्ण पापयुक्त शरणागतों को भी बन्धन से छुड़ाते हैं तो शरणागत थोड़े पापियों या साधुओं को छुड़ा दें इस में तो कहनाही क्या है.

शिष्य जरूर जांचलेना चाहिये क्योंकि कुत्ते की बाल में रक्खा हुआ गौ का दूध इस कहावत से असत्पात्र में अच्छा उपदेश भी अपवित्र हो जाता है.

इसी प्रकार शिष्य से भी शास्त्र जांच करकेही परम शील सम्पन्न दयालु, शास्त्र वेत्ता, अद्वैत निष्ठ गुरु करना चाहिये.

३३ टट्टीरी की कहावत.

टट्टी निश्चय घाले की ईश्वर की रूपा से कार्य सिद्धि होती है.

शिष्यवैराग्याद्विपरीक्षा चाक्षांबय कर्तव्या यतः नदि विद्याहानन्तर घरणरीक्षा भयतीति.

त्रिंशः श्वः कर्तव्यमथ कुर्य न्यायः स्पष्टः.

एकविंशः यूकामिया कन्यात्यागन्यायः स्पष्टः.

द्विंशः कैमुतिकन्यायः.

यदि सदाशिवोऽरिलपापयुतानपि शरणागतान् बन्धनान् मोचयति तदा लपपापान्विनान्साधुन्वा शरणागतान् मोचयतीति कैमुतिकन्यं.

अथम्य परीक्ष्यश्च शिष्यः यत्र नदि पथित्रं स्याद्रोक्षीरं श्वहती धृतमिति न्यायेन असत्पात्रे सदुपदेशोऽप्यपवित्रतां याति.

एवं शिष्येणापि यथाशास्त्रं परीक्ष्यैव परमशीलसम्पन्नोऽनृदासः श्रोत्रियोऽद्वैतनिष्ठो गुरुराश्रयणीयः.

३३ त्रयस्त्रिंशः द्विद्विकन्यायः.

द्विद्विकन्यायसाधिन ईशानुग्रहात् कार्यसिद्धिर्भवतीति.

कहावत इत्यादि का वर्णन-लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

जैसे किसी टिट्टिम नाम के पक्षी के किनारे पर रखे हुए अण्डों को समुद्र अपने लहरों से बहा लेगया। वह पक्षी इस को सुखा दूंगा इस प्रकार प्रवृत्त हुआ उसकी स्त्री आदि से बहुत प्रकार से रोका हुआ भी न माना वरन उनको भी सहायक होने के लिये बुलाया। उनको उड़ने और फिर नीचे आने से बहुधा हंश पाते हुए सब को देख कर दयालु नारद उस के पास गरुड़ को भेजते हुए, तब उनके पंखों की हवा से सूखता हुआ समुद्र डटा हुआ अण्डे लाकर पक्षी को देता हुआ.

३४ अहलकार (राज पुरुष) सेवन करने चाहिये और राजा भी सेवन करना चाहिये सिर्फ राजाही नहीं यह कहावत साफ है.

तत्र जानने की इच्छा वाले पुरुष से केवल श्रवणही नहीं सेवन करना चाहिये बल्कि उसके अङ्ग रूप शम दमादि और मननादि सेवन करने चाहिये इसी प्रकार राजा को सेवन करने की इच्छा वाला पुरुष उसके मंत्री वगैरह की भी सेवा करे.

यथा कस्यचिद्विद्विभार्यस्य पक्षिणः तीरस्थान्यण्डानि समुद्र उतसेकेनापजहार स च पक्षी एनं शोषयामीति प्रवृत्तः भार्यादिभिर्बहुधा चार्यमाणोपि नोपरराम । प्रत्युत तानपि सहकारिणो धत्रे । तांश्च पतनोत्पतनाभ्यां बहुधा ह्विशतः सर्वानधलोक्ष्य कृपालुनारदः तत्समीपे गरुडं प्रेषयामास ततस्तत्पक्षवातेन शुष्यन् समुद्रो भीतोऽण्डान्यानीय पक्षिणे ददौ.

३४ चक्रं सेव्यं नृपः सेव्यो न सेव्यः केवलो नृपः न्यायः स्पष्टः.

तत्रबुभुत्सुना केवलं श्रवणमेव न सेव्यं किन्तु तदङ्गभूताः शमाद्यो मनना दयश्च सेव्याः इत्यमेव राजानं सिपेव यिपुस्तन्मन्यादीनपि सेवेत.

कहावत इत्यादि का वर्णन-लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

३५ सांप छछुन्दर की कहावत.

३६ छुरी खर्वूजे की कहावत.

जहाँ सब तरह से एकही चीज़ का
नुक़सान हो वहाँ यह दोनों कहा-
वतें इस्तेमाल होनी हैं.

जैसे किसी साँपने मूस के घोखे छ-
छुन्दर पकड़ली अब उसकी वू से
जान कर उसको उगलना चाहता
हुआ भी फोड़ के डर से नहीं उग-
लता और अन्धे पनके डर से न
निगलताही है इसी से बड़े संकट
में पड़ा हुआ है (अर्थात् दोनों तरह
से साँपही की हानि है) छुरी जब
खर्वूजे पर गिरे तो भी खर्वूजे काही
नुक़सान और जो खर्वूजा छुरी पर
गिरे तो भी खर्वूजे काही नुक़सान
होता है.

३७ घड़े के भीतर दीपक की कहावत.

जहाँ कहन मात्रही किया जाय अपनी
अङ्ग से कुछ कम ज्यादह नहीं वहाँ,
अथवा तालिबुइल्म को केवल कि-
ताय में ही बोध हो और जगह नहीं
वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है.

जैसे घड़े में रक्ता हुआ दीपक घड़े के
उदर मात्र को ही प्रकाशित करता
है वैसेही और भी जानो.

३५ पञ्चविंशः सर्पसुखुन्दरीन्यायः.

३६ पदत्रिंशः क्षुरिकाचिर्भटिकात्यायः.

यत्र सर्वथा एकस्य वस्तुन एव हानिः
सम्भाव्यते तत्र इमौ न्यायौ प्रय-
तेते ।

यथा केनचित्सर्पेण मूपकध्रमाहीर्यं
तुण्डिका कवलिता अधुना तद्रन्धा
त्तामुज्जिगोर्पुरीप कुष्ठमयाघोद्विरति
अन्धत्वभयात्त गिलस्यवानः महत्स-
ङ्कटे पतितः क्षुरिका यदि चिर्भटिका
कामुपरिपतेत्तदापि चिर्भटिकाया
एव हानिः यदि चिर्भटिका क्षुरि-
कामुपरिपतेत् तदापि चिर्भटिकाया
एव हानिः.

३७ घटप्रदीपन्यायः.

यत्र कथनमात्रमेव प्रियते नतु न्यूनाधि-
क्यं स्वयुद्धया, तथाथवा विद्याधिः
पुस्तकमात्रे एव बोधः नतवन्यत्र त-
त्राप्यं न्यायः प्रवर्तते.

यथा घटनिष्ठो दीपो घटस्योदरमात्र
मेव भासयति तथा प्रकृतेऽपि.

कहावत् इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

३८ पोस्ती और मल्लाह को कहावत इस कहावत से तादात्म्य (अपने अपेका) अध्यास (भ्रम) जानना । जैसे कोई पोस्ती नाव पर चढ़ा वह वहाँ बहुत से आदमियों को देखकर किसी से मैं बदल न जाऊँ इस अकूल से अपने पाँव में रस्सी बाँध कर पीनक में आगया मल्लाह ने हंसी के लिये उसके पाँव से उस रस्सी को खोल कर अपने पाँव में बाँध लिया.

नाव के पार जाने पर उतरते वक्त वह पोस्ती अपने पाँव में रस्सी न देख कर और मल्लाह के पाँव में उसे देख कर यह मैं हूँ और मैं यह हूँ यह अपने दिल में निश्चय कर वह शगडा करने लगा कि अरे मल्लाह तू मैं हूँ और मैं तू हूँ.

- ३९ रीता घड़ा बोले घना।
सूर्य लोपही अफसर इधर उधर बका करते हैं पण्डित नहीं.
४० बाँझ क्या जाने प्रसूता की पीर जिस के लगे सोई जाने.
४१ अन्धों में काणा सरदार जहाँ पेड़ नहीं वहाँ अण्डही रूख.
४२ जितने मुँह उतनी बात.

३८ अहिभुक्षायतन्यायः.
एनेन न्यायेन तादात्म्याध्यासएव ज्ञेयः यथा कश्चिद्दिहि (पोस्ती) भुग्नाघमारोह सच तत्र बहुजनसमुदायं दृष्ट्वा केनचिन्मे विनिमयो न स्यादिति धिया स्वपादे रज्जुं बद्ध्वा तन्द्रां प्राप कैवर्तश्चापहासार्थं तत्पादात्तां मोचयित्वा स्वपादेवबन्ध.

नाधि पारंगतायामचरोहणसमयेऽहिभुक् स्वपादे रज्जुमदृष्ट्वा कैवर्तपादे च तां दृष्ट्वाऽहमयमयमहीमिति स्वहृदि निश्चित्यारे कैवर्त त्वमह महश्च त्वमिति तेन विधादं कृतवान् इति.

- ३९ रिको घट एवाधिकं शब्दायते न्यायः अपण्डिता एव बहुधा इतस्ततो विकथन्ते ननु पण्डिताः.
४० प्रसूतैव हि जानाति पुत्रप्रसवचेदनामिति न्यायः स्पष्टः.
४१ निरस्तपादपे देशे परण्डोऽपिडुमायते.
४२ यावन्ति मुरानि तावतीः वार्ताः.

फहावत इत्यादि का वर्णन—लोकौक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

४३ जेला देव चैला पूजा.

४४ गये चाये होनै वहाँ दुयेही रह गये.

४५ नई नाहन चांस का नहभा.

४६ नये शानाजी गाजर को संख, बज्यौ तो बज्यौ नहीं कुतर चायौ.

४७ नाच न जाने आंगन देड़ा.

४८ किसी का घर जले कोई तापे.

जमाई, उदर, स्त्री, अग्नि, और तालाब ये पाँच जकार मुदिकल से भरे जाते हैं.

माता पैदाइश की जगद, गंगाजी, भगवान और पिता ये पाँच जकार मुदिकल से मिलते हैं.

—अब हंसी के इलोक हैं—

१ दो स्त्रियोंवाला मनुष्य विलके याहर और विल के भीतर बैठे हुए विही और साँप के बीच में भूले के नाई भान हुआ करता है.

२ विष्णु का आगमन सुन जल्दी से सपेकी रस्ती बना हाथी के चर्म का कीपीन पहन शिप जी आगे दीड़े, अब साँप गड़ड़ जी को देख कर कमिपत चित्त हुआ पृथ्वी पर गिर

४३ यादशो दक्षस्तादशो वलिः.

४४ वृद्धि मिश्रवतो मूलं विनष्टम्.

४५ नूनना नागिती काचित् तस्या न गच्छिद्विषणुकाः.

४६ विरामी नूतनो वृद्धनस्य शङ्कः यदि ध्मातस्तर्हि ध्मातोनेोचशर्वितः

४७ अङ्गणं शंसते वक्रं नर्तनाकुशलो जनः.

४८ कस्यचिरतुदहेद्रेदम कश्चिद्धस्तो प्रतापयेत्.

जामाता जठरं जाया जातवेदा जलाशयः पूरिता नैव पूर्यन्ते जकाराः पञ्च दुर्भराः । १

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनादृतः जनकः पञ्चमधैव जकारा पञ्च दुर्लभाः । २

—अथ हास्यरस इलोकाः—

विलादद्विः विलस्वान्तः स्मितमार्जारिसर्पयोः मध्ये चाखुरिवाभाति पत्नीद्वययुतो नरः । १

विष्णोश्चागमनं निद्राम्य सहसा कृत्वा कर्णान्द्रं गुणं, कौपीनं परिधाय च मेकरिणः शंभुः पुरो धावति, दृष्ट्वा विष्णुरथं सकम्पहृदयः सर्पोऽपतन्ननदे, रुत्तिर्विस्मयिता हिया न-

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

पड़ा और गज चर्म-फिसल पड़ी
अथ लज्जा से नीचे को हुआ है
मुख जिनका ऐसे नग्नहर हमारी
रक्षा करो.

तमुषो नग्नो हरः पातु धः । २ ॥

३ दूसरों का अन्न पाकर हे मुख अपने
प्राणों पर दया मत कर, दूसरों का
अन्न इस लोक में दुर्लभ है और
प्राण तो हर जन्म में मिलते हैं.

पराश्रं प्राप्य दुर्बुद्धे मा प्राणेषु दयां कुरु
पराश्रं दुर्लभं लोके प्राणा जन्मनि
जन्मनि । ३ ।

४ हे असंख्य मनुष्यों की सफाई करने
वाले हकीम जी तुम्हारे लिये नम-
स्कार है यमराज तुम पर अपना
भार रख आप मौज करता है.

वैद्यराज नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानव
त्वयि विन्यस्तमारोऽयं शतान्तः सु-
यमेधते । ४ ।

५ गणेशजी के वाहन भूपक को भूपा
सर्प खाना चाहता है उस सर्प को
स्वामकार्तिक का मोर खाना चाह-
ता है और पार्वती का सिंह गणेश-
जी को खाना चाहता है पार्वती
गंगाजी से द्वेष करती हैं और शि-
वके मस्तक की अग्नि चन्द्रमा से
ईर्ष्या करता है इस लिये कुटुम्ब के
कलह से दुखी हुए महादेव जी भी
ज़हर पीगए.

अरतुं वाञ्छति वाहनं गणपते राखुं
क्षुधार्तः फणी, तञ्च कौञ्चपतेः शिरी
च गिरिजासिंहो ऽपि नागाननम्,
गौरी जङ्घसुतामसूयति कलानाथं
कपालानलो, निर्विण्णः स पपौ कु
टुम्बफलहादीशोऽपि हालाहलम् । ५ ॥

अथ विवाहों में निमन्त्रणी के श्लोक छ.

अथोद्वाहामन्त्रणश्लोकाः पद्.

१ आप सज्जनों के सम्बन्ध से मुझ
को क्या २ न लाभ हुआ ! वरन सब-
ही लाभ हुआ, प्रथम जन्म सफल

जातं जन्म श्रुतार्थतां विकसितं पुण्या-
म्बुजानां वनं छिन्ना संप्रति सर्व-
पापपटलिर्दुःसान्धकारो गतः, आ-

कदावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>हुआ, पुण्य रूपी कमलों के घन पिंजरे, सम्पूर्ण पाप रूपी वृक्ष अथ कटा, दुःख रूपी अन्धकार गया आनन्द रूपी अङ्कुर कोटि प्रगट हुं, और विघ्न रूपी वन दूर हुआ इत्यादि । १ ।</p>	<p>नन्दाङ्कुरकोटयः प्रकटिता विघ्न- टयो पादिता, सम्बन्धे भयनां कृते सुकृतिनां किं किं न लब्धं मया । १ ।</p>
<p>हे द्विजेन्द्र शिरोमणे ! तीनों जगत के बीच में आप के दूध के समुद्र तुल्य निर्मल यशको सुन्न कर कीन से पुरुष शिर नहीं काँपाते हैं ! वरज सबही शिर कपाते हैं ! इसी लिये भगवान् महाजनों ने पृथ्वी के नाश होने की शंका से शेषजी के कान नहीं घनाये । २ ।</p>	<p>न कम्पयन्ति तावको वशो निद्राम्भ के शिरः पयः पयोधिनिर्मलं द्विजेन्द्र त्रिजगत्तये । अतः पितामहो विभु- भुंजङ्गमेश्वरस्य नो चकार शब्दधा- रकान्धरपविधातसङ्ख्या । २ ।</p>
<p>आपकी कीर्ति रूपी लता ने, हवा के आश्रय को लेकर तीनों लोक रूपी मोंचे को पाकर नक्षत्र रूपी कलियाँ धारण कीं तिन में से एक चन्द्रमा रूपी कली मिली जिसने त्रिलोकी को दौत किया। अथ में नहीं जानता कि उन सब कलियों के खिलने पर कैसा फल होगा । ३ ।</p>	<p>त्वकीर्तिप्रतनिस्समीरपद्वयीमासाध- लोकधयं, भञ्जं ध्याप्य चिरस्वभार कलिकाः नक्षत्ररूपेण याः तासां प्र- स्फुटमेकमिन्दुकुसुमं त्रैलोक्यमादी- पयम्, नो जाने विक्रवानु तासु भ- विता सर्घासु कीदृक् फलम् । ३ ।</p>
<p>—घर की ओर का— दमेने आप के यहाँ, घरों में जो अलक्ष्य सुख भोगा है सो उसकी कैसे प्रशंसा करें, दूसरे संसार में प्राणों सेभी प्यारा अलक्ष्यत यह कन्या रूपी</p>	<p>घर पक्षे । वस्माभिर्घदभोजे गेहविरले द्रातं स्तु- यामः कथम् । कन्यारत्नमक्षयल- क्षुत्तमिदं प्राणार्पीष्ट स्तुते । याव- द्विजमकारि मित्र भवतासेऽज्ञपा-</p>

कहावत इत्यादि का वर्णन—लोकौक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

रत्न दिया । और हे मित्र ! वित्ता
नुसार आपने अन्न जलादि से से-
यामी की। भय उन श्री कृष्ण महा-
राज की जय हो जिनकी कृपा से
हम और आप सम्यन्धी हुए.

—दोनों और की—

हे प्रभो ! जो अभिलाषा हमारी आपके
दर्शनोकी बहुत दिनोंसे थी यह आज
जिसने पूर्ण की यह श्रीकृष्ण महाराज
आपका (हमारा) कल्याण करे । १।

—कन्या पक्षयालों की—

हे प्रियवर । जिस समय से आपका दर्-
शन इस जगह हुआ तभी से हमारे
दुःख समूह आप की कृपा से नष्ट
हुए और हर्षका पार नहीं है । और
दासी तुल्य कन्या, भोजनविधि में
शाक और द्रव्यविधि में सुपारी जो २
भक्ति से आपको समर्पण किया वही २
हर्ष पूर्वक आपने स्वीकार किया यह
एक हमारा बड़ाही भाग्य है । ३ ।

पक्षियों का राजा गरुड़ उनका राजा
विष्णु उनका पुत्र मदन तिनके शत्रु
शिव उनके चार अक्षर का नाम
मृत्युञ्जय सो इसका पहला आधा
आप के शत्रुओं के यहां और पिछ-
ला आधा आप के यहां रहे । १ ।

नादिभिः । श्रीकृष्णो जयतां हि यस्य
कृपया सम्यन्धिनः स्मो वयम् । १ ।

उभय पक्षे ।

यदौत्कण्ठ्यं चिरादासाद्दर्शने भवता
प्रभो । तदद्य पूरितं येन स कृष्णः
शन्तनोतु वः । २ ।

कन्या पक्षे ।

कालादारभ्य यस्मात्प्रियवर भवतां द-
र्शनं नोऽत्र जातम् । दुःखौघा नो वि-
नष्टः प्रभुवर कृपया नास्ति हर्षस्य पा-
रः दासीकल्पा च कन्या ह्यशनवसु-
विधौ शाकपूर्णाफलादि यद्यन्नक्तया-
र्पितं वो नियतिरियमहो स्वीकृतं
तत्सहर्षम् । ३ ।

अथाशीर्वादात्मकाः ऋषोकाः
पिराजगजपुत्रारैर्व्यभ्रामचतुरक्षरम् । भ-
र्षं वसतु शत्रूणामुत्तरं तत्र मन्दिरे १

करावत इत्यादि का वर्णन—लोकोक्तिविशेषाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

१ आकाश में कौन द्रोमित होते हैं—
(मोहनाः) २ राक्षसपति किसने मारा-
(रामेण) ३ समुद्र में कौन डूबता है-
(मैनाकाः) ४ तरुणियों का विलास
कैसा है (मंथरं) ५ सज्जनों से क्या
किया जाता है (रुचिरं) ६ राजा का
पत्र क्या है (सारङ्गः) ७ अर्जुन का
धनुष कौन है (गांडांशु) ८ राम की
स्त्री का हरने वाला कौन (रावणः)
मेरे प्रश्न के उत्तर का जो मध्यमा-
क्षर पद है यह तुम्हारे लिये आशी-
र्वाद है । २ ।

रिखों की लावण्यता कहां है—(चपुपि)
आकाश में कौन विचरते हैं—(अण्डजाः)
सब से ऊंची आवाज़ किनकी होती है—
(भरौणां) स्त्री पुरुष कहां विहाग
करते हैं—(एकान्ते) भगवान् सीता
पति ने किन में अपना पामन्य दि-
याया—(रक्षसु) इन प्रश्नों के उत्तर
का जो बीच के अक्षर घटित देख
है यह तुम्हारे परमाण के लिये है । ३

कः खे भाति हतो निशाचरपतिः के-
नाम्बुधौ मज्जति । कः कीदृक् तरुणी
विलासगमनं किं कार्यते सज्जनेः ।
पत्रं किं नृपतेः किमर्जुनधनुः को
रामरामाहरः भद्रप्रणोत्तरमध्यमा-
क्षरपदं यत्तत्तपार्शीर्वाचः । २ ।

लावण्यं कं तु योषितां नभसि के स-
ञ्चारमातन्वते । केयमुद्धतरा भवन्ति
निलदाः कं प्रीडुतो दम्पती । कं पु-
स्वं प्रकटीचकार भगवान् सीता-
पतिः पौरुषम् तत्प्रणोत्तरमध्यवर्ण-
घटितो देवोऽस्तु यः श्रेयसे । ३ ।

तेईसवां अध्याय—त्रयोविंशोऽध्यायः ।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाथ ।

श्रीमच्छारदापीठाधीश्वरश्री जगद्गुरुशङ्कराश्रमाचार्येभ्यो

निवेदितं प्रशंसापत्रम्पुनःपुरवासिभिः ।

प्रशंसापत्रम् ।

श्रीशः पायात् ।

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यवर्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीण, यमनि-
यमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठ, तपस्वर्था-
चरणचक्रवर्त्यनाचविच्छिन्नगुरुपरम्पराप्राप्तपणमतस्थापनाचार्य, साङ्ख्यत्रय-
प्रतिपादकवैदिकमार्गप्रवर्तक, निखिलनिगमागमसारहृदयश्रीमत्सुधन्वनः सा-
म्प्रान्यप्रतिष्ठापनाचार्यश्रीमद्राजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्यचातुर्वर्ण्यशिक्षकगोम-
तीतीरवासश्रीमद्द्वारकापुरवराधीश्वरपश्चिमाभ्यायश्रीमच्छारदापीठाधीश्वरभे-
मत्केशयाश्रमस्वामिदेशिकवरकरकमलसञ्जातश्रीदारदापीठाधीश्वरश्रीनद्राड-
राजेश्वरशङ्कराश्रमस्वामिनांपदार्पविन्देषु मयराष्ट्रनगरीनिवासिनां इत्यस्यैवैरग-
वीनां प्रणतिपुरस्सरं विश्वस्यस्समुल्लसन्तुतराम् ।

भगवतामेतद्देशे श्रीमच्छारदापीठपूर्वाचार्यपारस्पररत्ननन्देनुरन्वन्वयं
मधुपुरीप्रमुखेभ्यः प्रस्थानेभ्यः पतञ्जातुर्मास्यप्रमुक्तदि वमदिरश्च मधुपुर
(मेरठ)पत्तने समासीक्षन्वाप्रौष्ठपद्याः यथैवेदानां उन्मुक्तुस्तिरेडेर रत्न-
हृत्तो जामनगरभावनगरसङ्घैर्दोदयपुरेनूरुत्त-वेरुयेन-इ ररं चउत्तरेतु
अहमदाबादसूरतसिद्धपुरोजैन्यागगमधुपुरेभुवेतु पत्तनेनन्देनुरन्वन्वयं
वैदिकसिद्धान्तान्तर्हृदयप्रधानपदार्थाः सनात्तु मन्वस्यन्तिताः प्रवृत्त प्रवृत्त-
प्रादिकाः स्वस्वनिपतधर्मानुवर्तिन्यः स्वारस्तेनकारि नर्धैवेह मन्वते मन्व-
ठयावधि मयपत्तने (मयराष्ट्रे) श्रुतिस्मृतनिहासुगुणान्तीशचान्तर्कनिर्दि-
प्रमाणनपैवेदानां परमेश्वरैकनिर्मातृत्वस्वतः मानाश्वकनैसासनपोरनन्दुडे
यत्प्रतिमापधनस्योपासनान्तर्गततया यथादेशिनानांनमान्कनिर्मातृत्व-
दिप्रक्रियायाः पुनः श्रुतिमतनर्कविशेषप्रामित्यवतापन्मुत्पन्नस्यादि यथावि-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

धत्वतीर्थादिसेवनप्रमाणमात्रसञ्चारितत्वादयो धर्माः तत ऊर्ध्वं योगज्ञानयोस्त-
द्देव सपरिकरनिरूपणं चात्युच्चैरादरभरादभ्यध्यायि । एतावता सर्वे चात्र
सदसद्विचारचातुरीधुरीणाद्यपगतशङ्काकलङ्कसामान्याश्चाश्रितः प्रसन्नात्मानोऽ
जायन्त यथावत् येच तत्र विप्रतिपन्नमानसाः प्रमाद्विजनाः तेषुपि चात्यर्थं नि-
जमतिकर्दमेभ्यो यथोदाहृतप्रयोधवारिधाराभिः प्रविमुक्ततराः भवन्त्येव तत्त्वतः
इत्थमत्र सर्वे वयं ब्रह्मक्षत्रवैद्यादयो जगद्गुरुभिरिततरां कृतार्थीकृताश्चानन्दिता
भवामः शिष्यगणाः । इत्थञ्च जगद्गुरुचरणेष्वस्मत्कर्तव्यतानुरूपञ्च श्रद्धाम-
तिभ्यां यथोचितः सात्कारः प्रयुक्तः प्रेम्णा परं स्वीकृतांऽयं गुरुभिरितिमङ्गलमेव
सर्वशो नः सर्वेषाम् । सदैव वयमेथमेव विजययाध्रया कृतार्थी कर्तव्याः शिष्य-
जनाः श्रीमद्भिर्जगद्गुरुभिरिति महतीहोयमस्माकमभ्यर्चना ।

भवदीयकृपामिल्लापिनो
मयराष्ट्रनियासिनो शिष्यजनाः ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

गुरु के लिये चिट्ठी ।

गुरु-प्रतिपत्रमिदम् ।

श्रीमान् कृष्णमहाराज के लिये नमस्कार है
श्रीमान् विद्वानों में अति श्रेष्ठ, सम्पूर्ण
गुणी लोगों के गुण समूहों से सु-
शोभित, अविद्या और जड़तारुपी
अंधेरे के दूर करने वाले, अमित
प्रभाव वाले, सम्पूर्ण विद्या रूपी स-
मुद्र के पारगत, अत्यन्त सज्जनता-
की मंजू दया उदारता और चतुराई
की शाल, बिनय स्वीधायन और ज्ञा-
नके खान श्रीमान् लक्ष्मीनारायण
जी का ब्राह्मण धंदा के चरण पंकज
सेवक सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक
नमस्कार वचना.

श्रीमते रामानुजाय नमः ।

श्रीमत्परमविद्वद्भार्याखिलगुणिगुणगणा-
लङ्कृताविद्याज्ञानधकारापहा-
मिनप्रभावाखिलविद्यापारावारपा-
रीणातिसौजन्यावधिर्द्यौर्दाव्यदा-
क्षिप्यनिधिविनयार्जववियेकनिलये-
षु श्रीमहर्षीनारायणशर्मसु विप्रा-
ग्वद्यार्षिपङ्कजसेविसुखानन्दवि-
पाठिकृता अनेकशो नतयः समुल्ल-
सन्तुतराम्.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

ईश्वर कृपा से दोनों जगह कल्याण हो आगे हाल यह है कि कार के महीने से लेकर अबतक कोई पत्र आपने मेरे पास नहीं भेजा इस लिये मैं आपकी राजी खुशी जानने को बहुत फ़िकर मन्द हूँ अथ आशा है कि आप चिट्ठी भेजने में जल्दी करेंगे।

यहाँ फ़्लेग रोग भादों से बहुत ज्यादा है हजारों मनुष्य और खी इसके प्राप्त होगये जीते हुए भी और मनुष्यों के होश फ़ाटना है ईश्वर अब तो कल्याणही करे। और कोई नया हाल नहीं है जिस को लिखूँ।

संवत् १९६१ वैक्र-
मीयः आश्विनकृष्ण
पक्षे द्वितीया रविवार

आपका कृपापात्र
सुखानन्दत्रिपाठी

२ शिष्य के लिये चिट्ठी ।

स्वस्ति श्री चिनयाजं व आदि सम्पूर्ण गुण सम्पन्न, विद्यारूपी कमल के समर, अपने कुलके गुण रूपी भूषणों से भूषित परम भद्रालुगुरु श्रुत्या में तत्पर द्वारकाप्रसाद गुप्त को हमेशा अपने अच्छे शिष्यों की कुशल चाहने वाले सुखानन्द त्रिपाठी की अनेक आशीर्वाद वञ्चना।

भव्यं स्तादुभयत्र श्रीशानुकुम्पया उ-
दन्तोऽयमग्रे वाच्यः यत् आश्विन-
मासादारभ्याद्याद्यधि भवद्भिर्न कि-
मपि दलम्प्रेषितं मम सप्रिधायतो-
ऽतीवोत्कण्ठतोऽसि श्रीमतां श्रेयो
हातुमधुना त्वरिष्यन्ति भवन्तः पत्र-
प्रेषण इत्याशासे।

अत्र महामारीरोगो घरीवर्ति नन्वाभा-
द्रपदात् सहस्रशो नराश्चास्य कवल-
त्वङ्गताः जीघन्तश्चाप्यन्येऽस्यस-
चित्तास्सन्ति ईश्वरोऽधुनासु शमे-
य विदध्यात् । नचान्यद्रूतनं वृत्तं
यद्विषेयम्।

संवत् १९६१ वैक्रमी
येब्दे आश्विनेऽसिते
पक्षे द्वितीया रवियुता

भवदीयः कृपापात्र
सुखानन्दत्रिपाठी

शिष्यम्प्रतिपत्रमिदम् ।

श्रीशः पायात् ।

स्वस्तिश्रीमाश्रितयाजंवाद्यखिलगुणस --
म्पन्नविद्याकुशेशयन्त्रश्रीकस्वकुल-
गुणभूषणभूषित परमश्रद्धालुगुरुशु-
श्रुषणतत्परद्वारकाप्रसादाख्ये गुप्ते
सदैव सच्छिष्यकुशलामिलापिण
स्सुखानन्दत्रिपाठिनोऽनेका आशिषो
वाच्याः।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महोलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यहां कुशल है तुम्हारे यहां भी कुशल रहे । प्रिय ? बहुत दिन बीते तुमने कोई भी चिट्ठी नहीं भेजी यह बड़ा बचम्मा है क्योंकि पहिले हर महीने राजी खुशो की चिट्ठी भेजने का तुम्हारा एक मामूली कायदा था अब न मालूम क्या हुआ ।

तेरे तुम्हारा सब ओर से कल्याण हो और विद्या में ज्योंकी त्यों महान्त करके हम गुरुजन लोगों के आनन्द देने वाले हो यह मेरा आशीर्वाद है । तुम्हारे संस्कृत पढ़ाने वाले वहां कौन हैं यह भी खबर देना और कोई नया हाल हो वह भी । मिती पौष कृष्णपक्ष शुक्रवार सम्बत् १९६४ वैक्रमां ।

तुम्हारा कुशलेच्छक,
सुधानन्द त्रिपाठी ।

शुन्दायन निवासी वैरागिक पं० प्यारे लालजी मित्र कालिये छन्दो बद्ध चिट्ठी ।

सो० चिट्ठी पाई काल, तुम्हारे फर कमलन लिखी । जिनज्वर दशा सँभाल, मोहि स्वस्थता देदई ।

सो० क्षमदु मोर अपराध, पत्र भ भेजने कर जो । कारण देह कुस्ताध, अनृत नहीं करु या विधे ।

अत्र शं तत्राम्नु । भद्र ? वहन्यहानि च्य-
तोतीन त्वया न किमपि पत्रम्प्रेषित-
मिति महदाश्चर्यम् यनस्तव पूर्वं प्रति-
मासं कुशलपत्रप्रेषणे साधारणोनि-
यम आसीदधुना किंजातमिति न
जाने ।

वरं कुशलमस्तु सर्वतस्ते विद्यायाञ्च
यथाविधि परिश्रमं कृत्वाऽऽसदा-
दीनां गुरुजनानामानन्दधुप्रदो भव-
तादित्तीयम्मदीयाशोः ।

तत्र संस्कृताध्यापकास्तत्र क इत्यपि
सूचनीयमन्यथापि नव्यं वृत्तमिति ।
एकपट्टवृत्तरेकोनपिंशतितमे वि-
क्रमेऽब्दं पौषकृष्णप्रतिपत्त्युक्त-
पत्रलेखतिथिः ।

शुभमकुशलाभिलाषी,
सुधानन्दस्त्रिपाठी ।

शुन्दायननिवासिते पुराणार्णवाय प्यारे-
लालशर्मणम् सुदृग्प्रतिपत्रमि-
दम् पठैः

पत्रिका ह्ये मया प्राप्ता शुभमदस्ताञ्जलि
द्विता । यया ज्वरदशा मेऽपि कृता
यै निगतज्वरा । १ ॥

क्षम्यतामपराधो मे, पत्राप्रेषणदेतुकः
कारणं देहपैहृव्यं, नास्त्यनश्यं वचो-
ऽत्रमे । २ ।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

दो० स्मरण योग्य है आप के, सुखानन्द सेवक सदा। ते अनुशासन योग्य है, योग्य कार्य हांचहि यदा.

दो० ग्रामहिं जबहीं जाइहीं, पत्र तुम्हार सुनाँउ । घर जैम्ने फाई कइ, पुनि मिय तुमहिं जनाउँ.

दो० जो कहु उत्तम जीविका, मम भ्राता को जोय । तोतिहिको भेजौ तभी, जय अनुशासन होय ।

सात पांच नव एक युत, वर्ष मास आसोज । शुक्र पक्ष दुतिया लिप्या, सुखानन्द निज भोज । इतम शुद्ध और भी मित केलिये—

श्री शङ्करजी कल्याण करे २८।१।०४ कानपुर

मित्रवर्य सुखानन्द त्रिपाठीजी नमस्कार ईश्वर की कृपा से अभी तक हम लोग कुशल हैं और आप की कुशल चाहते हैं । बहुत दिन से आप की चिट्ठी न मिलने से मैं किकर मन्द हू इसलिये जल्दी अपने राजी गुशी के समाचार से यह मित्र खुश करना चाहिये । तीन महीने से यहाँ प्लेग की बीमारी भी रोज भरह वैशुमार मनुष्यों को घास करती जाती है । अब मैं कुटुम्ब सहित गङ्गा किनारे

सर्वदा स्मरणीयोऽयं, सुखानन्दाख्य सेवकः । सदैवाशापनीयश्च, मद्योग्यैः कार्यग्रामकैः । ३ ।

ग्रामं यदा गमिष्यामि, श्रावयिष्यामि ते छदः । पुनस्ते सूचयिष्यामि, अनु क्षास्ति यथा प्रभोः । ४ ।

यदि स्यादुत्तमावृत्तिर्भ्रात्रे मे मृगयन्तु ताम् । तदैव प्रेषयिष्यामि यदानुशाऽत्र लप्स्यते । ५ ।

नगपाणाङ्कभूषणं आश्विनस्य परे दले । लिपितेयं द्वितीयायां सुखानन्दनिपाठिना । ६ । इत्यलम्

अन्यच्च मित्रप्रति—

श्रीशङ्करः शङ्करोतु २८।१।०४ कर्णपुरम्

मित्रवर्य सुखानन्दत्रिपाठिन् । नमोऽनभः विश्वेशठपयाद्य यावत्कुशलिनो घयं भयतां कुशलं चाशंसामहे । चिराद्भवताम् कृपापत्रमलब्ध्वा चिन्ताप्रान्तोऽस्मीति शीघ्रं स्वकुशलप्रवृत्त्यानन्दयितव्योऽयं मित्रजनः । मासत्रयादत्र महामारीरोगोऽपि प्रत्यहमसंख्यजनान् कवलयति । सम्प्रत्यहं सपरिवारो गङ्गातटे गङ्गामन्दिरे निवसामि । गृहे पुत्रादयः सर्वे ज्वरपीडिता भासन्तः स्वकुशलवृत्तान्ते-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

गङ्गा मन्दिर में रहता हूँ घर में लड़के बगैरह सबजगत् से पीड़ित थे इसलिये अपनी राजी खुशी के समाचार से आप को खुश न कर सका ऐसा जान कर यह मित्र क्षमा योग्य है। सब उस्तादों से मेरी यथा योग्य प्रणाम आशीर्वाद कहना। यहाँ भी ट्यूम रोग अब है यह सुना जाता है इसलिये यहाँ का सब हाल लिखना।

पुराने विद्यार्थियों को मेरी आशीर्वाद कहना।

अपहन } आपका मित्र
वदिह } रामचन्द्र शास्त्री
और दूसरी मित्र के लिये चिट्ठी—

श्री राधा माधव की जय हो।

श्रीमान् सम्पूर्ण गुणसमूहयुक्त, विद्या समुद्रपारणामी, भ्रमरूपी अन्धकार को दूर करने वाले सूर्यरूप, अपनी याणी समूह से तिरस्कृत किया है कालिदासादि पण्डितों को जिन्होंने, नवीन केशर से शोभित हैं पूज्य चरणकमल जिनके, मित्र शिरोमणि, हरदत्त शास्त्री जी को यहाँ से विद्या रूपी भूषणों से भूषित जो भयरमति

संस्कृत ।

न श्रीमान्तं मोदयितुं नाशक्यमित्य-
चगम्य ह्यन्तव्योऽयं वयस्यः । सर्वे-
भ्योऽध्यापकेभ्यो मदीया यथोचितं
प्रणामा आशिषो वा वक्तव्याः । त-
त्रापि महामारीरोगो वर्तते इदानी-
मिति श्रूयतेऽतः कृपया तत्रापं सर्वं
दृष्टं लेख्यमिति शम् ।

मार्चीनच्छात्रेषु मदीया आशिषो वाक्याः

मार्गीशीप } भवदीयो वयस्यः
कृष्णपट्टो } रामचन्द्रशास्त्री
अन्यच्च मित्रप्रतिपत्रम् ।

श्रीराधाभाधवौ विजयेतेतराम् प्रलीगदतः

श्रीमदीश्वलगुणौघालविद्यापारणार-
पारीणभ्रमतिमिरोच्छेदकमार्तपण्डन्य
कृतवाग्जालकालिदासादिप्रब्र, नूतन
किंजल्कभूषितैपूज्यपादपद्मजेषु सु
हृद्वरेषितो विद्यालङ्कारालङ्कृतप्र-
यरमतिभूत्यभूत्यविह्वल्यचरणसरो-
जपदपदसंसारसरित्त्तुडलगदंवेद-
भयमनयूहमेधीयमारभपाङ्गांतसुखा-
नन्दविपठिनः कृता अनेकशो नतयः

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

(पंडित) उनके सेवकों का सेवक, परम विद्वानों के चरण कमलों का ध्रमरूप, संसाररूपी नद में तृष्णा-रूपी जल के सर्प से डसा हुआ गृह-स के भार से थके हुए सुरानन्द त्रिपाठी की अनेक नमस्कार प्रणाम पहुंचे । आगे दाल यह है कि मेरे अधैर्य रूपी वृक्ष को काटनेवाले, अ-नोगी और रसीली काव्य के से पदों की लावण्यता को जाहिर करते हुए, आपके करकमल से लिखे हुए पत्र से जो अपूर्व आनन्द प्रकट हुआ सो कहने तथा लिखने से बाहर है । वसन्त भगवान् वृक्षों के पत्तों की नाई हमारी और आप की अभि-लाषा को सफल करेगा इस प्रकार आप के वाक्य में आपही प्रमाण हैं जो यह होभी जाय तोभी आपकाही भाग्य है मुझ सरांगों का नहीं । शरीर के अस्वास्थ्य से मैंने यह चिढ़ी देर से भेजी है सो आप क्षमा करना.

समुल्लसन्तुतराम् वृत्तमिदमग्रे वा-
च्यम् ममाधैर्यदुमलोत्थयमानेनाद्भु-
तरसिककाव्यपदच्छटासोस्त्रयमाने
न श्रीमत्करकुर्मलाङ्कितदलेन यो नि-
रतिशयानन्दः सूचितः सोऽगोचरः ।
भगवान्पुष्पसमयः तरुपत्राणि इव
नाचमिलायां सफलां विधास्यतीति
श्रीमद्भान्ये श्रीमन्त एव प्रमाणम्
यदि न्यात्तर्ह्यपि श्रीमतामेव दिष्टं
नच माहशानां । शरीरास्वास्थ्य-
न्मया चिराददिम्पत्रं प्रेषितमितिश्वा-
स्थ्यन्यं भवाङ्गिः श्रीमन्निरिति.

मिति पोप शुद्धी

शापका

पौषशुद्धा प्रज्ञमी

भवतां दर्शनेच्छुः

५ शुक्रवार

दर्शनाभिलाषी

भृगुयुता

सुरानन्द-

सं. १९५९ वि०

सुरानन्द त्रिपाठी

सं. १८५९

त्रिपाठी

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यह अर्ज़ी है अलौगढ़
श्री मन्महोदय हेडमास्टर साहब
(घागुरीबपरवर सलामत) सलामत
महाशय !

पिछले शुक्रवार से मेरी माना जाड़े
बुखार से पीड़ित है और उसका
यहाँ कोई निरीक्षक नहीं है इसलिये
मेरी हाजिरी यहाँ ज़रूरी है इसीलिये
आपसे प्रार्थना की जाती है कि मुझे
एक हफ्ते की छुट्टी मञ्जूर करें ।
आप ऐसी हालत में अपदयही म-
ञ्जूर करेंगे यह मेरी पूरी उम्मेद है ।
ईश्वर आप सरीखे अनुग्रह शील स्वा-
मियों की सकुटुम्ब कुशल करे और
धैर्य बढ़ाये यह हमारी प्रार्थना है ।

आपका

अंग्रेजी तारीख आकाकारी सेवक
१८।१२।०४ श्रीकृष्णदास गुप्त
दफ़्त ७

लड़के का यह प्रधान ठीक है (कैफियत
लड़के के उस्तादकी) मणिराम उ-
स्ताद.

निवेदनपत्रमिदम् अलौगढ़तः
श्रीमन्महामहिममहोदयानां मुख्याध्या-
पक (हेडमास्टर) महाशयानाम्पु-
रतः स्वपिनयं निवेदनमिदम्.
महाशयः !

गतशुक्रवासरान्मदीया माता शीतज्व-
रार्तास्ति नकोऽप्यत्र तस्या निरीक्षकः
अतो ममोपस्थितिरत्रात्यावश्यक
ऽत एव मां सप्ताहस्यैकस्यावकाश
मनुमन्तुं प्राप्यन्ते भवन्तो ऽस्यां
दशाया मयदयमेव स्वीकरिष्यन्ती-
त्याशापि मदीया पूर्णा.

ईश्वरः कुशलं विदध्यात्तैमयञ्च वर्धयेत्
सपरिवारेषु सुष्मिन्निषेधनुग्रहशी-
लिषु स्वामिष्वितीयमस्माकमभ्य-
र्थना.

श्रीमतामति-

आह्वलतिध्यादि अभ्योनुचरः
१८।१२।०४ समतकशाभ्येता
श्रीकृष्णदासोगुप्तः

सत्योऽयंलखनप्रशेति (व्यधध्याछा-
त्राध्यापकस्य) मणिरामोऽध्यापकः.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>लाहौर १९।५।०४</p>	<p>लवपुरम् १९।५।०४ श्रीरामः सर्वमङ्गलम्-</p>
<p>पादप्रणामानन्तर निवेदन.</p>	<p>पादप्रणामोत्तरं निवेदनम्.</p>
<p>आप की चिट्ठी के माफिक ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का सूक्तसंग्रह इस्त-हान के उपयोगी डाँके महसूल न देकर भेजा है डाँके महसूल आपही दे देना.</p>	<p>भयतां पत्रानुसारेण ऋग्वेदप्रथम-मण्डलीयसूक्तसंग्रहः परीक्षोपयोगी प्रेषितो डाकव्ययमदत्वेति डाकव्ययो भवद्भिरेव देयः.</p>
<p>आप कौन जाति हैं और मुझ को अपना आशा पालक बना कैसे कृतकृत्य किया ?</p>	<p>किं जातीया भवन्तो मां कथं स्वाशापालकं कृत्वा कृतकृत्यं कृतवन्तः.</p>
<p>अवकी परीक्षा के समय में अपने देश को गया थी इसी से मेरे पास प्रणपत्र नहीं आये, कोशिश करने पर जो आजायेंगे तो भिजवा दूंगा.</p>	<p>अत्रत्यपरीक्षाकालेऽहं स्वजनपदे गतवानतो मत्समीपे प्रणपत्राणि नागतानि यत्ने कृते आगमिष्यन्ति चेन्नेपयिष्ये.</p>
<p>आपका आशापालक पण्डित शिवदत्त दाधीच हेडपण्डित (प्रोफेसर) लाहौर कालेज.</p>	<p>भयदाशापालकः पण्डितशिवदत्तो दाधीचः लवपुरीयविश्वविद्यालयस्य प्रधानसंस्कृताध्यापकः.</p>
<p>ईश्वररक्षा करे अलीगढ़ २२।५।०४</p>	<p>श्रीशः पायात् अलीगढ़तः २२।५।०४</p>
<p>श्रीमान् पं. शिवदत्त दाधीचजी के— चरणकमलों में नमस्कार.</p>	<p>नमोनमः श्रीमच्छिवदत्तदाधीच— चरणपङ्कजेभ्यः</p>
<p>सेचक की प्रार्थनानुसार आपने जो ऋग्वेद सूक्तसंग्रह भेजा सो मिला । आप से महात्माओं की परोपकार</p>	<p>सेवकाभ्यर्थनानुसारेण श्रीमच्छि- ऋग्वेदसूक्तसंग्रहः प्रेषितः स लब्धः ध- न्येयं परोपकारशीलता भवाद्दर्शा महा-</p>

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोग्रन्थः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

शीलता धन्य है जो मुझ न जानते हुए पर भी कृपा कर के मुझे कृतकृत्य करने हुए । बहुत कहने से क्या है विद्वान् महात्माओं का परोपकार करना सम्भव सिद्ध होता है। आप की कृपा के देखे सैकड़ों हजारों धन्यवाद भी धोंटें हैं.

यह सेवक यद्योषु गोत्री गौड़वंशीय है दिल्ली में अमृतसरनिवासी पण्डित चुन्नीलाल शर्मा से आप का गुणानुवाद सहित नाम सुना था.

गुरुजी! मेरे एक भजनलाल शर्मा विद्यार्थी ने पिछली संवत् परीक्षा में विशारद इम्तहान दिया था और इम्तहान देनेवालों में उसका रोलनम्बर ३७ था। इम्तहान का नतीजा अवगत उसको नहीं मिला इसी से उसका नतीजा जानने के लिये बहुत ही उत्कण्ठित है। दो चिट्ठी भी उसने रजिष्टर के पास भेजीं मगर किसी का उत्तर न मिला। इसी से सेवक की यह प्रार्थना है कि जय मेरी चिट्ठी आप के कर कमल में पहुँचे तभी अप्रथार (गज़ट) से निश्चय कर इम्तहान का नतीजा लिखना चाहिये। फ़ैल होने की हालत में किल मगसून में मिल

संस्कृत ।

तनाम् यन्मामपरिचितस्यापर्व्याप्य-
नुकम्पां विधाय कृतकृत्यं कृतवन्तो
भवन्तः । किम्वदुना प्रकृतिसिद्धार्थया
परोपकृतिर्विदुषां महात्मनाम् । शत-
शः सहस्रशो धन्यवादा अपि न्यूनत-
राः श्रीमदनुकम्पापेक्षया.

शीशष्टनाम्रजो गौड़वंशीयोऽयं से-
वकः इन्द्रप्रखंडमृतसरनिवासी पण्डि-
तचुन्नीलालशर्मणः सकाशाच्छ्रुताय्या
सगुणानुवादा श्रीमतां भवताम्.

गुरुवः! ममैकेन भजनलालशर्मणा
विद्यार्थिना गतसंस्कृतपरीक्षार्थां वि-
शारदपरीक्षादत्ता तत्र परीक्षदेषु तस्य
गणना (रोलनम्बर) सप्तविंशत्तमा-
ऽऽसीत् । परीक्षाफलं तु तेनाद्यावधि
नलब्धमत एवातीवोत्कण्ठितोऽस्ति
वत्फलपरिज्ञानाय । द्वे पत्रेऽपिनेन
रजिष्टरसन्निधौ प्रेषिते परञ्च न
कस्याप्युत्तरं लभं । अतएवास्यभ्य-
र्थनपासेवकस्य यदा मम दले श्रीमन्-
करकमलगतं भवेत् तद्वक्ष्यमेव समा-
चारपत्राभिधित्य परीक्षाफलं लेखनी-
यम् अनुसर्णदशायां कस्मिन्विषये
पठित इत्यपि सूचनीयं श्रीमाङ्गिः परो-
पकारिभिरुक्तैः यावच्छून्यं शीघ्र-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

यह भी श्रीमान् परोपकारी गुरुजन सूचित करें। जहां तक हो सकेगा शीघ्रही उत्तर इस सेवक को मिलेगा यह मानाजाता है.

आप का सेवक
सुप्रानन्द त्रिपाठी

दिल्ली
६/१२/०३

आप को प्रणाम करके.

अमृतसर निवासी चुन्नीलाल शर्मा अपनी राय प्रकाश करता है कि हे श्रीमान् अब संस्कृत भाषा निस्सार है इससे अङ्गरेजी भाषाही फेंटा बांध कर आप को बढ़ानी चाहिये उसी से आप के सब मनोरथ सिद्ध होंगे वरन विशारद परीक्षा पास करके भी मुनासिब जगह का मिलना नामुम्किन है, मुम्किन भी हुआ तो २५) से अधिक जन्म भर मुम्किन नहीं । जो संस्कृत में आप का बहुतही आग्रह है तो शास्त्रीपरीक्षा में यत्न करना चाहिये। वह परीक्षा हड़ उचोगी आप से पांच छः महीने मेंही पास करली जायगी और मैं भी इस में मदद दूंगा। छुट्टी के दिनों में मैं कहां जाऊंगा यह निश्चय नहीं.

आपका मित्र चुन्नीलाल शास्त्री
(मिशनस्कूल देहली)

मेवोत्तरं लप्स्यते ऽयमनुचरद्विनिमन्यते.

भवनामनुचरः
सुप्रानन्दत्रिपाठी.

—*—

इन्द्रप्रस्थ
६/१२/०३

तत्रभवत्सु प्रणम्य.

प्रगटयति स्वसम्मतिममृतसरनिवासी चुन्नीलालशर्मा, तथाहि, श्रीमन्तः ! निःसारा साम्प्रतं संस्कृतभाषाऽतद्द्वल्लिङ्गभाषैव वक्षपरिकरै रचभवद्भिः संवर्द्धनीया तथैव सेत्स्यन्ति सर्वे वो मनोरथाः किञ्च विशारदपरीक्षा-मुत्तीर्योपि नागुकूलस्वान्प्राप्तिसम्भवः, सम्भवेऽपि पञ्चविंशतेरधिकस्याजन्मासम्भवः । यदि संस्कृतेऽर्तीवाग्रहो भयतां तदा शास्त्रिपरीक्षायां यतितव्यं साच्च दृढोद्योगैः श्रीमद्भिः पञ्चपैरेव मासैरुत्तीर्णाभिषिष्यति दास्यामिचतत्राहमपिसाहाय्यमिति । अथकाशादिनेषु कयास्यामीति न निश्चयः.

भवदीयो वयस्यः चुन्नीलालशास्त्री
(मिशनस्कूल देहली)

श्रीमन्नन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

दूसरी अर्धा हेडमास्टर साहय केलिये ।

श्रीमन्न परमदयालु हमारे हेडमास्टर महाशय चिरञ्जीवरहो प्रभो !

गुशरिया यह है कि मैं पिछली आधारात से पेट में शूल के दर्द और शिर के दर्द में मुग्धिला हूँ इसलिये मदसे में जाने और यहाँ बैठने के लिये समर्थ नहीं हूँ । महर्वागो कर आज कोई छुट्टी मञ्जूर फर्मिये यह मेरी आप के सामने प्रार्थना है ।

मेरे बेटे का यह लिखता टोक है (यह लड़के के पिता को कौफियत है) वस्तुतः राम प्रसाद शर्मा ।

आपका सेवक गोपाल प्रसाद शर्मा
१५/१/०५ पेट्रेस ह्यास ।

इकार नामा ।

मैं मुसम्मि हरदत्त शर्मा पल्द पण्डित तुर्गादिज कुंम ब्राह्मण साकिन अ लोण्ड काहूँ अपने बेटे की शारी के लिये १५० रुपये जिन के आधे ७५ रुपये होते हैं खाला रामचन्द्र पल्द गोपाल शाल कुंम बनिया साकिन मेरठ से कर्न लेता हूँ और वाहदा

अन्याभिषेदनप्रमिदं पाठशालाध्यक्ष-प्रति ।

श्रीमत्परमदयालुनामस्मत्पाठशालाध्यक्षमहाशयानामप्रेम्बर्धनियम्-प्रभो !

अस्ति सधिनयनिवेदनमेतद्यदं गताधरतीक्ष्ण उदरदुलभस्तः शिरोवेदनया च पीडितोऽस्म्यतः पाठशालां गन्तुं तत्र स्यात्तुञ्च न शक्नोमि । कृपयाऽस्यैव दिवससायकदां स्वीकर्तुमर्हन्ति भवन्त इतीयमस्माकमभ्यर्धना श्रीमतामप्रे ।

सत्येवमुक्तिर्मम पूषस्येतिहायपितुदये-
वस्थाहस्ताक्षराणि रामचन्द्रशर्मणः ।

श्रीयतामनुचरः दशमकक्षास्थः
१५/१/०५ गोपालप्रसादशर्मा ।

प्रतिज्ञापत्रमिदम् ।

श्रीमद्विषयशावतंस अलोगद्वय-स्तव्यदुर्गादसम्बुर्हदिदसशर्मोहं स्व-पुत्रबिवाहार्थं मुद्राणां सार्धशत यद्वं पञ्चसप्ततिमुद्रा भवन्ति मयराष्ट्रनगर-निवासिधैश्यवंशोत्पन्नगोपालदाससून-वे रामचन्द्रायोपरोक्तं द्रव्यं धारयामि प्रतिजाने चैकस्य यस्मैस्वाप्ते शतम्प-

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

कर्ता हूँ कि एक साल के अखीर में
ढाईरुपये सैकड़े के सूद के साथ कुल
धन दे दूंगा न देने की हालत में मैं
अपना घरही आइ किये देता हूँ ।
लिहाजा यह इकरार नामा लिख दिया
ताकि सनद रहे.

गयाह
श्रीकृष्णदत्त

दस्तखत
हरिदत्त शर्मा
बकलम खुद

अब मशहूर छन्दों का लक्षण कहता हूँ.
मात्रावाला—आर्या छन्द है.
जिसके पहिले चरण में तैसेही तीसरे
में १२ मात्रा हों और दूसरे में अठारह
और चौथे चरण में १५ हों वह
आर्या छन्द होता है.

अब अक्षरात्मक छन्द वयान किये जाते हैं
८ अक्षर का अनुष्टुप् छन्द है उसका
लक्षण, श्लोक में छठा गुरु, पाँचवा
सब जगह लघु, दूसरे और चौथे
चरणों में सातवां ह्रस्व और पहिले
तीसरे में सातवां दीर्घ जानना. -
११ अक्षरों के इन्द्रवज्रा षोडश पाँच
छन्द हैं.

॥ इन्द्रवज्रा—दो तगण, एक जगण, दो
गुरु, जिसके एक चरण में हों.

ति सार्धद्वयरूपकेण कुत्सिदेन सहाखि-
लं रिपयं प्रतिदास्यामि अनर्पणदशायां
मम मेहमेव पणत्वेन धृतमिति प्रतिज्ञा
पत्रीलखितं प्रमाणत्वेनदम्.

श्रीकृष्णदत्तः
(साक्षी)

हस्ताक्षराणि-
हरिदत्त शर्मणः(स्वयं)

अथ प्रसिद्धवृत्तानां लक्षणं मयीमि.
मात्रात्मकं—आर्या छन्दः.
यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा
तृतीयेऽपि अष्टादश द्वितीये चतुर्थ-
के पञ्चदश सार्या.

अक्षरात्मकानि छन्दांसि घण्यन्तेऽधुना.
८ अष्टाक्षराणामनुष्टुप्छन्दः तल्लक्षणम्
ऋंके षष्ठं गुरुत्रये सर्वत्र लघुपञ्च-
मम् द्वित्रितुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दी-
र्घमन्ययोः.

११ एकादशाक्षराणां पञ्चछन्दांसि इ-
न्द्रवज्रादीनि.

॥ इन्द्रवज्रा—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ
जगौ गः.

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महल्लिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

॥ उपेन्द्रवज्रा—ज, त, ज, ग, ग जहाँ हों।

॥ उपेन्द्रवज्रा—उपेन्द्रवज्रा नतजास्त-
तो गाँ।

॥ उपजाति—जिसमें इन्द्रवज्रा और
उपेन्द्रवज्रा के प्रम से लक्षण हों।

॥ उजाजतिः—अनन्तरौदीरितलक्षप्रमा-
जां पादौ यदीयाद्युपजातपस्ताः।

॥ रथोद्धता—र, न, र, छ, ग जिसके १
पाद में हों।

॥ रथोद्धता—रात्रगरविह रथोद्धता
लगौ।

॥ स्वायत्ता—र, न, म, ग, ग जिसके १
पाद में हों।

॥ स्वागता—स्वागतेति रत्नभाद्रगुरु-
युग्मम्।

१२ अक्षरों के पादवाला एक छन्द
वंशस्थ नाम है।

१२ छन्दशास्त्राणामेकं छन्दः वंशस्थ-
नाम।

॥ वंशस्थ—ज, त, ज, र जिसके एक
पाद में हों।

वंशस्थम् जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

षाट्ठ तेरह अक्षरों का मिला हुआ
पुष्पिताम्रा छन्द है।

छाट्ठसप्तयोदशाक्षराणां मिथीभूतं पु-
ष्पिताम्रावृत्तम्।

१२ } पुष्पिताम्रा { जिसके पहिले तीसरे
१३ } छन्द { पाद में न, न, र, य हों
और दूसरे चौथे में न,
ज, ज, र, ग हों।

१२ } पुष्पिताम्रा { अयुजि नयुसरेफतो
१३ } वृत्तम् { यकारोयुजि च नजां
जरगाश्च पुष्पिताम्रा।

तेरह अक्षर के पादवाले दो छन्द रु-
चिरा और प्रहर्षिणी हैं।

त्रयोदशाक्षराणां द्वे वृत्ते—रुचिरा प्र-
हर्षिणीति।

१२ रुचिरा—जिसमें ज, म, स, ज, ग
हों और चार और नौ अक्षरों पर
विराम हो।

१२ रुचिरा—चतुर्प्रदीरिह रुचिराज्जौ
सजौ गः।

१३ प्रहर्षिणी—जिसमें म, न, ज, र, ग
हों और ३ और १० पर विराम हो।

॥ प्रहर्षिणी—सौ जौ गखिदशपतिः
प्रहर्षिणीयम्।

चौदह अक्षरों का वसन्ततिलक नाम
एक छन्द है।

चतुर्दशाक्षराणामेकं वृत्तं—वसन्तति-
लकाद्यं।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

१४ वसन्ततिलक—त, भ, ज, ज, ग, ग जिसमें हों।

पन्द्रह अक्षरों का एक छन्द मालिनी।

१५ मालिनी—न, न, म, य, य जिसमें हो और ८ और ७ पर विराम हो।

सोलह अक्षरों का है तो लेकिन अप्रसिद्ध है।

सत्रह अक्षरों के तीन हैं हरिणी, शिखरिणी और मन्दाक्रान्ता।

१७ हरिणी—जिसमें न, स, म, र, स, ल, ग हो और छः चार और दस अक्षर पर विराम हो।

१७ शिखरिणी—जिसमें ६ और ११ पर विराम और य, म, न, स, भ, ल, ग हों।

„ मन्दाक्रान्ता—जिसमें ४ ६ और ७ पर विराम हो और म, भ, न, त, त, ग, ग हों।

अठारह अक्षरों का अक्षर अप्रसिद्ध है। उन्नीस अक्षर का एक शार्दूल विक्रीडित होता है।

१९ शार्दूलविक्रीडित—जहां १२ और सात पर विराम हो और म, स, ज, स, त, त, ग जिसमें हों।

बीस अक्षर का एक छन्द है सुवदना।

२० सुवदना—म, र, भ, न, य, भ, ल, ग जिसमें हों और ७, ८ और ६ पर विराम हो।

इक्कीस अक्षर का स्रग्धरा छन्द है।

१४ वसन्ततिलका—त, भ, ज, ज, ग, ग जिसमें हों। लका तभजा जगौ गः।

पञ्चदशवर्णाना मेकं वृत्त—मालिनी।

१५ मालिनी—ननमयययुतयं मालिनी भोगिलोकैः।

षोडशाक्षराणामस्ति तु परश्चाप्रसिद्धम्।

सप्तदशाक्षराणां त्रीणि-हरिणी, शिखरिणीमन्दाक्रान्तेति।

१७ हरिणी—रसयुगहृद्यैस्तौ श्री स्तौ गो यदा हरिणी तदा।

„ शिखरिणी—रसे रुद्रेदिच्छन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

„ मन्दाक्रान्ता—मन्दाक्रान्तजलधिपड मैममौ नतौ साद्गुरुचेत्।

अष्टादशाक्षराणां प्रायोऽप्रसिद्धम्।

एकोनविंशत्यक्षराणामेकं शार्दूलविक्रीडितम्।

१९ सूर्याभैर्मसजस्तता सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

विंशत्यक्षराणामेकं वृत्तसुवदना।

२० सुवदना—श्रेया सप्ताश्वपशुभिर्मरभनययुता भ्लौगः सुवदना।

एकविंशत्यक्षरात्मकं स्रग्धरावृत्तम्।

अभिनन्दनपत्राणि, निवेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, महेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

२१ स्रग्धरा—जिसमें ७, ७, ७ पर चि-
राम हो और म, र, भ, न य, य, य ये हो।

अपरबद्ध—

जिसके विषय अर्थात् पहिले तीसरे
पाद में न, न, र, ल, ग हों और सम
अर्थात् दूसरे चौथे में न, ज, ज, र हों।

(जब समस्या का पूरण करना)

श्रीरामचन्द्र महाराज के अभिषेक में मद्
से विह्वल हुई (किसी) तरुणी के हाथ
से गिरा हुआ स्वर्ण घट सांपान (जीना)
मार्ग में ठट इत्यादि शब्द करता है-
यह चौथे पाद की समस्यापूर्ति है।

* (सबके दो) सुमति और कुमति स-
म्पत्ति और आपत्ति का कारण होती है।* (एकही गोत्र में) समर्थ पुरुष होता
है जो कुटुम्ब को पालता है।* (बूढ़ा, जवान के) साथ परिचय से
स्त्रियों से त्याग दिया जाता है।* स्त्री, पुरुष को तुल्य जब प्रभु हो जाय
तभी वह घर अष्ट जानो।

(पहेलियाँ)

दूर जाय पर पग नहीं, साक्षर पाण्डित
नाहि । धेमुग स्फुट बोलें नदों जाते
सो पाण्डित माहि ॥ (चिट्ठी)।

* ये चार पाणिनि महाराज के सूत्र हैं
इन सूत्रों को ही अवलम्बन कर
किसी वाक्यन समस्या पूरण की है।

२१ स्रग्धरायां त्रयेण त्रिमुनियतियुता
स्रग्धराकौतितयम।

अपवद्धरम्

असुज्जिनरत्नागुरुः समंजमपरयक्र-
मिदं जन्तेजरो।

**

(अथ समस्यापूरणम्)

रामाभिषेके मदाविह्वलाया हस्ताद्युतो
हेमघटस्तदृण्याः । सोपानमार्गे प्रक-
रोति शब्दं ठटठटठटठटठटठटः ।

अत्रचतुर्थपादसमस्या पूर्तिः

* सर्वस्य छे सुमतिकुमती सम्पदाप-
त्तिहेतुः।* एको गोत्र प्रभवति पुमान् यः कुटुम्ब
विभक्तिः।* बूढ़ो यूना सह परिव्रयात् त्यज्यते
कामिनीभिः।* स्त्री पुवश्च प्रभवति यदा तदि गेहे
विनष्टम् । ?

(प्रहेलिकाश्च)

अपदो दूरगामी च साऽऽसरो न च पण्डि-
तः असुगः स्फुटवक्ता च यो जानाति
सपाण्डितः । २ (पत्रम्)

* रामानि चत्वारि पाणिनिः सूत्राणि,
एतान्येषां घलम्ब्य केनचित्कविना
समस्यापूर्तिं कृता।

अभिनन्दनपत्राणि, निषेदनपत्राणि, पत्राणि, छन्दोबोधः, प्रहेलिकाश्च ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

एक आंग्र पैर काफ नहिं, बिल चाहे नहिं सर्प । घटे बड़े जलधा न ग्लौ कटो जो रागी दरप ॥ (सुई)
वृक्ष अग्रवासी न खग, तीन नेत्र नहिं शर्व । बृकल धारी सिद्ध नहिं, जल धारी नहिं शम्भ ॥ (नारियल.)

अंखि नहीं और मिर नहीं, वे अङ्गुलि फी बाँह । नहिं पदयुग पर आपही रड़ चिपटे घपुमांही ॥ (अगरखा.)
आदि नहीं जेहि अन्त नहिं, बीच में टहरे जोय । है तेरे मेरे भी वह, कह सुनाय जो होय ॥ (आंख.)

पैदा हुई नरनारि से, देह रहित वह नारि । वेमुख पर बोले अधिक, जात मात्र बिनशाहि । (चुटको.)

काली क्या है (कौओं की पंक्ति); मीठी या प्रियक्या है (स्त्री); शीतल वह-नेवाली गङ्गा फोन सी है (काशी के नीचे वहनेवाली); किसको कृष्ण ने मारा (कंसको); किसको शीत नहीं सनाता (कम्बल वाले को) ।

इसी श्लोक में खवाल जवाब हैं किम् शब्दको अलग करके पढ़ने में प्रश्न हैं और उसे मिलाकर पढ़ने में उत्तर है.

एकवधुर्न काकोऽयं बिलमिच्छन्न पन्नगः क्षीयते वर्धते चैव न समुद्रो न चन्द्रमाः । ३ (सूचिका)
वृक्षाग्रवासी नच पथिराजखिनेत्रधारी नच शूलपाणिः त्वग्वस्त्रधारी नच सिद्धयोगी जलं च विभ्रत 'घटो नमेघः । १४। (नारिकेलफल)

अस्थि नास्ति शिरो नास्ति बाहुस्तितिर्ङ्गुलिः नास्ति पादद्वयं गाढमङ्गमालिङ्गति स्वयम् (५) (कञ्चुकः)
न तस्यादिर्नतस्यान्तो मध्ये यस्तस्य शिष्टति तथाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्द ६ (नयनम्.)

नरनारी समुत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता । अमुषी कुरुते शब्दं जातमात्रा विनश्यति छोटिका (चुटकी.), काकाली, कर्मधुरा काशीतलवाहिनी गङ्गा । कंसजघान कृष्णः कंबलवन्तं न बाधते शीतः । १।

अस्ति श्लोक एव प्रश्नोत्तरे स्तः किम् शब्दस्य-पृथक्पठने प्रणः नत्सं-योज्यपठने उत्तरम्.

चौबीसवां अध्याय—चतुर्विंशोऽध्यायः ।

बृहचर्याचन्द्रोदयादुद्भृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

अब प्रातःकाल सेही दिन का कृत्य कहते हैं.

सम्पूर्ण पापों की शांति चाहने वाला और आयु की रक्षा चाहने वाला मनुष्य चार घड़ी के तड़के उठ कर अपने इष्टदेव का स्मरण करे तब महाभारत में श्रीमद्भेदव्यासकृत प्रातःस्मरणीय स्तोत्र को पढ़े वही प "महर्षि भगवान् धेदुःशसभर्मात्मा चार ऋषीणां से इस संहिता को पहिले घनाकर अपने पुत्र शुक्रदेव को पढ़ाते हुए । १। हजारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र और स्त्री संसार में देखेगये देखेजाते हैं और देये जायेंगे । २। हजारों शोक की जगह सैकड़ों भय की जगह हर रोज भूढ़ को मालूम होती है पण्डित को नहीं । ३। भुजा उठाकर मैं चिह्नाता हूँ और कोई मेरी नहीं सुनता धर्म से अर्थ और काम होते हैं यह किसलिये भवन नहीं किया जाता । ४। मनुष्य न कभी कामना से न भय से न लोभ से जीवन के लिये भी धर्म

अथ प्रातःकालादेव दिनकृत्यमाह.

सर्वाद्यशान्त्यर्थी, आयुषोरक्षार्थी च मनुष्यो मासे मुहूर्त उत्थाय स्वेष्टदेवं स्मरेत् तत श्रीमद्भेदव्यासकृतं महाभारतान्तर्गतं प्रातःस्मरणीय "महर्षिभगवान्यासः कृत्वेमां संहितां पुराऋषीकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमप्याप्यच्छुक्रम् । १। माता पितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि चासंसारेष्वनुभूतानि यान्ति यात्यन्ति चापरे । २। शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे भूदमाविशन्ति न पण्डितम् । ३। ऊर्ध्ववाहुर्धिराभ्येय नच काश्चिच्छुणोतु मे धर्मादर्थश्च का मश्च स किमर्थं न सेव्यते । ४। न जानु कामाश्च भयाश्च लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतो धर्मो नित्यः सुखदुःखेनित्ये जीवो नित्यो हेतुस्य त्यानेत्यः । ५। इमां भारतसावित्रीं प्रातः प्रातः पठेत्तु यः स भारतफलं प्राप्य परं प्रह्लाधिगच्छति" । ६। पठेत् । तदनन्तरं

बृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

को न छोड़े क्योंकि धर्म नित्य है और सुख दुःख अनित्य हैं तैसेही जीव नित्य है और इस का हेतु अनित्य है । ५। हररोज सबेर जो मनुष्य भारतसावित्री को पढ़ेगा वह महाभारत का फल प्राप्त करके परब्रह्म को प्राप्त होगा। इस के अनन्तर “पवित्रकीर्ति राजानल, - पवित्रकीर्ति राजा युधिष्ठिर ओर पवित्रकीर्ति श्रीजानकीजी और पवित्रकीर्ति श्रीभगवान” स्मरण करे फिर “अश्वत्थामा, यलि, व्यास, हनुमान् और विभीषण कृपाचार्य और परशुराम ये सात चिरंजीवी हैं इन सातों को तथा आठवें मार्कण्डेय ऋषि को जो स्मरण करता है वह सम्पूर्ण व्याधियों से रहित हुआ सौ वर्ष जीता है” । फिर “अहल्या द्रौपदी, सीता, कुन्ती तथा मन्दादरी इन पाँचों को जो नित्य स्मरण करना है महापातक का नाश करने वाला है.”

फिर छोटे स्वप्न के फल को दूर करने वाला यह श्लोक पढ़े—

काशी की उत्तर दिशा में कुक्कुट नाम का एक द्विज है उसके स्मरण सेही दुःस्वप्न सुस्वप्न होजाता है.

“पुण्यश्लोको नलोराजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः” अश्वत्थामा वलिव्यासो हनूमोश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः ॥ सप्तैतान्सस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविचर्जितः ॥ पुनर्, अहल्याद्रौपदी सीता, कुन्ती मन्दादरी तथा । पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं, महापातकनाशिनम्.

पुनः दुःस्वप्ननाशनमिमं श्लोकं पठेत्.

काशीत उत्तर भागे, कुक्कुटो नाम वै द्विजः । तस्य स्मरणमायेन, दुःस्वप्नः सुस्वप्नो भवेत्.

बृहत्पर्याचन्द्रोदयाद्बृहता दिनपर्यारात्रिपर्याच ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

नये मनुष्य सबसे उठ कर देही, घी
दण्ड, सफेद सरसों, बेल, मोना,
माला घोड़ा हाथी, शीं ब्राह्मण हल-
दी, हथ इनको या इन में से किसी
को देने। न कि अशर्मा, कुत्ता, बिल्ली
इत्यादि को, यदि ये चीज पास में
नहीं तो अपनेही हाथ देख ले।

इसके बाद गाँव से या नगर से बाहर
वैश्वत दिशा में शूरवार के घाण
जाने की दूरतक (कम.सकम ५००-
६०० फुट) शुद्ध मिट्टी और जल पात्र
लेकर कोंड़े मकोंड़े से रहित जगह
में जाकर मिट्टी और जल का घनेन
रख कर यत्र में काम न आनेवाले
सूखे तिनकों से जमीन को ढककर
कर्ण या केंद्र में यक्षोपवीत लटका
चुप चाप नाक और मुँह मुँद कर
दिन में उत्तर को मुँह कर रात में
दक्षिण की ओर मुँह कर पाखाना
पेशाब फिर, डेले इत्यादि से शुद्ध
साफ कर और वहाँ से उठकर पहि-
ले लाये हुए मिट्टी और जल पात्र
लेकर गील आमले के बराबर मिट्टी
ले जल से दोबार इन्द्रिय को साफ
कर फिर मिट्टी और जल से तीन

तनो जनः प्रातःकथाय शधि, आज्य,
सुकुं मिद्भाग (श्वेतसर्पं) बिलयं,
स्वर्णम् खज. अर्घ्यं गजं, गां, धिप्रं,
हरिद्रां, द्यूमंतेपञ्च्यतमं वा पश्येत्
नत्वधर्मिण श्वानं मार्जारौदकं यद्ये-
नानि यन्मून्यभ्याशम्भानि नस्त्युस्त-
दावास्वहस्ताघेवाघलोकायेन्.

तदनन्तरं ग्रामाभ्रगराज्ञा यहिर्नश्रत्यां
वीरेपुक्षेपात्ययं शुद्धमुदं वात्पिपात्र
आदाय कीदादिशून्यस्थलं गत्वा
शुक्तिकां जलपात्रं च निधायशशियैः
शुरैकस्तूपेधरामाण्छाद्यप्राचृतशिराः
कण्ठलभितयमोपवीतः तूर्णान् प्रा-
णाह्येपिधाय दिवोदहृमुखो नक्तं द-
क्षिणामुखो मूत्रपुरीष उत्सृज्य लो-
ष्टादिना शुद्धं परिमृज्योत्थाय पूर्वगृ-
हीतमृज्जलपात्रे गृहीत्वाद्रामलक-
मात्रमृज्जलैर्विवारं शिश्रशौचं कृत्वा
पुनर्मृज्जलैश्चिवारमपानं संशोध्य पु-
नर्जलेनैव लिङ्गमुदे प्रक्षाल्य शुद्ध-
मृत्तिकयैकवारं हस्तं प्रक्षाल्य शुद्ध
भूमिमागत्यान्यमृज्जलेन दशवारं वा-
मकरं प्रक्षाल्य ततः करद्वयं सप्तवारं
मृज्जलैः प्रक्षाल्य पादावपि अनयैव
रीत्या त्रिः प्रक्षाल्यान्यजलेन द्वाद-

घृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

बार गुदा को शुद्ध कर फिर जल सेही लिंग और गुदा धोकर शुद्ध मिट्टी से एक बार हाथ धो और शुद्ध जगह पर आ दूसरी मिट्टी और जल से दस बार वाम हाथ को धो और फिर दोनों हाथों को सात बार मिट्टी और जल से धो, पावों को भी इसी रीति से तीन बार धो, दूसरे पानी से बारह कुह्ले बाँई तरफ़ कर जल के पात्र को तीन बार मँज जनेऊ ठोक कर दोवार आचमन करे.

अब दाँतन करना—दाँतन, बारह अंगुल चौड़ी और कनी उंगली के नोंक की बराबर मोटी, सीधी, घिना गाँठ या खखोडर की करनी चाहिये । एक २ दाँत को मुलायम कुंची से या दातों को शुद्ध करने वाले मज़न से मसूँहों पर जोर न देता हुआ, घिसे.

त्रिकुटा में शहद मिला कर या तेल और सैधा नमक मिलाकर या तेजोघर्ती चूर्ण से दाँत नित्य साफ़ करे.

अब दाँतन के योग्य लकड़ी यर्णन करते हैं.

आफ़ की लकड़ी में घीरे, बड़ में दीप्ति, कज्जा में घिजब, पिलखन में धन

शगडूपान्वाभमभगे कृत्वा जलपात्रं पि.पर्युक्ष्य उपवीती द्विराचामत्.

अथ दन्तधावनं—भक्ष्येहन्तपवनं द्वा-दशाङ्गुलमायतं कनिष्ठिकाग्रयत् स्थूलमृज्वग्रन्धितथाव्रणं एकैकं ग्रपयेद्दन्तं मृदुना कुर्चकं च, दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यवाधयन्.

क्षौद्रात्रिकटुकाकेन तेलसिन्धुभवेन वा चूर्णेन तेजाघत्याश्च दन्तानित्य विशोधयेत्.

अथ दन्तधावनाह्याणि काष्ठान्याह.

अके वीरे सटे दीप्तिः करजे घिजयो भवेत् मूक्षे चैघार्थसम्पत्तिर्वदर्याम-

वृहत्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।

दीलत, घेर में मीठी आवाज़, खैर में मुख की सुगन्ध, बेल में बहुत-सा धन, गूलर में बापी की सिद्धि, आम में आरोग्यता, कदम में धैर्य और बुद्धि और चम्पा में हठ मति, सिरस में कीर्ति, सौभाग्य, उन्न, और आरोग्यता; आंगा में धैर्य, बुद्धि, प्रकाशक तैसेही आवाज़; अनार में सुन्दर आकार, ककुम (अर्जुन) कुड़ा में तैसेही जाती, तगर और मन्दार इन से खोटा स्वप्न नाश होता है.

और लकड़ी निषिद्ध है । अथ अन्दाज सुनो.

प्राक्षणा की दौतन १२ अंगुल की, और क्षत्रियों की १० अंगुल की, वैश्यों की १८ अंगुल की और राज्ञों की ६ अंगुल की होती है.

स्त्रियों की दौतन उससे चौधारे अंगुल लेनी चाहिये.

अथ कुला करने की तरकीब लिखी जाती है.

बारह शौचानन्तर, और पेशाब जाने पीछे चार और भोजन के पीछे १६ कुले करे.

संस्कृत ।

धुरो ध्वनिः मन्दिरं मुखसौगन्धं विल्वे तु विपुलं धनं उदुम्बरं तु वाक्सिद्धिरात्रं त्पारोग्यमेव च कदम्बे तु धृतिर्मेधा, चम्पके तु हठा मतिः शिरीषे कीर्तिसौभाग्यमायुः पारोग्यमेव च अणामाण्डुतिर्मेधा प्रहा शक्तिस्तथा ध्वानः दाडिभ्यां सुन्दरकारः ककुमे कुटजे तथा, जातीतगरमन्दारैर्दुःस्वप्नश्च विनश्यति.

निषिद्धान्यन्यानि काष्ठानि । अथ प्रमाणं शृणु.

द्वादशाङ्गुलं विप्राणां क्षत्रियाणां दशाङ्गुलं अष्टाङ्गुलं वैश्याणां शूद्राणाम्नुपङ्गुलम्.

दन्तकाष्ठान्तु शूद्राणां त्र्याणां तत्रानुपङ्गुलं.

अथ गणहूपविधिर्लिख्यते.

कुर्वाद्द्वादशगणहूपान् पुरीषोत्सर्जने ततः मूत्रोत्सर्गे च चतुरां भोजनान्ते तु षोडशाः.

दृढचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारान्त्रिचर्याच ।

हिन्दी ।

संस्कृत ।

तब मनुष्य स्नान, स्नान के पीछे सन्ध्यावन्दन और अपने इष्ट देव का पूजन उसके पीछे यथा शक्ति गायत्री का जाप और * पांच महा यज्ञ करे.

ततो जनः स्नानं, स्नानानन्तरं सन्ध्य-
वन्दनं स्वेषुदेवार्चनं तत्पश्चाद्गायत्री
जापं * पञ्चमहायज्ञांश्च समाचरेत्.

तब भोजन के आदि में मंगलांक धस्तुओं का जैसे अग्नि, सौ, जल, ब्राह्मण सोना, घी, सूर्य, और राजा इन का दर्शन और परिक्रमा करे। तब चलि-वैश्वदेव और भोजन का ईश्वरार्पण "ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः पद्भिः समन्वितं भक्ष्यभोज्यं त्वया नित्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः" "विद्यात्मा प्रीयतां" इत्यादि वाक्यों से करना। इसके अनन्तर भोजन पहिले मीठी चान्नीका उसके बाद औरों का, खाकर सौ पैड़ चल ले फिर घाट पर सीधा लेटा हुआ आठ उसास ले और उनके दुगुने दाहिनी करघट में और उनके दुगुने बाई करघट में

ततो भोजनादौ मातृल्यवस्तूनां यथा अग्निगोजलब्राह्मणस्वर्णधृतादित्य-
राज्ञां दर्शनं प्रदक्षिणञ्च कुर्यात् ततो वलिवैश्वदेवं भोजनस्यैश्वर्यार्पणञ्च "ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः पद्भिः समन्वितं भक्ष्यभोज्यं त्वया नित्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां, पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति, तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः" "विश्वात्मा प्रीयतामित्यदि वाक्यैः" कुर्यात् ततो भोजनं मिष्टवस्तूनां प्रथमं तदनन्तरमन्येषाम्; भुक्त्या शतपदं गच्छेत् पुनः शय्यायां श्वास्तानष्टौ समुत्तानस्तान् द्विः-
पाश्वे तु दक्षिणे ततस्तद्वृद्धिगुणान्वा-
मे पश्चात्सुप्याद्यथा सुप्तं ग्रीष्मर्तौ तु दिवाशयनं सुप्तप्रदं प्रापशः पित्त-

* पहिले अध्याय में स्पष्टीकृत से देखो.

* नोट प्रथमे अध्याये फुट पद्यत .

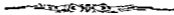
बृहच्चर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यासत्रिचर्या च ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>पीछे चाहे जैसे सोवे । प्राग्म क्रतु में दिन को सोना सुख देने वाला है और अक्सर पित्त मिजान वालों को बहुत जरूरी है और दूसरी क्रतुओं में दिनका सोना मना है ।</p> <p>तिस के बाद घर के काम और उनके अमाव में भक्ति रस में पगेहुए पारमार्थिक ग्रन्थों को शाम तक पढ़े या सुना करे ।</p> <p>फिर पहिलीही तरकीब से शांचादि काम करके सायंकाल को सन्ध्या करे सन्ध्या समय भोजन, स्त्री प्रसंग, सोना पढना, तिसना, रास्ता चलना ये काम छोड़ दे । दीये जलने के पीछे कोई धर्म पुस्तक धैरह पढ़ कर और ईश्वर के गुणानुवाद गाकर या सुन कर सूक्ष्म भोजन करे ।</p> <p>सब दूसरे पहर के आने पर कामशास्त्र में कोई हुए दिनों में ही फोड़ा घर में जाय यहां पहिले पाँच धोकर ग्लाट को वैदिक गारुड़ मन्त्रों से अनि मन्त्रित कर लठिया, जल का पात्र</p>	<p>प्रकृतीनाश्चात्यावश्यकमन्यतुषु च दिघास्वापो निषिद्धः-</p> <p>तदनन्तरं गृहकृत्यान् तदभावे भक्ति-साक्तान्पारमार्थिकान्ग्रन्थान् यावत्सन्ध्यासमय पठेच्छृणुयात् ।</p> <p>ततः पूर्वैणैव विधिना शांचादिकं कृत्वा सायं सन्ध्यामुपासीत । सायं काले आहारं मैथुनं निद्रां सम्पाठं मार्गमनमेतानि कर्माणि यजेत् । दीपकान्ज्वलनानन्तरं कानिचिन्नर्मपुस्तकानि पठित्वेश्वरगुणानुवादांश्च गात्वा श्रुत्वा चा लघु भोजनं कुर्यात् ।</p> <p>ततो द्वितीयं प्रहरागमे कामशास्त्रमोक्तेष्वेव दिवसेषु रतिमन्दिरं प्रजेत् । तत्र पूर्वं पादौ प्रक्षाल्य शश्यां वैदिकैर्गारुडैर्मन्त्रैरभिमन्त्र्य वेणुदण्डमभ्युपात्रश्चास्थानि पुण्यादीनि रम्या-</p>
<p>१ नोट अमावस पूर्ण्यौ को छोड़ क्रतु से समतिथि ४, ६ इत्यादि में रवि, मंगल, शुक्रवार को और पुरुष मन्त्रों में प्राश्यधर्म श्रेष्ठ है ।</p>	<p>१ नोट पक्षद्वयपूर्णिमां हित्वा क्रतुतः समाप्तु निधिसुरवि कुञ्जगुरुवारुषु, पुनश्चैषु च प्राश्यधर्मः प्रदास्तः ।</p>

वृहचर्याचन्द्रोदयादुद्धृता दिनचर्यारात्रिचर्याच ।

हिन्दी ।	संस्कृत ।
<p>ओर भी पुण्य वगैरह रमणीय चीजें सिरहाने रख कर सोये इस प्रकार दिन के काम ओर रात के काम सतम हुए.</p>	<p>णि वस्तूनि शिर.स्नाने निधाय स्व-पेदिति दिनचर्या रात्रिचर्या च समाप्ता.</p>
<p>गौड़ वंश उत्पन्न कृष्ण पादपद्मज भ्रमर श्रीदुर्गाप्रसाद पुत्र सुखानन्दनामक भयो ॥ १ ॥ उत्तिस सो इकसठ बरदा पुनपोत्तम तह मास शुक्र चतुर्थी शुक को शिवहि समर्प्यो दास ॥ २ ॥</p>	<p>गौड़ान्ववायजातः गोविन्दांप्रिसरोजप- दपदोऽयम् दुर्गाप्रसादसूनुः सुखा- नन्दाख्यत्रिपाठीति ॥ १ ॥ रसारसाङ्गभूमिते, हायने मासि तु स- हस्यनामके उशनसि शुक्रचतुर्थ्या कृत्वा पूर्णमथाप्यवच्छिवाय ॥ २ ॥</p>

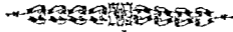
इति श्रीसुखानन्दत्रिपाठिविरचिते व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधे प्रथमो भागः ।



प्रथमो भागः समाप्तः ।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोधे ।



द्वितीयो भागः ।

यज्ञोदानन्दनं नत्वा बालबोधाय शूरिशः
सारमुद्धृत्य कौमुद्या वर्णयते नरभाषया ॥ १ ॥

अथ सन्धिप्रक्रियाप्रदर्शकः

प्रथमोऽध्यायः ।

[जब दो अक्षर निकट होकर परस्पर मिल जाते हैं और उनके मिलने से जो विकार होता है वह सन्धि कहलाता है] सन्धि मुख्य तीन प्रकारकी हैं १ स्वर-सन्धि २ व्यञ्जनसन्धि ३ विसर्गसन्धि । जहाँ सन्धि होसकी हो और घां न हो वह एक चौथी प्रकृतिभाव सन्धि कहलाती है, क्रमसे प्रत्येक का विवरण देग्यो ।

जब स्वरके साथ स्वरका संयोग होता है उसे स्वरसन्धि कहते हैं और वह ५ प्रकार की है, १ यण्, २ दीर्घ, ३ गुण, ४ वृद्धि और ५ अयादि चतुष्टय । १ यण्—यदि ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ, ल इनसे परे अपने सवर्ण स्वरको छोड़ कोई स्वर परे हो तो क्रमसे उपरोक्त वर्णों के स्थान में य्, व्, र्, ल होजाते हैं (इकोयणचि) जैसे सुधी + उपास्यः सुधुपास्यः, मधु + मत्र मध्वत्र, पितृ + आज्ञा पित्राज्ञा, लृ + अनुबन्धः लनुबन्धः ।

२ दीर्घ—ह्रस्ववा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, ल से परे इनके सवर्णा अक्षर परे हों तो दोनों मिलकर एक दीर्घ स्वर होजाता है । (अकः सवर्णेदीर्घः) जैसे तव + आदरः तवादरः, दधि + इह दीर्घाह, साधु + उक्तिः साधूक्तिः, पितृ + ऋणम् पितृणम् ।

- ३ गुण—यदि अ, आ से परे ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ हो तो क्रम से ए, ओ, अर् होजाता है (आद्गुणः) जैसे देव + इन्द्रः देवेन्द्रः, नील + उत्पलं नीलोत्पलं, देव + ऋषिः देवर्षिः ।
- ४ वृद्धि—यदि अ वा आ से परे ए, ऐ, ओ, औ वा मरण होतो दोनों मिलकर क्रम से ऐ, औ और आर होजाते हैं (वृद्धिराद्ये) जैसे एक + एकम् एकैकम्, जल + आघः जलोघः, शीत + श्रतः शीतार्तः ।
- ५ अयादिचतुष्टय—यदि ए, ऐ, ओ, औ से परे अपने म्बर्णों स्मरवर्णों को छोड़ और कोई स्वर होतो क्रम से अच्, आच्, अच्, आच्, रों आते हैं (एचोः यथायथा) जैसे शे + अन्म् शयन्म्, विने + अकः विनायकः, भो + अने भरतम्, पा + अकः पायकः ।
- ६ यदि पदान्त के ए वा ओ से परे अ आवे तो उस आकार का लोप करके उसकी जगह (ऽ) यह चिन्ह कर देते हैं (एऽः पदान्तादति) जैसे कवे + अपेहि कवेऽपेहि, पटो + अत्र पटोऽत्र ।
- ७ यदि पदान्त के ए वा ओ से परे अकार को छोड़ कोई स्वर धर्ण रहे तो विफल्य से अच्, अच् के ष् और ष् का लोप हो जाता है दूसरे पक्ष में अच् और अच् ही बने रहते हैं (लोपे' शोकल्पस्य) सखे + आगच्छ सख आगच्छ, सप्तयामच्छ, प्रभो + एहि प्रभवेहि, प्रभवेहि ।
- ८ यदि किसी उपसर्ग के अ वा आ से परे एच् और इच् धातुओं के 'ए' को छोड़ और कोई ए वा ओ होतो दोनों मिल कर ए और ओ ही रहता है ऐ और औ नहीं (एडिपर रूपम्) जैसे प्र + एष्यति प्रेष्यति, उप + ओषति उपोषति, परा + एधते परैधते ।
- ९ यदि अ वा ओ से परे ओष्ठ और ओतु हैं और समास विधे जायतो विकल्प से आ होजाता है यदि समास न हो तो औ ही होता है (ओत्वोष्ठयोः समासेवा) जैसे विम्ब + ओष्ठः विम्बोष्ठः, विम्बोष्ठः, स्थूल + ओतुः स्थूलोतुः स्थूलोतुः, तघ + ओष्ठः तघोष्ठः ।

अथप्रकृतिभावसन्धिः ।

- १ ऐसी अन्यय जो एक स्वरवाली हों या जिनके अन्त में ओ हो तो वहाँ सन्धि, योग होने पर भी नहीं होती (निपात एकाजनाद्, ओत्) जैसे आ + एवम् अहो + अपेहि ।

२ यदि द्विवचन के ई, ऊ, या ए हों तो वे भी सन्धि योग होने पर सन्धि को प्राप्त नहीं होते (ईदूदेदूद्विवचनमग्रहम्) जैसे कधी + इमो, साधु + आगता, लते एते ।

३ अदम् शब्द के भी ईकार ऊकार सन्धि को प्राप्त नहीं होते (अदसोमात्) जैसे अमी + अश्वाः, अम् + अर्मको ।

अथ व्यञ्जन सन्धिः ।

जब व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का या स्वर का सयोग होता है तो उसे व्यञ्जन (ह्रस्व) सन्धि कहते हैं ।

१ सकार या तवर्ग को शकार या चवर्ग का योग हो तो क्रमसे शकार चवर्ग होजाते हैं (स्तोः श्चुना श्चुः) जैसे हरि + शते हरिश्शते, सत् + चित् सच्चित् ।

२ सकार या तवर्ग को पकार या टवर्ग का योग होता क्रमसे पकार या टवर्ग होजाते हैं (ष्टुनाष्टु) जैसे राम + पृष्ठ रामपृष्ठ, तत् + टीका तटीका ।

३ पदान्त के जो प् द् त् क् प् से क्रमसे ज्, झ्, ढ्, ग्, घ् होजाय यदि कोई स्वर या ह य व र ल या किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ अक्षर पर हो परञ्च पञ्चम अक्षर परे हेतु विकल्प से अनुनासिक अक्षर भी होजाय (ब्रह्मां जशोऽन्ते, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) जैसे वाक् + ईश वागीश, चित् + रूपम् चिद्रूपम्, एतत् + मुरारि एतद्मुरारि, एतन्मुरारि ।

४ तवर्ग से परे लकार हो तो तवर्ग के स्थान में भी लकार होजाता है परन्तु न् के स्थान में अनुनासिक ही लें होता है (तोर्लें) तत् + लुनाति तल्लुनाति, भवान् + लिपति भवो लिपति ।

५ ष् द् त् क् प् के उत्तर हकार हो तो उनके स्थान में क्रम से म्, ङ्, ष्, प्, भ् अर्थात् जिसवर्गके वे अक्षर हों उसी का चौथा अक्षर उस "ह" के स्थान में विकल्प से होजाता है और पहिले ष् आदि अक्षरों को उसी वर्गका तीसरा अक्षर होजाता है (क्षयोहोऽन्यतरस्याम्) जैसे, दिक् + हस्ती दिग्हस्ती ।

६ ष् द् त् क् प् के उत्तर जो शकार उसको विकल्प से "छ" हो यदि कोई स्वर या ह् य् व् र् चर्ण परे होवे (शश्छोऽटि) जैसे तत् + शिव तच्छिव, तच्छिव ।

- ७ ह्रस्व से परे जो पदान्त के नृ ङ् ण् वे स्वर परे होने पर छिप्य हो जाँय (उमो ह्रस्वादिचिडमुण् नित्यम्) जैसे राजन्+इह राजन्निह, प्रत्यङ्+आत्मा प्रत्यङ्ङात्मा, सुगन्+इह सुगण्णिह ।
- ८ यदि नकारान्त पद से परे ए इ ध्र, ष् द, त् होंतो सकार का भागम और नकार को अनुस्वार होजता है (नश्चव्यप्रशात्र) जैसे नृत्यन्+चकारः नृत्यञ्चकारः ।
- ९ धनुस्वार से ऊपरवर्ण छोड़ कोई व्यञ्जन परे होतो उस व्यञ्जन का सवर्णो पञ्चमाक्षर होजायगा । परञ्च यदि अनुस्वार पदान्त का होतो विकल्प से उक्त वर्ण का पञ्चमाक्षर होगा (अनुस्वारस्ययपि परसवर्णः । पापदान्तस्य) जैसे म+कित्, अङ्कित, धं+चित्, वञ्चित, र्+करोपि त्वञ् करोपि, त्वकरोपि ।
- १० यदि ह्रस्व स्वर से 'छ' परे होतो 'च्छ' होजाता है, और कहीं दीर्घ स्वर के अनन्तर भी होता है (छेच, दीर्घात्) परन्तु पदान्त दीर्घ के अनन्तर विकल्प से 'च्छ' होता है (पदान्ताद्वा) जैसे तव+छत्र, तवच्छत्र, म्हे+छ म्हेच्छ, लक्ष्मी+छाया लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया ।

अथ विसर्गसन्धिः ।

- १ जय विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन का संयोग होता है तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं । विसर्ग से परे सकार या तवर्ग होतो सकार और दाकार या चवर्ग होतो दाकार और पकार वा टवर्ग हो तो पकार हो जाता है (विसर्गनीयस्यसः) विष्णुः+प्राता विष्णुप्राता, पूर्णः+चन्द्रः पूर्णञ्चन्द्रः, धनुः+टङ्कारः धनुष्टङ्कारः ।
- २ यदि विसर्ग से परे "ञ्" हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है और 'ञ' का लोप हो जाता है और यदि किसी वर्ग का मृतीय, चतुर्थे, पञ्चम या षष्ठे लृ ष् ष् परे हो तो भी विसर्ग का 'ओ' हो जाता है (अतोरोरप्लुतादप्लुते) (हशिच) जैसे शिव + अर्च्यः शिवोऽर्च्यः, शिवः+वन्द्यः शिवोवन्द्यः ।
- ३ यदि भो, भगो, अघोः और अकार से परे विसर्ग हो और उनसे परे श को छोड़ और कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है । और यदि

आकार से परे विसर्ग हो और उसके परे किसी वर्ण का तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण या य र ल घ ङ परे हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और फिर सन्धि नहीं होती (भोभगो धधो अपूर्वस्ययोऽपि) जैसे चन्द्रः+ उदेति चन्द्रउदेति, भग्वाः+भमी भग्वाभमी ।

४ अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उससे परे कोई स्वर या किसी वर्ण का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अक्षर या य र ल घ ङ परे हो तो विसर्ग का रकार हो जाता है (नामिनोरः चं० पू०) जैसे कविः+अय कविरयम्, शिशुः+हसति शिशुहसति ।-

५ यदि अकार के अनन्तर रकार का विसर्ग हो और उससे परे कोई स्वर, किसी वर्ण का तृतीय चतुर्थ पञ्चम अक्षर या ह य व र ल परे हो तो विसर्ग का फिर रकार हो जाता है (रः च० पू०) जैसे पुनः+अपि पुनरपि, मातः+देहि मातदेहि ।

६ यदि रकार से परे रकार हो तो पहिला र लोप हो जाता है और उसके पूर्व हस्य स्वर दीर्घ हो जाता है (रोरि । दलोपेपूर्वस्यदीर्घोऽणः) जैसे पुनः+रमते पुनारमते, विधुः+राजते विधूराजते ।

७ सः और एपः शब्द को विसर्ग 'अ' को छोड़ और कोई वर्ण परे रहते लोप हो जाता है (पतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्जलमासेहलि) जैसे सः+हसति सहसति, एपः+आगतः एपआगतः ।

न् का ण् होना ।

८ ऋ ऋ र् पू से परे न् हो तो ऋह ण् में बदल जाता है और यदि इनके बीच में कोई स्वर, कर्ण, पवर्ण और य् व् ह् और अनुस्वार, एक या अनेक आएँ तोभी कुछ ण् के बदलने में बाधा नहीं होती। (रपाभ्यानांणः समानपदे, अङ्कुषाद्दुम् व्यवायेऽपि) जैसे चतुर्णाम्, मूर्खेण, वृहणम् ।

म् का प् होना ।

९ कवर्ण, और अ आ को छोड़ शेष स्वर, और ह य व र ल इनसे परे किसी सूत्र का किया स् या किसी प्रत्यय का अवयव स् हो तो प में बदल जाता है (आदेशप्रत्यययोः) जैसे सुपाथ, नदीपु, सधेपाम् ।

पद्मलिङ्गरूपप्रदेशको द्वितीयोऽध्यायः ।

(पुं) अकारान्त राम (ईश्वर) रमन्ते
योगिनो भूतानि वा यस्मिन्,
रम् + घञ् ।

प्र.	रामः	रामौ	रामाः
द्वि.	रामम्	रामौ	रामान्
तृ.	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
च.	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
प.	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
प.	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सं.	रामे	रामयोः	रामेषु
सं.	हे राम	रामौ	रामाः

आ० विश्वपा (विश्व का रक्षक) विश्वं
पातीति, विश्व + पा + क्तिप् ।

प्र.	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वि.	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृ.	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
च.	विश्वपे	"	विश्वपाभ्यः
पं.	विश्वपः	"	"
प.	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सं.	विश्वपि	"	विश्वपासु
सं.	हे विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः

इ—हरिः (ईश्वर) हरति पापानिति,
ह + हञ् ।

प्र.	हरिः	हरी	हरयः
द्वि.	हरिम्	हरी	हरान्
तृ.	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च.	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः

पं.	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पं.	हरेः	हय्याः	हरीणाम्
सं.	हरी	हय्याः	हरिषु
सं.	हे हरे	हरी	हरयः

इ—सखि (मित्र) सहसमानं व्याप्यत
इति, सह + ख्या + इञ् ।

प्र.	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि.	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृ.	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च.	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं.	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं.	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सं.	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सं.	हे सखे	सखायौ	सखायः

ई—पर्षी (सूर्य) पातिलोकमिति पा + ई

प्र.	पर्षीः	पर्ष्यौ	पर्ष्यः
द्वि.	पर्षीम्	पर्ष्यौ	पर्ष्यः
तृ.	पर्ष्या	पर्षीभ्याम्	पर्षीभिः
च.	पर्ष्ये	पर्षीभ्याम्	पर्षीभ्यः
पं.	पर्ष्यः	पर्षीभ्याम्	पर्षीभ्यः
पं.	पर्ष्यः	पर्ष्योः	पर्ष्याम्
सं.	पर्षी	पर्ष्योः	पर्षीषु
सं.	हे पर्षीः	पर्ष्यौ	पर्ष्यः

ई—सुधी (अच्छी बुद्धिवाला) सुष्ठु
शोभनाधीर्पस्य सः, सु + ध्या + ई

प्र.	सुधीः	सुधीया	सुधीयः
द्वि.	सुधिपम्	सुधीयौ	सुधीयः

तृ. सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
च. सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पं. सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
प. सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
स. सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सं. हे सुधीः	सुधियौ	सुधियः
उ + भानु (सूर्य) भातीति	भा + नुक्	
प्र. भानुः	भानू	भानवः
द्वि. भानुम्	भानू	भानुन्
तृ. भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
च. भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पं. भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
प. भानोः	भान्योः	भानून्
स. भानौ	भान्योः	भानुषु
सं. हे भानो	भानू	भानवः

ऊ—वर्षाभू (मंडक) वर्षायास्त्वव-
तीति भू + क्तिप् ?

प्र. वर्षाभूः	वर्षाभ्यौ	वर्षाभ्यः
द्वि. वर्षाभवम्	वर्षाभ्यौ	वर्षाभ्यः
तृ. वर्षाभवा	वर्षाभ्याम्	वर्षाभूमिः
च. वर्षाभवे	"	वर्षाभूम्यः
पं. वर्षाभ्यः	"	वर्षाभूम्यः
प. वर्षाभ्यः	वर्षाभ्योः	वर्षाभवाम्
स. वर्षाभिः	वर्षाभ्योः	वर्षाभूषु
सं. हे वर्षाभूः	वर्षाभ्यौ	वर्षाभ्यः

ऊ—स्वयम्भू (धन्वा) स्वयंभवतीति
भू + क्तिप्

प्र. स्वयम्भूः	स्वयम्भुषौ	स्वयम्भुवः
द्वि. स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवो	स्वयम्भुवः

तृ. स्वयम्भुवा	स्वयंभूष्यां	स्वयम्भूमिः
च. स्वयम्भुवे	"	स्वयम्भूम्यः
पं. स्वयम्भुवः	"	"
प. स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयंभुवाम्
स. स्वयम्भुवि	"	स्वयम्भूषु
सं. हे स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
ऊ—पितृ (पिता) पातिरक्षतीति		
	पा + तृप्	
प्र. पिता	पितरौ	पितरः
द्वि. पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृ. पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च. पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं. पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
प. पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
स. पितरि	"	पितृषु
सं. हे पितः	पितरौ	पितरः

ऊ—रै (धन) रेत्याददाति जनोवस्तु-
भ्यनेन रा + डै

प्र. राः	रायौ	रायः
द्वि. रायम्	रायो	रायः
तृ. राया	राभ्याम्	राभिः
च. राये	राभ्याम्	राभ्यः
पं. रायः	राभ्याम्	राभ्यः
प. रायः	रायोः	रायाम्
स. रायि	रायोः	रायु
स. हे राः	रायौ	रायः

ओ—गौ (गाय) गच्छतीति गम् + डौ

प्र. गौः	गावौ	गावः
द्वि. गाम्	गावौ	गाः

तृ. गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च. गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पं. गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
प. गोः	गवोः	गवाम्
स. गवि	गवोः	गोषु
सं. हेगोः	गावो	गावः

औ—ग्लौ (चन्द्रमा) ग्लायतीति
ग्लै + डौ

प्र. ग्लौः	ग्लौवो	ग्लौवः
द्वि. ग्लायम्	ग्लौवो	ग्लौवः
तृ. ग्लौषा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
च. ग्लौषे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
पं. ग्लौषः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
प. ग्लौषः	ग्लौवोः	ग्लौवाम्
स. ग्लौषि	ग्लौवोः	ग्लौषु
सं. हेग्लौः	ग्लौवो	ग्लौवः

धज्जन्त स्त्रीलिङ्ग गा—रमा (लक्ष्मी)
रमपति लोकात्, रम् + अच् + ओ

प्र. रमा	रमे	रमाः
द्वि. रमाम	रमे	रमाः
तृ. रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च. रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पं. रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
प. रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
स. रमायाम्	रमयोः	रमाणु
सं. हेरमे	रमे	रमाः

इ—मति (बुद्धि) मन्थते शायतेऽनया,
मन् + क्तिन्

प्र. मति	मती	मतयः
----------	-----	------

द्वि. मतिम्	मती	मतीः
तृ. मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च. मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
प. मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
प. मत्याः, मतेः	मत्याः	मतीनाम्
स. मत्याम्, मती	"	मतिषु
सं. हेमते	मती	मतयः

ई—नदी (दर्याञ्ज) नदन्ति जलजन्त-
घोषस्यां, नद् + अच् + ई

प्र. नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि. नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ. नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च. नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं. नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
प. नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स. नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं. हेनदि	नद्यौ	नद्यः

उ—धेनु (गौ) धयतिस्तुनानिति
धे + नुच्

प्र. धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि. धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ. धेन्या	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च. धेन्यै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं. धेन्याः, धेनोः	"	धेनुभ्यः
प. " " धेन्योः	"	धेनूनाम्
स. धेन्याम्, धेनौ	"	धेनुषु
सं. हे धेनो	धेनू	धेनवः

ऊ—धू (गौ) ध्राप्यतीति, ध्रम् + डू

प्र. धूः	ध्रुवौ	ध्रुवः
----------	--------	--------

द्वि.	भ्रूवम्	"	"
तृ.	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूमिः
च.	भ्रुवै, भ्रुवे	"	भ्रूभ्यः
पं.	भ्रुवाः, भ्रुवः	"	"
प.	"	भ्रुवोः	भ्रुवाम् भ्रूणाम्
स.	भ्रुवाम्, भ्रुवि	"	भ्रुषु
सं.	हे भ्रूः	भ्रुवै	भ्रुवः

भ्रू-मातृ (माता) मीयते आद्रियते
या; मा + तृच्

प्र.	मातृ	मातरौ	मातरः
द्वि.	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृ.	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
च.	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पं.	मातृः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
प.	मातृः	मात्रोः	मातृणाम्
स.	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सं.	हे मातः	मातरौ	मातरः

पे-सुरै (अच्छे धनवाली) सुष्टु
श्रीभनौरायस्यः सा

प्र.	सुरम्	सुरायौ	सुरायः
द्वि.	सुरायम्	सुरायौ	सुरायः
तृ.	सुरगया	सुराभ्याम्	सुरामिः
च.	सुराये	सुराभ्याम्	सुराभ्यः
पं.	सुरायाः	सुराभ्याम्	सुराभ्यः
प.	सुरायाः	सुरावोः	सुरायाम्
स.	सुरायि	सुरायोः	सुरासु
सं.	हे सुराः	सुरायौ	सुरायः

शौ-तौ (नाच) नोद्यते या सा, नुद् + डौ

प्र.	नौः	नायौ	नाथः
द्वि.	नाथम्	नाथौ	नाथः
तृ.	नाथा	नौभ्याम्	नौभिः
च.	नाथे	नौभ्याम्	नौभ्यः
पं.	नाथः	नौभ्याम्	नौभ्यः
प.	नाथः	नायोः	नावाम्-
स.	नाथि	नावोः	नौषु
सं.	हे नौः	नाथौ	नाथः

(अ. नपुं.) अ-ज्ञान (समग्र) ज्ञायते-

ऽनेनेति, ज्ञा + ल्युद्

प्र.	ज्ञानम्,	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वि.	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृ.	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानैः
च.	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानेभ्यः
पं.	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानेभ्यः
प.	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
स.	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सं.	हे ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि

इ-वारि (जल) वार्यतेऽनेनेति,

वृ + इन्

प्र.	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि.	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ.	वारिणा	वारिभ्यां	वारिभिः
च.	वारिणे	वारिभ्यां	वारिभ्यः
पं.	वारिणः	वारिभ्यां	वारिभ्यः
प.	वारिणः	वारिणोः	वारीणां
स.	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सं.	हे वारि, वारे वारिणी		वारीणि

इ—अक्षि (नेत्र) अक्ष्यन्ते व्याप्यन्ते
रूपादिपदार्थां वैन, अक्ष् + क् + सि

प्र. अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वि. अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृ. अक्षणा	अक्षिभ्यां	अक्षिभिः
च. अक्षणे	अक्षिभ्यां	अक्षिभ्यः
प. अक्षण.	अक्षिभ्यां	अक्षिभ्यः
प. अक्षणः	अक्षणोः	अक्षणाम्
स. अक्षिणं अक्षणि अक्षणोः	अक्षिणु	
स. हे अक्षे अक्षि इत्यादि		

उ—मधु (दाहद) मन् + उ नस्य धः

प्र. मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि. "	"	"
तृ. मधुना	मधुभ्यां	मधुभिः
च. मधुने	"	मधुभ्यः
पं. मधुनः	"	"
प. "	मधुनोः	मधूनां
स. मधुनि	"	मधुपु
स. हे मधो मधु		इत्यादि

ऋ—धावृ (धाव) दधातीति,
धा + वृष्

प्र. धावृ	धावृणी	धावृणि
द्वि. "	"	"
तृ. धाव्रा	धावृभ्यां	धावृभिः
च. धाव्र	धावृभ्यां	धावृभ्यः
पं. धावृः	धावृभ्यां	धावृभ्यः
प. धावृः	धावृभ्यां	धावृभ्यः
प. धावृः	धावृभ्यां	धावृभ्यः
स. धावृणि	धावृभ्यां	धावृभ्यः
स. हे धावृ धावृ		इत्यादि

ऐ—प्रै (क्रीमती) सुप्त् गायन्त्यन्तु

प्र. प्रै	प्रैणी	प्रैणि
द्वि. "	"	"

-शेष पुंस्वत्

ओ—प्र्यो (आकाश) प्रफर्णेण-
दाज्यतीति तत्

प्र. प्र्यु	प्र्युनी	प्र्युनि
द्वि. "	"	"

शेषं पुंस्वत्

औ—सुनौ (अच्छी नाचवाला) सुप्त्
शोभनानौयंत्र तत्

प्र. सुनु	सुनुनी	सुनुनि
द्वि. "	"	"

तृ. सुनुना	सुनुभ्यां	सुनुभिः
च. सुनुने	सुनुभ्यां	सुनुभ्यः

प. सुनुनः	सुनुभ्यां	सुनुभ्यः
प. सुनुनः	सुनुनोः	सुनुनाम्

स. सुनुनि	सुनुनोः	सुनुपु
सं. हे सुनु		इत्यादि

हलन्त पुल्लिङ्ग च—जलमुच् (घादल)

जलमुञ्जतीति, मुच् + क्तिर्

प्र. जलमुच्	जलमुची	जलमुचः
द्वि. जलमुचं	"	"

तृ. जलमुचा	जलमुचभ्यां	जलमुचभिः
च. जलमुचे	जलमुचभ्यां	जलमुचभ्यः

पं. जलमुचः	जलमुचभ्यां	"
प. जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचां

स. जलमुचि	"	जलमुचु
सं. हे जलमुच्		इत्यादि

ञ्—घणिञ् (घनिघा) पणाघते व्यव-
हरतीति पण् + इञ् पस्यवत्वम्

प्र.	घणिक्	घणिजा	घणिजः
द्वि.	घणिजं	घणिजौ	घणिजः
तृ.	घणिजा	घणिग्भ्यां	घणिग्भिः
च.	घणिजे	घणिग्भ्यां	घणिग्भ्यः
पं.	घणिजः	घणिग्भ्यां	घणिग्भ्यः
प.	घणिजः	घणिजोः	घणिजाम्
स.	घणिजि	घणिजोः	घणिज्भु
सं.	हे घणिक्		इत्यादि

ञ्—(सम्राज्) मण्डलेऽथ्यरराजा
सम्यक् राजते, राज + क्तिप्

प्र.	सम्राद्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि.	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृ.	सम्राजा	सम्राद्भ्याम्	सम्राद्भिः
च.	सम्राजे	"	सम्राद्भ्यः
पं.	सम्राजः	"	सम्राद्भ्यः
प.	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
स.	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राज्भु
सं.	हे सम्राद्		

त्—भृभृत् (पहाड् वा राजा) भुयं
विभर्तीति, भू + भृ + क्तिप्

प्र.	भृभृत्	भृभृतौ	भृभृतः
द्वि.	भृभृतम्	भृभृतौ	भृभृतः
तृ.	भृभृता	भृभृद्भ्यां	भृभृद्भिः
च.	भृभृते	भृभृद्भ्यां	भृभृद्भ्यः
पं.	भृभृतः	भृभृद्भ्यां	भृभृद्भ्यः
प.	भृभृतः	भृभृतोः	भृभृताम्
स.	भृभृति	भृभृतोः	भृभृत्भु
सं.	हे भृभृत्		इत्यादि

त्—धावत् (वीदता हुआ) धान-
नीति, धाव + शतृ

प्र.	धावन्	धावन्तौ	धावन्तः
द्वि.	धावन्तम्	धावन्तौ	धावन्तः
तृ.	धावता	धावद्भ्याम्	धावद्भिः
च.	धावते	"	धावद्भ्यः
पं.	धावतः	"	धावद्भ्यः
प.	धावतः	धावतोः	धावताम्
स.	धावति	धावतोः	धावत्भु
सं.	हे धावन्		इत्यादि

त्—श्रीमत् (लक्ष्मीधान्)

श्रीर्धिच्यतेऽस्य, श्री + मत्तृप्

प्र.	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वि.	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
तृ.	श्रीमता	श्रीमद्भ्यां	श्रीमद्भिः
च.	श्रीमते	श्रीमद्भ्यां	श्रीमद्भ्यः
पं.	श्रीमतः	श्रीमद्भ्यां	श्रीमद्भ्यः
प.	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
स.	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्भु
सं.	हे श्रीमन्		

त्—महत् (बड़ा) महते पूज्यते
यः सः, मह + भति

प्र.	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि.	महान्तम्	महान्तौ	महान्तः
तृ.	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च.	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पं.	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
प.	महतः	महतोः	महताम्
स.	महति	महतोः	महत्भु
सं.	हे महन्		इत्यादि

द—सुहृद् (मित्र) सुहृदोभिनंदय-
स्य स', सु + हृ + क्तिप् तुक्च

प्र.	सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वि.	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
तृ.	सुहृदा	सुहृद्भ्यां	सुहृद्भिः
च.	सुहृदे	सुहृद्भ्यां	सुहृद्भ्यः
पं.	सुहृदः	सुहृद्भ्यां	सुहृद्भ्यः
प.	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
स.	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु
सं.	हे सुहृत्		

ध—युष् (लड़ाई) युष्पत्यसि-
पिति, युष् + क्तिप्

प्र.	युत्	युधौ	युधः
द्वि.	युधम्	युधौ	युधः
तृ.	युधा	युद्भ्याम्	युद्भिः
च.	युधे	युद्भ्याम्	युद्भ्यः
पं.	युधः	युद्भ्याम्	"
प.	युधः	युधोः	युधाम्
स.	युधि	युधोः	युत्सु
सं.	हे युत्		

न्—आत्मन् (चित्त) भवति सततं
गच्छति, अत् + मनिष्

प्र.	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि.	आत्मानं	आत्मानौ	आत्मनः
तृ.	आत्मना	आत्मभ्यां	आत्मभिः
च.	आत्मने	आत्मभ्यां	आत्मभ्यः
पं.	आत्मनः	आत्मभ्यां	"
प.	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
स.	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सं.	हे आत्मन्		

न्—श्वन् (कुत्ता) श्वि + कनिन्
धा डिन्

प्र.	श्वः	श्वानौ	श्वानः
द्वि.	श्वानम्	श्वानौ	श्वनः
तृ.	श्वाना	श्वभ्याम्	श्वभिः
च.	श्वाने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पं.	श्वनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
प.	श्वनः	श्वनोः	श्वानाम्
स.	श्वनि	श्वनोः	श्वसु

न्—युवन् (जवान) यु + कनिन्,
युमिथणामिभ्रणयोः

प्र.	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि.	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ.	यूना	युवभ्यां	युवभिः
च.	यूने	युवभ्यां	युवभ्यः
पं.	यूनः	युवभ्यां	युवभ्यः
प.	यूनः	यूनोः	यूनानाम्
स.	यूनि	यूनोः	युवसु
सं.	हे युवन्		

न्—शुणिन् (शुणधान्) शुणाः
सगत्यस्य, शुण + इति

प्र.	शुणी	शुणिनौ	शुणिनः
द्वि.	शुणिनं	शुणिनौ	शुणिनः
तृ.	शुणिना	शुणिभ्यां	शुणिभिः
च.	शुणिने	शुणिभ्यां	शुणिभ्यः
पं.	शुणिनः	शुणिभ्यां	शुणिभ्यः
प.	शुणिनः	शुणिनोः	शुणिनां
स.	शुणिनि	शुणिनोः	शुणियु
सं.	हे शुणिन्		

न्-पधिन् (रास्ता) पधगतौ + इनि

प्र.	पन्धाः	पन्धानी	पन्धानः
द्वि.	पन्धानं	पन्धानौ	पधः
तृ.	पधा	पधिभ्यां	पधिभिः
च.	पधे	पधिभ्यां	पधिभ्यः
पं.	पधः	पधिभ्यां	पधिभ्यः
प.	पधः	पधोः	पधाम्
स.	पधि	पधोः	पधिसु
सं.	हे पन्धाः		

श्-विश् (वेद्य) विशति विश् + क्तिप्

प्र.	विद्	विशो	विशः
द्वि.	विशाम्	विशौ	विशः
तृ.	विशा	विद्भ्यां	विद्भिः
च.	विशे	विद्भ्यां	विद्भ्यः
पं.	विशः	विद्भ्यां	विद्भ्यः
प.	विशः	विशोः	विशाम्
स.	विशि	विशोः	विशिसु
सं.	हे विद्		

श्-तादश् (तैसा) तसैयददपते + क्तिप्

प्र.	तादश्	तादशौ	तादशः
द्वि.	तादशम्	तादशौ	तादशः
तृ.	तादशा	तादग्भ्यां	तादग्भिः
च.	तादशे	तादग्भ्यां	तादग्भ्यः
पं.	तादशः	तादग्भ्यां	तादग्भ्यः
प.	तादशः	तादशोः	तादशाम्
स.	तादशि	तादशोः	तादधु
सं.	हे तादश्		

प्-द्विप् (वैरी) द्वेष्टीति द्विप् + क्तिप्

प्र.	द्विद्	द्विपौ	द्विपः
द्वि.	द्विपाम्	"	द्विपः
तृ.	द्विपा	द्विद्भ्यां	द्विद्भिः
च.	द्विपे	"	द्विद्भ्यः
पं.	द्विपः	"	"
प.	"	द्विपोः	द्विपाम्
स.	द्विपि	"	द्विद्विसु द्विद्विसु
सं.	हे द्विद्		

स्-चन्द्रमस् (चन्द्रमा) चन्द्रमा-
हाइमिमीते, मा + अस्

प्र.	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि.	चन्द्रमसं	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृ.	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्यां	चन्द्रमोभिः
च.	चन्द्रमसे	"	चन्द्रमोभ्यः
पं.	चन्द्रमसः	"	"
प.	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स.	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्तु
सं.	हे चन्द्रमः		

स्-विद्वस् (विद्वान्) वेत्तीति,
विद् + क्तु

प्र.	विद्वान्	विद्वंसौ	विद्वंसः
द्वि.	विद्वयांसम्	"	विद्वपः
तृ.	विद्वपा	विद्वपद्भ्यां	विद्वपद्भिः
च.	विद्वपे	"	विद्वपद्भ्यः
पं.	विद्वपः	"	"
प.	विद्वपः	विद्वपोः	विद्वपाम्
स.	विद्वपि	"	विद्वपस्तु
सं.	हे विद्ववन्		

स्—पुम्स् (मनुष्य) पातीति

पा + डुम्सुन्

प्र.	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वि.	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृ.	पुंसा	पुम्भ्यां	पुम्भिः
च.	पुंसे	पुम्भ्यां	पुम्भ्यः
पं.	पुंसः	पुम्भ्यां	पुम्भ्यः
प.	पुंसः	पुंसोः	पुंताम्
स.	पुंसि	पुंसोः	पुंस्तु
सं.	हे पुमन्		

इ—मधुलिद् (मौरा) मधुलेदीति,
लिद् + क्विप्

प्र.	मधुलिद्	मधुलिदौ	मधुलिहः
द्वि.	मधुलिहम्	"	"
तृ.	मधुलिहा	मधुलिद्भ्यां	मधुलिद्भिः
च.	मधुलिहे	"	मधुलिद्भ्यः
पं.	मधुलिहः	"	"
प.	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
स.	मधुलिहि	"	मधुलिहस्तु-स्तु
सं.	हे मधुलिद्		

इ—अनडुद् (धैल) अनः शकटं
घटतीति, घट् + क्विप्

प्र.	अनड्वान्	अनड्वानौ	अनड्वानः
द्वि.	अनड्वानम्	"	"
तृ.	अनड्वहा	अनड्वद्भ्यां	अनड्वद्भिः
च.	अनड्वहे	"	अनड्वद्भ्यः
पं.	अनड्वहः	"	अनड्वद्भ्यः
प.	अनड्वहः	अनड्वहोः	अनड्वहाम्
स.	अनड्वहि	अनड्वहोः	अनड्वहस्तु
सं.	हे अनड्वयन्		

इलन्त खीलिङ्ग ।

व्—वाच् (वाणी) उच्यतेऽनयासा,

वच् + क्विप्

प्र.	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि.	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ.	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च.	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं.	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
प.	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स.	वाचि	वाचोः	वाचस्तु
सं.	हे वाक्		

ध्—वीरुप् (वृक्ष) विशोपेणरुणादि

स्थानं या सा वि + रुप् + क्विप्

प्र.	वीरुत्	वीरुधौ	वीरुधः
द्वि.	वीरुधम्	वीरुधौ	वीरुधः
तृ.	वीरुधा	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भिः
च.	वीरुधे	"	वीरुद्भ्यः
पं.	वीरुधः	"	"
प.	वीरुधः	वीरुधोः	वीरुधाम्
स.	वीरुधि	वीरुधोः	वीरुधस्तु
सं.	हे वीरुत्		

प्—अप् (जल) आप्यन्ते यास्ताः,

आप् + क्विप्

वदुच्यन्ते

आप्:
अप्:
अङ्गिः
अद्भ्यः
"
अपाम्
अप्स्तु
हे अपः

२-गिर (घाणी) गृणाति तत्त्व
मनया, गृ+किप्

प्र. गीः	गिरौ	गिरः
द्वि. गिरम्	गिरौ	गिरः
तृ. गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
च. गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं. गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
प. गिरः	गिरोः	गिराम्
स. गिरि	गिरोः	गीर्षु
सं. हे गीः		

३-दिव् (स्वर्ग) दीव्यति देवा
यत्र, दिव्+डिवि

प्र. द्यौः	दिवौ	दिवः
द्वि. दिवम्	दिवौ	दिवः
तृ. दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
च. दिवे	"	द्युभ्यः
पं. दिवः	"	"
प. दिवः	दिवोः	दिवाम्
स. दिवि	दिवोः	द्युषु
सं. हे द्यौः		

४-आशिप (आशीर्वाद)
आ+शोस्+किप्

प्र. आशीः	आशिपौ	आशिपः
द्वि. आशिपम्	आशिपौ	आशिपः
तृ. आशिपा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
च. आशिपे	"	आशीर्भ्यः
प. आशिपः	"	आशीर्भ्यः
प. आशिपः	आशिपोः	आशिपाम्
स. आशिपि	आशिपोः	आशीषु
सं. हे आशीः		

५-उपानह (अज्ञा) उपानह्यते या
सा, उप+थानह्+किप्

प्र. उपानत्	उपानहौ	उपानहः
द्वि. उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृ. उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
च. उपानहे	"	उपानद्भ्यः
पं. उपानहः	"	उपानद्भ्यः
प. उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
स. उपानहि	उपानहोः	उपानह्यु
सं. हे उपानत्		

हलन्त नपुंसक ।

६-असृज् (लोह) न सृज्यते इति
न+सृज्+किप्

प्र. असृक्	असृजी	असृजि
द्वि. असृक्	असृजी	असृजि
तृ. असृजा	असृग्भ्याम्	असृग्भिः
च. असृजे	"	असृग्भ्यः
पं. असृजः	"	असृग्भ्यः
प. असृजः	असृजोः	असृजाम्
स. असृजि	असृजोः	असृज्यु
सं. हे असृक्		

अस्यतेरौणादिके ऋच् वा ।

७-श्रीमत् (शोभावाचन) श्रीः
शोभास्त्वस्य तत्, श्री+मत्पु

प्र. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
द्वि. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
तृ. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
च. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
प. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
प. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
स. श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
सं. हे श्रीमत्		

शेषम्पुंस्यत् ।

८-महत् (बड़ा) महान्, यत्तत्

प्र. महत्	महती	महन्ति
-----------	------	--------

द्वि. महत् महती महान्ति
शेषम्बुम्बत् ।

न्—नामन् (नाम) नाम्यतेऽभिधी-
यतेऽर्थोऽनेन, नम्+अनन्

प्र. नाम नामो नामनो नामानि

द्वि. नाम " नामानि

तृ. नाम्ना नामभ्याम् नामभिः

च. नाम्ने नामभ्याम् नामभ्यः

पं. नाम्नः नामभ्याम् नामभ्यः

प. नाम्नः नाम्नोः नाम्नाम्

स. नाम्नि नामनि " नामसु

सं. हे नाम, नामन् इत्यादि

न्—अहन् (दिन) न जहातीति,
न+हा+कनिन्

प्र. अहः अहनी, अहो अहानि

द्वि. अहः " अहानि

तृ. अहा अहोभ्याम् अहोभिः

च. अहे अहोभ्याम् अहोभ्यः

पं. अहः अहोभ्याम् अहोभ्यः

प. अहः अहोः अहाम्

स. अहनि, अहि " अहःसु

सं. हे अहः

श्—तादृक् (तैसा) तस्यैव
दृश्यत इति तत्

प्र. तादृक् तादृशी तादृशि

द्वि. तादृक् तादृशी तादृशि

शेषम्बुम्बत्

स्—पयस् (जल व दूध) दीयते
यत्तत्, पा+असुन्

प्र. पयः पयसी पयांसि

द्वि. पयः पयसी पयांसि

तृ. पयसा पयोभ्याम् पयोभिः

च. पयसे पयोभ्याम् पयोभ्यः

पं. पयसः पयोभ्याम् पयोभ्यः

प. पयसः पयसोः पयसाम्

स. पयसि पयसोः पयसु

सं. हे पयः

प्—हविष् (हवन पदार्थ) द्रव्यते
यत्तत्, हु+इसुन्

प्र. हविः हविषो हवींषि

द्वि. हविः हविषो हवींषि

तृ. हविषा हविर्भ्याम् हविर्भिः

च. हविषे हविर्भ्याम् हविर्भ्यः

पं. हविषः हविर्भ्याम् हविर्भ्यः

प. हविषः हविषोः हविषाम्

स. हविषि हविषोः हविषु

सं. हे हविः

प्—धनुस् (कमान) धन+उसि

प्र. धनुः धनुषी धनूषि

द्वि. धनुः धनुषी धनूषि

तृ. धनुषा धनुर्भ्याम् धनुर्भिः

च. धनुषे धनुर्भ्याम् धनुर्भ्यः

पं. धनुषः धनुर्भ्याम् धनुर्भ्यः

प. धनुषः धनुषोः धनुषाम्

स. धनुषि धनुषोः धनुषु

सं. हे धनुः

सर्वादित्रिलिङ्गीदाश्च ।

अ—सर्वं (सर्व) सर्वसर्पणे + अच्

पुल्लिङ्ग

प्र.	सर्वः	सर्वो	सर्वे
द्वि.	सर्वम्	सर्वो	सर्वान्
तृ.	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च.	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पं.	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
प.	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स.	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सं.	हे सर्वं		

नपुंसक ।

प्र.	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि.	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेषम्पुम्बत्

स्त्रीलिङ्ग ।

प्र.	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि.	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृ.	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च.	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पं.	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
प.	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
स.	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सं.	हे सर्वे		

म्—किम् (कौन) कै शब्दे + डिम्

पुल्लिङ्ग ।

प्र.	कः	कौ	के
द्वि.	कम्	कौ	कान्
तृ.	केन	काभ्याम्	कैः

च. कस्मै काभ्याम् कंभ्यः

प. कस्मात् काभ्याम् कंभ्य

प. कस्य कयोः केषाम्

स. कस्मिन् कयोः केषु

(स्यवादिफो मं सम्बोधन नहीं होता)

(नपुंसक) किम्

प्र. किम् के कानि

द्वि. किम् के कानि

शेषम्पुम्बत्

(स्त्रीलिङ्ग) किम्

प्र. का के काः

द्वि. काम् के काः

तृ. कया काभ्याम् काभिः

च. कस्यै काभ्याम् काभ्यः

पं. कस्याः काभ्याम् काभ्यः

प. कस्याः कयोः कासाम्

स. कस्याम् कयोः कासु

पुल्लिङ्ग—इ यद् या + अदि ङिश्च

प्र. यः यौ ये

द्वि. यम् यौ यान्

तृ. येन याभ्याम् यैः

च. यस्मै याभ्याम् येभ्यः

पं. यस्मात् याभ्याम् येभ्यः

प. यस्य ययोः येषाम्

स. यस्मिन् ययोः येषु

नपुंसक-यद्

प्र. यत् ये यानि

द्वि. यत् ये यानि

शेषम्पुम्बत्

(स्त्रीलिङ्ग) यद् (जो)

प्र. या	ये	याः
द्वि. याम्	ये	याः
तृ. यथा	याभ्याम्	याभिः
च. यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पं. यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
प. यस्याः	ययोः	यासाम्
सं. यस्याम्	ययोः	यासु

द्—तद् (यह) तन्+अदि डिच्

[पुलिङ्ग]

प्र. सः	तौ	तौ
द्वि. तम्	तौ	तान्
तृ. तेन	ताभ्याम्	तैः
च. तस्मै	ताभ्याम्	तैभ्यः
पं. तस्मात्	ताभ्याम्	तैभ्यः
प. तस्य	तयोः	तैषाम्
सं. तस्मिन्	तयोः	तैषु

[नपुंसक]

प्र. तद्	तै	तानि
द्वि. तद्	तै	तानि

दोषम्पुञ्जत्

[स्त्रीलिङ्ग]

प्र. सा	ते	ताः
द्वि. ताम्	ते	ताः
तृ. तथा	ताभ्याम्	ताभिः
च. तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं. तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
प. तस्याः	तयोः	तासाम्
सं. तस्याम्	तयोः	तासु

द्—एतद् [यह] इण्+आदितुर च

प्र. एषः	एतौ	एते
द्वि. एतम् एनम्	एतौ एतौ	एतान् एतान्
तृ. एतेन एनेन	एताभ्याम्	एतैः
च. एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पं. एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
प. एतस्य	एतयोः एनयोः	एतेषाम्
सं. एतस्मिन्	एतयोः एनयोः	एतेषु

(नपुंसक) द् एतद्

प्र. एतम्	एते	एतानि
द्वि. एतत् एतत्	एते एते	एतानि एतानि

दोषम्पुञ्जत्

(स्त्रीलिङ्ग) एतद्

प्र. एषा	एते	एताः
द्वि. एताम्	एते	एताः
तृ. एतया	एताभ्यां	एताभिः
च. एतस्यै	एताभ्यां	एताभ्यः
पं. एतस्याः	एताभ्यां	एताभ्यः
प. " एतयोः एनयोः	एतासाम्	
सं. एतस्याम्	"	एतासु

म्—इदम्, इदिपरमैश्वर्ये, कमिनलोपश्च

पुलिङ्ग—(यह)

प्र. अपम्	इमौ	इमे
द्वि. इमम् एनम्	इमौ एतौ	इमान् एतान्
तृ. अनेन एनेन	आभ्याम्	एभिः
च. अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं. अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः

प. अस्य अनयोः एनयोः एवाम्

स. अस्मिन् " एषु

नपुंसक—इदम्

प्र. इदम् इमे इमानि

द्वि. इदम् इमे इमानि

शेषम्पुंस्वत्

स्त्रीलिङ्ग—इदम्

प्र. इयम् इमे इमाः

द्वि. इमाम् एन्याम् इमे एने इमाः एना

तृ. अनया एनया आभ्याम् आभिः

च. अस्ये " आभ्यः

पं. अस्याः " "

प. " अनयोः एनयोः आसाम्

स. अस्याम् " आसु
स्—अदस् [बह] न वस्यते उत्क्षि-
प्यतेऽद्गुण्डिर्यत्र, न+दस्+किप्

—पुलिङ्ग—

प्र. असौ अम् अमी

द्वि. अमुम् अम् अमून्

तृ. अमुना अमूभ्याम् अमीभिः

च. अमुष्मै " अमीभ्यः

पं. अमुष्मात् " "

प. अमुष्य अमुषोः अमीषाम्

स. अमुस्मिन् " अमीषु

—नपुंसकलिङ्ग—

प्र. अद् अम् अमूनि

द्वि. " " "

शेषम्पुंस्वत्

[स्त्रीलिङ्ग]

प्र. असौ अम् अमूः

द्वि. अमूम् " "

तृ. अमुया अमूभ्यां अमूभिः

च. अमुष्यै " अमूभ्यः

पं. अमुष्याः " "

प. " अमुषोः अमूषाम्

स. अमुष्याम् " अमूषु
द्—युष्मद् [तृ] युष भजने + मदिक्

प्र. त्वम् युषाम् यूथन्

द्वि. त्वाम् युषाम् युष्मान्

तृ. त्वा चाम् चः

तृ. त्वया युषाभ्याम् युष्माभिः

च. तुभ्यम् " युष्मभ्यम्

तृ. ते चाम् चः

पं. त्वत् युषाभ्यां युष्मत्

प. त्व युषयोः युष्माकम्

प. ते चाम् चः

स. त्वयि युषयोः युष्मासु

द्—अस्मद् [म] अस्तृक्षेपणं + मदिक्

प्र. अहम् आवाम् अयम्

द्वि. माम् माँ अस्मान्

तृ. माँ नौ नः

तृ० मया आवाभ्याम् अस्माभिः

च० मह्यम् अस्मभ्यम्

पं. मे नौ नः

पं. मत् आवाभ्याम् अस्मत्

प. मम आवयोः अस्माकम्

प. मे नौ नः

स. मयि आवयोः अस्मासु

सङ्ख्यायाचकभाष्य

अ-एक इण् + कन् एकवचन

[पुं] -- [स्त्री] [नपुंसक]

प्र.	एकः	एका	एकम्
द्वि.	एकम्	एकाम्	"
तृ.	एकेन	एकया	शेषपुंस्वत्
च.	एकसे	एकस्यै	
प.	एकस्मात्	एकस्याः	
प.	एकस्य	"	
स.	एकस्मिन्	एकस्याम्	

इ-द्वि [दो] द्वि० ष० दृष्टसम्बन्धे + द्वि

पुं-स्त्री-नपुंसक

प्र.	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि.	"	"	"
तृ.	द्वौभ्याम्	द्वौभ्याम्	शेषपुंस्वत्
च.	"	"	
पं.	"	"	
प.	द्वयोः	द्वयोः	
स.	"	"	

इ-त्रि (तीन) बहु० ष० तृ + द्वि

पुं-स्त्री-नपुंसक

प्र.	त्रयः	त्रिभ्यः	त्रीणि
द्वि.	त्रान्	"	"
तृ.	त्रिभिः	त्रिभ्यः	शेषपुंस्वत्
च.	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	
पं.	"	"	
प.	त्रयाणाम्	त्रिणां	
स.	त्रिषु	त्रिषु	
सं.	हेत्रयः	हेत्रिभ्यः	

इ-चतुर् (चार) ष० व०
वते याचने + उरन्

पुं-स्त्री-नपुंसक

प्र.	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि.	चतुर्	"	"
तृ.	चतुर्भिः	चतसृभिः	शेषपुंस्वत्
च.	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	
पं.	"	"	
प.	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	
स.	चतुर्षु	चतसृषु	
सं.	हेचत्वारः	हेचतस्रः	

तीनोंलिङ्गोंमेंतुल्यः ।

न-पञ्च (५)	स० पञ्चसु	च० पञ्च्यः	न-सप्त (७)
पञ्चिपञ्चारे + भनि	सं० हेपञ्च	पं० "	सप्त + तनिन्
प्र० पञ्च	प-पञ्च (६)	प० पञ्चणाम्	प्र० सप्त
द्वि० "	वी + अस्तुक् + किप्	स. पञ्चसु	द्वि० "
तृ० पञ्चभिः	प्र० पञ्च पञ्च	स. पञ्चसु	तृ० सप्तभिः
च० पञ्चभ्यः	द्वि० " "	स. हेपञ्च	च० सप्तभ्यः
प० पञ्चानाम्	तृ० पञ्चभिः		प० "

प. सप्तानाम्	पं. "	च. नवभ्यः	तृ. दशभिः
स. सप्तसु	प. अष्टानाम्	पं. "	च. दशभ्यः
स. हेसप्त	स. अष्टसु अष्टासु	प. नवानाम्	पं. "
न-अष्ट् ८ अश्व्या-	सं. अष्टौ अष्ट	स. नवसु	प. दशानाम्
सौ + कनिन् + तुद्	नृ-नवन् (९) जु +	सं. हेनव	स. दशसु
प्र. अष्टौ, अष्ट	अनि .	नृ-दशान् १०	सं. हेदश
द्वि. " "	प्र. नव	दश + कनिन्	
तृ. अष्टभिः अष्टाभिः	द्वि. "	प्र. दश	
च. अष्टभ्यः अष्टाभ्यः	तृ. नवभिः	द्वि. "	

अन्यपार्थप्रदर्शकस्तृतीयोऽध्यायः ।

अव्यय ।	अर्थ ।	अव्यय ।	अर्थ ।	अव्यय ।	अर्थ ।
स्वर्	स्वर्गोपरलोकं च	दिवा	दिवसे	हेतौ	निमित्ते
अन्तर	मध्ये	रात्रौ	निशि	इद्धा	प्राकाश्ये
प्रातर	प्रत्यूषे	सायम्	निशामुखे	अद्धा	स्फुटावधारणयोः
पुनर्	अप्रथमेविशेषे च	चिरम्	बहुकाले	सामि	अर्धजुगुप्सितयोः
समुत्तर	अन्तर्धाने	मनाक्,	अल्पे	यत्	तुल्ये
उद्यैश्	महति	ईपत्		सना,	
मीचिस्	अल्पे	जोषम्	सुखेमीने च	सनत्,	नित्ये
शनैश्	क्रियामान्ये	तूष्णीम्	मीने	सनात्	
ऋधक्	सत्यवियोगशी-	ग्रहिस्,	वाह्ये	उपधा	भेदे
	प्रसामीप्यलाघयेषु	अवस्		तिरस्	अन्तर्धी, तिर्यग्धे
ऋते	वर्जने	समया	समीपे मध्ये च		परिमये च
युगपत्	एककाले	निकपा	अस्तिके	अन्तरा	मध्ये, विनाशे च
आरात्	दूरसमीपयोः	स्वयम्	आत्मना	अन्तरेण	वर्जने
पृथक्	भिन्ने	वृथा	व्यर्थे	ज्योक्	कालभूयस्त्वे,
ह्यम्	अतीतेऽन्दि	नक्तम्	रात्रौ		प्रष्णेऽतीघातं
भ्यस्	अनागतेऽन्दि	नन्	निषेधे		सम्प्रत्यर्थे च

अव्यय ।	अर्थ ।	अव्यय ।	अर्थ ।	अव्यय ।	अर्थ ।
कम्	वारिमूर्धनिन्दा- सुपेषु	मिथो, मिथम्	रहःसहार्थयोः	संयत्	वर्षे
शम्	सुखे	प्रायम्	याहुल्ये	अवश्यं	निश्चये
सहसा	शाकस्मिका- धिमर्शयोः	मुहुष्	पुनरर्थे	उपा	राशौ
विना	वर्जने	प्रधाहुकम्	समानकाले	ओम्	अङ्गीकारे
नाना	अनेकविनार्थयोः	प्रधाहिका	ऊर्ध्वार्थे च	मूः	पृथिन्याम्
स्वस्ति	मङ्गले	आर्यहलम्	चलात्कारे	मुयः	अन्तरिक्षे
स्वधा	पितृदाने	अभीक्षणम्	पौनःपुन्ये	सुष्टु	प्रशंसायाम्
अलं	भूषणपर्याप्ति शक्तिवारण निषेधेषु	साकंसारं	सहार्थे	दुष्टु	निरुष्टे
घपद्,		नमस्	नतौ	सुः	पूजायाम्
ध्रौपद्,	द्विदिदाने	हिरुक्	वर्जने	कु	कुत्सितेपदार्थे च
धौपद्		धिक्	निन्दाभर्त्सनयोः	अञ्जला	तत्पदार्थयोः
अन्यत्	अन्यार्थे	अम्	शैप्रयेऽल्पे च	वरम्	ईपदुत्कर्षे
अस्ति	प्रसिद्धौ	आम्	अङ्गीकारे	सुदि	शुक्लपक्षे
	सत्तायाम् च	प्रताम्	ग्लानी	चादि	कृष्णपक्षे
उपांशु	अप्रकाशोच्चार- णरहस्ययोः	प्रशान्	समानार्थे	अस्त	विनाशे
शमा	शान्तौ	प्रतान्	विस्तारे	स्थाने	सुक्ते
विहायसा	वियदर्थे	मा,माह्	निषेधाशङ्कयोः	मिथु	द्विवित्यर्थे
दोषा	राशौ	कौमम्	स्थाच्छन्दे	चं.	समुच्चयान्वाचं- येतरेतरयोगे समाहारेषु
मृषा,	धितथे	प्रकामम्	अतिदाये	घा	विकल्पे
मिथ्या		भूयः	पुनरर्थे	इ	प्रसिद्धौ
मुधा	व्यर्थे	साम्प्रत	न्याय्ये	अह	पूजायाम्
पुरा	अधिरते, चिरा- तीतेभविष्यदापञ्चे च	परम्	किन्त्वर्थे	एव	अवधारणे
		साक्षात्	प्रत्यक्षे	एवम्	उक्तपरामर्शे
		साचि	तियंगर्थे	नूनम्	निश्चये तर्कं च
		मद्भुः		शश्वत्	पौनःपुन्ये
		आनु	शैप्ते		नित्येसहार्थे च
		अटि(नि)			
		ति,नरसा			

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
कृपत्	प्रप्णेप्रशंभायांच	खलु	निषेधवाक्यालं-	यथा	अनादरे
कुवित्त	भूयंशंप्रशंभायांच		कारनिश्चयेषु	कथाच	
नेत्	शङ्कायां, प्रतिषे-	किल	घाताया-	पाट्पाट्	सम्बोधने
	धविचार		मर्त्याकेच	अङ्ग है हे	मोः अये
	समुच्चयेषुच	अथो, अथ	मङ्गलानन्तरा-	घ	हिंसाप्रातिलो-
वेत्, चण यद्यर्थे			रम्भप्रशका-	भ्यपादपूरणेणु	
कश्चित्	इष्टप्रप्णे		त्स्पर्धाधिकार	विषु	नानार्थे
नह	प्रत्यारम्भे		प्रतिज्ञासमु-	एकपदे	अकस्मात्
हन्त	हर्षे, विपादे,	स	च्चयेषु	युत्	कुत्सायाम्
	वाक्यारम्भे-		अतीते पाद-	आतः	इतोऽपि
	ऽनुकम्पायाञ्च	अहं	पूरणेच	यत्तद्	हेती
माकिः,		अ	अहंकारे	आहो-	विकले
मार्की,	वर्जने	अ	संबोधनेऽधि-	स्वित्	सर्वतोभावे
नकिम्		आ	क्षेपेनिषेधेच	शुकं	अतिशये
यावत्	साकलयावधि-	इ	वाक्यस्मरणयोः	अनुकं	वितर्के
तावत्	मानावधारणेपु		सम्बोधनानुगु-	घ	पादपूरणेइवायं च
त्वे	विशेषवितर्कयोः	इ उ ऊ ष	त्साविसयेषु	दिष्ट्या	आनन्दे
द्वै, न्यै	वितर्के	ये ओ औ	सम्बोधने	चट्ट्याट्ट	प्रियेवाक्ये
दे	दाने अनादरेच	पशु	सम्यगर्थे	इवेति	सादृश्ये
तुम् हुम्	तुफारे, हुंकारे,	शुकः	शैत्र्ये	अद्यत्वे	इदानीमित्यर्थे
तंधादि	अर्सेनेच				
	निदर्शने				

स्त्रीमित्ययमदर्शकश्चतुर्थोऽध्यायः ।

१ मायः विशेषण अकारान्त शब्दोंका स्त्रीलिङ्ग यत्नाने केलिये 'मा' लगा देने हैं जैसे कृपा, दीना, मलिना, चतुर्षा, चपला, प्रिया, पूर्वा, अनुकूला, मनोहरा इत्यादि ।

(१) अजाघतष्टाप् ।

- ✓ २ प्रथम अवस्था वाले शब्दों से और गौर आदि शब्दों से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे कुमारी, किशोरी, तरुणी इत्यादि, गौरी, नदी, तटी, फदली, बदली, इत्यादि।
- ✓ ३ जाति वाचक शब्दों से, अजादि शब्दों को छोड़ "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे सिंही, व्याघ्री, मृगी, हंसी, धुकी, माक्षणी, राक्षसी, अजादि शब्द जैसे अजा पडका, मलिका, चर्तिका, शूद्रा, अश्वा इत्यादि।
- ✓ ४ ऋकारान्त शब्दों से, स्वष्ट, मात्, दुहित्, यात्, ननान्द, तिष्ठ और चतष्ट शब्दों को छोड़ "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे दात्री, धात्री, कर्त्री, हन्त्री, प्रसवित्री इत्यादि।
- ✓ ५ नकारान्त संख्यावाचक शब्दों को छोड़ इन् प्रत्ययान्त शब्दों से "ई" लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे कामिनी, भामिनी, मयाधिनी, तपस्विनी इत्यादि।
- ✓ ६ अन् प्रत्ययान्त शब्दों से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है और उपधाके अकालोप होजाता है जैसे राजन्—राज्ञी, मघवन्—मघोनी इ०।
- ✓ ७ मत्, घत्, तयत्, यस् ईयस् प्रत्ययान्त शब्दोंका स्त्रीलिङ्ग "ई" प्रत्यय से बनता है जैसे बुद्धिमयी, वृष्टवती, विदुषी, प्रेयसी इ०।
- ✓ ८ भय, शय, रुद्र, मृड, इन्द्र, धरुण, ब्रह्मन् मानुल, क्षत्रिय, अर्य, उपाध्याय, आचार्य शब्दों से "धानी" लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनता है जैसे भवानी इत्यादि। और कोष्ठान्तगत शब्दों का विकल्प से "या" प्रत्यय लगाकर भी स्त्रीलिङ्ग होता है जैसे क्षत्रियाणी क्षत्रिया।
- ✓ ९ भ्वादि, दिवादि, चुरादि गणी धातुओं के अनन्तर अत् (शत्) प्रत्यय लगे शब्दों का स्त्रीलिङ्ग "ई" लगाकर बनता है और त्, म्, में बदल जाता है जैसे भू—भवन्ती दिव—दीव्यन्ती, चुर—चोरयन्ती, परन्तु तुदादि, कृपादि, और अदादि गणी धातुओं के अनन्तर त् विकल्प में

(२) "घयासि प्रथमे" "पिद्वीरादिभ्यश्च"। (३) जोतेरस्त्रीविषयाद्घोष-
धात्। (४) ऋधेभ्योऽङीप्। (५) ऋधेभ्योऽङीप्। (६) अनउपधालोपिनोऽन्यत-
रस्याम्। (७) उगितश्च। (८) इन्द्रधरुणभयशयंरुद्रमृडहिमारभ्ययघयवनमा-
तुलाचार्याणामानुह्। (९) उगितश्च।

न्तं में बदल जाता है जैसे तुद्-तुदती, तुदन्ती; क्री-क्रीणती, क्रीणन्ती, भो-भाती, भान्ती, । स्वत् प्रत्ययान्त शब्दों में भी विकल्प से रूपहोते हैं जैसे करिष्यती, करिष्यन्ती ।

१० देहाङ्गवाची शब्दों के साथ जब बहुव्रीहि समास हो तो विकल्प से "ई" प्रत्यय लगता है जैसे चन्द्रमुखी-खा, कृशाङ्गी-ङ्ग, कोकिलकण्ठी-ण्ठी इत्यादि परन्तु नख, मुख शब्दको लगाकर जहाँ व्यक्ति वाचक संज्ञा धनती है या जहाँ अङ्गवाची शब्दकी उपधा में संयुक्तवर्ण होता है, अथवा जिन अङ्गवाची शब्दों में दोसे अधिक स्वर हों वहाँ "ई" नहीं लगता जैसे शूर्पणखा, गौरमुखा; मृगनेत्रा, चारुदशना ।

११ इकारान्त शब्द विकल्प से "ई" प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनते हैं जैसे ध्रेणि, ध्रेणी, रजनिः-नी, कपिः-पी, मुनिः-नी इत्यादि ।

१२ क्ति प्रत्ययान्त शब्द प्रायः भाववाचक संज्ञा व स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे मतिः, गतिः स्थितिः ।

१३ उकारान्त संज्ञा विशेषण शब्द विकल्प से "ई" लगकर स्त्रीलिङ्ग बनने हैं जैसे मृदुः मृद्वी, बहुः बह्वी इत्यादि ।

१४ भ्रशुर शब्द से भ्रथू, युचन् से युघतिः, पति से पत्नी, सखि से सखी और समस्तपद में ऊरु शब्द को जहाँ किसी से तुलना दी जाती है या जहाँ याम सहशकादि शब्द ऊरुसे पहिले होते हैं वहाँ स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ ऊकार होजाता है जैसे रम्भोरुः, घामोरुः, शूफोरुः ।

अथ कारकप्रकरणप्रदर्शकः पञ्चमोऽध्यायः ।

१ प्रथमाविभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है क्रमानुसार उदाहरण देखो—
१ लिङ्ग में जैसे तटः, तटी, तटम्; २ वचन में जैसे एकः, द्वौ, बहवः; ३ परिमाण में जैसे द्रोणः भाटकम्; ४ सम्बोधन में जैसे हे कृष्ण; ५ इति,

(१०) स्वाङ्गाद्योपसर्जनादसंयोगोपधात् । (११) कृदिकारादक्तिनः ।
(१२) योतेगुणवचनात् "वह्नादिभ्यश्च । (१३) भ्रशुरस्योकाराकारलोपश्च "यूनास्ति" सख्यशिश्र्वीति भाषायाम्" ऊरुत्तरपदादौपभ्ये" संहितशफलक्षण घामादेश्च । १ प्रातिपदिकार्थं लिङ्गवचनपरिमाणमात्रप्रथमा । (४) सम्बोधनेच ।

साम्प्रतम् इत्यादि अण्यो के योग में जैसे मनुष्याश्चन्द्रं हिमांशुरिति वदन्ति, दुष्टात्मनां सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतम्; ६ जहाँ कर्तातिङ् प्रत्यय से उक्त हो जैसे रामोवदति; ७ जहाँ कर्तृवाच्य का कर्म "क्त" प्रत्यय से उक्त होवे जैसे कृष्णेन कंसो हतः ॥

२ द्वितीया विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

१ काल व मार्ग के अन्त्यन्त अर्थात् निरवच्छिन्न (लगातार) संयोग में जैसे मासं व्याकरणप्रधीतम् क्रोशं पर्वतः (मासं क्रोशं व्याप्य इत्यर्थः)

२ धिक्, प्रति, अनु, अन्तरा, अन्तरेण, यावत्, अभितः, परितः, भवंतः उभयतः, समया (पास या बीच,) निकषा (पास,) हा, ऋते, विना के योगों में जैसे देवदत्तंधिक्, दीनं प्रति दयोचिता, स्वामिनमनुसरति भृत्याः, अन्तरा त्वां मां हरिः, अन्तरेणाक्षिणी किञ्जीवितेन, वनं यावत्प्रविशति, अभितः, उभयतः प्रामंनदीं बहति, समया, निकषा प्रामम्; हा-कृष्णामकम्; ऋते, विना ज्ञानं न मुक्तिः; ३ स्तृ धातुके योग में जैसे मातर स्मरति शिशुः ४ कर्मउक्त (जिसका असर क्रियापर पड़े वह उक्त होता है) न होने से जैसे कृष्णोऽयं मज्जति ५ उपरि जब दोवार आवे जैसे क्षेत्र उपरि उपरि शलभाडयन्ते ।

३ तृतीया विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है:—

सह, साथम्, साथम्, समम्, (साथ) के योग में जैसे शिष्येण सहायते शुकः । २ स्वम्, तुल्य, समान, सहदा (परापर) के योग में जैसे शिष्यं पुत्रेण समे पश्यति । ३ अलं, किम्, अर्थ, प्रयोजन ऊन, हीन, दान्य, विना, पृथक् के योग में जैसे अलंविद्यादेन, विरोधेनकिम्, क्रो-ऽर्थः कलहेन धनेन प्रयोजनं नास्ति, एकेन ऊनोर्विसः, विधयाहीनः, अहङ्कारेण शून्यः, रागेण विनापृथक् । ४ हेत्यर्थ में जैसे कार्यत्वेनशब्दो-

२ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे । उभयसंज्ञाः कार्यार्थिगुणार्था द्विषु त्रिषु द्वितीया-ऽऽभेदितान्तेषुततोऽन्यत्रापि 'इदयते' अभितःपरितःसमथानिकषाहाप्रति योगेऽपि । अन्तराऽन्तरेणयुक्ते । अत्यादादितरतेदिक्शब्दाच्चूत्तरपदाजा-दियुक्ते । पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्

३ १ सहयुक्तेऽप्रधाने २ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्यां, ४ हेतौ । ५ येनाऽङ्गविकारः । कर्तृकरणयोस्तृतीया ।

८ प्रवृत्त्यादिभ्य उपसंख्यासम् ।

नित्यः ५ जिस अङ्गसे प्राणीके अङ्गका अङ्गधिकार लखजाय उस अङ्ग में जैसे अक्षणाकाणः कर्णेनवधिरः ६ कर्ता और करण जय उक्त नहीं जैसे रामेणयाणेन रावणोहतः ७ तृप्त्यर्थक शब्दों के योग में जैसे भोजनेन वृत्तः ८ प्रकृति इत्यादि शब्दोंके योग में जैसे प्रकृत्या चारः जात्याप्राक्षणः ९ तव्य' अनीय, यत् के योग में (पृष्ठीमीहोतीहै) जैसे चन्द्र-सवया (तव) द्रष्टव्यः ।

४ चतुर्थी विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है—

१ दानपात्र में जैसे राजा विप्रायधनं ददाति; २ तादर्थ्य (उर्साके अर्थ) में जैसे गोविन्दसदा कथनाय प्रवृत्तोऽभूत् ३ नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् के योग में जैसे गुरुभ्योनमः, राक्षेस्वस्ति, रुद्राय स्वाहा, पितृभ्यःस्वधा, अलं महोमहाय, इन्द्रायवषट्; ४ निमित्त अर्थ सूचन करने में जैसे अध्ययनं ज्ञानाय भवति; ५ हित, सुख प्रभवति और समर्थके योग में जैसे पुत्रायहितम्, शिष्यायसुखम्, शूरःसमर्थः प्रभवति वा सप्रामाय ६ तुम् प्रत्यय के अर्थ में द्वितीयाकी जगह चतुर्थी होती है जैसे जलाय नदीं गच्छति जलमाचेतुमित्यर्थः; ७ क्रुध् क्रुह् ईर्ष्या, असूयार्थक धातुओं के योग में जैसे क्रूरय क्रुष्यति, गुणवते असूयति; ८ रुच्यर्थक धातु के योग में जैसे हृद्येरोचते भक्तिः ९ धारयतिके प्रयोग में उच्चमर्ण (साहकार) में देवदत्तः रुद्रदत्ताय शतं धारयति ।

५ पञ्चमी विभक्ति नीचे लिखे योगों में होती है—

१ विश्लेष्य (विभाग) की अवधि में जैसे वृक्षांतपत्राणिपतन्ति; २ ल्यप् प्रत्ययका जहां लुप्त अर्थ हो जैसे आसनात्प्रेक्षते (आसने उपविश्येत्यर्थः) ३ तुलना में धनाद्विघागरीयसी ४ भय और प्राणार्थक धातुओं के भय

४ १ दानस्य कर्मणा धमभिप्रैति संप्रदानम् । २ तादर्थ्यं चतुर्थी ३ नमः स्वस्ति-स्वाहास्वधाऽलंबपदयोगात् । ४

५ हितयोगे च, ६ हृषिसम्पद्यमाने च ७

६ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः । ७ क्रुध् क्रुह् ईर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिक्षोपः

८ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ९ धारेरुत्तमर्णः

५ १ ध्रुवमपायेऽपादानम् २ ल्यब्लोपे कर्मण्याधिकरणे च

४ भीत्रार्थानां भयहेतुः ५ धारणार्थानां प्रीयमाणः ६ स्पृहे रीप्सितः ७ अन्यारा-दितरतीदिक् शब्दाञ्चुत्तरपदाजाहियुक्ते

हेतु में जैसे व्याघ्राऽग्रम्यति ५ धारणार्थक धातुओं के योग में जैसे क्षेत्रा-
 द्वांवारयति ६ स्पृह धातुके योग में जैसे पुष्पेभ्यः स्पृहयति, ७ अन्य, भि-
 न्न, वहिः, आरात्, प्रभृति आरभ्य, इतर, पूर्णः, उत्तरः, प्राक्, अनन्तरम्
 क्रते, चिना, पृथक् और हेतु में जैसे मित्राऽन्य. भिन्नः; प्रामाद्विहिः; आ-
 राद्विनात्; तद्दिनादारभ्य, प्रभृति धा; तस्माद्वितरोनकीद्वत्; नगरात्पूर्वः
 उत्तरांश, भोजनात्प्राक् शयनादनन्तरम्; क्रतेज्ञानांशमुक्तिः; अमाद्विना
 नकिञ्चित्कलति; पुत्रात्पृथक्; भयात्कम्पते ।

६ पष्ठीनिम्नलिखित योगों में होती है:—

१ सम्बन्ध में जैसे गोविन्दस्य पुस्तकम्; २ हेतु शब्दके प्रयोग में जैसे
 कस्यहेतोरिदं भोजनम्; ३ स्पृ धातु के भी योग में जैसे मातुः स्मरति;
 ४ सम, तुल्य, समान, सदृश इनके भी योग में जैसे किम् तव समो
 न कोऽस्ति; ५ तृप्त्यर्थक शब्दों के भी योग में जैसे अपांतृत. ६ निर्वा-
 रण अर्थात् बहुरसी वस्तुओं में से एक के अलग करने में पष्ठी सप्तमी
 दोनों होती हैं जैसे कथीनांकविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः; ७ स्वाम्यादि
 अर्थात् स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद साक्षी, प्रतिभू और प्रसूत इन
 के योग में जैसे नराणां स्वामी इत्यादि; ८ अनादर में पष्ठी सप्तमी दोनों
 होती हैं जैसे माता पित्रोः कृतोः प्रामाजीत्पुत्रः; ९ भद्रः, कुशल, आ-
 युष्य सुख हित इत्यादि शब्दों के योग में जैसे तव भद्र स्यात् ।

७ नीचे लिखे योगों में सप्तमी विभक्ति होती है:—

१ अधिकरण अर्थात् आधार में; यह आधार चार प्रकार का है औप-
 श्रेणिक, सामीपिक, अभिल्यापिक, वैपरिक जैसे कटे रोते कुमारोसौ,
 घटेगायः सुरोक्ते, तिलेषुविद्यते दैर्घं, हृदिमहामृतं परम् । २ निमित्ता-
 र्थवाचक शब्द से जैसे चर्मणिद्रीपिनहन्ति (चर्मनिमित्तमित्यर्थः),
 ३ सत्यर्थक अर्थात् जहां एक क्रिया के काल से दूसरी क्रिया का समय
 लक्षित होता हो जैसे रवायस्तद्गते स आगतः ।

६ १ पष्ठीशेषे २ पष्ठीहेतु प्रयोगे ३ पष्ठीशेषे ४ तुल्याधिरतुलोपसाम्यां तृतीया-
 ऽन्यतरस्थाम् ५ यतश्च निर्धारणम् ६ स्वामीश्वराधिपति दायादसाक्षिप्रतिभू-
 प्रसूतैश्च ८ पष्ठी चानादरे ९ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमभ्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः
 ७ १ आधारोऽधिकरणम् २ निमित्ताःकर्मयोगे ३ यस्य च भावेन भावलक्षणम्

अथ समासप्रकरणप्रदर्शकः पष्ठोऽध्यायः ।

समास छः प्रकार के हैं, १ तत्पुरुष, २ कर्मधारय, ३ बहुव्रीहि, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व, ६ अव्ययीभाव । अब प्रत्येक के लक्षण सोदाहरण और सविग्रह (समास के अर्थ का जतानेवाला वाक्य विग्रह कहलाता है) लिखते हैं:—

- १ तत्पुरुष उत्तरपदार्थ प्रधान, और आठ प्रकार का होता है जैसे प्रथमात्-
त्पुरुष जैसे अर्धे पिप्पल्याः अर्धपिप्पली; द्वितीया त० जैसे ग्रामंगतः ग्राम-
गतः; तृतीया त० जैसे शङ्कुलयाखण्डः शङ्कुलाखण्डः, चतुर्थी त०
गुरुर्यदक्षिणा गुरुदक्षिणा; पञ्चमी त० जैसे सिंहात्त्रयं सिंहभयम्; षष्ठी त०
जैसे कृष्णस्य भक्तः कृष्णभक्तः, सप्तमी त० जैसे कर्मणिकुंशलः कर्मकुंश-
लः; नञ् त० जैसे न ब्राह्मणः अब्राह्मणः; न अश्वः अनश्वः ।
- २ कर्मधारय सात प्रकार का है जैसे १ विशेषण पूर्वपद जैसे कृष्णः चासी
सर्पः कृष्णसर्पः; २ विशेष्य पूर्वपद जैसे गोपालभ्रातृवालः गोपालवा-
लः; ३ विशेषणोभयपद जैसे शीतं च तदुष्णं च शीतोष्णम्; ४ उपमान-
पूर्वपद जैसे मेघं हवदयामः मेघदयामः; ५ उपमानोत्तरपद जैसे पुष्पः
व्याघ्रहव पुरुषव्याघ्रः; सम्भावना पूर्वपद जैसे गुण इति बुद्धिः गुणबुद्धिः;
७ अवधारण पूर्वपद जैसे अविद्यैव गृह्णता अविद्यागृह्णता; मध्यमपद
लापी जैसे शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः ।
- ३ बहुव्रीहि अन्य पदार्थ प्रधान होता है, यह सात प्रकार का है १ द्विपद
जैसे विश्वः गावो यस्यसः विश्वगुः गोपः भुक्त ओदनोयेनसः भुक्तोदनोभूयः;
२ बहुपद जैसे अधिकः उपतः असंशयस्य सः, अधिकोन्नतांसः; ३ सहपूर्व-
पद जैसे सहं पुत्रेण यदन्ते इति सपुत्रः; ४ संख्योत्तर पद जैसे दशोत्तं स-
मीपे ये सन्ति ते उपदशाः; ५ संख्योभय पद जैसे द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः;

(१) अर्धे नपुंसकम् । (२) द्वितीया श्रित तीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापत्नैः ।
(३) तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन । (४) चतुर्थी तदर्थार्थलिहितसुतरक्षितैः
(५) पञ्चमी भये । (६) षष्ठी । (७) सप्तमी शौण्डैः । (८) नञ् । (९) विशेषणं
विशेष्येण बहुलम् । (१०) उपमानानि सामान्यवचनैः । (११) उपमितं व्याघ्रा-
द्विभिः सामान्याप्रयोगे । (१२) शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योप-
संख्यानाम् । (१३) अनेकमन्यपदार्थैः । (१४) तेनसहैतितुल्ययोगे । (१५) संख्ययाऽ
व्ययासन्नाद्वाधिकसंख्याः संप्येये ।

६ व्यतिहारलक्षण जैसे केशेषु केशेषु गृहीत्या इदं युद्धं प्रवर्तते इति केशाकेशिः
७ दिगन्तराललक्षण जैसे दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोयदन्तरालं सा
दक्षिणपूर्वा ।

- ४ संख्यावाचकशब्द पूर्वक समास द्विगु कहलाता है वह दो प्रकार का है
१ एक यज्ञाद्यो जैसे प्रथोणां श्रद्धाणां समाहारः शिशुः; २ अनेकयज्ञा-
धी जैसे सप्त च ते प्राययश्च सप्तर्षयः ।
- ५ चार्थक द्वन्द्व उभयपदार्थ प्रधान होता है और वह तीन प्रकार का है
१ इतरेतर द्वन्द्व जैसे रामश्च कृष्णश्च रामकृष्णौ; २ समाहार द्वन्द्व जैसे
हरिश्च हरश्च गुरुश्च हरिहरगुरुः पाणि च पादौ च पाणिपादम्; ३ एक
शेष द्वन्द्व जैसे माता च पिता च पितरौ, श्वधश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ ।
- ६ अव्यय पूर्वपद और पूर्वपदार्थप्रधान गन्ययोभाव होता है जैसे तटं
तटं प्रति अनुनटम्, क्रममनतिक्रम्य वर्तते इतियथाक्रमम्, कुम्भस्यसमीपे
वर्तते इति उपकुम्भम् वस्तु ।

अर्थतद्धितप्रकरणप्रदर्शकः सप्तमोऽध्यायः ।

- १ अण्, यण्, आयनण्, इण्, इकण्, ईकण्, ईयण्, रायण्, कण्, कन् इत्यादि
प्रत्यय "तस्यापर्य", "तत्रभवः", "तस्येदम्", "अस्यदेवता", "तंवे-
त्तिमधीते वा", "तेन प्रोक्तम्", "तेनकृतम्", "तत्रसाधुः", "तत्रदेयम्",
"तस्मादागतं", तमर्हति "अस्यपण्यम्", "अस्य प्रहरणम्", "प्रयोजनमस्य",
"अस्य शीलं", "तं अधिकृत्यकृतं", "तेनजीवति", "तस्य भावः",
"स्वाधे मे", "हस्वार्थे मे" होते हैं क्रम से सविग्रह उदाहरण देख्यो जैसे
रणस्यापर्यपुमान रोषणः; प्रामेभवः प्राम्यः; चन्द्रस्य इदं चान्द्रम्। विष्णु
रस्यदेवताघैष्णवः; व्याकरणं घेसि अर्थात् वा घैयाकरणः; ऋषिणा प्रोक्तं
आर्यम् मनसाकृतंमानसिकम्; समार्यासाधुः सभ्यः; मासेदेयमासिकम्;
पितुरागतं पैतृकम्; छेदमर्हतिछेद्यः; लवणमस्यपण्यं लावणिकः; धनुरस्य
प्रहरणं धानुष्कः; यशः प्रयोजनमस्य यशस्यम्; तपोऽस्यशीलं तापसः।

(१) तत्र तेनेदमिति सरूपे। (२) दिङ्नामान्यन्तराले। (३) तद्धितार्थोत्तर-
पदसमाहारे च। (४) चार्थे द्वन्द्वः। [५] पितामात्र। [६] श्वशुरः श्वध्वा।

राममधिकृत्यकृतं रामायणं; व्यवहारेणजीवति व्यावहारिकः; शिशोर्भावः शैशवम्; चोरपधचोरः; ह्रस्वोवृक्षः वृक्षकः ।

- २ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये संज्ञा व विशेषण शब्दों से त और त्व प्रत्यय लगाई जाती है जिनमें तान्त शब्द खीलिङ्ग और त्वान्त नपुंसक होते हैं जैसे अमरस्य भावः अमरता, अमरत्वम्, लघुता, लघुत्वम् ।
- ३ तुल्यार्थद्योतन करने के लिये संज्ञा शब्दों से वत् प्रत्यय लगाते हैं और घे शब्द अव्ययों में गणना किये जाते हैं जैसे चन्द्रेण तुल्यं (इव) चन्द्रवत् ।
- ४ अस्यर्थे में 'मत्' प्रत्यय होता है परन्तु जिन शब्दों के अन्त में, अन्तिम अ, आ या इ, अ, ण न को छोड़ कोई स्पर्श वर्ण हो या उपधाभूत अ, आ या म होवे तो मत् के स्थान में वत् हो जाता है जैसे मतिर्विद्यतेऽस्य सः मतिमान्, अंगुमान्; ज्ञानवत्, दयावत्, विद्युत्वत् आत्मवत्, मास्वत्, लक्ष्मीवत् ।
- ५ कहीं २ पेसी संज्ञा जिनके अन्त में अ या आ हो और जिनमें एक से अधिक स्वर हों तो वहां विकल्प से वत् और इन् भी होते हैं जैसे ज्ञान से ज्ञानवत्, ज्ञानिन्; मालावत्, मालिन् ।
- ६ अस् प्रत्ययान्त शब्द और खञ्, मेधा, माया शब्दों में उपरोक्त अर्थ में विन् और वत् दोनों प्रत्यय विकल्प से होते हैं जैसे तेजस्—तेजस्विन्, तेजस्वत्; खञ्—खञ्जन्, खञ्जत् ।
- ७ जातार्थ में संज्ञा शब्द से इतच् प्रत्यय होता है जैसे पिपासा जाता अस्य सः पिपासितः क्षुधितः फलितः पुष्पितः ।
- ८ उत्कर्ष वा प्रकर्षार्थद्योतन करने के लिये विशेषण शब्दों से तर, तम, ईयस्, इष्ट प्रत्यय लगाई जाती हैं जैसे गुरु-गुरुतरः, गुरुतमः; गुरु-गुरोयान्, गरिष्ठः । इन प्रत्ययों के साथ बहुधा प्रकृति के रूप में बहुत भेद हो जाता है इस लिये दूसरे व्याकरणों से पूरा २ अभ्यास कर लेना चाहिये जैसे अतिशयेन प्रशस्यः श्रेयान्, श्रेष्ठः, वृद्धः, ज्यायान्, ज्येष्ठः इत्यादि ।
- ९ भाववाचक संज्ञा बनाने के लिये विशेषण शब्दों से इमन् प्रत्यय लगता है और इमन् प्रत्ययान्त शब्द प्रायः पुँलिङ्ग होते हैं जैसे गुरोर्भावः गरिमा, लक्षिमा, बहु-भूमा प्रिय से प्रेमा इत्यादि ।
- १० संख्यावाचक शब्दों से प्रकारार्थ में "धा" प्रत्यय और कुछ सर्व नाम

शब्दों से इसी अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं और दोनों प्रकार के सिद्ध शब्द अव्यय होते हैं जैसे एकविधा एकधा, त्रिधा, विधा इत्यादि और अन्येन प्रकारेण अन्यथा, उभयथा, सर्वथा इत्यादि ।

११ पञ्चमो अर्थ में तत् और सप्तमो अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगकर तदन्त शब्द-
अव्यय होते हैं जैसे प्रामादितिप्रामतः, सर्वस्मिन्निति सर्वत्र, कस्मिन्निति-
कुत्र इत्यादि ।

१२ पूर्वं, ऊर्ध्वं, उपरि, अधश्च और समय सूचक अव्ययों से भवार्थ में "तन" प्रत्यय होता है जैसे पूर्वं भवः पूर्वतनः अधभवः अधतनः इत्यादि ।

१३ किम् शब्द के सिद्ध रूपों में अनिश्चयत्व दिखाने के लिये "चित्" और चन प्रत्यय लगाते हैं जैसे कश्चित् कौचित् केचित् कश्चन, कौचन केचन इत्यादि भी अव्ययही हैं ।

१४ अधोने और दास्वर्णे (सम्पूर्णता) अर्थ में "सात्" प्रत्यय होता है जैसे राक्षः अधोने राजसात्, सर्वे मस्म भस्मसात् इत्यादि ।

१५ किम्, यत् और तत् शब्दों से दो में से एक के निर्धारण करने में इतर और यद्दुनों में से एक के निर्धारण करने में "इतम" प्रत्यय लगाते हैं जैसे कतरो भजतोः नैयायिकः, कतमो भवतां घेयाकरणः ।

अथ धातुरूपमदर्शकोऽष्टमोऽध्यायः ।

(३-आदिगणः) धातुसारः ।

(धातु)भू सत्तायाम् (होना)	खलु अवदारणे (खोदना)	भित्तरासंभ्रमे (जल्दी का.)	जपजल्पव्यकार्यावाचि (बोलना)
लट् (यत्नेमान) भवति	खनति	स्वरते	जपति, जल्पति
लङ् (अनघतनभूत) अभयत्	अखनत्	अत्यरत	अजपत्, अजल्पत्
लिट् (विधि) भयेत्	खनेत्	त्वेत्	जपेत्, जल्पेत्
लिट् (आशी) भूयात्	खायात्, खन्यात्	त्वीर्येष्ट	जप्यात्, जल्प्यात्
लिट् (परोक्षभूत) वभूय	खनान	तत्त्वरे	अजाप, अजल्प
लुङ् (अन, भविष्य) भविता	खनिता	स्वरिता	जपिता, जल्पिता
लुङ् (सामान्यभूत) अभूत्	अखनीत्, अखनीत्	अत्यरिष्ट	अजापीत्, अजल्पीत्

लृङ् (क्रियातिपाप्ति) अभविष्यत्	अखनिष्यत्	अत्वरिष्यत्	अजपिष्यत्, अजलिष्यत्
लृट् (सामान्यभविष्य) भविष्यति	खनिष्यति	त्वरिष्यते	जपिष्यति, जलिष्यति
लोट् (आह्ला) भवतु जिजन्त (प्रेरणार्थक) भाषयति *	खनतु खानयति	त्वरताम् त्वरयति-ते	जपतु, जल्पतु जापयति, जल्पयति
सञ्जन्त (इच्छार्थक) बुभूयति यडन्त (अतिशयार्थक) घोभूयते	चिचनिष्यति चङ्म्यते	तित्वरिष्यति तात्वर्यते	जिजपिष्यति, जिजलिष्यति जंजप्यते, जाजल्प्यते
कर्मवाच्य † धा भाषयाच्य भूयते	खायते, खान्यते	त्वर्द्यते	जप्यते, जल्प्यते
शतृ ‡ शानच् भयन् क, कचतु भूतः भूतवान्	खनन् खतम्, खातवान्	त्वरमाणः नूर्णः तूर्णधान् त्वरित-त्वरि- तवान्	जपन्, जल्पन् जापितः, जलिपितः, जपि- तवान्, जलिपितवान्
रकाच् (पूर्वकालिका) भूत्वा संज्ञा भावः भवनम् भूतिः	खात्वा, खनित्वा खननम्	त्वरित्वा त्वरणम्	जापित्वा, जलिपित्वा जपः, जपनम्, जल्पनम्

(धातु) जिज्ञये (जीतना)	क्षिद्ये (नाशहो)	चर(ल)गति भक्षणयोः	दंशदशने (काटना)	राजूदीप्तौ (शोभितहो)
लृट् जयति	क्षयति	चरति	दंशति	राजति, राजते
लृङ् अजयत्	अक्षयत्	अचरत्	अदशत्	अराजत्, अराजत
लिट् जयेत्	क्षयेत्	चरेत्	दशेत्	राजेत्, राजेन
लिट् जीयात्	क्षीयात्	चर्यात्	दश्यात्	राज्यात्, राजिपीष्ट
लिट् जिगाय	चिक्षाय	चचार	ददंश	रराज, रेजे

* प्रायः सय धातु प्रेणार्थक में उभयपदी होती है । † परस्मैपदी धातुओं से शतृ और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् होता है । ‡ सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य अकर्मकों से भाषयाच्य बनता है ।

लुङ्	जता	क्षेता	चरिता	दृष्टा	राजितासि, *राजितासि
लुङ्	अजयान्	अक्षयान्	अचारीत्	अदाक्षीत्	अराजीत्, अराजिष्ट
लृट्	अजेष्यत्	अक्षेष्यत्	अचरिष्यत्	अदृश्यत्	अराजिष्यत्, अराजिष्यत्
लृट्	जेष्यति	क्षेष्यति	चरिष्यति	दृश्यति	राजिष्यति, राजिष्यते
लोट्	जयतु	क्षयतु	चरतु	दशतु	राजतु, राजताम्
णिजन्त	जाययति	क्षाययति	चारयति	दंशयति	राजयति, राजयते
सञ्जन्त	जिगीषति	चिक्षीषति	चिचरिष्यति	दिदंक्षति	रिराजिष्यति, रिराजिष्यते
यङ्	जेजीयते	चेक्षीयते	चञ्चूष्यते	दंदश्यते	राराज्यते
कर्मधाच्य	जीयते	क्षीयते	चयते	दश्यते	राज्यते
शतृ	जयन्	क्षयन्	चरन्	दशन्	राजमानः
क, कायतु	जितः जितवान्	क्षीणः क्षीणवान्	चरितः चरितवान्	दृष्टः दृष्टवान्	राजितः, राजितवान्
स्काच्	जित्वा	क्षित्वा	चरित्वा	दृष्ट्वा	राजित्वा
सहा	जयः	क्षयः	चरणम् चलनम्	दशनम्	राजनम्

दृशिर् अक्षेण (दृशेना)	पत्ल पतने (गिरना)	तिक्षयाचने (मांगना)	याच याचयायां (मांगना)
लृङ्	पश्यति	पतति	याचति, याचते
लृङ्	अपश्यत्	अपतत्	अयाचत्, अयाचत
लिट्	पश्येत्	पतेत्	याचेत्, याचेत
लिट्	दृष्यात्	पत्यात्	याच्यात्, याचिष्यात्
लिट्	ददर्श	पपात	ययाच, ययाचे
लुङ्	द्रष्टा	पतिता	याचितासि, याचितासे
लुङ्	अद्राक्षीत्	अपतत्	अयाचीत्, अयाचिष्ट
लृङ्	अद्रक्ष्यत्	अपतिष्यत्	अयाचिष्यत्, अयाचिष्यते
लृङ्	द्रक्ष्यति	पतिष्यति	याचिष्यति—ते
लोट्	पश्यतु	पततु	याचतु, याचताम्
णिजन्त	दर्शयति	पातयति	याचयति—ते
सञ्जन्त	दिदक्षति	पित्तति	यियाचिष्यति—ते

* इस लकार में प्रायः सच उभय पदां भातुओं में रूप भेद दिखाने के लिये मध्यम पुरुष एक वचन प्रयोग किया है ।

यङन्त दृरीदृश्यते कर्मवाच्य दृश्यते शतृ० पश्यन् क, कथतु, दृष्टः, दृष्टवान् रकाष् दृष्ट्वा संज्ञा दृष्टिः, दर्शनम्	पनीपत्यते पत्यते पतन् पतितः—वान् पतित्वा पतनम्	घंभिक्ष्यते भिक्ष्यते भिक्षमानः भिक्षितः—तवान् भिक्षित्वा भिक्षणं, भिक्षा	यायाच्यते याच्यते याचन्, याचमानः याचितः, तवान् याचित्वा याचनम्, याचना
---	---	--	--

पद् व्यक्तायाम्वाचि पठना	भास् दीप्ती (रोशन हो०)	यतां प्रयत्ने (कोशिश करना)	रमुक्रीडायाम् (खेलना)
लट् पठति लङ् अपठत् लिट् पठेत् लिट् पठ्यात् लिट् पपाठ लुट् पठिता लुङ् अपठीत् लृट् अपठिष्यत् लृट् पठिष्यति लोट् पठतु णिजन्त पाठयति सन्जन्त पिपठिपति यङन्त पापठ्यते कर्मवाच्य पठ्यते शतृ पठन् क, कथतु पठितः पठितवान् रकाष् पठित्वा संज्ञा पठनम्	भासते अभासत भासेत भासिपीष्ट वभासे भासिता अभासिए अभासिष्यत् भासिष्यते भासताम् भासयति—ते धिभासते घाभास्यते भास्यते भासमानः भासितः, तवान् भासित्वा भासनम्, भासः	यतते अयतत यतेत यतिपीष्ट येते यतिता अयतिष्ट अयतिष्यत यतिष्यते यतताम् यातयति यियतिपते यायत्यते यत्यते यतमानः यत्तः, यत्तवान् यतित्वा यतनम्, यत्तः	रमते अरमत रमेत रंसीष्ट रंमे रन्ता अरन्स्त अरन्स्यत रंस्यते रमताम् रमयति रिरंसति रंरन्स्यते रम्यते रममाणः रतः, रतवान् रन्त्या रमणम्, रतिः

	दुलभयप्राप्तौ [पाने]	यद्ब्यक्तायां याचि(धोलना)	दुग्धं कम्पने [कांपना]	शंसु स्तुती [तारीकरणे]	व्याद् आम्बादि ने खलनो
लद्	लभते	यदति	येपते	शंसति	व्यादते
डल्	अलभत	अयदत्	अयेपत	अशंसत्	अस्वादत्
लिङ्	लभेत	यदेत्	येपेत	शंसत्	स्यादेत
लिङ्	लप्सीष्ट	उद्यात्	येपिरीष्ट	शंस्यात्	स्यादिरीष्ट
लिङ्	लेभे	उवाद्	विषेपे	शशंस	सस्वादे
लुङ्	लब्धा	घदिता	घेपिता	शानिता	स्यादिता
लुङ्	अलब्ध	अय[वा]दीत्	अयेपिष्ट	अशंसीत्	अस्वादिष्ट
लुङ्	अलप्स्यत	अयदिप्स्यत्	अयेपिप्स्यत	अशंसिप्स्यत्	अस्वादिप्स्यत
लृट्	लप्स्यते	घदिष्यति	घेपिष्यते	शंसिष्यति	स्यादिष्यते
लोट्	लभताम्	घदतु	घेपताम्	शंसतु	स्यादताम्
णिजन्त	लाभयति	घादयति	घेपयति	शंसयति	स्यादयति
सधन्त	लिप्सते	घियदिपति	घियेपिपते	शिशंसिपति	सिस्वादिपते
यङन्त	लालभ्यते	वाचयते	वेघेप्यते	शाशस्यते	सास्वाद्यते
कर्मवाच्य	लभ्यते	उद्यते	वेप्यते	शस्यते	स्याद्यते
शतृ०	लभमान'	यदन्	वेपमान'	शंसन्	स्यादमानः
क्त, कथतु	लब्ध', घान्	उदितः-घान्	वेपित'-घान्	शस्त', शस्त- घान्	स्यादितः स्यादितघान्
इकाच्	लब्ध्या	उदित्वा, वा- दित्वा	वेपित्वा	शसित्वा, शस्त्या	स्यादित्वा
संज्ञा	लाभः लब्धिः लभनम्	यदनम्, याद्	वेपनम्, वेपथु	शसनम्, शस्ता, शस्ति	स्वादनं, स्वादः
	घस निवासे [रहना]	णद् अभ्यक्ते [शब्दे]	शप आक्रोशे [शुभ्राकहना]	छागान्तिनिवृत्तौ [उहरना]	स्मृस्मरणे [याद् करना]
लट्	घसति	नदति	शपति	तिष्ठति	स्मरति
लृट्	अवसत्	अनदत्	अशपत्	अतिष्ठत्	अस्मरत्
लिङ्	घसेत्	नदेत्	शपेत्	तिष्ठेत्	स्मरेत्
लिङ्	उष्यात्	नद्यात्	शप्यात्	स्थेयात्	स्मर्ष्यात्
लिङ्	उवास	ननाद्	शशाप	तस्थौ	सस्मार
लुङ्	घस्ता	नादिता	शसा	स्थाता	स्मर्ता

लुङ्	अवात्सीत्	अन [ना] दीत्	अशाप्सीत्	अस्थात्	अस्मार्थीत्
लृङ्	अवत्स्यत्	अनदिप्यत्	अशप्स्यत्	अस्थास्यत्	अस्मरिप्यत्
लृट्	वत्स्यति	नदिप्यति	शप्स्यति	स्थास्यति	स्मरिप्यति
लोट्	वसतु	नदतु	शपतु	तिष्ठतु	स्मरतु
णिजन्त	वासयति	नादयति	शापयति	स्थापयति	स्मरयति
सभ्रन्त	विवत्सति	निनदिपति	शिशप्सति	तिष्ठासति	सुस्मूर्यते
यङन्त	वाचस्यते	नानद्यते	शाशप्यते	तेष्ठीयते	सास्मर्यते
क० वा०	उप्यते	नद्यते	शप्यते	स्थीयते	स्मर्यते
शतृ०	वसन्	नदन्	शपन्	तिष्ठन्	स्मरन्
क कयतु	उपितः, वान्	नदितः-वान्	शप्तः शप्तवान्	स्थितः, वान्	स्मृतः, वान्
फ्रधाच्	उपित्वा	नदित्वा	शप्त्वा	स्थित्वा	स्मृत्वा
संज्ञा	उष्टिः, वासः घसनम्	नदत्तम्, नादः	शपनम्, शाप	स्थानम्, स्थितिः	स्मृतिः स्म रणम्

पह मर्पणे (सहना)		शुपू रक्षणे [रक्षाक०]	घ्रागन्धोपा दने [सूचना]	गम्भू गतौ [जाना]	डीङ् विहाय सागतौ
लट्	सहते	गोपायति	जिघ्रति	गच्छति	डयते
लृट्	असहत	अगोपायत्	अजिघ्रत्	अगच्छत्	अडयत्
लिट्	सहेत	गोपायेत्	जिघ्रेत्	गच्छेत्	डयेत्
लिट्	सहिषीष्ट	गुप्यात् गो- पाप्यात्	घ्रायात्, घ्रे- यात्	गम्यात्	डयिषीष्ट
लिट्	संहे	गोपायाञ्च- कार ई.	जघ्नौ	जगाम	डिश्ये
लृट्	सहिता, सोङ्गा	गोपायिता, गोप्ता ई.	घ्राता	गन्ता	डयिता
लृङ्	असहिष्ट	अगोप्सीत्, अगोपीत् ई.	अघ्रासीत्- अघ्रात्	अगमत्	अडयिष्ट
लृङ्	असहिष्यत्	अगोपायि- प्यत् ई.	अघ्रास्यत्	अगमिष्यत्	अडयिष्यत्
लृट्	सहिष्यते	गोपायिष्यति ई	घ्रास्यति	गमिष्यति	डयिष्यते
लोट्	सहताम्	गोपायतु	जिघ्रतु	गच्छतु	डयताम्
णिजन्त	साहयते	गोपाययति	घ्रापयति	गमयति	डाययति
सभ्रन्त	सिसहिषते	जुगोपायिपति	जिघ्रासति	जिगमिपति	डिडयिपते
यङन्त	सासह्यते		जेष्ठीयते	जङ्गम्यते	डेडीयते
कर्मधाच्य	सह्यते	गोपाय्यते		गम्यते	डीयते

* "आस" और वभूय भी चकार के तुल्य लग सकता है परतु केवल पर-सिपद में ।

शतृ० क,कवतु	सहमानः सोढः, घान्	गोपायन् गुप्तः, गोपा- यितः ई.	जिघ्रन् घ्रातः, घ्रात- वान्	गच्छन् गतः, घान्	डयमानः डौनः, घान्
फत्वाच् संशा	सहित्वा सहनम्	गोपायित्वा ई. गोपायनम्, गोपनम्	घ्रात्वा घ्राणम्	गत्या गमनम्, गतिः	डायित्वा डयनम्
	हसे हसने [हंसना]	ध्माशब्दादिसं- योगयोःधीकना	पा—पाने [पीना]	तृपुण्यनसन्त [रणयोः]	शिक्ष शिक्षायां /
लृद् लृङ् लिट् लिट्	हसति अहसत् हसेत् हस्यात्	धमति अधमत् धमेत् ध्मेयात्, ध्मा- यात्	पिबति अपिबत् पिबेत् पेयात्	तरति अतरत् तरेत् तीर्यात्	शिक्षते अशिक्षत शिक्षेत शिक्षिषीष्ट
लिट् लृद् लृङ् लृङ्	जहास हसिता अहसीत् अहसिष्यत्	दध्मौ ध्माता अध्मासीत् अध्मास्यत्	पपौ पाता अपात् अपास्यत्	ततार तरि [री] ता अतारीत् अतरि [री] प्यत्	शिशिक्षे शिक्षिता अशिक्षिष्ट अशिक्षिष्यत
लृद् लोट् णिजन्त सन्नन्त यङन्त क० घा० शतृ० क,कवतु फत्वाच् संशा	हसिष्यति हसतु हासयति जिहसिषति जाहस्यते हस्यते हसन् हसितः, घान् हसित्वा हसनम्, हासः	ध्मास्यति धमतु ध्मापयति दिध्मासति देध्मीयते ध्मायते धमन् ध्मातः, घान् ध्मात्वा ध्मानम्	पास्यति पिबतु पाययति पिपासति पेपीयते पीयते पिबन् पीतः, घान् पीत्वा पानम्	तरि [री] प्यति तरतु तारयति तितीर्यति ई. तेतीर्यन्ते तीर्यते तरन् तीर्णः—घान् तीर्त्वा तरणम्	शिक्षिष्यते शिक्षताम् शिक्षयति शिशिक्षियते शिशिष्यते शिश्यते शिक्षमाणः शिक्षितः, घान् शिक्षित्वा शिक्षणम्, शिक्षा
	डुयमुउद्विरणे [आकना]	हृद् हरणे (हरण)	घाय गति शुद्धयोः (दीङ्ना)	ह्ये—आकारणे (हुलाना)	
लृद् लृङ् लिट्	यमति अयमत् यमेत्	हरति-ते अहरत्-त हरेत्-त	घायति, घायते अघायत्, अघायत घोयत्, घायेत	ह्ययति, ह्ययते अह्ययत्, अह्ययत ह्येयत्, ह्येयत	

लिङ् लिट् लुट् लुङ्	घञ्यात् घञाम् घमिता अघमीत्	ह्रियात्-ह्रपीष्ट जहार-जहे हर्नासि-से अहार्पीत्, अहत	धाञ्यात्, धाविपीष्ट दधाथ, दधावे धावितासि, से अधावीत्, विष्ट	ह्येयाच्, हासीष्ट जुहाथ, जुहुवे हातासि, हातासे अह्वत्, अह्वत, अह्वास्त
लङ् लृट् लोट् णिजन्त सप्तन्त यङन्त क० घा० शतृ० क, कवतु फत्वाच् संज्ञा	अवमिष्यत् घमिष्यति यमतु घा [घ]मयति विचमिपति घंघम्यते घम्यते घमन् घान्तः, घान् घांत्वा, घमित्वा घमनम्	अहरिष्यत्, त हरिष्यति-ते हरतु-ताम् हारयति इ० जिहीर्षति जेहीयते ह्रियते हरन्, माणः हृतः, हृतवान् हृत्वा हरणम्	अधाविष्यत्, त धाविष्यति, ते धावतु, ताम् धावयति, ते दिधाविष्यति, ते दाधाव्यते धाव्यते धावन्, मानः धाधितः धाधितवान् धाधित्वा धावनम्	अह्वास्यत्, त ह्वास्यति, ते ह्यतु, ह्यताम् ह्वाययति, ते जुह्वपति आह्वायते ह्वयते ह्वयन्-मानः हृतः, तवान् हृत्वा आह्वानम्
	मिह सेचने [पेशावक.]	गौञ् प्रापणे (पाना)	दुयप् धीजतन्तु- सन्ताने (घोना)	पच् (पाके) पकाना
लट् लङ् लिङ् लिट् लुट् लुङ् लृट् लृट् लोट् णिजन्त सप्तन्त यङन्त क० घा० शतृ० क, कवतु	मेहति अमेहत् मेहेत् मिह्यात् मिमेह मेढा अमिक्षत् अमेश्यत् मेश्यति मेहद् मेहयति मिमिक्षानि मेमिह्यते मिह्यते मेहन् मीढः, घान्	नयति-ते अनयत्-त नयैत्, त नीयात्, नेपीष्ट निनाय, निन्ये नेतासि-से अनेपीत्, अनेष्ट अनेष्यत्-त नेष्यति-ते नयतु, ताम् नाययति-ते निनीपति ते नेनीयते नीयते नयन्-मानः नीतः-वान्	वपति-ते अवपत्-त वपेत्-त उप्यात्, धप्सीष्ट उवाप, ऊपे वप्तासि-से अवाप्सीत्, अवप्त अवप्स्यत्-त वप्स्यति-ते वपतु-ताम् वापयति-ते धिवप्सति-ते वाचप्यते उप्यते वपन्, वपमानः उमः, वान्	पचति-ते अपचत्-त पचेत्-त पच्यात्, पक्षाष्ट पपाच, पेचे पकासि-से अपाक्षीत्, अपक्त अपश्यत्-त पश्यति-ते पचतु-ताम् पाचयति-ते पिपक्षति-ते पाच्यते पच्यते पचन्, पचमानः पकः, पक्तवान्

कृत्वाप् संज्ञा	मीढ्या मेहनम्	नीत्या नयनं, नीतिः	उप्या घणनम्	पफत्या पचनम्, पाकः
	यज देवपूजादी	सेवृ सेवयाम् (सेवा करना)	लज्ज लज्जायां	पदि अभिषादन स्तुत्योः
लट्	यजति, ते	सेवते	लज्जते	पन्दते
लङ्	अयजत्—त	असेवत	अलज्जत	अपन्दत
लिट्	यजेत्—त	सेवेत	लज्जेत	पन्देत
लिट्	इज्यात्—यक्षीष्ट	सेपिपीष्ट	लज्जिपीष्ट	पन्दिपीष्ट
लिट्	ईयाज, ईजे	सिपेपे	ललज्जे	पपन्दे
लुट्	यप्राप्ति—से	सेयिता	लज्जिता	पन्दिता
लुङ्	अयाक्षीत्, अयष्ट	असेविष्ट	अलज्जिष्ट	अपन्दिष्ट
लृङ्	अयस्यत्—त	अनेविष्यत	अलज्जिष्यत	अपन्दिष्यत
लृट्	यस्यति—ते	सेविष्यते	लज्जिष्यते	पन्दिष्यते
लोट्	यजतु—ताम्	सेवताम्	लज्जताम्	पन्दताम्
गिजन्त	याजयति—ते	सेवयति—ते	लज्जयति	पन्दयति—ते
सप्रन्त	यियक्षति—ते	सिपेयिष्यते	लिलज्जिष्यते	वियन्दिष्यते
यङन्त	यायज्यते	सेसेज्यते	लालज्ज्यते	यावन्द्यते
क०या०	इज्यते	सेव्यते	लज्ज्यते	पन्द्यते
शवृ०	यजन्, मानः	सेवमानः	लज्जमानः	पन्दमानः
क,कवत्	इष्ट, वान्	सेयितः—वान्	लज्जितः, वान्	पन्दितः, वान्
कृत्वाप्	इष्ट्वा	सेवित्वा	लज्जित्वा	पन्दित्वा
संज्ञा	यजनम्, यागः	सेवनम्, सेवा	लज्जा	पन्दनम्
	वृधुं वर्धने (वढ़ना)	वैशब्दे (गाना)	शक्ति शक्तायां (शक्ता करना)	मुद हर्षे (शुशाहोना)
लट्	वर्धते	गायति	शङ्कते	मोदते
लङ्	अवर्धत	अगायत्	अशङ्कत	अमोदत
लिट्	वर्धेत	गायेत्	शङ्केत	मोदेत
लिट्	वर्धिषीष्ट	गेयात्	शङ्किपीष्ट	मोदिपीष्ट
लिट्	ववृधे	जगौ	शशङ्के	मुमुदे
लुट्	वर्धिता	गाता	शङ्किता	मोदिता
लुङ्	अवृधत्, अवर्धिष्ट	अगासीत्	अशङ्किष्ट	अमोदिष्ट
लृङ्	अवर्त्स्यत, अवृधिष्यत	अगास्यत्	अशङ्किष्यत	अमोदिष्यत
लृट्	वर्त्स्यते, वर्धिष्यते	गास्यति	शङ्किष्यते	मोदिष्यते

लोद् णिजन्त सन्नन्त यङन्त फ० वा० शतृ० क,कयत् फत्वाप् संज्ञा	वर्धताम् वर्धयति—ते विधर्विपते विवृत्सते वरीवृध्यते वृध्यते वर्धमानः वृद्धः, वान् वर्धित्वा, वृद्ध्वा वर्धनम्, वृद्धिः	गायतु गापयति—ते जिगासति जेगीयते गीयते गायन् गीतम् गात्वा गानम्	शङ्कताम् शङ्कयति—ते शिशङ्कयते शाशङ्कयते शङ्क्यते शङ्कमानः शङ्कितः, वान् शङ्कित्वा शङ्का	मोदताम् मोदयति मुमु (मो) दिपते मोमुच्यते मुच्यते मोदमानः मु (मो) दितम् वान् मु (मो) दित्वा मोदनम्, मोदः
---	--	--	---	---

	णिदि कुत्सायाम् (निन्दाक०)	वृत्तु वर्तने (वर्तना)	अदादिगणः अद् भक्षणं	मा माने (समाना)
लद् लङ् लिङ् लिङ् लिट् लुङ् लुङ् लृङ् लृङ् लोट् णिजन्त सन्नन्त यङन्त फ० वा० शतृ० क,कयत् फत्वाप् संज्ञा	निन्दति अनिन्दत् नन्देत् निन्द्यात् निनिन्द निन्दिता अनिन्दीत् अनिन्दिष्यत निन्दिष्यति निन्दतु निन्दयति निनिन्दिपति	वर्तते अवर्तत वर्तत वर्तिषीष्ट वधृते वर्तिता अवर्तिष्ट अवृत्तत अवर्ति (त्स्ये) ष्यत वर्ति (त्स्ये) ष्यते वर्ततात् वर्तयते—ति विधर्विपते वि- वृत्सते वरीवृत्त्यते वृत्त्यते वर्तमानः वृतः, वान् वर्ति (वृ) त्वा वर्तनम्, वृत्तिः	अस्ति आदत् अद्यात् अद्यात् आद, जघास अत्ता अघसत् आत्स्यत् अत्स्यति अत्तु आदयति जिघत्सति	माति अमात् मायात् मेयात् ममौ माता अमासीत् अमास्यत् मास्यति मातु मापयति मित्सति ममीयते मीयते मान् मीतः, तवान् मात्वा मानम्
	णमुअभिवादनं (नमस्कारक०)	जीव प्राणधारणे (जीना)	जागृ निद्राक्षये (जागना)	सृजृप शुद्धौ (सांगना)
लद् लङ्	नमति अनमत्	जीवति अजीवत्	जागर्ति अजागः	माष्टि अमाद्

कत्याप् संज्ञा	मीढ्या मेहनम्	नीत्वा नयनं, नीतिः	उप्या वपनम्	पक्ष्या पचनम्, पाकः
यज देवपूजादौ		सेवृ सेवायाम् (सेवा करना)	लज्ज लज्जायां	घदि अभिवादन स्तुत्योः
लट्	यजति, ते	सेवते	लज्जते	घन्दते
लङ्	अयजत्—त	असेवत	अलज्जत	अघन्दत
लिट्	यजेत्—त	सेवेत	लज्जेत	घन्देत
लिट्	इज्यात्—यक्षाष्ट	सेविषीष्ट	लज्जिषीष्ट	घन्दिषीष्ट
लिट्	ईयाज, ईजे	सिपेवे	लज्जे	वघन्दे
लुट्	यथासि—से	सेविता	लज्जिता	यन्दिता
लुङ्	अयाक्षीत्, अयष्ट	असेविष्ट	अलज्जिष्ट	अघन्दिष्ट
लृङ्	अयक्ष्यत्—त	असेविष्यत	अलज्जिष्यत	अघन्दिष्यत
लृट्	यक्ष्यति—ते	सेविष्यते	लज्जिष्यते	घन्दिष्यते
लोट्	यजन्तु—ताम्	सेवताम्	लज्जताम्	घन्दताम्
गिजन्त	याजयति—ते	सेवयति—ते	लज्जयति	घन्दयति—ते
सप्तमन्त	यियक्षति—ते	सिपेविषते	लिलज्जिषते	वियघन्दिषते
यङन्त	यायज्यते	सेसेष्यते	लालज्यते	घायघन्द्यते
क०घा०	इज्यते	सेष्यते	लज्ज्यते	घन्द्यते
शतृ०	यजन्, मानः	सेवमानः	लज्जमानः	घन्दमानः
क, कवत्	इष्ट, यान्	सेवितः—यान्	लज्जितः, घान्	घन्दिताः, यान्
क्याप्	इष्ट्वा	सेवित्वा	लज्जित्वा	घन्दित्वा
सञ्ज्ञा	यजनम्, यागः	सेवनम्, सेवा	लज्जा	घन्दनम्
वृधूयर्धने (वढ़ना)		गिशब्दे (गाना)	शकि शङ्कायां (शङ्का करना)	मुद् हर्षे (स्तुशहोना)
लट्	वर्धते	गायति	शङ्कते	मोदते
लङ्	अवर्धत	अगायत्	अशङ्कत	अमोदत
लिट्	वर्धेत	गायेत्	शङ्केत	मोदेत
लिट्	वर्धिषीष्ट	गेयात्	शङ्किषीष्ट	मोदिषीष्ट
लिट्	वधृषे	जगौ	शशङ्के	मुमुदे
लुट्	वर्धिता	गाता	शङ्किता	मोदिता
लुङ्	अवृधत्, अवर्धिष्ट	अगासीत्	अशङ्किष्ट	अमोदिष्ट
लृङ्	अवर्त्स्यत, अवृधिष्यत	अगास्यत्	अशङ्किष्यत	अमोदिष्यत
लृट्	वर्त्स्यते, वर्धिष्यते	गास्यति	शङ्किष्यते	मोदिष्यते

लोड् णिजन्त सञ्जन्त यङन्त क० वा० शतृ० क, कचतु फत्याच् संज्ञा	वर्धताम् वर्धयति—ते विधर्षिष्यते, विवृत्सते घरीवृष्यते वृष्यते वर्धमानः वृद्धः, वान् वर्धित्वा, वृद्ध्या वर्धनम्, वृद्धिः	गायतु गापयति—ते जिगासति जेगीयते गीयते गायन् गीतम् गात्वा गानम्	शङ्कताम् शङ्कयति—ते शिशङ्किष्यते शाशङ्क्यते शङ्क्यते शङ्कमानः शङ्कितः, वान् शङ्कित्वा शङ्का	मोदताम् मोदयति मुमु (मो) दिष्यते मांमुचते मुचत मोदमानः मु (मां) दितम् वान् मु (मो) दित्वा मोदनम्, मोदः
--	---	--	---	--

	णिदि कुरसायाम् (निन्दाक०)	वृत्तु वर्तने (वर्तना)	अदादिगणः अद भक्षणं	मा माने (समाना)
लड् लङ् लिङ् लिङ् लिट् लुङ् लुङ् लङ् लृङ् लोड् णिजन्त सञ्जन्त यङन्त कर्म० शतृ० क, कचतु फत्याच् संज्ञा	निन्दति अनिन्दत् नन्देत् निन्द्यात् निनिन्द निन्दिता अनिन्दीत् अनिन्दिष्यत निन्दिष्यति निन्दतु निन्दयति निनिन्दिषति नेनिन्धते निन्धते निन्दन् निन्दितः, वान् निन्दित्वा निन्दा	वर्तते अवर्तत वर्तत वर्तिषीष्ट ववृते वर्तिता अवर्तिष्ट अवृत्तत अवर्ति(त्स्य)ष्यत वर्ति(त्स्य)ष्यते वर्ततात् वर्तयते—ति विधर्षिष्यते वि- वृत्सते घरीवृष्यते वृष्यते वर्तमानः वृतः, वान् वर्ति (वृ) त्वा वर्तनम्, वृत्तिः	अस्ति आदत् अद्यात् अद्यात् आद, जघास अत्ता अघसत् आत्स्यत् अत्स्यति अत्तु आदयति जिघत्सति अद्यते अदन् जग्धः, वान् जग्ध्वा अदनम्	माति अमात् मायात् मेयात् ममौ माता अमासीत् अमास्यत् मास्यति मातु मापयति मित्सति ममीयते मीयते मान् मीतः, तवान् मात्वा मानम्
	णमुअभिवादाने (नमस्कारक०)	जीव प्राणधारणे (जीना)	जागृ निद्राक्षये (जागना)	मृजूप शुद्धी (मांगना)
लड् लङ्	नमति अनमत्	जीवति अजीवत्	जागर्ति अजागः	मार्ष्टि अमार्द्

लिङ्	ममत्	जीवेत्	जागृयात्	मृज्यात्
लिङ्	नभ्यात्	जान्यात्	जागयात्	मृज्यात्
लिङ्	ननाम	जिजांघ	जजागार जाग- राञ्चकार	ममाञ्ज
लुङ्	नन्ता	जीविता	जागरिता	माष्टं, माञ्जिता
लुङ्	अनसात्	अजीघोत्	अजागरीत्	अमाश्नी (जी)त्
लृङ्	अनस्यत्	अजीविष्यत्	अजागरीष्यत्	अमाश्यं (जिष्य)त्
लृङ्	नंस्यति	जीविष्यति	जागरिष्यति	माश्यं (जिष्य)ति
लोट्	नमत्तु	जीष्यतु	जागृतुं	माष्टुं
णिजन्त	न (ना) मयति	जीययति	जागरयति	माञ्जयति
सघ्नन्त	निनेसति	जिजीविषति	जिजागरिषति	मिमाश्ने (जिष)ति
यङन्त	नेनभ्यते	जेजीव्यते		मरीमृज्यते
क० वा०	नभ्यते	जीन्यते	जागप्यते	मृज्यते
शतृ०	नमन्	जीपन्	जाग्रन्	माञ्जन्, मृजन्
क,कयत्	नतः—वान्	जीवितः, वान्	जागरितः, वान्	मृष्टः, वान्
फत्याञ्	नत्वा	जीवित्वा	जागरित्वा	मृष्ट्वा, माञ्जित्वा
सञ्ज्ञा	नमनम्, नतिः	जीवनम् इति भ्यादिः	जागरणम्	माञ्जनम्

	वच परिभाषणे (बोलना)	पुंश्च स्तुती (तारीफ करना)	पारक्षणे	त्रिष्वप् द्रव्ये [सना]
एट्	वक्ति	स्तौति, स्तवीतिस्तुते, स्तवीते	पाति	स्वपिति
लङ्	अवृक्	अस्तौत्, अस्तवीत्; अ- स्तुत्, अस्तवीत्	अपाष्ट	अस्वप[पी]त्
लिङ्	वच्यात्	स्तवीयात्, स्तुयान्, स्तुवीत्	पायात्	सप्यात्
लिङ्	उच्यात्	स्तूयात्, स्तोपीष्ट	पायाष्ट	सुप्यात्
लिङ्	उवाच	तुष्टाच; तुष्टुचे	पपी	सुप्याप
लुङ्	धक्ता	स्तातासि—ते	पाता	स्वप्ता
लुङ्	अवोचत्	अस्तावीत् अस्तोष्ट	अपासीत्	अस्वाप्सीत्
लृङ्	अवश्यत्	अस्तोष्यत्, अस्तोष्यत	अपास्यत्	अस्वप्स्यत्
लृङ्	धक्ष्यति	स्तोष्यति, स्तोष्यते	पास्यति	स्वप्स्यति
लोट्	वक्तुः	स्तौतु, स्तवीतु। स्तुतां, स्तुवीताम्	पातु	स्वपितु
णिजन्त	वाचयति	स्तावयति—ते	पालयति	स्वापयति
सघ्नन्त	विपक्षति	तुष्टूपति	पिपासति	सुपुप्सति

यङन्त क० वा० शत० क,क्यत् क्याच् संज्ञा	वाच्यते उच्यते वचन् उक्तम्, वान् उक्त्वा वचनम्	तोष्यते स्तुयते स्तुयश्, स्तयमानः स्तुतः, तवाश् स्तुत्वा स्तुतिः, स्तवनम्	पेयीयते पीयते पाश् पीतः, वाश् पीत्वा पानम्	सास्वप्यते सुप्यते स्वपन् सुप्तः, वान् सुप्त्वा स्वपनं, सुपतिः
---	---	--	---	---

	शासु अनुशिष्टा (दुष्म द०)	णुस्तुती (ताराफरना)	अस् भुवि [होना]	विद् दाने [जानना]	ष्णा शौच [न्हाना]
लट् लङ् लिट् लिट्	शास्ति अशात् शिष्यात् शिष्यात्	नोति अनोत् नुयात् नूयात्	अस्ति आसीत् स्यात् भूयात्	वेत्ति [विद्] अवेत् विद्यात् विद्यात्	स्नाति अस्नात् स्नायात् स्ना [स्ने]- यात्
लिट्	शशात्	नुनाय	यभूय	विषेद्, विदा ञ्कार	सस्नौ
लुट् लुङ् लृट् लृङ् लोट्	शासिता अशिषत् अशासिष्यत् शासिष्यति शास्तु	नविता अनावीत् अनधिष्यत् नधिष्यति नोतु	भविता अभूत् अभविष्यत् भविष्यति अस्तु	वेदिता अवेदीत् अवेदिष्यत् वेदिष्यति वेत्तु, विदा- इयतु	स्नाता अस्नासीत् अस्नास्यत् स्नास्यति स्नातु
णिजन्त सधन्त यङन्त क० वा० शत० क,क्यत् क्याच् संज्ञा	शासयति शिशासिपति शोशिष्यते शिष्यते शासन् शिष्टः, वान् शिष्ठा, शासित्वा शासनन्	नाशयति नुनधिपति नोनूयते नूयते नवन् नुतः, वान् नुत्वा नवनम्, नुतिः	भाषयति बुभूषति बोभूषते भूयते सन् भूतः, वान् भूत्वा भवनम्, भूतिः	वेदयति विवादिपति वधिष्यते विद्यते विदन् विदितः, वान् विदित्वा वेदनम्	स्नापयति सिस्नासति सास्नायते स्नायते स्नान् स्नातः, वान् स्नात्वा स्नानम्

	लिङ् आस्वादाने (चाटना)	रुदिरभुवि- मोचन	द्विप अप्रोती (द्विप करना)	इप् गती (जाना)
लट् लङ् लिट्	लेदि, लीडे अलेद, अलीद लिह्यात्, लिहीत	रोदिति अरोद (दी) त् रुद्यात्	द्वेष्टि, द्विष्टे अद्वेष्ट, अद्विष्ट द्विष्यात्, द्विषीत	पति पेन् इयात्

लिङ् लिङ् लुङ् लुङ्	लिङ्यात्, लिङ्शीष्ट लिलेह, लिलेह लेढासि-से अलिङ्गत्-त अलीढ	रुघात् रुरोद् रोदिता अरोदी (रुद्) त्	द्विष्यात्, द्विशीष्ट द्विषेप, दिद्विषे द्वेषासि-से अद्विषत्-त	ईयात् इयाय पता अगात्
लृङ् लृङ् लोट् णिजन्त सप्रन्त यङन्त क०धा० शत्० क, कव्यु कवाच सञ्च।	अलेह्यत् त लेह्यति ते लेडु, लीडाम् लेह्यति ते लिलिङ्गति ते लेलिङ्गते लिङ्गते लिङ्गन्, लिङ्गान् लीढ, लीडान् लीड्या लेहन्म्	अरोदिष्यत् रोदिष्यति रोदितु रोदयति रुदिष्यति रोरुघते रुचते रुदन् रु(रो)दितः यान् रुदिवा रोदनम्	अद्वेष्यत् त द्वेष्यति-ते द्वेष्टु, द्विष्टाम् द्वेषयति-ते द्विद्विक्षति-ते देद्विष्यते द्विष्यते द्विषन्-पाणः द्विष्टः, यान् द्विष्ट्वा द्वेषणम्, द्वेषः	पेष्यत् पेष्यति पतु गमयति जिगमिषति ईपते यन् इतः, यान् इत्वा अयनम्

हन् हिंसागत्योः (मारना)		रु शब्दे (रोना)	शीङ् स्वप्ने (सोना)	दुह प्रपूर्णे (दुहना)
लृङ् लृङ् लिङ् लिङ् लुङ् लुङ्	हन्ति अहन् हभ्यात् घभ्यात् जघान हन्ता अघधीष	रौति, रयीनि अरौत्, अरयीत् रुयात्, रयीयात् रूयात् हराष रयिता मरयीत्	शेते अशेत शयीत् शयिषीष्ट शिश्ये शयिता अशयिष्ट	दोग्धि, गुग्धे अघोक्, अदुग्ध दुह्यात्, दुहीत दुह्यात्, धुक्षीष्ट दुवोद्, दुडुद् दोग्धासि-से अधुक्षत् त अदुग्ध अघोरपत् त धोह्यति-ते दोग्धु, दुग्धाम् दोहयति ते दुधुक्षति ते दोदुहते
लृङ् लृङ् लोट् णिजन्त सप्रन्त यङन्त क०धा०	अहनिष्यत् हनिष्यति हन्तु घातयति जिघांसति जहन्त्यते अघ्रीयते हन्त्यते	अरयिष्यत् रयिष्यति रौतु, रयीनु राययति घरूपति रोरूपते रूपते	अशयिष्यत् शयिष्यते शेताम् शाययति शिनायिषते शाशय्यते शय्यते	दुहते

शतृ० क, कवतु फवाच् संज्ञा	मृन् हतः, वान् हत्या हननम्	रवन् रुतः, वान् रुत्वा रवणं, रावः	शयानः शयितः, वान् शयित्वा शयनम्	दुहन्-दानः दुग्धः, वान् दुग्ध्या दोहनम्
	मञ् व्यक्ताया- ः म्वाचि	त्रिभी भये (डरना)	डुभृष् धारणपोप- णयोः (पालना)	डुधान् धारणे
लङ् लङ् लिङ् लिङ् लिङ्	प्रधीति, वृते अप्रधीत्, अप्रत प्रयात्, वृवीते उच्येत्, वक्षीष्ट उवाच, ऊचे	विभेति अविभेत् विभीयात् भीयात् विभाय, विभयां ङ् इत्यादि	विभति, विभृते अविभः, अविभृत विभृयात्, विभ्रीत त्रियात्, भृपीष्ट यभार, विभरा- ञ्कार वप्ते	दधाति धत्ते अदधात् अधत्त दध्यात् दधीत धेयात्-धासीष्ट दधौ दधे
लुङ् लुङ् लङ् लृट् लोट् णिजन्त सन्नन्त यङन्त कर्म० शतृ० क, कवतु फवाच् संज्ञा	वक्तासि-से अवीचत् - त अवक्ष्यत्-त वक्ष्यति-ते प्रवीतु, प्रताम् वाचयति-ते विवक्षति ते वावच्यते उच्यते तुवन्, घाणः उकम्, वान् उकत्या घञनम् इत्यदादिः	भेता अभैपीत् अभेप्यत् भेप्यति विभेतु भापयते, भापयते विभीपति वेभीयते भीयते विभ्यन् भीतः, वान् भीत्वा भयम्, भीतिः	भर्तासि-से अभार्पीत्, अभृत अभरिष्यत्-त भरिष्यति ते विभर्तु, विभृताम् भारपति-ते बुभृपति-ते वेभ्रीयते भ्रियते विभ्रन् विभ्राणः भृतः, वान् भृत्वा भरणम्, भृतिः	धातासि-से अधात् अधित अधास्यत्-त धास्यति-ते दधातु-धत्ताम् धापयति ते धिस्सति-ते दधीयते धीयते दधन्-दधानः हितः, वान् हित्वा आधानम्
	अथजुहोत्यादिः । हुदानादनयोः (देना खाना)	ओहाक् त्यागे	डुदान् दाने (देना)	डुधान् दाने (देना)
लङ् लङ् लिङ् लिङ् लिङ्	जुहोति अजुहोत् जुहुयात् हयात् जुहाव	जहाति अजदात् जहात् हेयात् जहौ	ददाति दत्ते अददात् अदत्त दधात्-दधीत् देयात्-दासीष्ट ददौ-ददे	दोष्यति अदीड्यत् दीड्येत् दीन्यात् दिद्वेच

लुट्	दाता	दाता	दाताति-सं	देयिता
लुङ्	अदायीत्	पहासीत्	अदात्-अदित	अदेयीत्
लृट्	बाहोभ्यत्	अहास्यत्	अदास्यत्-त	अदेयिष्यत्
लृट्	दोष्यति	हास्यति	दास्यति-ते	देयिष्यति
लोट्	सुहावु	जहातु	ददातु-दत्ताम्	दीप्यतु
णिजन्त	हाययति	हापयति-ते	दापयति ते	देषयति-ते
सघ्नन्त	सुह्रपति	जिह्रासति	दिह्रासति-ते	दिदेषि (दुपु) यति
यङन्त	जोह्रयते	जेहीयते	देहीयते	देदीप्यते
क०या०	ह्रयंत	ह्रायंत	दायंत	दीप्यते
शतृ०	जुह्वन्	जह्वन्	ददन्-ददानः	दीप्यन्
क,कथतु	हुतः घान्	ह्रीनः, घान्	दत्तः, घान्	घतः, घान्
कत्याच्	हुत्या	दित्या	दत्त्या	दियित्या, घुत्या
संज्ञा	दधनम्	दानिः	दानम्	घृतिः

	भन झाने [मानना]	नृती गात्रचिक्षेपे [नाचना]	असु क्षेपणे [फिकना]	धन् अदशते [नाशहो०]
लट्	मन्यते	नृत्यति	अस्यति	नश्यति
लृङ्	अमन्यत	अनृत्यत्	आस्यत्	अनश्यत्
लिट्	मन्यंत	नृत्येत्	अस्येत्	नश्येत्
लिट्	मंसोष्ट	नृत्यान्	अस्यात्	नश्यात्
लिट्	मने	ननसं	आस	ननास
लुट्	मन्ता	नतिता	आसिता	नशिता, नष्टा
लुङ्	अमस्त	अनर्तात्	आप्यत्	अनशान्
लृट्	अमस्यत	अनर्ति [स्वयं] प्यत्	आसिष्यत्	अनशिष्य [नश्य] त्
लृट्	मंस्यते	अत्स्य [तिष्य] ति	असिष्यति	नश्य [नशिष्य] ति
लोट्	मन्यताम्	नृत्यतु	अस्यतु	नश्यतु
णिजन्त	मानयति	नर्तयति	आसयति	नाशयति
सघ्नन्त	मिमसते	निनर्तिपतिनिनृत्यति	आसिसिषति	निनेष्ट [निनशिष] ति
यङन्त	मम्मन्यते	नरीनृत्यते		मानश्यते
क०या०	मन्यते	नृत्यते	अस्यते	नश्यते
शतृ०	मन्यमानः	नृत्यन्	अस्यन्	नश्यन्
क,कथतु	मतः, घान्	नर्तितः, घान्	अस्तः, घान्	नष्टः, घान्
कत्याच्	मत्वा	नर्तित्वा	असित्वा, स्त्वा	नशित्वा, नष्ट्वा
संज्ञा	माननम् मति	नर्तनम्	असनम्	नाशनम्, नाशः

युधसप्रहारे [लङ्गना]	मुह वैचित्र्ये [घञङ्गाना]	भ्रमुत्पत्ति सर्वेच	रथ हिंसासंराध्योः [रांधना]
लङ्	युध्यते	भ्राम्यति	रथ्यति
लङ्	अयुध्यत	अभ्राम्यत्	अरथ्यत्
लिङ्	युध्येत	भ्राम्येत्	रथ्येत्
लिङ्	युत्सीष्ट	भ्रम्यात्	रथ्यात्
लिङ्	युयुधे	दाधाम्	रन्ध
लुङ्	योऽथा	भ्रमिता	रथिता [रङ्गा]
लुङ्	अयुध	अभ्रमत्	अरथत्
लृङ्	अयोत्स्यत	अभ्रमिष्यत्	अरत्स्य [धिष्य]त्
लृङ्	योत्स्यते	अभ्रमिष्यति	रत्स्य [धिष्य]ति
लोट्	युध्यताम्	भ्राम्यतु	रथ्यतु
गिजन्त	योध्यति	भ्रमयति	रन्धयति
सभ्रन्त	युयुत्सते	मुमुहिष [क्ष]ति	रिस्स (धिष)ति
यङन्त	योयुध्यते	मोमुह्यते	रारथ्यते
क० वा०	युध्यते	मुह्यते	रथ्यते
शतृ०	युध्यमानः	मुह्यन्	रथ्यन्
क, वक्तु	युयुः, वान्	मूढ. मुग्धः; वान्	रुङ्; वान्
कत्वाच्	युद्ध्या	मोहित्वा, मुग्ध्या	रथित्वा, र्ध्या
संज्ञा	योध्यनम्	मोहनम्, मोहः	रंध्यनम्

शुप शोपणे [सुखना]	विदसत्तायां [होना]	तुप मीतौ	पुप पुष्टौ [पुष्टहोना]
लङ्	शुप्यति	तुप्यति	पुप्यति
लङ्	अशुप्यत्	अतुप्यत्	अपुप्यत्
लिङ्	शुप्येत	तुप्येत्	पुप्येत्
लिङ्	शुप्यात्	तुप्यात्	पुप्यात्
लिङ्	शुशोप	तुनोप	पुपोप
लुङ्	शोषा	तोषा	पोषा
लृङ्	अशुपत्	अतुपत्	अपुपत्
लृङ्	अशोष्यत्	अतोष्यत्	अपोष्यत्
लृङ्	शोष्यति	तोष्यति	पोष्यति
लोट्	शुप्यतु	तुप्यतु	पुप्यतु
गिजन्त	शोपयति	तोपयति	पोपयति
सभ्रन्त	शुशुक्षति	तुतुक्षति	पुपुक्षति

लिङ्	भ्रम्यात्	ह्रम्यात्	हुहात्	ह्रीव्यात्
लिट्	बभ्राम	अह्रप	हुद्रोह	ति (टि) ष्टेव
लुट्	भ्रमिता	हर्षिता	द्रोहिता, द्रोढा, द्रोग्धा	ष्टेविता
लुङ्	अभ्रमत्	अह्रपत्	अद्रुहन्	अष्टेयीत्
लृङ्	अभ्रमिष्यत्	अहर्षिष्यत्	अद्रोहिष्य (अद्रो- श्य) त्	अष्टेविष्यत्
लृट्	भ्रमिष्यति	हर्षिष्यति	द्रोहिष्य (द्रोश्य) ति	ष्टेविष्यति
लोट्	भ्राम्यतु, भ्रमतु	ह्रप्यतु	द्रुह्यतु	ष्टीव्यतु
णिजन्त	भ्रमयति	हर्षयति	द्रोहयति	ष्टेवयति
सभ्रन्त	विभ्रमिषति	जिहर्षिषति	दुद्रो (हु) हिप (दुध्रक्ष) ति	ति (टि) ष्टेविषति
यङन्त	बंध्म्यते	जरीह्रप्यते	दोह्र्यते	ते (ट्) ष्टीप्यते
क०धा०	भूम्यते	ह्रप्यते	दुह्यते	ष्टीव्यते
शत०	भ्राम्यन्	ह्रप्यन्	दुह्यन्	ष्टीव्यन्
क, कयतु	भ्रान्तः, वान्	ह्रष्टः, वान्	दुग्धः, द्रुढः, वान्	प्यतः, वान्
कत्वात्	भ्रान्त्वा, भ्रमित्वा	ह्रष्ट्वा	दुग्ध्वा, द्रो (हु) हित्वा	प्ये (प्य) त्वा
संज्ञा	भ्रमणम्, भ्रान्तिः	हर्षणम्, हर्षिः	द्रोहः	ष्टेवनम्, प्यतिः

	पितु तन्तु स- न्तानि (साना)	अथ स्वादिः । पूञ् अभिषये	धूञ् कम्पने (कांपना)	राधसाध संसिद्धी (सिद्ध करना)
लट्	सीव्यति	सुनोति, सुनुते	धू (धु) नोति, धूनुते	रा [सा] धोति
लृट्	असीव्यत्	असुनोत्, असुनुत	अधूनोत्, अधूनुत	अरा [सा] धोत्
लिङ्	सीव्येत्	सुनुयात्, सुन्वीत	धूनुयात्, धून्वीत	रा (सा) धुयात्
लिङ्	सीव्यात्	सूयात्, सोपीष्ट	धूयात् धोपीष्ट- धविपीष्ट	रा [सा] ध्यान्
लिट्	सिषेप	सुपाथ; सुपुवे	दुप्राथ, दुधुवे	रराथ, ससाध
लुट्	सेविता	सोतासि—ते	धा (धवि) तासि, तासे	रा (सा) ङा
लुङ्	असेवीत्	असावीत्—असोष्ट	अधावीत्, अधोष्ट	अरा (असा) स्तीत्
लृङ्	असेविष्यत्	असोष्यत्—त	अधोष्यत्, अधोष्यत्	अरा (असा) स्यत्
लृट्	सेविष्यति	सोष्यति—ते	धोष्यति, धोष्यते	रा (सा) स्यति
लोट्	सीव्यतु	सुनोतु, सुनुताम्	धूनोतु, धूनुताम्	रा (सा) धोतु
णिजन्त	सेवयति	साधयति—ते	धावयति,—ते	रा [सां] धयति
सभ्रन्त	सिषेधिषति	सुमूयति—ते	दुधूयति—ते	रिरा (मिसा) त्सति
यङन्त	सेपीव्यते	सोपूयते	दोधूयते	रारा [सासा] प्यते
क० वा०	सीव्यते	सूयते	धूयते	रा [सा] ध्यते

शब्द० क,कवतु कत्वाप् संज्ञा	सीव्यन् स्युतः, घान् सेवि(स्यू)त्वा सेवन, स्युतिः	सुन्वन्-सुन्वानः सुतः—घान् सुत्वा अभिपद्यः	धून्वन्, धून्वानः धूतः—घान् धूत्वा ध्वनम्	रा (सा) ध्रुवन् रा[सा]ङ्, घान् राघ्या, साध्वा आराधनं, साधनम्
--------------------------------------	--	---	--	---

	चिञ् चयने [घटोरना]	श्रु अचणे [सुनना]	शक् शक्तौ (सकना)	भिदि र विदारणे (फाडना तोडना)
लट् लङ् लिट् लृट् लृट् लृट् लोट् षिञ्जन्त सन्नन्त यङन्त क० वा० शब्द० क,कवतु कत्वाप् संज्ञा	चिनाति, चिनुते अचिनोत्, अचिनुत् चिनुयात्, चिन्वीन चीयात्, चेपीष्ट चिन्वाय चिच्ये चिन्वाय चिच्ये चेतासि—से अचैपीत्, अचेष्ट अचेत्स्यत्—त चेच्यति—ते चिनोतु—नुताम् चायपति, ते चिची[की] पति, ते चेचीयते चीयते चिन्वन् चितः—घान् चित्वा चयनम्, चितिः	शृणाति अशृणोत् शृणुयात् श्रूयात् श्रुथाय श्रोता अश्रोपीत् अश्रोप्यत् श्रोप्यति शृणोतु आचयति—ते शुश्रूयते शाश्रूयते अचयते शृण्वन् श्रुतः, घान् श्रुत्वा अचणम्	शक्नोति अशक्नोत् शक्नुयात् शक्यात् शशाक शक्ता अशकत् अशक्यत् शक्यति शक्नोतु शाकयति शिशाक्षति शाशक्यते शक्यते शकनुवन् शक्तः, घान् शकत्वा शक्तिः	भिनाति, भिन्ते अभिनन्, अभिन्त भिन्धात्, भिन्दीत भिघात्, भित्सीष्ट विभेद, विभिदे भेतासि—से अभिदत् अभैत्सीत् अभिस्त अभैत्स्यत्—त भैत्स्यति—ते भिनत्तु—भिग्ताम् भैच्यति—ते विभित्सति—ते वेनिघते भिघते भिन्दन् भिन्दानः भिन्नः, भिन्नवान् भित्वा भेदनं, भेदः
	वृञ् सम्भरणे [घरना] मांगना	आप्ठ व्याप्तौ	अथ रुधादिः रधिरावरणे (टकना राकना)	छिदि र द्वैधीकरणे (फाडना)
लट् लङ् लिट् लृट् लृट्	वृणोति, वृणुते अवृणोत्, अवृणुत् वृणुयात्, वृण्वीन वृयात्, वृ[घोर]पीष्ट वधार, वजे	आप्ठोति आप्ठोत् आप्ठुयात् आप्ठ्यात् आप	रुणादि, रुन्धे अरुणत्, अरुन्ध रुन्ध्यात्, रुन्धीत रुध्यात्, रुत्सीष्ट रुरोध, रुरुधे	छिनत्ति, छिन्ते अच्छिन्तन्, अच्छिन्तन् छिन्धात्, छिन्दीत छिघात्, छिन्सीष्ट चिच्छेत्, चिच्छेत्

लृङ् लृङ्	घरि[री]तासि—से अघारीत्, अवृत् अघरिष्ट	आप्ता आपत्	रोद्धासि—से अरुधत्, अरुद्ध अरोत्सीत्	छेत्तासि—से अच्छिद्यत् अच्छिद्यत् अच्छेत्सीत्
लृङ् लृङ् लोट् गिजन्त सन्नन्त	अवरि (री) ष्यत्-त घरी(रि)ष्यति—ते घृणोतु, घृणुताम् घारयति—ते विघरि [री] पति, युवृषति,	आप्स्यत् आप्स्यति आप्नोतु आपयति ईप्सति	अरोत्स्यत्—त रोत्स्यति, ते रुणद्ध, रुन्धाम् रोधयति—ते रुहत्सति—ते	अच्छेत्स्यत्-त छेत्स्यति—ते छिनत्तु, छिन्ताम् छेद्यति—ते घिच्छित्सति-ते
यङन्त क० घा० शतृ० क, कवत् फत्वाच् संज्ञा	घयीयते मियते घृष्यन्, षयानः घृतः—घान् घृत्वा घरणम्	आप्यते आप्नुयन् आप्तः-घान् आप्त्या प्रापणम्, प्राप्तिः	रोरुष्यते रुष्यते रुन्धन्, रुन्धानः रुद्धः, घान् रुद्ध्या रोधनम्	चेच्छिद्यते छिद्यते छिन्दन्, छिन्दानः छिन्नः, छिन्नवान् छित्वा छेदनम्

	भञ्ज भङ्गे (तोड़ना)	युजिर् योगे [शामिल करना]	कृतीछेदने (कतरना)	क्षिप प्रेरणे (फिकना)
लृङ् लृङ् लिट् लिट् लिट् लृङ् लृङ् लृङ्	भनक्ति अभनक् भङ्ग्यात् भङ्ग्यात् घभञ्ज भङ्क्ता अभाङ्गीत् अभङ्क्ष्यत्	युनक्ति, युक्ते अयुनक्, अयुक्त् युङ्ग्यात्, युञ्जीत् युज्यात्, युक्षीष्ट युयोज, युयुजे योक्तासि—से अयुजत्, अयुक् अयोक्ष्यत्—त	कृन्तति अकृन्तत् कन्तेत् कृत्यात् चकर्त् कर्तिता अकर्तीत् अकर्तिष्यन् अकर्त्स्यत्	क्षिपति—ते अक्षिपत्—त क्षिपत्—त क्षिप्यात्, क्षिप्सीष्ट चिक्षेप, चिक्षेप क्षेमासि—से अक्षेप्सीत्, अक्षिप्त अक्षेप्स्यत्—त
लृङ्	भङ्क्ष्यति	योक्ष्यति—ते	कर्त्स्यति, कर्तिष्यति	क्षेप्स्यति—ते
लोट् गिजन्त सन्नन्त यङन्त क० घा० शतृ० क, कवत्	भनक्तुः भङ्गयति—ते विभङ्क्षति, ते घम्भज्यते भङ्ग्यते भङ्गन् भक्तः, घान्	युनक्तु, युक्ताम् योजयति—ते युयुक्षति—ते योयुज्यते युज्यते युञ्जन्, युञ्जानः युक्तः, घान्	कृन्ततु कर्त्तयति-ते चिकर्त्तयति घरीकृत्यते कृत्यते कृन्तन् कृत्तः, घान्	क्षिपतु क्षेपयति—ते चिक्षिप्सति—ते चेक्षिप्यते क्षिप्यते क्षिपन्, माणः क्षिप्तः, क्षिप्तवान्

फवाच् संज्ञा	भक्ता, भङ्गत्वा भङ्गनम्	युक्त्वा योजनम्, युक्तिः	फर्तित्या फर्तनम्	क्षिप्या क्षेपणम्
	पिप्लुसचूर्णेने [पिसना]	अथ तुदादिः । तुदव्यधने [दु. ख देना]	प्रच्छ ब्रौप्सा- र्या [पूचना]	मुच्छृ मोक्षणे [छोडना]
लट् लृट् लिट् लिट् लुट् लृट् लृट् लोट् णिजन्त सधन्त यङन्त कर्मवाच्य शतृ० क, कवतु कत्वाच् सञ्ज्ञा ।	पिनष्टि अपिनद् पिप्यात् पिप्यात् पिपेप पेष्टा आपिपत् अपेक्ष्यत् पेक्ष्यति पिनष्टु पेपयति—ते पिपिक्षति, ते षोपिप्यते पिप्यते पिपन् पिष्टः, वान् पिष्टा पेपणम्	तुदति—ते अतुदत्—त तुदेत्—त तुयात्, तुत्सीष्ट तुतोद, तुतुदे तोत्तासि—से अतोत्सीत्, अतुत्त अतोत्स्यत्, त तोत्स्याति—ते तुदतु, तुदताम् तोदयति—ते तुतुत्सति—ते तोतुद्यते तुद्यते तुदन्—भानः तुदः, वान् तुत्वा तोदनम्	पृच्छति अपृच्छत् पृच्छेत् पृच्छयात् पप्रच्छ प्रष्टा अप्राक्षीत् अप्रक्ष्यत् प्रक्ष्यति पृच्छतु प्रच्छयति—ते पिपृच्छिपति परीपृच्छयते पृच्छयते पृच्छन् पृष्टः, धान् पृष्टा प्रच्छनम्प्रष्णः	मुञ्चति—ते अमुञ्चत्—त मुञ्चेत्—त मुच्यात्, मुक्षीष्ट मुमोच, मुमुचे मोक्तासि—से अमुचत्, अमुक्त अमोक्ष्यत्—त मोक्ष्यति—ते मुञ्चतु, ताम् मोचयति—ते मुमुक्षति मोमुचयते मुच्यते मुञ्चन्, मानः मुक्तः, वान् मुक्त्वा मोचनम्, मुक्तिः

	सृज विसर्गे [रचना]	कृप विलेखने [जोतना]	विशप्रवेशने [धुसना]	गृ निगरणे * [निगलना]
लट् लृट् लिट् लिट् लुट् लृट्	सृजति असृजत् सृजेत् सृज्यात् ससर्ज सृष्टा अस्राक्षीत्	कृपति—ते अकृपत्—त कृपेत्—त कृप्यात्, कृक्षीष्ट चकपे, चकृपे कृष्टा (कष्टी)सि, से अकृपक्षीत्, अकृक्षत् अकृष्टत् अकृष्ट	विशति अविशत् विशेत् विश्यात् विशेश वेष्टा अविशत्	गिर [ल] ति अगिरत् गिरेत् गीर्यात् जगार गरी(रि) ता अगारीत्

* इस धातु के रूपों में प्रायः "र" की जगह "ल" भी होता है ।

लृङ् लृट् लोट् णिजन्त सञ्जन्त यङ्जन्त क० वा० शतृ० क, कपयत् कयाच् संज्ञा	अक्षयत् क्षयति सृजतु सर्जयति—ते सिद्धयति सरीसृज्यते सृज्यते सृजन् सृष्टः, घान् सृष्ट्वा सर्जनम्, सृष्टिः	अक्रयत्—त क्रयति, कर्ष्यते कृपंतु कंपयति—ते चिकुरयति—ते चरीकृष्यते कृष्यते कृपन्, कृपमाणः कृष्टः, घान् कृष्ट्वा कपणं, कृषिः	अवेक्ष्यत् वेक्षयति विशतु वेशयति ते विविक्षति वेविक्ष्यते विष्यते विशन् विष्टः, घान् विष्ट्वा वेशनम्	अगरि(री)प्यत् गरि(री)प्यति गिरतु गारयति जिगरिप्यति जेगिल्यते गीर्यते गिरन् गीर्णः, घान् गीर्त्वा निगरणम्
	स्पृश संस्पर्शने [छना]	विदृश्लाम् (पाना)	लिख अक्षर विन्यासे (लिखना)	मृह प्राणत्यागे [मरणा]
लट् लृङ् लिट् लृट् लृङ् लिट् लृट् लृङ् लोट् लृट् लोट् णिजन्त सञ्जन्त यङ्जन्त क० वा० शतृ० क, कपयत् कयाच् संज्ञा	स्पृशति अस्पृशत् स्पृशेत् स्पृश्यात् पस्पर्श स्पर्शा, स्पर्शा अस्पर्शीत् अस्पृक्षत् अस्पर्श्यत् स्पृश्यति, स्पृश्यति स्पृशतु स्पृशयति—ते पिस्पृक्षति परीस्पृद्यते स्पृद्यते स्पृशन् स्पृष्टः, घान् स्पृष्ट्वा स्पर्शनम्	विन्दति—ते अविन्दन्—त विन्देत्—त विद्यात् वित्सीष्ट वेदिषीष्ट विषेद, विविदे वेत्तासि, वेदितासे अविदत् अवेदिष्ट अविचत् अविचत् अवेत्स्यत्, अवेदिष्यत् वेदिष्यति, वेत्स्यते	लिखति अलिखत् लिखेत् लिख्यात् लिखेत् लेखिता अलेखीत् अलेख्यत् लेखिष्यति	त्रियते अत्रियत त्रियत मूर्षाष्टं ममार मतां धमृत अमरिष्यत् मरिष्यति
		विन्दतु वेदयति—ते विधित्सति विवेदियति वे विद्यते विद्यते विन्दन् विदितः, घान् विदित्वा, वित्वा वेदनम्	लिखतु लेखयति लिखीष्यति लिखिष्यति लेलिख्यते लिख्यते लिखन् लिखितः, घान् लिखित्वा लेखनम्	त्रियताम् मारयति मुमृषति मेघ्रायते त्रियते त्रियमाणः मृतः, घान् मृत्या मरण मृत्युः

	एष्य तनादिः तनुविस्तारे (कैलाना)	अष्य क्रयादिः । दुक्रीण्य द्रव्यादिभि मये (चरोदना)	मन्य विलोडने (मथना)	अश मक्षणे (खाना)
लट्	तनोति, तनुते	क्रोणाति, क्रीणीते	मग्नाति	अग्नाति
लृट्	अतनोत्, अतनुत	अक्रोणात् अक्रीणीत	अमग्नात्	आग्नात्
लिट्	तनुयात्, तन्वीत्	क्रीणीयात्, क्रीणीत्	मग्नायात्	अग्नायात्
लृट्	तन्यात्, तनिपीष्ट	क्रीयात्, क्रीपीष्ट	मग्न्यात्	अग्न्यात्
लिट्	ततान, तेने	चिक्राय, चिक्रिये	ममन्य	आश
लुट्	तनितासि-से	क्रेतासि-से	मन्धिता	अशिता
लृट्	अत (ता)नोत् अतत	अक्रेपीत्, अक्रेष्ट	अमन्धीत्	आशीत्
लृट्	अतानिष्ट			
कृट्	अतनिष्यत्-त	अक्रेष्यत्-त	अमन्धिष्यत्	आशिष्यत्
कृट्	अतनिष्यति-ते	क्रेष्यति-से	मन्धिष्यति	आशिष्यति
लोट्	तनोतु, तनुताम्	क्रीणातु, क्रीणीताम्	मग्नातु	अग्नातु
णिञन्त	तात्रपति-ते	क्रापयति-ते	मन्धयति	आशयति
सञ्जन्त	तितं(तां)सति-ते	चिक्रीपति-ते	मिमन्धिपति	अशिशयति
यङन्त	तन्तन्यते	चेक्रीयते	मामध्यते	अशाश्यते
फ० धा०	तन्यते	क्रीयते	मध्यते	अश्यते
शतृ०	तन्धन्, तन्वानः	क्रीणन्, क्रीणानः	मग्धन्	अग्धन्
क, कचतु	ततः, ततयान्	क्रीतः, यान्	मधितः, यान्	अशितः, यान्
कत्वाच्	तनिष्वा	क्रीत्वा	मधित्वा, मन्धित्वा	अशित्वा
संज्ञा	तननम्, ततिः	क्रयणम्, क्रयः	मन्धनम्	अशनम्
	डुकृच् करणे (करना)	प्रीच् तर्पणेकाःतांच (खुदाकरना)	ज्ञा अवबोधने (जानना)	दृ विदारणे (फाड़ना)
लट्	करोति, कुरुते	प्रीणाति, प्रीणीते	जानाति	दृणाति
लृट्	अकरोत्, अकुरुत	अप्रीणात्, अप्रीणीत	अजानात्	अदृणात्
लिट्	कुर्यात्, कुरीति	प्रीणीयात्, प्रीणीत	जानीयात्	दृणीयात्
लृट्	क्रियात्, क्रीपीष्ट	प्रीयात्, प्रीपीष्ट	ज्ञा (ज्ञ) यात्	दृयात्
लिट्	चकार, चक्रे	पिप्राय, पिप्रिये	जहौ	दृदार
लुट्	कर्तासि-से	प्रेतासि-से	ज्ञाता	दृरि[री] ता
लृट्	अकरोत्, अकुरुत	अप्रीपीत्, अप्रेष्ट	अज्ञासीत्	अदृरीत्
लृट्	अकरिष्यत्-त	अप्रेष्यत्, त	अज्ञास्यत्	अदृरि[री]ष्यत्
लृट्	अकरिष्यति-ते	प्रेष्यति-ते	ज्ञास्यति	दृरि[री]ष्यति

लोट् णिजन्त सञ्जन्त	करोतु, कुरुताम् कारयति—ते चिकीर्षति—ते	प्रीणातु, प्रीणीताम् प्राययति, ते पिप्रीयति—ते	जानातु ज्ञापयति जिज्ञासति	दृणातु दारयति दिदीर्षति विदरि[री]पति देदीर्यते दीर्षते दृणन् दीर्षः, दान् दरि[री]त्या दरण, दीर्षिः
यङन्त क०घा० शतृ० क,कवतु कत्याश् संज्ञा	प्रेप्रीयते क्रियते कुर्वन्, कुर्याणः कृतः, घान् कृत्वा करणं, कृतिः	प्रेप्रीयते प्रीयते प्रीणन्, प्रीणानः प्रीतः, प्रीतवान् प्रीत्वा प्रेम, प्रीतिः	नाशायते शायते जानन् ज्ञातः, घान् ज्ञात्या घानम्	

	मुपस्तेये [चुराना]	लृन् छेदने [काटनो]	प्रह उपादाने (लना)	पृपालने पूर्तौच (पाहनाप्राकरना)
लट् लङ् लिट् लिट् लिट् लुट् लुङ्	मुष्णाति अमुष्णात् मुष्णीयात् मुष्यात् मुमोप मोपिता अमोपीत्	लुनाति, लुनीते अलूनात्, अलूनति लुनीयात्, लुनीत लूयात्, लधिषीष्ट लुलाव, लुङ्गे लवितासि, से अलाधीत्, अ- लधिष्ट	गृह्णाति, गृह्णीते अगृह्णात्, अगृह्णीत गृह्णीयात्, गृह्णीत गृह्यात्, ग्रहीषीष्ट जग्राह, जगृहे ग्रहीतासि—से अग्रहीत्, अग्रहीष्ट	पृणाति अपृणात् पृणीयात् पृयात् पपार परि(री)ता अपारीत्
लृङ् लट् लोट् णिजन्त सञ्जन्त	अमोपिष्यत् मोतिष्यति मुष्णातु मोपयति मुमुषिपति	अलधिष्यत्, त लधिष्यति—ते लुनातु, लुनीताम् लावयति लूलूपति—ते	अग्रहीष्यत्—त ग्रहीष्यति—ते गृह्णातु, गृह्णीताम् ग्राहयति—ते जिघृक्षति—ते	अपर(री)ष्यत् परि (री) ष्यति पृणातु पारयति विपरि(री) पति पुपूरति
यङन्त कर्मवाच्य शतृ० क,कवतु कत्याश् संज्ञा	मोमुष्यते मुष्यते मुष्णन् मुषितः, घान् मु (मो) पित्या मोषणम्	लान्दयते रूपते लुनन्, लुनानः लूनः, घान् लधिष्या लवनम्, लूनिः	जरीगृह्यते गृह्यते गृह्णन्, गृह्णानः गृह्णीतः, घान् ग्रहीत्या ग्रहणम्,	पेप्रीयते पूर्यते पृणन् पूरणः, घान् परि [री] त्या पूतिः, पूरिणः

घञ् घञ्घने (बाधना)		पञ् पञ्घने (पावत्रकरना)	ह्रिश्चिवाधने (ह्रेशपाना)	अथ चुरादिः* । चुरस्तेय [चुराना]
लृट् लृङ् लिट् लिङ्	घञ्घाति अवघ्नात् घञ्घनीयात् घञ्घ्यात्	पुनाति, पुनीते अपुनात्, अपुनीत पुनीयात्, पुनीत पूयात्, पविषीष्ट	ह्रिभाति अह्रिभात् ह्रिभोयात् ह्रिष्यात्	चोरयति—ते अचोरयत्—त चोरयेत्—त चोर्षात्, चोर- यिषीष्ट
लिट्	दघन्ध	पुपाय, पुपुये	चिह्रेश	चोरयाञ्चकारां चक्रे
लृट् लृङ्	घञ्घा अभान्घ्नीयात्	पथितासि—से अपाधीत्, अपथिष्ट	ह्रेशिता, ह्रेश्टा अह्रेशीत्, अह्रि- क्षत्	चोरयितासि-से अचूचुरत्—त
लृट्	अभन्घ्यात्	अपथिष्यत्—त	अह्रेशिष्यत्, अह्रेश्यत्	अचोरयिष्यत्-त
लृट्	भन्घ्याति	पाथिष्यति—ते	ह्रेशिष्यति, ह्रेश- स्यति	चोरयिष्यति ते
लोट् णिजन्त सघन्त	घञ्घातु घञ्घयति विमरसति	पुनातु-पुनीताम् पाषयति पुपूयति—ते	ह्रिभातु ह्रेशयति चिह्रेशि(ह्रि)दिष्य- ति, चिह्रिषति	चोरयतु चोरयति—ते चुचोरयिषति ते
यङन्त फ० वा० शतृ० क, चकतु कत्वाप् संज्ञा	घायथ्यते घथ्यते वधन् घज्जन्, घान् घञ्घ्या घञ्घनम्	पोपूयते पूयते पुनन्, नानः पूतन्, घान् पाथित्वा पयन्, पृतिः	चेह्रिष्यते ह्रिष्यते ह्रिषन् ह्रिष्टः, घान् ह्रिशित्वा, ह्रिष्ट्वा ह्रेशः	चोषते चोरयन्-माणः चोरित्, घान् चोरयित्वा चोरणम्, चौरः

लृट् लृङ् लिट् लिङ्	घृत् संशब्धने [तादीकृ कने]	गण सक्रयाने [गिनना]	भक्ष् अदने [साना]
लृट् लृङ् लिट् लिङ्	कीर्तयति—ते अकीर्तयत्—त कीर्तयेत्—त कीर्त्यात्, कीर्तयिषीष्ट	गणयति—ते अगणयन्—त गणयेत्—त गणयात्, गणयिषीष्ट	भक्षयति—ते अभक्षयत्—त भक्षयेत्—त भक्ष्यात्, भक्षयिषीष्ट

* चुराद् गण से यङन्त के रूप नहीं होते ।

† भार रूपों से लिये भ्यादिगण का "शुप्" धातु देखो ।

लिट् लुट् लुङ्	कीर्तयाञ्चकार—चक्रे कीर्तयितासि—से अचिर्कीर्तत्, अचीकृ- तत्—त	गणयाञ्चकार, चक्रे गणयितासि—से अजा [ज] गणत्, त	भक्षयाञ्चकार—चक्रे भक्षयितासि—से अवभक्षत्—त
कृङ् कृट् लोट् णिजन्त सञ्चन्त क० घा० शतृ० क, कषत् कत्वाप् संज्ञा	अकीर्तयिष्यत्—त कीर्तयिष्यति—ते कीर्तयतु कीर्तयति—ते चिर्कीर्तयिष्यति—ते कीर्त्यते कीर्तयन्—मानः कीर्तितः—घान् कीर्तयित्वा कीर्तिः कीर्तनम्	अगणयिष्यत्—त गणयिष्यति—ते गणयतु, ताम् गणयति—ते जिगणयिष्यति—ते गण्यते गणयन्—मानः गणितः—घान् गणयित्वा गणनम्, गणना	अभक्षयिष्यत्—त भक्षयिष्यति—ते भक्षयतु—ताम् भक्षयति—ते विभक्षयिष्यति, ते भक्ष्यते भक्षयन्—माणः भक्षितः, घान् भक्षयित्वा भक्षणम्
	अभि गुप्तभाषणे [सलाह करना]	तुल उन्माने [तोलना]	चिति स्तुत्याम् [सोचना]
लट् लङ् लिट् लृट् लिट् लिट्	मन्त्रयते अमन्त्रयत मन्त्रयेत मन्त्रयिषीष्ट मन्त्रयाञ्चके	तोलयति—ते अतोलयत्—त तोलयेत्—त तोल्यात्, तोलयिषीष्ट तोलयाञ्चकार चक्रे	चिन्तयति—ते अचिन्तयत्—त चिन्तयेत्—त चिन्त्यात्, चिन्तायिषीष्ट चिन्तयाञ्चकार, चक्रे चिन्तित
लुट् लुङ्	मन्त्रयिता अममन्त्रत	तोलयितासि—से अत्तुलत्—त	चिन्तयितासि—से अचिचिन्तत्—त अचिन्तीत्
लृङ् लृट् लोट् णिजन्त सञ्चन्त क० घा० शतृ० क, कषत् कत्वाप् संज्ञा	अमन्त्रयिष्यत मन्त्रयिष्यते मन्त्रयताम् मन्त्रयति—ते मिमन्त्रयिष्यते मन्त्रयते मन्त्रयमाणः मन्त्रितः, घान् मन्त्रयित्वा मन्त्रणं, मन्त्रः	अतोलयिष्यत्—त तोलयिष्यति—ते तोलयतु—ताम् तोलयति, ते तुतोलयिष्यति—ते तोल्यते तोयलन्, मानः तोलितः, घान् तोलयित्वा तोलनम् तुला	अचिन्तयिष्यत्—त चिन्तयिष्यति—ते चिन्तयतु—ताम् चिन्तयति—ते चिचिन्तयिष्यति—ते चिन्त्यते चिन्तयन् मानः चिन्तितः घान् चिन्तयित्वा चिन्तनम् चिन्ता

	पीड अवगाहने [पीडा देना]	स्पृह ईप्सायाम् (चाहना)	तर्जमर्से तर्जने (डांटना)
लट्	पीडयति ते	स्पृहयति—ते	तर्जयते, भर्सेयते
लङ्	अपीडयत् त	अस्पृहयत्—त	अतर्जयत्, अभर्सेयत्
लिट्	पीडयेत् त	स्पृहयेत्—त	तर्जयेत्, भर्सेयेत्
लिट्	पीड्यात्, पीड- यिषीष्ट	स्पृह्यात्, स्पृहयिषीष्ट	तर्जयिषीष्ट, भर्सेयिषीष्ट
लिट्	पीडयाञ्चकारचक्रे	स्पृहयाञ्चकार, चक्रे	तर्जयाञ्चक्रे, भर्सेयाञ्चक्रे
लुट्	पीडयितासि से	स्पृहयितासि—से	तर्जयिता, भर्सेयिता
लुङ्	अपीपिडत् त	अपस्पृहत्—त	अतर्जत्, अवभर्सेत्
लृट्	अपीडयिष्यत् त	अस्पृहयिष्यत्—त	अतर्जयिष्यत्, अभर्सेयिष्यत्
लृङ्	पीडयिष्यति ते	स्पृहयिष्यति—ते	तर्जयिष्यते, भर्सेयिष्यते
लोट्	पीडयतु ताम्	स्पृहयतु—ताम्	तर्जयताम्, भर्सेयताम्
णिञन्त	पीडयति—ते	स्पृहयति—ते	तर्जयति ते, भर्सेयति ते
सधन्त	पिपीडयिषति ते	पिस्पृहयिषति—ते	तितर्जयिषते, विभर्सेयिषते
ष०या०	पीडयते	स्पृह्यते	तितर्जयते, भर्सेयते
दान्०	पीडयन् मान	स्पृहयन्—माणः	तर्जयमानः, भर्सेयमानः
क्त, कचयत्	पीडित, घान्	स्पृहितः, घान्	तर्जित, घान्, भर्सेयितः, घान्
कत्वाच्	पीडयित्वा	स्पृहयित्वा	तर्जयित्वा, भर्सेयित्वा
भञ्जा	पीडनम्, पीडा	स्पृहनम् स्पृहा	तर्जनम्-तर्जना भर्सेन-भर्सेना

	सान्ध्य सामप्रयोगे [शान्त करना]	तडि आघाते (पीटना)	अर्धउपयाचजा यां (माँगना)	पू पूरणे (पूर करना)
लट्	सान्ध्ययति ते	ताडयति—ते	अर्धयते	पारयति—ते
लङ्	असान्ध्ययत् त	अताडयत्—त	आर्धयत्	अपारयत्—त
लिट्	सान्ध्ययेत् त	ताडयेत्—त	अर्धयेत्	पारयेत् त
लिट्	सान्ध्य्यात्, सा- न्ध्ययिषीष्ट	ताड्यात्, ताडयिषीष्ट	अर्धयिषीष्ट	पार्यात्, पारयिषीष्ट
लिट्	सान्ध्ययाञ्चकार चक्रे	ताडयाञ्चकार, चक्रे	अर्धयाञ्चक्रे	पारयाञ्चकार, चक्रे
लुट्	सान्ध्ययितासि-से	ताडयितासि-से	अर्धयिता	पारयितासि-से
लुङ्	असान्ध्ययत् त	अनातडत्—त	आर्धयत्	अपीपारत् त
लृट्	असान्ध्ययिष्यत् त	अनाडयिष्यत् त	आर्धयिष्यत्	अपारयिष्यत् त
लृङ्	सान्ध्ययिष्यति ते	ताडयिष्यति—ते	अर्धयिष्यते	पारयिष्यति ते
लोट्	सान्ध्ययतु ताम्	ताडयतु—ताम्	अर्धयताम्	पारयतु ताम्

णिजन्त	सान्त्वयति ते	ताडयति-ते	अर्थयति ते	पारयति ते
सघ्नन्त	सिसान्त्वयिष्यति-ते	तिताडयिष्यति-ते	अर्तिष्यति-पत्	पिपारयिष्यति ते
५० वा०	सान्त्वयते	ताडयत	अर्थयत	पारयते
शतृ०	सान्त्वयन्-मान	ताडयन्-मान	अर्थयमान	पारयन् मान
त्, ष्यतु	साम्त्वित-वान्	ताडित-वान्	अर्थित, वान्	पारित वान्
फ्याश्	सान्त्वयिष्या	ताडयिष्या	अर्थयिष्या	पारयिष्या
सभा	सान्त्वयन्म्	ताडनम् ताडना	अर्थयन्म्	पारणम् प रणा

जिस प्रकार दश गण हैं उसी प्रकार १ णिजन्त, २ सघ्नन्त, ३ यङन्त, ४ यङ् लुङन्त ५ मामधातु ६ आत्मनेपद, ७ परस्मैपद, ८ भावकर्म, ९ कर्मकर्तृ, १० लकारार्थ इन नामों को दश प्रक्रिया भी हैं जिनका एक संक्षिप्त विवरण उदाहरण सहित आगे किया जाता है ।

अथ णिजन्त [ण्यन्त] प्रक्रियामदर्शको नवमोऽध्यायः ।

णिजन्त, ण्यन्त या प्रेरणार्थक (Causative verbs) प्रक्रिया वह है जिसमें क्रिया द्वारा किसी को प्रेरणा व आज्ञा प्राप्त जाव, इस प्रक्रिया में अवर्त्मक क्रिया भी सफर्मक बन जाती है । इन क्रियाओं के रूप प्रायः चुरादिगणी धातुओं के से होते हैं । उर्मपदी अष्टम अध्याय में आये हुए सभी धातुओं का ण्यन्तरूप यहाँ पर दिया गया है परन्तु यहाँ पर थोड़ा उदाहरणार्थ दिखलाते हैं बुद्धिमान् इसी विधि से सब लकारों में रूप लें देवदत्त शृणाति त अन्य प्रेरयति आचयति ते, आचयेत् त, आचयतु ताम्, आचयन्-त्, आचयामास-चक्रे, आच्यात् आचयिषीष्ट, आचयितासि-से आचयिष्यति-से, आचयिष्यत् त, आशि(शु)धवत् त ।

भू भावयति-अधीभवत् एा स्थापयति अतिष्ठिपत्, शी शाययति, अशी शयत् ताम् शमयति, अजीगमत्, इ पारयति, अर्थाकरत्, दा दापयति, अदीद पत्, पूह पावयति अपीपचत् क रापयति भरीरचत्, लुङ् लाचयति, अलील वत्, लु लाचयति, असि(सु)लवत्, स्वप् स्वापयति असुपुपत्, पा पाययति, अर्षीपयत् प्रा प्रापयति अजिष्ठिपत्, अधि+इ अध्यापयति, अध्यजीगपत्, अध्यापिपत् ।

अथ संज्ञन्तप्रक्रियाप्रदर्शको दशमोऽध्यायः ।

संज्ञन्त वा इच्छार्थक (Desiderative verbs) प्रक्रिया वह है जिसमें क्रिया द्वाराही कर्ता को इच्छा प्रकट हो जाय; इस प्रक्रिया में क्रियाओं के रूप अपनी धातु के पद के ही अनुसार होते हैं और धातु को द्वित्व हो जाता है और "स" बीच में आ जाता है फिर परसंपदों धातुओं के रूप पठ धातु के समान और आत्मनेपदों धातुओं के लभ् धातु के समान रूप दशों लकारों में चलते हैं जैसे पठ्—पाठितुमिच्छति पिपठिषति पिपठिषतु, पिपठिषेत्, अपिपठिषत्, पिपठिषांचकार, पिपठिष्यात्, पिपठिषिता, पिपठिषिष्यति, अपिपठिषिष्यत्, अपिपठिषीत् । पातुमिच्छति पिपासति, पिपासतु पिपासेत्, अपिपासत्, पिपासांचकार, पिपास्यात्, पिपासिता, पिपासिष्यति, अपिपासिष्यत्, अपिपासीत् । आत्मने पद में जैसे लभ्—लभ्युमिच्छति लिप्सते लिप्सताम्, लिप्सेत, अलिप्सत्, लिप्सांचके, लिप्सीष्ट, लिप्सिता, लिप्स्यते अलिप्स्यत्, अलिप्सिष्ट । हा-धातुमिच्छति जिहासते, जिहासताम्, जिहासेत अजिहासत्, जिहासांचके, जिहासिषीष्ट, जिहासिता, जिहासिष्यते, अजिहासिष्यत्, अजिहासिष्ट । इसी प्रकार आठवें अध्याय में आवेद्युप सप्त धातुओं के सञ्जन्त रूप लृट् लकार के वहाँ दिखाये हैं शेष उपरोक्त क्रमानुसार अपनी बुद्धिसे लेजाओ । परन्तु यह ध्यान रहे कि हा, धृ, स्मृ, दृष् धातुओं के सञ्जन्त रूप आत्मनेपदही में होते हैं ।

अथ यञ्जन्तप्रक्रियाप्रदर्शक एकादशोऽध्यायः ।

यञ्जन्त प्रक्रिया, (Frequentative verbs) श्रुष् और कृष् को छोड़कर ह्रस्वादि और एक स्वरवाली धातुसे पौनः पुन्य (बारम्बार) या अतिशयार्थ (व्यधिकता) घातन करने के लिये धातुको द्वित्वकर और यह प्रत्ययलगाकर बनाते हैं इनके रूप दशों लकारों में आत्मनेपदीही इस प्रकार चलते हैं जैसे पुनः पुनः अतिशयेन वा भवतीति बोभूयते बोभूयतां, बोभूयेत्, अबोभूयत्, बोभूयाञ्चके, बोभूयिषीष्ट, बोभूयिता, बोभूयिष्यते अबोभूयिष्यत्, अबोभूयिष्ट अतिशयेन घर्नते इति घर्नीकृत्यते, घर्नीकृतांचके, घर्नीकृतिता अवर्नीकृतिता (हुष्ट) विशेष धातुओं के यञ्जन्त रूप हास करने कोलिये अष्टम अध्याय देखो । वहाँ पर यह भी हास होजायगा कि, किञ्च २ धातुओं के रूप इस प्रक्रिया में नहीं होते

अथ * यहलुगन्तप्रक्रियाप्रदर्शको द्वादशोऽध्यायः ।

यद् लुगन्त (Frequentative verbs rejecting यह) प्रक्रिया उप-
रोक्त अध्याय केही अर्थ घ नियमों परं बनती है, केवल भेद इतनाही है कि रूप
परस्मैपदीही होते हैं और यह का लुक् हो कर ईद विकल्प होजाता है—जैसे अति
शयेन पुनः पुनर्वा भवतीति वोभवीति, वोभोति, वोभूतः वोभुचति; वोभूयात्,
वोभवीतु वोभोतु; वोभयाञ्चकार-मास; लृङि अबोभवीत् अबोभोत्; वोभूयात्,
वोभविता, वोभविष्यति, अबोभविष्यत्, अबोभूवीत्, अबोभोत् ।

स्वर्धं सङ्घर्षे-पास्पर्धीति पास्पर्धिं, पास्पर्धः, पास्पर्धति, पास्पर्त्सि इत्या-
दिलृङि अपास्पर्त् अपास्पर्दं, अपास्पाः; पास्पर्धाञ्चकार, पास्पर्धिता, पास्पर्धि-
ष्यति, पास्पर्धीतु पास्पर्धुं लृङि अपास्पर्धीत् अपास्पर्धिष्टाम्, अपास्पर्धिष्यत् ३०।
गाभृ प्रतिष्ठादौ. जागाद्धि जागाधीति जागाधीतु जागाद्घु, लृङि अजागाधीत्
अजाघात् अजागाद्धाम् लृङि अजागाधीत् अजागाधिष्टाम् । नाथ नाभृ याच्ञादौ
नानात्ति नानाधीति नानात्तः ३० दध धारणे दादासि दादधीति, लृङि अदादा
(द) धीत् । मुदहर्षे मोमोत्ति मोमुदीति; मोमोदाञ्चकार, मोमोदिता, लृङि अ-
मोमुदीत् अमोमोत् अमोमुत्ताम् अमोमुदुः लृङि अमोमोदीत् । गम्लगतौ जङ्ग-
मीति जङ्गन्ति, लृङि अजङ्गमीत् अजङ्गताम्, अजङ्गमुः लृङि अजङ्गमीन् अजङ्ग-
मिष्टाम् ३० चरगतिभक्षणयोः चञ्चुरीति चञ्चूर्ति, अचञ्चुरीत् । खनु अच-
दारणे [खोदना] चह्नोति चह्नन्ति चह्नात् चह्नन्ति लृङि अचह्नोत् लृङि अचह्न
(ह्ना) नीत् [अिस्वप्शये सास्वपीति सास्वप्ति, लृङि असास्वपीत् सास्वप्यात्
आशिप सासुप्यात् लृङि असा[स्व]स्वापीत् वृत्तुपत्तेने चर्चुतीति, परिचुतीति,
चरीचुतीति, चर्वति, चरिचर्ति, चरीचर्ति, चर्वतः चर्वतीमास चर्वतिता, चर्वतिष्यति,
अचर्वतीत् अचर्वतीत् अचर्वत् । कुञ्ज् करणे चर्करीति चर्कति चरिचर्ति, चरी-
कर्ति चर्कतः चर्कति, चर्कराञ्चकार, चर्करिता, अचर्करीत्, चर्क्यात् आशिपि
चर्कियात् लृङि अचर्करीत् कृविक्षेपे चाकर्ति चाकरीति लृङि अचाकरीत् अचाकः
अचाकर्ताम्, अचाकरः लृङि अचाकरीत् एवं तृपुनसन्तरणयोः तातति,
तातरीति, ताततः तातिरति लृङि अतातरीत् लृङि अतातरीत् ग्रह उपादाने
जाप्रहीति जाप्राडि, जापृदः, जापृहति, अजाप्रहीत् । प्रच्छशीप्लायाम् पाप-

* विद्यार्थियों को विदित हो कि यह प्रक्रिया रूपभेद, और रूप विलक्षण होने
के कारण और प्रक्रियाओं से कुछ क्लिष्ट है अतएव साधारण रीति से
इस अध्याय की रूप प्रक्रिया को समझ लें इसमें अधिक अपनी बुद्धि
को भ्रमित करना आवश्यक नहीं क्योंकि संस्कृत बोलने तथा शास्त्रादि
समझने के लिये इन रूपों की कुछ अधिक अपेक्षा नहीं है ।

च्छीति प्राप्रष्टि प्राप्रष्टः प्राप्रच्छति, प्राप्रष्मि प्राप्रच्छुः प्राप्रष्मः लोटि प्राप्रच्छतु प्राप्रष्टु प्राप्रष्टाम् प्राप्रच्छतु प्राप्रष्टि लटि अपामष्ट् अपामप्रच्छीः अपामप्रष्टम् । मूर्छा मोहसमुच्छ्राययोः मोमूर्छांति मोमेतिमोमूर्तः मोमूर्च्छति मोमूर्च्छाञ्कार मोमूर्च्छता, मोमूर्च्छांतु मोमोर्तु लङि अमोमूर्च्छात् मोमूर्च्छथात्, लुङि अमोमोच्छात्, अमोमूर्च्छष्टाम् अमोमूर्च्छिष्यत् इत्यादि ।

अथ नामधातुप्रक्रियाप्रदर्शकस्योदशोऽध्यायः ।

संज्ञा य अव्ययों से क्यच्, क्यङ्, काम्यच्, णिच् और क्तिप् प्रत्यय लगा कर कर्ता की इच्छा, यर्ताय आचरण, करना आदि अर्थ बोधन करने के लिये जो धातु बनाई जाये वह नाम धातु कहलाती है विदोयता यह है कि जो नाम धातु काम्यच् (काम्य) क्यच् (य) और क्तिप् (०) प्रत्यय लगाकर बनती हैं वे परस्मैपदी और क्यङ् (य) प्रत्ययवाली आत्मनेपदी और णिच् (इ) प्रत्ययवाली उभयपदी होती हैं क्रम से उदाहरण देयो जैसे आत्मनः पुत्रमिच्छति (इच्छा) पुत्रीयति (क्यच्) पुत्रकाम्यति (काम्यच्), नमः करोतीति नमस्यति (क्यच्) चिरं करोतीति चिरयति (णिच्) शब्दं करोतीति शब्दायते [क्यङ्] श्रणं करोतीति श्रणयति—ते [णिच्]; रासम इव आचरतीति रासभायते [क्यङ्] विष्णुमिवाचरतीति विष्णुयति द्विजम् (क्यच्), कृष्ण इव आचरति कृष्णाति (क्तिप्) । ध्यान रहे कि उपरोक्त धातुओं के रूप प्रायः भ्वादिगण के से होते हैं । जैसे तपः करोतीति तपस्यति, तपस्येत्, तपस्यतु, अतपस्यत्, तपसाभ्यभूय इत्यादि, तपस्यात्, तपसिता, तपसिष्यति, अतपसिष्यत्, अतपसात्, अतपसिष्टाम् ।

अथात्मनेपदप्रक्रियाप्रदर्शकधतुर्दशोऽध्यायः ।

इस प्रक्रिया में यह दिखाया है कि धातु चाहे जिस पद की हो परन्तु कुछ उपसर्गों के लगने से चाहे उसका अर्थ बदले वा नहीं सदैव आत्मनेपदी ही रहेंगी । जैसे नि + विच् (आई हुई सेना का उहरना); वि, परि, अव + क्री (बंचना, धातवर्थ, मोल चुकाना); वि, परा + जि (जीतना, हारना); आ + दा [देना] परन्तु जहाँ फलाना चीरना य अपना मुखआदि धाना अर्थ हो वहाँ परस्मैपद होता है जैसे सिद्धोमुखं व्याददाति चैद्यः स्फोटकं व्याददाति; अनु, परि, आ और सम् + क्रीड् [धातवर्थ] परन्तु कृजनार्थ में सम् + क्रीड् परस्मैपद होता है जैसे संक्रीडति चक्रम् । आ + तु प्रच्छ [धातवर्थ] में; सम्, अव, प्र,

वि+स्था [रहना, ठहरना, इज्जत पाना इ०] उत्+स्था [यज्ञ करना] जैसे मुका वृत्तिष्ठते-यतनेइत्यर्थः; परन्तु जहां उठना अर्थ है वहां परस्मैपद होता है जैसे आसनादुत्तिष्ठति; वि+तप [दीप्त होना] वितपते; उप+स्था [देवपूजन, मिलन वा मैत्रीकरण] अर्थ में जैसे विष्णुमुपतिष्ठतेवैष्णवः; यमुनामुपतिष्ठते गङ्गा, -साधुमुपतिष्ठतेसाधुः; और जहां कुछ धन लाभेच्छा प्रकट हो वहां विकल्प से आत्मनेपद होता है जैसे धनिनमुपतिष्ठते [ति] भिक्षुः धनलाभेच्छया धनिसमीपगच्छतीत्यर्थः । आ+हन् और यम् [अकर्मकार्य में]; परन्तु सकर्मकार्य में परस्मैपद होता है जैसे कूपद्रज्जुमायच्छति [खींचना फेलाना]; आहन्तिशत्रुम्; परन्तु जहां स्वाह्मी कर्म हो वहां आत्मनेपद होता है जैसे आयच्छते पाणिमात्मीयम्, आहतेस्वीयं शिरः इ०; अप+क् [किसी चतुष्पादादि जीवों का यातो प्रसन्न होकर या भोजन की तलाश में या लेटने के लिये पृथ्वी का खोदना इस अर्थ में] जैसे अपस्किरतेवृषोहृष्टः, कुक्कुटोभक्षार्थी, श्वा आश्रयार्थीच; सम्+गम् और श्रु साथ आना, ध्यान देना [अकर्मकार्यमें] परन्तु सकर्मकार्य में परस्मै० होता है जैसे सङ्गच्छति मिश्रम्, संशृणोति शास्त्रम्; आ+ह्वे (स्पर्धा करना) जैसे मह्यमाह्वयतेमह्यः, और किसी अर्थ में परस्मैपद होता है जैसे पिता पुत्रमाह्वयति; केवल क्रम् धातु और उप, परा उपसर्ग के साथ (वृद्धि, उत्साह और अप्रतिबन्ध अर्थ में) जैसे सतां श्रीः क्रमते, वर्धतेइत्यर्थः अध्ययनाय क्रमतेछात्रः (उत्सहते), शास्त्रेषुक्रमतेबुद्धिः (न प्रतिहन्यते); आ+क्रम् (उदय होने अर्थ में) जैसे आक्रमते सूर्यः (उदयतइत्यर्थः); वि+क्रम् (पादविक्षेपार्थ में) जैसे साधु विक्रमतेवाजी (वदगतीत्यर्थः वलाप्लुतगतौ) विक्रामति सन्धिः (द्विधाभवतीत्यर्थः); प्र, उप+क्रम् (आरम्भार्थ में) जैसे प्रक्रमते उपक्रमते वा भोक्तुम् (आरभतइत्यर्थः); अप+घ्रा (मना करना) उक्रमपजानीते; सम्, प्रति+शा (स्मरणार्थ छोड़) जैसे शतं संजानीते (अवेक्षते), शतंप्रतिजानीते [अङ्गीकरोति], स्मरण में जैसे पुत्रं संजानाति, प्रतिजानाति वा स्मरतीत्यर्थः वद धातु (भासन, सान्त्वन, शान, यज्ञ, विमति, प्रार्थना और मनुष्यों के एकत्रित होकर उच्चारण करने अर्थ में) जैसे शास्त्रेवदते (भासमानोवधीति) भृत्यानुपवदते (सान्त्वयति) शास्त्रेवदते (जानाति), क्षेत्रेवदते (यतते) क्षेत्रेधिचदन्ते, उगचदते (प्रार्थयते) संप्रवदन्ते वाह्यणः; सम्+वृ (प्रतिगार्थ में) जैसे शतं सङ्गिरते (प्रतिजानीते); उन्+चर (सकर्मक) या सम्+चर (तृतीया के साथ) जैसे शुरुचरनमुचरते [उल्लंघयतीत्यर्थः]; रथेनसञ्चरते; अकर्मक से जैसे उचरतिधूमः । उप+यम् [विवाहार्थ में] सुलक्षणान्कन्यामुपयच्छते; युञ् धातु निर, दुर, सम् उपसर्गों को छोड़ प्रत्येक उपसर्ग के साथ में जैसे प्रयुङ्क्ते उयुङ्क्ते इत्यादि परन्तु जहां यत्, पात्रों के साथ इनका प्रयोग हो वहां परस्मैपद होगा जैसे यत्पात्राणि प्रयुनक्ति ।

अथ परस्मैपदप्रक्रियाप्रदर्शकः पञ्चदशोऽध्यायः ।

परस्मैपद प्रक्रिया में यह दिखाया गया है कि धातुचाहे जिसपद की हो कुछ उपसर्गों के लगने से संदेय परस्मैपदीही होंगी जैसे अतु, परा + कृन् (नकल करना, रद्द करना) ; प्र + यह (तेज बहना) ; अभि, प्रति ; अति + क्षिप् (किसी ओर फेंकना ; रद्द करना निकाल देना, तिरस्कार करना, परेफेंकना) ; परि + मृष्ट परिमृष्ट (मर्प) ति; (खड़ा होना, ड़ाह करना) वि, आ, परि + रम् [टहरना, आराम लेना, खुश होना] ; उप + रम् [अकर्मकार्थं अर्थात् निवृत्त होना अर्थ में विकल्प से] ; वृष् युष् नश् जन् और अधि + इ, प्र, हु, सु [प्रेरणार्थक में] जैसे योधयति-प्राचयति [प्रापयति] , द्राचयति [विलापयति] आचयति [स्थन्दयति] ; अद् धातु छोड़ वेधातु जो निगलना और चलना अर्थदिखाती हैं प्रेरणार्थक में परस्मैपद होती हैं ।

अथ वाच्यप्रदर्शकः षोडशाऽध्यायः ।

१ जिन वाक्यों में कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त और क्रिया दशो गणों में कोई-कही, कर्तानुसार घचनादि में होवे कर्तृवाच्य (active voice) कहलाते हैं जैसे देवदत्तः मानरं स्मरति, घणं प्रामंगच्छामः ।

कुछ धातु द्विकर्मक होती हैं जिनके दोकर्म होते हैं उनमें जोकर्म कि क्रिया से ठीक सम्बन्ध रखता है [मुख्य वा प्रधान Direct] और दूसरा [अ-प्रधान या गौण Indirect] कहलाता है जैसे गोपोगां [गौण] दुग्धं [मुख्य] दोग्धि, दरिद्रो राजानं [गौण] धनं [मुख्य] याचते, दुह्यावपद्दपद्दरिधिप्रच्छिच्चिचुशासुजिगमश्चुवाम् नी हकृष्वह इत्येते धातवःस्युद्विकर्मकाः १

कर्मवाच्य प्रयोगों में द्विकर्मक धातुओं के दोनोंकर्म इस प्रकार विभक्ति पाने हैं गौणे कर्मणि दुहादेः प्रधानं नीहकृष्वहाम् विभक्तिः प्रथमा श्रेया द्वि-तीया च तदन्यतः । १ ।

जैसे द्विकर्मक कर्तृवाच्य प्रयोग गोपोगांदुग्धंदोग्धि इसकाकर्मवाच्य गोपेन गौणदुग्धे दुहाते अजाजीव, अजात्रामे नर्पाते इसका कर्मवाच्य अजाजीवेन अजात्रामेनीयते सारांश यह है कि दुहादि धातुओं के गौणकर्म में और न्यादि धातुओं के प्रधान कर्म में प्रथमाविभक्ति होती है और तद्वि र कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है ।

कर्मवाच्य [Passive voice] प्रयोग सकर्मकधातुओं से बनते हैं कर्तृ-
वाच्य प्रयोग में जोकर्ता होता है वह कर्मवाच्य में सविशेषण तृतीयान्त हो-
जाता है और कर्म सविशेषण प्रथमान्त और इसीके अनुसार क्रिया के वचना-
दिहोते हैं और वाक्य में इनके सिवाय कोई शब्द नहीं चढ़ता । जैसे धीमान
देवदत्तः सदैव पुस्तकं [वि.] पठति— [कर्तृवाच्य], धीमता देवदत्तेन सदैव
पुस्तकं [प्र०] पठ्यते (कर्मवाच्य) कर्मवाच्य क्रियाओं के रूप प्रायः आत्मनेपदी
दिवादि गणीधातुओं के से प्रथम चारलकारों में, औरलुङ् लकार के प्र. पु. प.
व. को छोड़ शेष ५ लकारों में अपने गुणानुसारही आत्मनेपद में, होते हैं लुङ्
लकार का प्रयोग आगे दियाजाता है ।

जैसे पठ्—पठ्यते, पठ्यतां, पठ्येत, अपठ्यन्, पेठे, पठिता, पठिष्यते,
अपठिष्यत, पठिषीष्ट लुङि अपाठि अपाठिषाताम् शेष पूर्ववत् ; विशेषकर्मवाच्य
धातुरूप जानने के लिये अष्टम अध्याय देखो कुछ धातुओं के अभ्यासाथ लुङ्
लकार के प्र० पु० एक व० के रूप दियेजाते हैं । स्तु—अस्तावि; स्मृ—अस्मारि;
दा—अदायि; ना—अनायि; ग्रह—अग्राहि, दृश्—अदार्शि हन्—अघानि, अवधि;
जन्—अजनि; लभ्—अलामि, अलम्भि गम्—अगमि, ह्—अकारि इत्यादि ।

३ भाव वाच्य (Intransitive Passive voice) प्रयोग अकर्मक धातु
ओं से बनते हैं । अकर्मक क्रियावाले कर्तृवाच्य प्रयोग के जब भाववाच्य में
चढ़ते हैं तब कर्ता सविशेषण तृतीयान्त होता है परन्तु क्रियाकेवल अन्यपुरुष
एक वचन कीही सर्वशरहती है जैसे बालकाः शरते [कर्तृवाच्य], बालकैः
शर्यते; अहं शये मया शर्यते भू—भूयते, भूयताम्, भूयेत, अभूयत, बभूव,
भविता, भविषीष्ट, भविष्यते, अभविष्यत, अभविष्यन् स्थीयते लुङि अस्थायि
इत्यादि केवल अ० पु० एक० वचन में ही रूप चलते हैं । सपितृको देवदत्तोऽ-
प्रतिष्ठति [कर्तृवाच्य] सपितृकेण देवदत्तेनात्र स्थीयते । इत्यादि जानो ।

अथ लकारार्थप्रक्रियामदर्शकः सप्तदशोऽध्यायः ।



यह वह प्रक्रिया है जिससे वाक्यों में लकारोंका प्रयोग करना दिखाया
गया है । सामान्य रीति से वर्तमानकाल घातन करने कोलिये लट्, और भू-
तकाल घातन करने के लिये लृट् लिट् और लुङ् और भाविष्यकाल घातन करने के
लिये लृट् और लृट् लकार प्रयोग किये जाते हैं निम्न लिखित विशेषनियम यह
है १ जब लट् लकार के साथ "स्"का प्रयोग होता है तब भूतकाल घातन
करता है जैसे सविशेष्यः प्रचुरं धने ददातिस् [अदात्] । २ "मास्" के साथलृट्
या लृट् लकार तीनों काल घातन करते हैं जैसे ह्येन्यं मासगमः पार्थ । ३ "मा"
के साथ विकल्प से लृट् लकार का प्रयोग तीनों काल घातन करना है जैसे

भातु शोकः । ४ यावत्, पुरा अव्ययोंके साथ लट् लकार भविष्यार्थ चोतन करता है सः पुगगच्छति [अचिराद्गमिष्यतीत्यर्थः] । ५ कदा, कहीं के योग में लट् लकार विकल्प से भविष्यार्थ चोतन करता है जैसे कदा कहींवा आगच्छान् मीत नजाने [आगमिष्यामि] ।

६ यदा, यदि अव्ययोंके योग में विधिलिङ् भविष्यार्थ चोतन करता है जैसे वक्ष्यामि यदास आगच्छन् [आगमिष्यति] । ७ आशीर्वादाथ में आशीर्लिङ् चालोद् लाते हैं जैसे तवसुखं भूयात् भवतुवा । ८ कर्तव्यार्थका जहाँ उपदेश हो या सम्भावनाहो वहाँ विधिलिङ् लाते हैं जैसे सत्यं वदेत् ९ यदि एक वाक्य में दो क्रिया एक दूसरी परनिर्भरहो तो दोनों क्रिया भविष्यार्थ दिवाने केलिये विधिलिङ् में प्रयोग की जायगी जैसे यदि प्रियं वदेत् सर्वस्य प्रियोभवेत् । १० कर्ता की स्वामर्थ्य दिवाने केलिये लोट् या विधिलिङ् कोईसा लकार प्रयोग कर सके है जैसे मिन्धुमोष शोपयाणि शोपयेयवा । ११ दो भूतकाल जो एक दूसरे पर निर्भरहो और क्रियाकी अनिष्पत्ति [असिद्धि] दिवाते हो वहाँ लङ् लकार प्रयोग होता है जैसे यदि सुव्याघरमपिष्यत्तदासुभिक्षमभविष्यत् । १२ जहाँ पौनः पुन्य या अनिश्चयार्थ चोतन करना होता है वहाँ केवल लोट् लकार के मध्यम पुन्य एक वचन बहुवचन के प्रयोग [हि, त, स्व, ध्वम्] तीनों कालों तीनों पु-र्यों व तीनों वचनों में किये जाते हैं जैसे पुरीमयस्कन्दबलुनीहि नन्दनं मुपाण रत्नानिहरामराज्ञाः ।

अथ कृत्प्रत्ययमदर्शकोऽष्टादशोऽध्यायः ।

धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगाने से संज्ञादि शब्द बनते हैं वे कृत् प्रत्यय और तदन्त शब्द कृदन्त कहलाते हैं ।

१. निमित्ताथं [injeutive] बोध कराने के लिये धातु के उत्तर तुमुन् [तुम्] प्रत्यय लगा देते हैं जैसे "जि" जेतुम्, भुञ्—भोक्तुम्, दा—दातुम्, गम—गन्तुम्, परन्तु रूप बनाने में यह ध्यान रहे कि सेट धातुओं के बीच में "इ" लग जाता है जैसे भू—भविष्युम्, कथ्—कथितुम् इत्यादि ।
२. पूर्वकाल बोध (पूर्वकालक) कराने के लिये अधोत् जहाँ एकही कर्ता को दो क्रिया बनलाती हो वहाँ पूर्व क्रिया के उत्तर "त्वा" प्रत्यय लगा देते हैं परन्तु "नञ् समाप्त" छोड़ और कोई उपसर्ग धातु से पहिले आये तो 'त्वा' 'व' [त्वप्] में बदल जाता है और जहाँ अमीशण और नित्यवीप्ता दिखाई जाती है वहाँ पहिली क्रिया में 'त्वा' की जगह 'अम्' [णमुल्] भी होता है काम से उदाहरण देखो जैसे दा—दत्वा, स्था—स्थित्वा, वच—

उक्त्वा, गम्-गत्या, नञ् समास जैसे अगत्वा, आ+गम्—आगम्य आग-
त्य, प्रणम्-प्रणम्य । सेट, अनिट का उपरोक्त ध्यान यहां भी रहना
चाहिये जैसे वस्—उपित्वा, शी—शयित्वा इत्यादि । अभीष्टण या नित्य
धीप्तार्थ में स्मार्त्स्मार्त्नमति शिवं [स्मृत्वास्मृत्वा इत्यर्थः] ।

- ३ धातुओं से भूतकाल बोधन कराने के लिये कर्म तथा भाव अर्थ में 'त'
प्रत्यय, और कर्ता अर्थ में 'तवत्' प्रत्यय होता है जैसे रामेण राचणोहतः,
त्वयास्नातम्; स्रष्टाविश्वरचितवान् शृ-शीर्णः, भिद्-भिन्न, शुप-शुष्कः,
पच-पक्वः, धा-हितम् इत्यादि
- ४ योग्यता अर्थ बोधन करने के लिये और क्रिया का कर्म बतलाने के लिये
धातु के उत्तर 'तव्य', 'अनीय' और 'य' प्रत्यय लगाते हैं जैसे ग्रह—
ग्रहीतव्यं, ग्रहणीयं, ग्रहां धनमेतत् ।
- ५ कर्तृवाच्य प्रयोग में विशेषण [Present participle] बनाने के लिये
परस्मैपदी धातुओं से अत् [शत्], और आत्मनेपदी धातुओं से 'आन'
[शानच्] लगाते हैं इनका लिङ्ग वचन अपने विशेष्यानुसार होता है ।
यह ध्यान रहे कि इनके रूप धातु के गणानुसार पहिले 'शप्' आदि
विकरण लगा कर बनाये जाते हैं और वर्तमान काल चोतन करते हैं जैसे
गम्-गच्छत् [जाता हुआ]; भुज भुजत्-भुजानः; दा-ददत् ददानः; दश्-
पदयत्, चुर-चोरयत् इत्यादि ।
- ६ कर्तृवाच्य प्रयोग में भूतकाल चोतन करने वाले विशेषण शब्द Past
Participle बनाने के लिये परस्मैपदी धातुओं से वस् (कप्तु) और
आत्मनेपदी धातुओं से 'आन' (कानच्) लगाते हैं जैसे श्रु-श्रुवस्, भू-
बभूवस्, घस्-जक्षिवस्, स्था-तस्थिवस्, गम्-जग्मिष्वस और रुच-रुचानः,
युष्-युष्मानः, शिक्ष-दिशिक्षाणः इत्यादि । सगानं श्रुश्रुवान् जगाम ।
- ७ कर्तृवाच्य प्रयोग में भविष्यकाल चोतन करने के लिये परस्मैपदी धातुओं
से 'स्यत्' और आत्मनेपदी धातुओं से 'स्यमान' प्रत्यय लगाकर विशेषण
शब्द Future Participle बनाते हैं जैसे गम्-गमिष्यत्, दश्-द्रक्ष्यत्,
स्था-स्थास्यत्, वृत्-वर्तिष्यमाणः, जन्-जनिष्यमाणः, सेव्-सेविष्यमाणः ।
- ८ कर्तृवाच्य प्रयोग में कर्मार्थचोतन करने के लिये धातुओं के उत्तर 'त्'
(तुन्) 'अक' (णक्) और 'इन्' (णिन्) प्रत्यय लगाते हैं जैसे दा-दात्,
ष्ट-कर्त्, हन्-हन्त्, नी-नायकः कृ-कारकः, पच-पाचकः, जिन्-वद्-वादिन्,
वस्-वासिन्, हुह-द्रोहिन् । कहीं २ शील अर्थ में भी 'णिन्' प्रत्यय होता
है जैसे त्यक्तुंशीलमस्य स त्यागिन्, भञ्-भोगिन्, गम्-गामिन् ।
- ९ किसी प्रकार का कार्य अर्थात् धात्वर्थ बनाने के लिये धातु से उत्तर 'अ'
(घञ्) 'अ' (अल्) प्रत्यय लगा कर प्रायः पुलिङ्ग संज्ञा बनाने हैं जैसे

घञ्-पष्-पाकः, त्वञ्-त्यागः, जापः अङ्-जि-जयः, स्तु-स्तवः, मी-भयम् इत्यादि ।

- १० किसी प्रकार का कार्य जहाँत धात्वर्थ करण (जरिया) और ओर (तरफ) घातन करने के लिये धातु से उत्तर 'अन' प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाते हैं और ये संज्ञा प्रायः नपुंसक होती हैं जैसे कार्य में-गम्-गमनम्, भुञ्-भोजनम्, करण में नी-नयनम्, श्रु-श्रवणम्, और ओर में शीशयनम्-भू-भवनम् ।
- ११ कर्म उपपद होने से धातु के उत्तर 'अण्' प्रत्यय लगा कर संज्ञा बनाते हैं जैसे कुम्भे करोतीति कुम्भकारः ।
- १२ इच्छार्थक धातु, आहृपूर्वक संस, और भिक्ष धातु इनसे 'उ' प्रत्यय होता है जैसे जिगमिषुः, आशंसुः, भिक्षुः ।
- १३ भाववाचक संज्ञा पानने के लिये धातु के उत्तर 'ति' प्रत्यय लगाते हैं जैसे गम्-गतिः, मन्-मतिः, मुष्-मुक्तिः इत्यादि ।
- १४ (अ) जल्प, भिक्ष, कुट्ट, लुण्ट, और वृह धातुओं से 'आक' प्रत्यय होता है जैसे जल्पतीतिजल्पकः, भिक्षाकः, लुण्टाकः, कुट्टाकः, वराकः ।
- (ब) हलन्त शब्द प्रायः क्तिप् प्रत्ययान्त होते हैं क्योंकि उक्त प्रत्यय लोप होनेसे केवल धातुमान स्वरूप रहजाता है जैसे वि० छाज् [विशेषण छाजते इति] विच्छाद्, भाष्—भाः, वि० घृत्—विद्युत्, प्रच्छ—प्राद्, वञ्—वाक्, परि + मञ् परिमाद् ।
- (स) करण अर्थ में दा, ना, शस्, यु, युञ्, स्तु, तुद्, सि, सिञ्, मिह्, पत्, दंश, और नह धातुओं से "अन्" प्रत्यय होता है और अर्ति, लृ, धू, सू, खन्, सद्, चर, और पू इन धातुओं से "इन्" प्रत्यय होता है । जैसे दात्वनेनेति दात्रम्, नेत्रम्, शस्त्रम्, योत्रम्, योक्रम, स्तोत्रम्, तोत्रम्, सेत्रम्, सेक्रम, मेद्रम्, पत्रम्, दंष्ट्रा, नधी; और अरित्रम्, लवित्रम्, धवित्रम्, सवित्रम्, खनित्रम्, सदित्रम्, चरित्रम्, पवित्रम् इत्यादि ।
- १५ यज, यान्, यत्, विच्छ, प्रच्छ, रक्ष इनसे नह् प्रत्यय और स्वप् धातु से नन् प्रत्यय होता है जैसे यक्षः, याच्छा, यत्नः विश्नः (प्रताप) रक्षणः और स्वप्नः ।

गौडान्यवायजातः गोविन्दांमिसरोजपटपदोऽयम् ।

दुर्गोप्रसादसूनुः सुखानन्दाद्यत्रिपाटीति ॥ १ ॥

रसारसाङ्गभूमिते, हाथने मासितु स्तदस्यनामके ।

उशनशि शुक्लचेतुष्यां कृत्या पूर्णमधार्णवच्छिवाय ॥ २ ॥

शमस्तु ।

व्यावहारिकसंस्कृतप्रबोध की शुद्धाशुद्धपत्रसूची ।

पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.	पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.
३	२	कुक्षि	कुक्षिः	३३	३	चहगादर	धमगादर
"	४	मन्यते	मन्यते *	३५	२	कलयमुत्थाय	कलय उत्थाय
"	"	माष्टि	माष्टि	३७	"	समाने	स माने
४	२	स्वपति	स्वपिति	३९	"	रौतिति	रौतीति
६	"	क्षालयसि	(क्षालयसि)	४०	"	श्वाविघ	श्वाविघ
१०	"	रूप्यरिक्षा	रूप्यरीक्षा	५३	१	५५ रूपये	६५ रूपये
११	"	पुरस्कृत्या पण्डितः	पुरस्कृत्या- पण्डितैः	"	२	पञ्चपञ्चाश- न्मुद्राः	पञ्चपष्टिमुद्राः
"	"	आद्यापितु	अद्यापितु	५९	"	आधुनिको	आधुनिकाः
"	"	शब्दकरोति	शब्दं करोति	६६	"	जम्बुः-बु	जम्बुः-बू
"	"	पारसिक	पारसीक	"	४	मूलिका, काधली	मूलिका
१२	"	श्रुयताम्	श्रूयताम्	६८	२	पाकरा	शंकरा
१४	५	शय्याच्छादनम्	शय्याच्छादः-नम्	७०	"	समस्त	समस्तु
"	"	वयति ते	वपति-ते,	७१	"	शंकरैरेवा	शंकरत्याचैवा
१५	"	वयति ते	वयति-ते	"	"	लेष्टां	लेष्ट्याः
"	२	नवान्यंशुकानि	नवान्यंशुकानि	"	"	शलाङ्गद	शलाङ्गद
"	"	शिरस्त्राणां	शिरस्त्राणम्	७२	"	पितृस्वसा	पितृस्वसा
१६	"	तदन्विष्यान्ना- नयं	तदन्विष्यान्नाय	"	"	भागिनय	भागिनेयः
"	"	तूलेन भूत	तूलेन च भूत	७३	"	पुड्याः	पुड्यः
१७	"	निर्मापयिता	निर्मापयितासि	७६	४	चित्तकारः	चित्तकारः
१९	"	ऽसि	स्त्रियो	७७	"	पलगण्ड	पलगण्डः
"	"	स्त्रीयो	अपाहरत्	"	"	चर्मप्रभेदिका	चर्म प्रभेदिकाः
२०	"	अपहरत्	अरघटः	७८	"	रूपीः	रूपिः
२१	"	अरघटः	शृणु	७९	"	विनि मे ते	विनिमयते
२३	"	शृणु	गृहस्थ के स्थान	८०	२	समापतिति	सम्+आ+पतति
२४	१	गृहस्थ और वर्तन	गृहस्थ के स्थान और वर्तन (सर्वत्र)	८१	"	स्तानात्	स्तानात्
"	४	मञ्जः	मञ्जाः	८३	"	शुद्रराजानः	शुद्रराजानः
२५	"	गृहस्थानां विशेषाः	गृहस्थानां स्थान विशेषाः (सर्वत्र)	९१	४	कर्णोरः	कर्णोरः
२६	२	पाकाणला	पाकनाला	९२	"	द्वी	द्वी
				९५	२	(अमरुद)	अमृतफल
				९६	"	दन्तशठवृक्षा	दन्तशठवृक्षाः

* प्रत्येक धातु का गण पद दिखाने के लिये सर्वत्र वर्तमान कालिक रूप दिखाये हैं ।

पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.	पृष्ठ	का	अशुद्धि.	शुद्धि.
३०	५०	रायण्	पयण्	४५	प्र.	भापयते	भीपयते
३१	५०	स्पर्स	स्पर्श	४६	५	द्यत्वा	द्यत्वा
"	२	स	स	४९	४	अधोध्यत	अधो (धोव)
३२	३	है	है	५०	२	घृयान्	घ्रियान्
३३	नो	प्रेणार्थक	प्रेरणार्थक	"	"	टक्ना	ढकना
"	"	अष्टमोऽध्याय	अष्टमोऽध्यायः	५१	"	वर्गीयते	वेर्गीयते
"	३	चह्नभ्यते	चह्नन्यते	"	४	कुन्तेत्	हन्तेत्
३६	४	विवेप	विवेपे	"	३	भक्ता	भक्त्वा
"	५	शसनम्	शसनम्	५४	"	तनुयात्	तनुयात्
"	"	शसा, शस्ति	शसा, शस्ति	५५	४	जिज्ञासति	जिज्ञासते
३७	२	असहत	असहत	"	३	अतूनात्	अतुनात्
"	३	ई०	सर्वत्र उडादीजे	५६	"	तौलयन्	तौलयन्
"	४	अप्रात्	अप्रात्	५९	"	होतेहै। उभयपदी	उभयपदी होते है
४०	३	इयाज	इयाज	६०	"	शुम् और कृष्	भृशार्थमे शुम् और कृष्
४१	"	नन्देत्	निन्देत्	"	"	Passive	Passive
"	४	वर्ततान्	वर्तताम्	६५	"	शुणानुसार	शणानुसार
"	५	ममीयते	मेमीयते	"	"	अभ्यासार्थ	अभ्यासार्थ
४२	४	अजागरिष्यत्	अजागरिष्यत्	"	"	Intransitive	Intransitive
४३	"	पायते	पायते	"	"	स्था	स्था
४४	"	शयीत्	शयीत्	६६	"	Injunctive	Injunctive
"	५	दुग्धे	दुग्धे	६७	"	Partecepte	Partecepte
४५	"	ब्रू	ब्रू				